# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

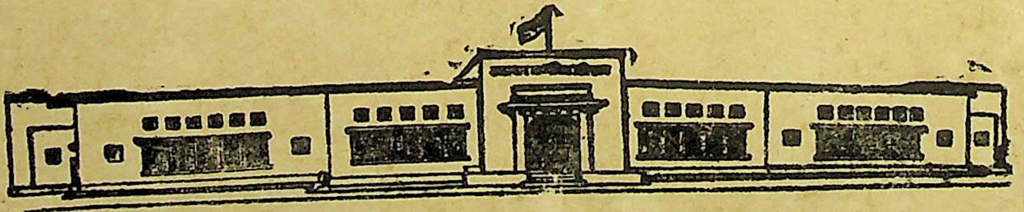
प्रबन्ध सम्पादक : जितेन्द्रकुमार जैन, एम.ए.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १२८

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

## भाग ४

सम्पादक
ओंकारलाल मेनारिया, एम.ए. (इतिहास, हिन्दी)
वरिष्ठशोध सहायक



प्रकाशक
राजस्थान - राज्य - संस्थापित
**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)**
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
1978

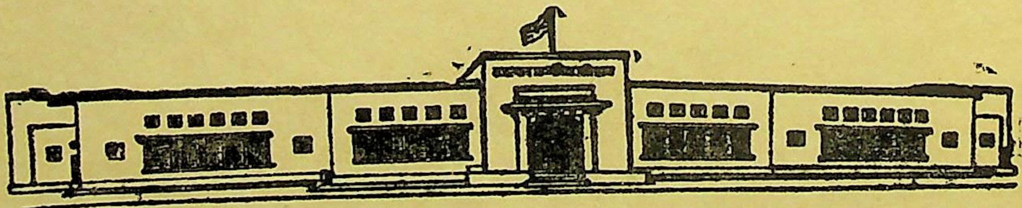
राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक : जितेन्द्रकुमार जैन, एम.ए.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १२८

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची
## भाग ४

सम्पादक
ओंकारलाल मेनारिया, एम.ए. (इतिहास, हिन्दी)
वरिष्ठशोध सहायक



प्रकाशक
राजस्थान - राज्य - संस्थापित
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
1978



राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रबन्ध सम्पादक : जितेन्द्रकुमार जैन, एम.ए.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थांक १२८

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची
## भाग ४

सम्पादक
ओंकारलाल मेनारिया, एम.ए. (इतिहास, हिन्दी)
वरिष्ठशोध सहायक

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज०)
१९७८ ई०

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR.
1978

प्रथमावृत्ति 500 मूल्य रु० 34.50

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

*राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित*

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान-प्रदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रबन्ध सम्पादक
**जितेन्द्रकुमार जैन,** एम.ए.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १२८

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची
## भाग ४


*प्रकाशक*
**राजस्थान-राज्य-संस्थापित**
**राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**
**जोधपुर (राज०)**

मुद्रक : हिमालय प्रिण्टर्स, कुम्हारिया कुआ, जोधपुर

वि.सं. २०३५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १९००

# अनुक्रम

# प्रकाशकीय

प्रतिष्ठान की 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत विविध विषयों के महत्वपूर्ण शोधोपयोगी ग्रन्थों के प्रकाशनों के साथ ही साथ प्रतिष्ठान में संगृहीत ग्रन्थों के सूचीपत्रों का भी प्रकाशन किया जाता है।

अब तक इस ग्रन्थमाला में १२७ प्रकाशन हो चुके हैं और हिन्दी राजस्थानी ग्रन्थों के सूची पत्र भाग-४ को शोध विद्वानों के लिये प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है।

प्रतिष्ठान के मुख्यालय, जोधपुर में संगृहीत ग्रन्थों में से ग्रन्थ सं. १२६१३ से ग्रन्थ सं. १५६७२ तक के ग्रन्थों का यह सूची पत्र तैयार किया गया है और गुटकों में लिखित कृतियों का विवरण भी इसमें दिया गया है।

इस संकलन में कुछ ऐतिहासिक ग्रन्थ भी आये हैं, जिनके अध्ययन से तत्कालीन धार्मिक, आर्थिक. सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का परिचय प्राप्त हो सकता है।

सूचीपत्र के निर्माण-कार्य में सम्पादक श्री ओंकारलाल मेनारिया एवं विभाग के प्रतिलिपिकर्ता श्री गिरधरवल्लभ दाधीच ने पूर्ण सहयोग दिया है जो सराहनीय है।

आशा है, इस प्रकाशन से शोधजगत् को अपेक्षित लाभ होगा।

१३ सितम्बर, १९७८

जे. के. जैन
निदेशक
रा. प्रा. वि. प्र., जोधपुर

# सम्पादकीय निवेदन

जोधपुर, मुख्यालय में संगृहीत राजस्थानो-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थों के तीन सूची पत्र प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित किए जा चुके हैं। तीसरे भाग के ग्रागे ग्रन्थाङ्क 12613 से 15672 तक प्राप्त हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों की 2603 कृतियों का प्रस्तुत सूची-पत्र विद्वानों एवं शोधार्थियों के उपयोगार्थ सादर प्रस्तुत है।

यह सूचीपत्र पिछले प्रकाशित सूचीपत्रों से थोड़ी-सी ग्रपनी विशेषता रखता है, ग्रौर वह है इसका विषय विभाजन युक्त ग्रकाराद्यनुक्रम। प्रस्तुत सूचीपत्र में संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थों की भाँति निर्धारित प्रमुख विषयों में से विषयों को चुनकर प्रत्येक कृति को संबंधित विषय के ग्रंतर्गत रखने का प्रयत्न किया गया है। मुख्य विषयों के उपाङ्गों को यहाँ छोड़ दिया गया है।

मान्य पद्धति के ग्रनुसार निर्धारित विषयों की तालिका संलग्न प्रस्तुत की जा रही है, जिससे स्पष्ट हो सकेगा कि किस-किस विधा के ग्रन्थों को कौन-कौन से विषय में स्थान दिया गया है।

प्राप्त एवं संगृहीत ग्रन्थों में जैन ग्रन्थों की बहुलता के कारण "जैन साहित्य" को एक प्रमुख विषय के ग्रन्तर्गत रखते हुए उसे 6 छः उप शीर्षकों में बाँट दिया गया है जिससे कि समस्त जैन साहित्य के भाषा-ग्रन्थों को एक साथ प्रस्तुत किया जा सके।

प्रस्तुत सूचीपत्र में संगृहीत कृतियों में भू. पू. जोधपुर रियासत के 'महक्मा तवारीख' के लिए प्राप्त की गई उन समस्त ख्यात, बात, तवारीख, हाल संज्ञक कृतियों का समावेश हो गया है जो प्रतिष्ठान को पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जोधपुर से स्थानान्तरित होकर प्राप्त हुई थीं। इस संग्रह में ग्रनेक मूल ख्यातें व ग्रनेक ख्यातों के पंडित श्यामकरण दाधीच कृत तर्जुमें हैं। इसी सामग्री के ग्राधार पर पंडित विश्वेश्वरनाथ रेऊ ने ग्रपना "मारवाड़ का इतिहास" लिखा था, **किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसी विपुल सामग्री तब भी उपयोग में ग्राने से रह गई थी क्योंकि उनके उपयोग का इतिहास में उपयुक्त ग्रवसर नहीं था।** इसी सामग्री की ग्रोर ग्राकृष्ट होकर राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ॰ रघुवीरसिंह, सीतामऊ एक **"मुंदियाड़ की ख्यात"** का प्रकाशन कार्य हाथ में ले चुके हैं। मुझे ग्राशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि इतिहास के विद्वानों का ध्यान इस सामग्री की ग्रोर ग्रवश्य ग्राकृष्ट होगा तथा वे इसका यथा ग्रवसर उपयोग करने से न चूकेंगे।

प्रस्तुत जिल्द में संकलित ग्रनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों के बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है, किन्तु ऐसा करने का यहां उपयुक्त ग्रवसर नहीं होने से मैं उक्त कार्य सूचीपत्र के पाठकों एवं विद्वानों के लिए छोड़कर इस लोभ का संवरण करना उपयुक्त समझता हूँ।

सूचीपत्र के अन्त में परिशिष्ट 1 में कतिपय विशिष्ट ग्रन्थों के आद्यन्त दिए गए हैं उनमें से एक ग्रन्थ "हफत गुलशन नामा तारीख की संक्षेप भाषा" का आद्यन्त छपने से रह गया है। इस ग्रन्थ के मूल लेखक का पूरा नाम 'कामरखाँ मुहम्मद हादी' था जिसने चकत्ता-वंश का वृहद् इतिहास भी अलग से फारसी भाषा में लिखा था। प्रस्तुत कृति उसी का संक्षिप्त रूप-सा है, जिसमें भारतवर्ष के मुस्लिम शासकों का इतिहास दिया गया है। लेखक की मूल पाण्डुलिपि "इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी" में सुरक्षित होने की सूचना उपलब्ध है।

तवारीख की भाषा लिखवाने का श्रेय जयपुर के संस्थापक एवं विद्या प्रेमी राजा सवाई जयसिंह को है। भाषाकार ने यद्यपि अपना नाम नहीं दिया है फिर भी ग्रन्थ में जयपुरी भाषा के प्रयोग से लेखक व्यक्ति कोई स्थानीय विद्वान् रहा होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

उक्त भाषा ग्रन्थ की जोधपुर संग्रहालय में दो प्रतियां उपलब्ध हैं। प्रथम का प्रारम्भिक अंश अप्राप्त होने से प्रारम्भिक अंश ग्रन्थाङ्क 25679 से तथा अंतिमांश सूचीपत्र में वर्णित प्रति से दिया जा रहा है। (देखें शुद्धिपत्र के बाद)

परिशिष्ट 2 में ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका दी गई है। आशा है विद्वानों एवं शोधार्थियों के लिए यह उपयोगी सिद्ध होगी।

सूची-पत्र का मूल अंश काफी समय पूर्व मुद्रित हो चुका था, किन्तु विशेष परिस्थितियों के कारण परिशिष्टभाग का मुद्रण मेरे जोधपुर से जयपुर स्थानान्तरण के बाद ही मुद्रित हो सका। इसके मुद्रण एवं प्रूफ संशोधन में प्रकाशन अनुभाग में कार्यरत मेरे सहयोगी श्री गिरधरवल्लभ दाधीच का पूरा सहयोग रहा, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

मुद्रण में प्रूफ-संशोधन में यद्यपि पूर्ण सतर्कता रखी गई है फिर भी दृष्टिदोष से जो त्रुटियाँ रह गई हैं उनके लिए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ।

अंत में मैं विभाग के निदेशक महोदय श्री. जे. के. जैन का भी आभार स्वीकार करना अपना कर्त्तव्य समझता हूँ जिन्होंने प्रकाशन कार्यक्रम के अन्तर्गत सूचीपत्रों के मुद्रण-कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की नीति अंगीकार कर इसे प्रकाशित करवाया।

हिमालय प्रेस के व्यवस्थापक श्री आर. एम. माहेश्वरी का भी मैं आभार स्वीकार करता हूँ जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी इस कार्य को चालू रखा और इसके मुद्रण-कार्य को अंतिम रूप प्रदान किया।

आशा है विद्वान् पाठक एवं शोधार्थीजन त्रुटियों की ओर ध्यान आकर्षित कर मुझे उपकृत करेंगे।

निवेदक

दिनांक 9 अगस्त 1978 — ओंकारलाल मेनारिया

# विषय-तालिका

# संकेत-तालिका

| | | |
|---|---|---|
| (१) | र० का० | रचना-काल |
| (२) | र० स्था० | रचना-स्थान |
| (३) | टी० | टीकाकार; टीका |
| (४) | सं क० | संकलनकर्त्ता |
| (५) | सं का० | संकलनकाल |
| (६) | लि० क० | लिपिकर्त्ता |
| (७) | लि० स्था० | लिपिस्थान |
| (८) | गु० | गुटका |
| (९) | मू० | मूलग्रन्थ |
| (१०) | प० | परिशिष्ट (परिशिष्ट–१ में 'प' चिह्नित ग्रन्थों के आद्यन्त दिये गए हैं) |

# शुद्धि-पत्र

## (विवरण-तालिका)

| क्रमाङ्क | पृ० सं० | कोष्ठक सं० | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|---|
| 56 | 10 | 3 | गीता महामात्य भाषा | गीता-भाषा |
| 64 | 12 | 9 | ओषधी | औषधी |
| 102 | 18 | 8 | 1915 | 1951 |
| 136 | 24 | 3 | सोमवती-अमावस्यारी क | सोमवती अमावस्यारी कथा |
| 224 | 38 | 1 | इतिहास | ज्यौतिष विषय |
| 224 | 39 | 9 | की प्रमुख घटनाएँ | (कुछ नहीं) में क्रमांक 1754 पर |
| 311 | 54 | 3 | गीत नागोर "आपरा" घेरारो | गीत नागोर "आपारा" घेरारो |
| 327 | 58 | 3 | गीत मेहता राव महेश-दास दिल्ली नति रा | गीत मेहता राव महेशदास दिल्ली पति रो |
| 343 | 62 | 3 | (29) जगतसिंह मानसिंघीतरा (32) रणबटरा | जगतसिंह मानसिंघोतरा रणवटरा |
| 394 | 71 | 4 | माधवदास धधवाड़िया | माधवदास दंधवाडिया |
| 408 | 74 | 4 | विहारीदास | ब्रिहारीदास |
| 475 | 84 | 9 | तलबार तै । | तलवार |
| 653 | 114 | 6 | 64 वां | 69 वां |
| 671 | 116 | 3 | उपदेश चितोवण | उपदेश चितावणी |
| 773 | 134 | 3 | प्राणभात्रा | प्राणमात्रा |
| 782 | 136 | 4 | चापरनाथ | चरपटनाथ |
| 789 | 136 | 3 | ज्ञानसिक गुणविलास | ज्ञानरसिक गुणविलास |
| 1036 | 176 | 3 | पदसंग्रह गुरुभक्ति | पदसंग्रह गुरुभक्ति के |
| 1115 | 190 | 3 | पदसंग्रह-भाईदूज | पदसंग्रह-भाई दूज के |
| 1135 | 194 | 3 | ,, -राग गरवी | ,, -राग गरवी के |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1247 | 218 | 3 | स्फुट पदसंग्रह होरी के (घमाल) | स्फुट पदसंग्रह होरी के (धमाल) |
| 1336 | 234 | 3 | योएपावड़ी | योगपावड़ी |
| 1386 | 242 | 9 | लि. क. मयाचन्द श्वेताम्बर, लि. स्था. योधपु | लि. क. मयाचन्द श्वेताम्बर, लि. स्था. योधपुर |
| 1402 | 244 | 4 | हरिराम | हरिराय |
| 1403 | 244 | 3 | शिक्षापत्री साग्रर्थ | शिक्षापत्री स-अर्थ |
| 1469 | 254 | 3 | स्यम-सगाई | स्याम-सगाई |
| 1580 | 272 | 3 | बीरमदे सोनारारी वार्त्ता | बीरमदे सोनगरारी वार्त्ता |
| 1590 | 274 | 4 | मेघजा | मेघजी |
| 1613 | 278 | 3 | छन्द-अलंकार लक्षण | छन्द विभूषण |
| 1615 | 278 | 6 | 1-105 | 2-105 प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 1623 | 280 | 4 | टी. उदैचन्द भण्डारी | कर्त्ता-उदैचन्द भण्डारी |
| 1644 | 284 | 3 | रसिकप्रिया सबालाव-बोध | रसिकप्रिया सबालावबोध |
| 1676 | 290 | 1 | 1676 | 13 आयुर्वेद |
| 1697 | 292 | 9 | ओषधी-सग्रह | औषधी-संग्रह |
| 1698 | 294 | 4 | नयनसुख शिष्य केशवराज | नयनसुख पुत्र केशवराज |
| 1961 | 336 | 4 | बा केसरविमल गणि | वा. केसरविमल गणि |
| 2004 | 344 | 3 | पारण-विधि आ | पारण-विधि आदि |
| 2015 | 346 | 3 | अंजना सुन्दरी-चउ | अंजना सुन्दरी-चउपई |
| 2105 | 360 | 3 | निमनाथ-विवाहलू | नेमिनाथ विवाहलू |

।। श्रीगणेशाय नमः ।।

**प्रारंभ; ग्रन्थाङ्क 25679 से उद्धृत**

ईं ग्रन्थ मै दिल्ली वा श्रोर देस हिंदुस्थान का राजा वा पातस्याह को वृतांत **कामरषा** नै पारसी संग्रह कीयो छै सो सरामद राज हाय हिंदुस्थान रा राजेद्र श्री महारा (जा) धिराज श्री सवाई जैसिंहजी की श्राज्ञा सौ संक्षेप भाषा लिषी। श्रर ईंका सात विभाग छै। **प्रथम विभाग** का तीन षंड, प्रथम षंड मै दिल्ली का वा श्रोर देसां का राजा वा पातस्याहां को प्रसंग। दूसरा षंड मै जोनपुर का पातस्याहां-तीसरा षंड मै मालवा का पातस्याह।

दूसरा विभाग का २ षंड।।

प्रथम षंड मे षानदेस का पातस्याह। दूसरा षंड में गुजरात का पातस्या **३ रा विभाग में** बंगाल का पातस्याह ।४। मै छह षंड।। प्रथम दक्षण का पातस्याह। दूजा में बीजापुर का पातस्याह। ( . ) तीसरा मे श्रहमदनगर का **(पात)** पातस्याह। हूज में बीजापुर का पातस्याह। (....) चोथा मे हेदराबाद का पातस्याह। पांचमा में बरार देस का पातस्या-६ में (....) श्रहमदाबाद बंदर का पातस्याह।। **पांचमा विमा (–)ग का २ षंड**—प्रथम मे भेठढ का पातस्याह विष्यात, जामे संज्ञा करि दूसरा मे मूलतांन रा पातस्याह।

**छठा** विभाग मे काश्मीर का मिरजाई। सातमे विभाग मै पेगंबर वा उसका मित्रां को प्रसंग सो वो ग्रन्थ भिन्नहि लिष्यो छै।

**श्रंतिमांश**···· - युसफ खां श्रकबर पातशाह कनै श्राय सेना सहाय मांगी। तदि श्रकबर पातशाह श्री महाराजा मानसिंघ कछवाहा नै वा युसुफ खां मसहदी नै वेंकी साथ सहाय नै विदा वौ। स्यालकोट की राह होय लोहरचक वें जाय मारचौ। श्रर श्री महाराजा मानसिंघ स्यालकोट रह्या। कितनाक दिना मै काबिल जाय छा युसफखां नै हजूर बुलायौ। श्रमीरां वेनें हजूर बुलायो। श्रमीरां वेंने हजूर श्राबा नही दीयौ। जदि पातशाह क्रोध करी साहकुलीखां वा राजा भगवानदास नै कश्मीर लेबा ने वीदा कीया। राजा भगवानदास युसफखां ने समझाय प्रतिवर्ष बेंकै माथै पेसकस ठहराय श्रटक ऊपर पातशाह की मुलाजमत करी। मनसब श्रमीरी को पाय पूर्व मै जागीर पाई। फेर कितनाएक वर्ष पाछै। कासिम खां मीर वहरवा श्रौर श्रमीर कश्मीर नै विदा [किया] सो बरस तांई परस्पर राड होबो करी। तीं पाछै पातशाही श्रमीरां ने मुल्क मै श्रमल कीयौ। वेंका सिरदार नें हजूर भेज्यौ। यूसफखां मसहदी वेठां को सूबो [सूबेदार] पातशाह की तरफ सौं हूवौ। जदि सौं वो मुल्क चगत्तां ही का श्रमल मै छै।

इति छठो बीभाग समाप्तं।

सातवां बिभाग मै पेगंबर को वा वेंका मित्रां को प्रसंग सो भीन्न ही लीख्यौ छौ।

इति हफत गुलशननांमां, तारीख की संक्षेप भाषा संक्षेप हुई। संवत १८७६ प्रमाणै शाके १७८१ प्रवर्त्तमाने। मिति चैत्र कृष्णे पक्षे षष्टयां ६ तीथौ चन्द्रवासरै द्वितीय प्रहरे लिपिकृतं। श्री रस्तु। श्री।

# राजस्थानी-हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची

## भाग ४

## राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,

## (जोधपुर-संग्रह)

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **1 दर्शन** 1 | 14712 (1) | अध्यात्मप्रकाश-भाषा | सुखदेव मिश्र |
| 2 | 14200 (1) | अनभैप्रकाश (उदैराय-केसोराय-संवाद) | |
| 3 | 14362 (5) | अनुभव हुलास (उल्हास) | भगवानदास निरंजनी |
| 4 | 14478 (7) | " | " |
| 5 | 14078 (4) | अनुभवप्रकाश | जसवंतसिंह |
| 6 | 14478 (1) | अपरोक्ष-अनुभव-भाषा | मू. शंकराचार्य<br>टी. ज्ञानदास |
| 7 | 14960 (2) | अमृतधारा | भगवानदास निरंजनी |
| 8 | 14478 (8) | अष्टावक्र-भाषा | |
| 9 | 14390 (1) | ज्ञानगुटकी सारासार विवेक सिद्धान्त-निरुपण | |
| 10 | 15098 2) | ज्ञानतिलक | रामानन्द |
| 11 | 14391 (3) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास |
| 12 | 14200 (2) | " | " |
| 13 | 14048 (3) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21.5×19<br>15; 17 | 1–26 | पूर्ण | 1890 | लि. क. नथसागर; लि. स्था. जोधपुर<br>र. का. 1752 |
| 21.5×15<br>13; 18 | 9–25 | अपूर्ण | 1838 | पत्राङ्क 1–8 अप्राप्त; जलसिक्त;<br>आसन एवं 24 मुद्राविचार |
| 16×11<br>11; 16 | 80–96 | पूर्ण | गु. 1741 | |
| 12.5×9.5<br>9; 15 | 445–463 | ,, | 1914 | लि. क. सदासुख |
| 15.5×15<br>13; 14 | 24–31 | ,, | 1729 | 32 वें पत्र पर स्फुट कवित्त हैं। आगे "इतिहाससार–समुच्चय" के स्फुट पत्र हैं। |
| 12×9.5<br>9; 15 | 429–445 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×15<br>22; 22 | 57–87 | ,, | गु. 1867–1871 | जीर्ण; र. का. 1728 र. स्था. क्षेत्रदास |
| 12.5×9.5<br>9; 15 | 463–506 | ,, | 1914 | |
| 12.5×8.5<br>6; 12 | 1–89 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 89–95 पर "निज स्वरूप निश्चैज्ञान" परक 27 पद्य हैं। |
| 16×11·5<br>10; 18 | 1–7 | ,, | 19 वीं श. | |
| 12×10<br>10; 12 | 1–106 | ,, | 1811 | लि. क. लछीराम सुत गोपालदास<br>लि. स्था. बीकानेर |
| 21.5×15<br>14; 18 | 26–69 | ,, | 1838 | |
| 15.5×10<br>11; 26 | 1–33 | अपूर्ण | 19 वीं श. | जीर्ण एवं अस्त-व्यस्त<br>लि. क. ग्याँनदास; लि. स्था. सौभरि |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 14 | 13749 (2) | ज्ञानसमुद्र | सुन्दरदास |
| 15 | 14078 (3) | ब्रह्मज्ञान जोगशास्त्र | |
| 16 | 13117 | मनोविलापनसार-भाषा | भगवानदास |
| 17 | 14417 (2) | विचारमाला | अनाथदास |
| 18 | 14388 (9) | ,, (द्वितीय अध्याय) | ,, |
| 19 | 14478 (9) | ,, | ,, |
| 20 | 15251 | ,, | ,, |
| 21 | 13339 (3) | ,, | ,, |
| 22 | 13959 (1) | ,, | ,, |
| 23 | 14372 | ,, | ,, |
| 24 | 14960 (9) | ,, (तृतीयविश्राम पर्यन्त) | ,, |
| 25 | 14716 (10) | ,, | ,, |
| 26 | 14383 (5) | विचारसागर (शारीरिकसूत्र-भाष्य) | निश्चलदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×10.5<br>11; 24 | 346–500 | पूर्ण | 1847 | लि. क. साध माणकदास<br>जीर्ण |
| 15.5×15<br>13; 14 | 1–24 | ,, | 1729 | लि. क. रामदास शिष्य हरिदास<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 22.5×16.5<br>13; 24 | 1–20 | ,, | 20 वीं श. | "बाई किल्याणबाई ना गुरु नी कृति छे"<br>"ए ग्रन्थ को कर्त्ता भीणा जानी भगवान" |
| 14×10<br>10; 20 | 35–80 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1726; पत्र सं. 31-35 पर<br>"तीन भौमका निर्णय" है। |
| 12.5×11.5<br>12; 14 | 28–31 | ,, | 20 वीं श. | |
| 12.5×9.5<br>9; 15 | 506–534 | ,, | 1914 | र. का. 1726 |
| 22×11.5<br>10; 26 | 1–17 | ,, | 1909 | ,, ,, |
| 20×14<br>12; 27 | 1–15 | ,, | 20 वीं श. | ,, ,, |
| 17×10.5<br>9; 20 | 2–25 | ,, | ,, | ,, ,,लि. क. बुधरदास |
| 20.5×17<br>9; 18 | 1–26 | ,, | 1929 | लि. क. हरिदास वैष्णव |
| 17×15<br>21; 19 | 563–567 | ,, | गु. 1871 | पत्राङ्क 562–563 पर जंबूसर की<br>कथा है। |
| 21×14.5<br>25; 22 | 546–554 | ,, | गु. 1826 | |
| 16×12.5<br>9; 18 | 29–109 | ,, | 1934 | र. स्था. किहिंडोली<br>दिल्ली के पश्चिम में 18 कोस पर स्थित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 27 | 14416 (9) | शिवपच्चीसी | बनारसी |
| 28 | 14080 | षट्प्रश्नीनिरनै-भाषा | मनोहरदास निरंजनी |
| 29 | 14477 (2) | सर्वसार | अनाथदास |
| **2 धर्मशास्त्र** | | | |
| 30 | 14383 (4) | वज्रसूची-भाषा | |
| 31 | 14475 (1) | विधवाविचार | सेवगराम शिष्य परसराम |
| 32 | 13157 | शिवहवन-विधि | |
| **3 पुराण** | | | |
| 33 | 14473 (4) | अर्जुनमहिमा एवं अर्जुनगीता | हरिदास |
| 34 | 14756 (2) | अमावस्यारी कथा | |
| 35 | 14753 | अश्वमेध-भाषा (महाभारतगत) | |
| 36 | 14896 (5 | इतिहाससारसमुच्चय-भाषा | लालदास सुत ऊधोदास |
| 37 | 14007 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×11.5<br>12; 12 | 43–46 | पूर्ण | गु. 1819 | र. का. 1750;<br>शिव का आध्यात्मिक विवेचन |
| 20×12<br>11; 34 | 1–77 | ,, | 1881 | |
| 16.5×11.5<br>10; 18 | 121 | ,, | 1886 | र. का. 1726; लि. क. मोतीरामजी शिष्य; लि. स्था. देसणोक<br>पुष्पिका में रामानुजीय सम्प्रदाय की परम्परा दी गई है। |
| 16×12.5<br>9; 20 | 30–33 | ,, | 20 वीं श. | |
| 19×15.5<br>14; 18 | 1–6 | ,, | ,, | प्रथम पत्र पर स्फुट गीत है। |
| 42×10.5<br>34; 12 | 1 | ,, | 19 वीं श. | |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 40–45 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 42 वां अप्राप्त |
| 24×15<br>35; 24 | 40–42 | पूर्ण | गु. 1811 | गुटके के प्रारम्भिक पत्रों पर वर्गमूल, घन-मूल निकालने का सवैया, सूरजरो छन्द एवं संवत् 1801 का वर्षफल आदि हैं। |
| 27×15<br>15; 35 | 1–66 | पूर्ण | 1889 | लि. क. जैतराम; लि. स्था. पीपाड़ |
| 16×11<br>11; 22 | 147–252 | अपूर्ण | 1845 | पत्राङ्क 165-170 अप्राप्त |
| 21.5×11<br>11; 28 | 1–31 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 38 | 14923 | इतिहाससारसमुच्चय-भाषा | लालदास सुत ऊधोदास |
| 39 | 14928 | ,, | ,, |
| 40 | 14960 (1) | ,, | ,, |
| 41 | 15099 (7) | ,, | ,, |
| 42 | 13765 (9) | एकादशीरी कथा | |
| 43 | 14376 (2) | एकादशीरी कथा सटीक | |
| 44 | 14307 | एकादशी-माहात्म्य कथा (पद्मपुराणगत) | |
| 45 | 14294 | एकादशी-माहात्म्य कथा | ध्यानदास |
| 46 | 14066 (7) | एकादशी-माहात्म्य-भाषा | |
| 47 | 13493 | कार्तिक-माहात्म्य-भाषा | भगवानदास निरंजनी |
| 48 | 14268 | ,, | ,, |
| 49 | 14275 | ,, | ,, |
| 50 | 14316 | ,, | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 30.5×14.5<br>17; 48 | 10–31 | अपूर्ण | 1854 | जीर्ण; प्रारम्भ अप्राप्त;<br>लि. क. साधु मेघदास; लि. स्था. खाटू |
| 23×12<br>10; 28 | 1–72 | " | 19 वीं श. | जीर्ण एवं खंडित |
| 17×15<br>18; 22 | 2–57 | " | गु. 1867–1871 | जीर्ण एवं प्रारंभ के 9 पत्र खंडित |
| 18×12<br>11; 18 | 184–312 | पूर्ण | गु. 1898 | र. का. 1643 अकबर कालीन |
| 22×16<br>22; 24 | 1–72 | अपूर्ण | 1771 | अंतिम अंश पत्राङ्क 16 पर है। |
| 21.5×15.5<br>20; 18 | 1–28 | पूर्ण | 1755 | लि. क. स्वामी सेवादास |
| 26×12<br>11; 26 | 1–38 | " | 20 वीं श. | |
| 30×14<br>13; 36 | 1–39 | " | 1949 | लि.क. मथुरादास निरंजनी; लि.स्था. नागोर<br>अंत में बखतसिंहजी विषयक कवित्त है। |
| 22×16<br>16; 16 | 1–14 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पत्र अस्त-व्यस्त हैं। |
| 20×16<br>9; 16 | 1–12 | " | 19 वीं श. | र. का. 1743 |
| 23.5×12.5<br>11; 28 | 1–68 | पूर्ण | 1898 | र. का. 1743<br>लि. क. रामसुख व्यास |
| 20×13<br>9; 24 | 1–125 | " | 1875 | र. का. 1743 |
| 25×12<br>10; 26 | 1–34 | " | 19 वीं श. | गद्य में है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 51 | 14078 (1) | कुण्डारो ब्योरो | |
| 52 | 14081 (5) | केरड़ावाली चोथ- गणेशजी री कथा | |
| 53 | 12704 (2) | केरड़ावाली चोथ-मातारी कथा | |
| 54 | 14418 (5) | गणेशचोथरी वात | |
| 55 | 13972 (1) | गणेशजीरी कथा-भाषा | |
| 56 | 14352 (11) | गीतामहामात्य-भाषा | भगवानदास निरंजनी |
| 57 | 14474 (2) | " | |
| 58 | 14081 (9) | चन्द्रउगाली चोथरी कथा (संकष्ट-चतुर्थी) | |
| 59 | 14418 (7) | चित्रगुप्तरी कथा नै पूजा-विधि | |
| 60 | 12704 (3) | चोथमातारी कथा | |
| 61 | 14927 (1) | चौवीस एकादशीरी कथा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5 × 15<br>13; 16 | 1–7 | अपूर्ण | गु. 1729 | जीर्ण एवं खंडित |
| 16 × 12<br>11; 19 | 44–52 | पूर्ण | गु. 890 | |
| 15 × 14.5<br>9; 14 | 1–18 | पूर्ण | गु. 1901 | "पोथी ऊतावली में लिखी छै"<br>लि. क. अगरचन्द |
| 12.5 × 11<br>8; 15 | 56–74 | ,, | 1887 | पत्राङ्क 52-55 पर माताजीरी आरती द्वय है। |
| 21 × 16<br>18; 18 | 1–16 | ,, | 1887 | प्रारम्भ में गणेशजी का चित्र है।<br>लि. क. तिवाड़ी खीमजी छगनजी<br>लि. स्था. भुजनगर |
| 13.5 × 10.5<br>9; 18 | 112–195 | ,, | 1934 | लि. क. गोपालदास रामसनेही |
| 19.5 × 14.5<br>17; 13 | 1–56 | ,, | 1845 | पत्राङ्क 57–59 परगीतापाठमाहात्म्य है।<br>लि. क. चेतनदास<br>लि. स्था. समेलाग्राम (मेड़ता) |
| 16 × 12<br>11; 20 | 27–31 | ,, | 1890 | लि. क. जोशी छोटमल (सांचोरी)<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 12.5 × 11<br>8; 15 | 104–114 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. भंडारी इम्रतराज |
| 15 × 14.5<br>9; 13 | 1–5 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 18.5 × 14<br>16; 14 | 19–68 | ,, | 1800 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 62 | 14362 (4) | चौवीस एकादशीरी व्रत कथा | |
| 63 | 15227 | चौवीस एकादशीरी व्रत कथा | |
| 64 | 13514 (8) | जन्माष्टमीरी कथा | |
| 65 | 14081 (11) | ,, | |
| 66 | 14075 (2) | दश अवतार (भागवत दशम-स्कन्ध पर आधारित) | |
| 67 | 14388 (3) | धर्मसंवाद (भीम-चंडाल संवाद) | |
| 68 | 14081 (12) | नरसिंघ-चतुरदशीरी कथा | |
| 69 | 14756 (3) | नवरात्ररी कथा | |
| 70 | 14960 (5) | नारदपुराण-भाषा (हरिभक्ति सुधौदय) | माधव शिष्य दामोदर |
| 71 | 13498 (6) | नारायण-अवताररी कथा | |
| 72 | 15097 (1) | नासिकेतु ऋषिरी कथा | जनदयाल शिष्य जगन्नाथ |
| 73 | 13511 (4) | ,, | |
| 74 | 15099 (3) | नासिकेतुपुराण | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16 × 11<br>10; 15 | 49–79 | पूर्ण | 1741 | लि. क. गंगाराम शिष्य केसोदास |
| 29.5 × 14<br>13; 54 | 3–28 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16 × 12.5<br>16; 12 | 65–74 | पूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 75–80 पर ओषधी संग्रह है। |
| 16 × 12<br>11; 19 | 45–54 | ,, | 1890 | |
| 15.5 × 11.5<br>10; 20 | 1–28 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. गोवर्द्धन-ब्रह्मचारी<br>लि. स्था. खींवसर |
| 12.5 × 11.5<br>11; 13 | 1–17 | ,, | 1920 | लि. क. साध भरतदास |
| 16 × 12<br>13; 22 | 55–60 | ,, | गु. 1890 | |
| 24 × 15<br>35; 24 | 42–44 | ,, | गु. 1811 | |
| 17 × 15<br>21; 19 | 334–409 | ,, | 1871 | |
| 14.5 × 12<br>9; 18 | 134–167 | ,, | गु. 1670 | |
| 16 × 10.5<br>6; 13 | 1–82 | पूर्ण | 1925 | लि. क. अम्बालाल चोईसा<br>लि. स्था. बूँदी |
| 17 × 12<br>14; 25 | 6–21 | ,, | 1849 | लि. क. सेवग विरधीचंद<br>लि. स्था. जालोर |
| 18 × 12<br>10; 18 | 44–132 | ,, | गु. 1898 | र. का. 1734 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 75 | 15073 (2) | नासिकेतुपुराण-भाषा | नंददास |
| 76 | 14340 (3) | ,, | |
| 77 | 14477 (1) | ,, | जनदयाल शिष्य जगन्नाथ |
| 78 | 14408 (7) | ,, | |
| 79 | 14960 (3) | ,, | जनदयाल |
| 80 | 12703 | नासिकेत-राजारी कथा | |
| 81 | 14257 | नासिकेतोपाख्यान-भाषा | जनदयाल |
| 82 | 14468 | नासिकेतोपाख्यान-भाषा | ,, |
| 83 | 14436 | नासिकेतोपाख्यान-भाषा सचित्र | ,, |
| 84 | 14493 (2) | पांडवजग्य-भाषा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×10.5<br>13; 22 | 1–46 | पूर्ण | 1859 | पत्राङ्क 47 पर सांकेतिक लिपि की कुंजी है। |
| 24×14<br>10; 14 | 66–101 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>10; 18 | 1–90 | ,, | 881 | र. का. 1734; लि. क. पुरुषोत्तमदास<br>लि. स्था. देसणोक<br>"साध श्री मोतीरामजी ने अरपण करी" |
| 15×10<br>11; 15 | 78–94 | अपूर्ण | गु. 1781 | |
| 17×15<br>22; 22 | 158–202 | पूर्ण | गु. 1867–1871 | पत्राङ्क 202–203 पर गोविन्दाष्टक; पत्राङ्क 203–204 पर कबीरदास की रमेणियाँ तथा नैनोदास का पद है। |
| 17.5×13<br>12; 22 | 2–24 | अपूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. किसनराम दवे; लि. स्था. जालोर; अंतिम 5 पत्र जलसिक्त |
| 30.5×14<br>14; 38 | 1–33 | पूर्ण | 1878 | र. का. 1734; लि. क. मथुरादास<br>लि. स्था. नागोर-बखतसागर |
| 25×12.5<br>11; 32 | 1–51 | ,, | 1840 | लि. क. सन्तदास; लि. स्था. नागपुर |
| 33×20<br>8–14; 18 | 1–111 | अपूर्ण | 1917 | चित्र सं. 268<br>पत्राङ्क 81 वां अप्राप्त<br>लि. क. ब्राह्मण जानकीलाल |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 20–24 | पूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 85 | 14297 | पुरुषोत्तममास एकादशीरी कथा | |
| 86 | 13765 (3) | बुधाष्टमीरी कथा | |
| 87 | 12732 (1) | भंगीपुराण (शिवपुराण) | हरदास |
| 88 | 14066 (6) | भगवतगीतारी टीका | |
| प: 89 | 14376 (1) | भगवतगीता दोहानुवाद | मलूकचन्द "लाहोरी" |
| 90 | 14360 (3) | ,, ,, सटीक | |
| 91 | 14901 | ,, भाषानुवाद | |
| 92 | 14387 (1) | ,, भाषानुवाद (कृष्णगीता) | |
| 93 | 13801 | भागवत-एकादशस्कन्ध-भाषा | चतुरदास शिष्य संतदास |
| 94 | 14481 (1) | ,, ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 27×13<br>12; 24 | 2–64 | अपूर्ण | 1934 | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 22×16<br>24; 20 | 3–9 | पूर्ण | 1780 | लि. क. हरजी गौड़<br>लि. स्था. मेड़ता |
| 21×16<br>17; 35 | 1–16 | ,, | 1857 | लि. क. लक्ष्मीविजय<br>लि. स्था. लोहिणा; जलसिक्त<br>पत्राङ्क 9–10 पर सोलह सतियों के नाम, 12 महादेवजी के लिंग, 14 रत्न, 12 चक्रवर्ति, 18 पुराण आदि नाम-संग्रह है । |
| 22×16<br>19; 20 | 1–43 | ,, | 1751 | लि. क. हरजी<br>लि. स्था. जुगतारण (जैतारण) |
| 21.5×15.5<br>20; 21 | 1–46 | ,, | 1794 | र. का. 1751; लि. क. अखैराम तिवाड़ी<br>लि. स्था. मूँडवा, नागोर |
| 15.5×10<br>10; 18 | 155–287 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×10<br>7; 16 | 1–95 | ,, | 1913 | लि. क. शिवनन्द ब्राह्मण<br>लि. स्था. दुर्गापुरा<br>पत्राङ्क 95–96 पर दादू तथा सुन्दरदास के सबद हैं । |
| 13×11.5<br>9; 16 | 1–87 | ,, | 1883 | लि. क. माणकजी लालाणी<br>गुटके के प्रारम्भ में हनुमत्कवच आदि संस्कृत कृतियाँ तथा अंत में कुंभनदास का पद एवं गोपालसहस्रनाम हैं । |
| 28×11.5<br>10; 32 | 1–167 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1692 |
| 14×9.5<br>10; 17 | 1–306 | ,, | 1836 | लि. क. माहेश्वर तिवाड़ी<br>लि. स्था. नागपुरी |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 95 | 14742 (3) | भागवत-एकादश-स्कन्ध-भाषा | चतुरदास शिष्य संतदास |
| 96 | 14960 (8) | ,, ,, | ,, |
| 97 | 15094 | ,, ,, | ,, |
| 98 | 15247 | ,, ,, | ,, |
| 99 | 14478 (1) | ,, ,, | ,, |
| 100 | 14044 (2) | ,, ,, अनुक्रम-आख्यान-भाषा | हरिदास |
| 101 | 13783 | भागवत-एकादशार्थ-दीपिका | भावनादास शिष्य दामोदर |
| प: 102 | 14259 | भागवत-दशम-स्कन्ध-भाषा | नारायणदास |
| 103 | 13763 | ,, ,, | रसजानि शिष्य प्रियादास |
| 104 | 13750 | ,, ,, | |
| 105 | 13764 | भागवत-भाषा (प्रथम, अष्टम, नवम अध्याय) | हरिवल्लभ |
| 106 | 13479 | भागवत-भाषा | रसजानि |
| 107 | 14249 | भागवत-भाषा (प्रथम से तृतीय स्कन्ध) | ब्रजदासी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>11; 19 | 270–473 | पूर्ण | 1833 | लि. क. तुलसीदास<br>लि. स्था. नौलगढ़ |
| 17×15<br>21; 19 | 415–561 | अपूर्ण | 1871 | पत्र अस्त-व्यस्त |
| 25.5×15<br>13; 28 | 1–145 | पूर्ण | 1774 | लि. क. मथेन कुशला; लि. स्था. शाकंभरी<br>अंत में श्रीकृष्ण संबंधी पद हैं। |
| 21.5×13<br>16; 34 | 1–96 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15×9.5<br>9; 15–19 | 3–351 | ,, | 20 वीं श. | प्रति जीर्ण |
| 22×13.5<br>26; 14 | 60–84 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×17<br>10; 22 | 1–189 | ,, | 1921 | लि. स्था. जोधपुर |
| 31×15.5<br>15; 40 | 1–159 | ,, | 1915 | कृष्णगढ़ के मुहणोत उग्रसेन की आज्ञा से रचित |
| 29×15<br>11; 28 | 1–144<br>1–81 | अपूर्ण | 19 वीं श. | उत्तरार्द्ध का 46 वां पत्र दो बार तथा<br>पत्राङ्क 82–123 अप्राप्त |
| 27×14<br>12; 33 | 1–248 | पूर्ण | 1907 | सुवाच्य प्रति |
| 31×13.5<br>11; 47 | 1–26<br>1–37<br>1–31 | ,, | 1828 | लि. क. वैष्णव किशोरदास<br>लि. स्था. अहिपुर |
| 30.5×15.5<br>15; 45 | 1–518<br>कुल | अपूर्ण | 1935 | लि. स्था. जोधपुर<br>सप्तम अध्याय में 22 वां पत्र अप्राप्त |
| 33×17<br>12; 30 | 1–55<br>1–29<br>1–29 | पूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 108 | 14288 | भागवतमाहात्म्य-भाषा | |
| 109 | 15229 (2) | भागवत-सार पच्चीसी | चंदलाल |
| 110 | 13781 (1) | भागौत-दर्पण | रतनूत्रीरभांण |
| 111 | 14741 (26) | भारत की महिमा (पांडवजग्य) | |
| 112 | 15093 (1) | भोगलपुराण | |
| 113 | 14081 (1) | ,, | |
| 114 | 14081 (6) | मनसावाचारी कथा | |
| 115 | 14418 (6) | ,, | |
| 116 | 14290 | माघमाहात्म्य कथा | |
| 117 | 14960 (4) | मारकंडेयपुराण-भाषा | दामोदर |
| 118 | 15248 | ,, | |
| 119 | 14388 (7) | रामनवमीरी कथा | |
| 120 | 15613 (8) | रासपंचाध्यायी-भाषा | नंददास |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि सम्वत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33.5×17<br>12; 35 | 1–36 | पूर्ण | 1880 | पद्मपुराण-उत्तरखण्डगत |
| 26.5×12.5<br>9; 30 | 1–7 | " | 1880 | र. का. 1854 |
| 27×18.5<br>29; 18 | 1–139 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 2 अप्राप्त; जीर्ण एवं त्रुटित 27 वें अध्याय तक |
| 13.5×10.5<br>12; 20 | 492–497 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×16<br>13; 16 | 2–12 | अपूर्ण | " | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 16×12<br>10; 19 | 1–24 | पूर्ण | गु. 1890 | |
| 16×12<br>11; 20 | 1–14 | " | " | |
| 12×11<br>8; 15 | 75–103 | " | 19 वीं श. | |
| 31×13.5<br>15; 48 | 1–12 | " | 19 वीं श. | पद्मपुराणगत |
| 17×15<br>22; 22 | 87–158 | अपूर्ण | गु. 1867<br>1871 | र. का. 1688; जीर्ण पत्राङ्क 136, 138–157 अप्राप्त |
| 21.5×12.5<br>16; 32 | 1–68 | पूर्ण | 19 वीं श | प्रारंभ में वाजीद कृत 'गुनराज-कीरत कथा' है। |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 12–22 | " | 1936 | लि. क. भरतदास |
| 17.5×13<br>24; 34 | 11–16 | " | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 121 | 14283 | रासपंचाध्यायी-भाषा | नंददास |
| 122 | 13339 (2) | वासिष्ठसार गीता-भाषा | नरहरिदास बारठ |
| 123 | 14370 (5) | शनीश्चरजीरी कथा | जोरावरमल सुत हुकमराय |
| 124 | 14365 (3) | ,, | ,, |
| 125 | 13508 (3) | ,, | आसकरण |
| 126 | 14081 (4) | ,, | जोरावरमल |
| 127 | 14342 (1) | ,, | |
| 128 | 14365 (3) | ,, | ,, |
| | 14404 (8) | ,, | |
| 129 | | | |
| 130 | 14418 (4) | शनिश्चरजीरी कथा | |
| 131 | 14424 (3) | ,, | जोरावरमल |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10.5×9<br>9; 14 | 1–49 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 20×14<br>12; 27 | 1–52 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1677 |
| 21×15<br>11; 16 | 110–126 | ,, | 1927 | र. का. 1824<br>लि. क. मथुरादास<br>पत्राङ्क 127 से 132 पर पहाड़े तथा संतदास आदि की साखियाँ हैं। |
| 15×10.5<br>10; 15 | 1–22 | ,, | 1888 | र. का. 1824 |
| 12×16<br>6; 13 | 2–79 | अपूर्ण | 1905 | लि. क. नथमल सुखदानोत<br>लि. स्था. छावनी-ब्यावर |
| 16×12<br>11; 19 | 30–43 | ,, | गु. 1890 | पत्राङ्क 27–29 अप्राप्त |
| 21×14.5<br>14; 15 | 1–10 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 10–11 पर स्फुट कवित्त तथा 12–19 पर औषधि संग्रह है। |
| 15×10.5<br>10; 15 | 83–104<br>(1–22) | ,, | 20 वीं श. | |
| 15×11<br>9; 11 | 219–226 | ,, | 1950 | लि. क. पूनमचंद<br>पत्राङ्क 226–227 पर संवत् 1955 में मुनिमहाराज के आगमन की टीप है। |
| 12.5×11<br>8; 15 | 42–51 | ,, | 1855 | |
| 13×10.5<br>7; 12 | 22–67 | ,, | 1925 | लि. क. दोलतराज<br>सुधारकर्ता-लिछमण |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 132 | 14676 (1) | शिवरात्रिरी कथा सचित्र | |
| 133 | 14756 (4) | शिवरात्रिरी व्रत कथा | |
| 134 | 13769 (8) | संकटचोथि कथा | |
| 135 | 13492 (1) | सूरजपुराण-माहात्म्य | |
| 136 | 14081 (7) | सोमवती-अमावस्यारी क | |
| 137 | 14676 (6) | स्वर्गारोहण | |
| 138 | 13762 | स्वरूपनिर्णय | |
| 139 | 13339 (1) | हस्तामल शिवगीता | |
| 140 | 13765 (2) | होलीरी उतपतरी कथा | |
| 4 इतिहास | | | |
| 141 | 14079 (2) | अठारे-सूबारी विगत | |
| 142 | 15637 (3) | ऊदाउगमणाउतरी वार्ता | |
| 143 | 13976 (1) | ओसवालों के कुलगुरुओं की वही बापनागौत्र | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21.5 × 12.5<br>11; 24 | 1–27 | पूर्ण | 1848 | चित्र संख्या-4 |
| 24 × 15<br>35; 24 | 44–46 | ,, | 1811 | लि. क. आत्माराम भीमा<br>पत्राङ्क 46–47 पर पंचाख्यान के स्फुट श्लोकों की भाषा है। |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 59–66 | ,, | 1707 | लि. स्था. केलवा<br>एक ओर लिखित पत्र |
| 19.5 × 18<br>14; 12 | 84–102 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अध्याय 2 से 12 वें तक |
| 16 × 12<br>11; 20 | 14–23 | पूर्ण | गु. 1890 | |
| 21.5 × 12.5<br>11; 24 | 69–83 | ,, | 1848 | संस्कृत में है।<br>चित्र सं.-2 |
| 27.5 × 19.5<br>16; 17 | 2–27 | अपूर्ण | 1918 | तैलसिक्त; पत्राङ्क 1, 14 वां अप्राप्त<br>लि. क. आदिगौड ब्राह्मण लक्ष्मण |
| 20 × 14<br>12; 26 | 1–35 | ,, | 19 वीं श. | अंत में सप्तश्लोकी-भागवत का एक सटीक श्लोक है। |
| 22 × 16<br>19; 18 | 1–3 | पूर्ण | 1780 | लि. क. गुलाल<br>लि. स्था. मेड़ता |
| 14 × 13.5<br>13; | 1–6 | ,, | 1790 | लि. क. भंडारी खींवराज वछराजोत |
| 32 × 20.5<br>32; 26 | 337–345 | ,, | 20 वीं श. | "नैणसी री ख्यात से" |
| 88'.6" × 13.5" | खरड़ा | ,, | 19 वीं श. | विद्याधर शाखा के रत्नप्रभसूरि की वंदना से प्रारम्भ; दोनों ओर लिखित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 144 | 13976 (2) | ओसवालों के कुल गुरुओं की बही ,, टेहगौत्र, अभड़गौत्र | |
| 145 | 13976 (3) | ,, चोरडियागौत्र | |
| 146 | 13976 (4) | ,, करणावटगौत्र | |
| 147 | 13976 (5) | ,, वाघमारगौत्र | |
| 148 | 13976 (6) | ,, तातैड़गौत्रादि | |
| 149 | 13976 (7) | ,, देसरलागौत्र, भटवरा-गौत्रादि | |
| 150 | 13976 (8) | ,, कुम्भटगौत्र, वाघचारगौत्र आदि | |
| 151 | 13976 (9) | ,, भाइगौत्र, चीचटगौत्र, भुरगौत्र, करणावट गौत्र एवं इनकी शाखाएं | |
| 152 | 13976 (10) | ,, तातैड़ एवं बापणा गौत्रादि | |
| 153 | 15637 (9) | कछवाहांरी तवारीख | |
| 154 | 15650 (23) | कनौज के गहरवालों के दान पत्र—राजा मदनपाल का दानपत्र | |
| 155 | 15637 (15) 5 | क्यांमखांनियांरी उतपतिरी और जूंझणू फतेपुर वसायो तिणरी विगत | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 71'.3"×12" | खरड़ा | पूर्ण | 1820 | सभी खरड़ों का माप फुट एवं इंचों में है। |
| 149'.10"×11" | ,, | ,, | 18 वीं श. | जीर्ण |
| 19'.10"×14" | ,, | ,, | 19 वीं श. | 'वां. मूलचंदजी-खींवराजजी खींवसररा री छै' |
| 12'.6"×13" | ,, | ,, | 1912 | जीर्ण |
| 79'.3"×15" | ,, | ,, | 19 वीं श. | |
| 64'.4"×13.5" | ,, | ,, | ,, | जीर्ण |
| 79'×11.5" | ,, | ,, | 1785 | लि. क. हरकिशन शिष्य दयारत्न जीर्ण-खंडित |
| 100'×12" इ. | ,, | ,, | 18 वीं श. | अत्यन्त जीर्ण एवं खंडित |
| 107'×12" | ,, | ,, | 18 वीं श. | ,, |
| 32×20.5 32; 28 | पृ० 1–19 | ,, | सन् 1916 | लि. क. सेवक देवराज इस ग्रन्थाङ्क की सम्पूर्ण कृतियों का पूर्वलिपिकर्ता सिंहथल का वीठू पना है; तथा समस्त कृतियां 'नैणसी री ख्यात' से संगृहीत हैं। |
| 32.5×22.5 29; 22 | 65–67 | ,, | 20 वीं श. | संस्कृत में है। सं. 1153 का, वाराणसी में प्राप्त, प्रकाशित। |
| 32×20.5 32; 26 | पृ० 349–350 | ,, | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात से' पृ. 351–352 पर दौलताबाद के उमरावों की बात है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 156 | 15644 (7) | खंडेलारा निरवाणरी हकीकत | |
| 157 | 15637 (14) 3 | खेतसी-रतनसिहोतरी अर सीसोदिया चूँडा-रतनसीहरी वात | |
| 158 | 15637 (6) | गढबंधवरा धणियांरी वात | |
| 159 | 15637 (14) 4 | गुजरात देश-वर्णन | |
| 160 | 15637 (14) 6 | गोगादे-वीरमदेश्रोतरी अर रावजी गांगाजीरी वारता | |
| 161 | 15637 (15) 2 | चन्द्राउतारी वारता | |
| प: 162 | 13725 (1–10) | छत्तीस-राजकुली आदि संग्रह | |
| 163 | 15648 (1) | जैतावतांरी ख्यात— जैतावत भगवानदासोतरीविगत | |
| 164 | 15648 (2) | ,, जैतावत गोइंदासोतरी विगत | |
| 165 | 15648 (3) | ,, जैतावत जगनाथसिंघोतरी विगत | |
| 166 | 15648 (4) | ,, जैतावत कुंभकरणोतरी विगत | |
| 167 | 15648 (5) | ,, जैतावत देईदासोतरी विगत | |
| 168 | 15649 (2) | जैतावतांरी ख्यात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33.5×20.5<br>35; 21 | पृ० 272–273 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ० 224–229 | ,, | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20.5<br>35; 22 | पृ० 79–81 | ,, | ,, | ,, |
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ० 229–231 | ,, | ,, | ,, पृ० 232 पर "मकवाणाँ रजपूत झाला कहलाणा" री विगत है। |
| 32×20.5<br>31; 26 | पृ० 246–250 | ,, | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20.5<br>32; 26 | पृ० 329–337 | ,, | ,, | ,, ; प्रतिलिपि—रामकरण आसोपा की पुस्तक से |
| 28×12.5<br>14; 44 | पृ० 1–16 | ,, | 1994 | लि. क. वनमाली रामचन्द्र<br>लि. स्था. नागोर |
| 26.5×21<br>16; 12 | पृ० 1–76 | ,, | सन् 1917 | पूरी जिल्द महाजनी-लिपि में है। |
| 26.5×21<br>20; 15 | पृ० 1–30 | ,, | ,, | |
| 26.5×12<br>20; 15 | पृ० 31–53 | ,, | ,, | |
| 26.5×21<br>19; 18 | पृ० 1–23 | , | ,, | |
| 26.5×21<br>22; 18 | पृ० 1–3<br>पृ० 1–80 | ,, | ,, | |
| 31.5×24<br>16; 24 | पृ० 1–172 | ,. | 1950 | राव रिड़मल की वार्ता से प्रारम्भ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 169 | 15637 (14) 2 | जैसलमेररी वारता | |
| 170 | 15637 (14) 9 | जैमल-वीरमदेग्रोत ग्रर राव-मालदेवरी वारता | |
| 171 | 15637 (14) 16 | जोधपुर-राजावांरी तवारीख | |
| 172 | 14462 (2) | जोधपुररा परगनारी विगत गाँव-रेख वार | |
| 173 | 15637 (13) | झालाँरी वंशावली (मेवाड़रा झालारी ख्यात) | |
| प: 174 | 15643 | ठिकाँणा,झीथड़ा,परगना-सोजतरी ख्यात | नरसिंहदास शिष्य भागवतदास |
| 175 | 15647 (8) | तवारीख दिल्लीरी पातसाहीरे समैरी | |
| 176 | 15647 (6) | तवारीख पड़िहारांरी | |
| 177 | 15637 (4) | दहियांरी वात | |
| 178 | 15637 (2) | देवलियांरे धणियाँरी वात | |
| 179 | 15295 (4) | नरबदरी नै नरसिंह-सींदलरी वात | |
| 180 | 15637 (14) 12 | नरबद-सतावत सुपियारदे नें लाया तिण समयरी वात; नरबद-सतावत राणांजी ने ग्राँख दीधी तिण समयरी वात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ० 211–224 | अपूर्ण | 20 वीं श. | दूदा-जोधाउतरी वात तक है। 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 270–274 | पूर्ण | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से; खंडित |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 319–322 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 35×26<br>29; 12–28 | 4–16 | ,, | 20 वीं श. | 'मारवाड़रा-परगनारी विगत' मे |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 146–149 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसीरी ख्यात' से; "संवत् 1722 में आढा चारण महेशदास लिख मेल्ही" |
| 25.5×17<br>18; 15 | 1–117 | ,, | सन् 1954 | बोड़ा आसकरण की सहायता से निर्मित |
| 33×20<br>32; 20 | पृ० 335–356 | ,, | सन् 1914 | 'जहांगीर सूं राजा आय मिलिया तिण समयरी'; 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20<br>32; 26 | पृ० 340–349 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20<br>35; 22 | पृ० 76–77 | ,, | 20 वीं श. | ,, |
| 32×20.5<br>35; 25 | पृ० 56–60 | ,, | ,, | ,, |
| 25.5×23<br>24; 28 | 26–29 | ,, | 19 वीं श- | |
| 32×20<br>32; 28 | 285–289; 289–291 पृ० | ,, | 20 वीं श. | ,, |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 181 | 15637 (14) 8 | नरा-सूजाउत राठौड़ अर खींवसी पोकरणौरी वार्ता | |
| 182 | 15644 (8) | परगनारी हकीकत (भंडारी फोजचंदजोरी बही) | |
| 183 | 15647 (2) | पवाँरारी तवारीख | |
| 184 | 15637 (11) | ,, ,, | |
| 185 | 15637 (14) 5 | पाबूजीरी वारता | |
| 186 | 15656 (2) | पिरोयतजीरी तवारीखरी नकल (महाराजा गजसिंहजीरी ख्यात) | |
| प: 187 | 15644 (2) 1–54 | पीढियांरी विगत तथा स्फुट गीत संग्रह | |
| 188 | 15671 | बांकीदासजीरी ख्यात का तर्जुमा | मू॰ वांकीदास<br>त॰ श्यामकरण दाधीच |
| 189 | 15644 (3) | बाहड़मेररी वात | |
| 190 | 15642 | बीकानेररी ख्यात | |
| 191 | 15637 (5) | वुन्देलारी वात | |
| 192 | 15647 (7) | बूंदीरी तवारीख | |
| 193 | 15637 (3) | बूंदीरा धणियांरी ख्यात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ० 261–270 | पूर्ण | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 33.5×20.5<br>35; 12–12 | पृ० 273–285 | ,, | ,, | परगना-अमरसर, मानगढ, वैराट, बत्तीसा, मनोहरपुर, उदयपुर आदि । |
| 33×20<br>32; 26 | पृ० 2–16 | ,, | सन् 1914 | पूर्व लि. क. किशोरदान बारठ 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 2–15 | ,, | 20 वीं श. | ,, |
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ० 232–246 | ,, | 20 वीं श. | ,, |
| 33×21<br>18; 16 | पृ० 1–45 | पूर्ण | 19 वीं श. | संवत् 1676 से 1691 तक |
| 33.5×20 5<br>35; 16 | पृ० 173–192 | ,, | 20 वीं श. | समग्र सूची परिशिष्ठ में देखें |
| 22.5×27.5<br>16; 18 | पृ० 1–725 | ,, | ,, | पृ०1–112 तक प्रारंभ में बृहत् सूची-पत्र है। जिसमें 1660 वातों का विवरण है। |
| 22.5×27.5<br>35; 19 | पृ० 253–260 | ,, | ,, | |
| 27×21<br>15; 14 | पृ० 1–604 | ,, | ,, | राव जोधाजी से अनूपसिंहजी तक |
| 32×20.5<br>35; 22 | पृ० 77–79 | ,, | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20<br>32; 26 | पृ० 350–354 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसी री ख्यात' से पृ. 354 पर क्यामखांनी राजपूतों की वार्ता है । |
| 32×20.5<br>35; 22 | पृ० 60–74 | पूर्ण | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात से' |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 194 | 15637 (15) 4 | बूँदीरी वारता | |
| 195 | 15656 (3) | भंडारी फोजचंदजीरी तवारीखरी नकल (महाराजा रामसिंहजी री ख्यात) | |
| 196 | 15637 (12) | भाटियांरी ख्यात | |
| 197 | 16647 (3) | ,, तवारीख | |
| 198 | 15636 | भाद्राजणरी तवारीख | |
| 199 | 14836 (3) | भारमल-कंवरसी सांखलारी वात | |
| 200 | 15637 (8) | भायलां रजपूतांरी ख्यात | |
| 201 | 13737 (9) | भीनमाल माहे तर्थांरी विगत | |
| 202 | 15662 | महक्मा तवारीख जोधपुररी मिसलां रो ब्यौरो | |
| 203 | 15638 | महाराजा अजीतसिंहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा | |
| 204 | 15663 | ,, ,, प्रथम भाग | |
| 205 | 15664 | ,, ,, द्वितीय भाग | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×20.5 32; 26 | 345–349 पृ० | पूर्ण | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 33×21 22; 16 | पृ० 1–81 | ,, | सन् 1924 | ग्रन्थाङ्क 15644 पर भी भंडारी फोजचंदजीरी तवारीख की पूरी नकल 310 पृष्ठों में है। |
| 32×20.5 32; 28 | पृ० 16–146 | ,, | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से; 'जेसलमेर देशरी हकीकत वीठलदास लिखाई।' |
| 33×20 22; 26 | पृ० 17–149 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसीरी ख्यात' से; पृ. 145–149 पर झालाओं की तवारीख भी है। |
| 27×20 15; 15 | पृ० 1–440 | ,, | 20 वीं श. | |
| 32×22 27; 22 | 1–41 | ,, | 19 वीं श. | चित्र बनाने के लिए स्थान रिक्त |
| 32×20.5 32; 28 | पृ० 107–144 | पूर्ण | सन् 1916 | लि. क. सेवग देवराज 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 21.5×14.5 13; 24 | 1–2 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 3 पर अपूर्ण दुर्गाआख्यान तथा 4 पर बिच्छूरो झाड़ो है। |
| 32×24.5 19; 24 | 2–58 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1, 57 अप्राप्त; क्रम संख्यां 9 से 750 मिसलों की विगत है। |
| 32×24.5 20; 28 | 1–26 | ,, | 20 वीं श. | संवत् 1735–36 तक का वर्णन है। |
| 27.5×21.5 15; 17 | पृ० 1–220 | पूर्ण | 20 वीं श. | संवत् 1735–39 तक का वर्णन है। |
| 27×22 15; 12 | पृ० 221–402 | ,, | सन् 1893 | 1740 से देवलिया आने तक का हाल है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 206 | 15665 | महाराजा अजीतसिंहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा—तृतीय भाग | |
| 207 | 15659 | महाराजा अभयसिंहजीरी ख्यात का हिन्दी तर्जुमा | |
| 208 | 15632 | महाराजा अभयसिंहजीरे राजरी कार्यवाहीरी ख्यात | |
| 209 | 15670 | ,, उदयसिहजी 'मोटाराजारी' ख्यातरो हिन्दी तर्जुमो | |
| 210 | 15656 (4) | ,, गजसिंहजीरी ख्यात | |
| 211 | 15633 | ,, गजसिंहजीरी ख्यातरो हिन्दी तर्जुमो | |
| 212 | 15666 | ,, ,, ,, | |
| 213 | 15656 (1) | ,, ,, ,, (माफीजरा खरड़ारी नकल) | |
| 214 | 15654 (6) | ,, जसवंतसिंहजीरी ख्यात | |
| 215 | 15661 | ,, ,, (महकमा-तवारीखरा खरड़ारो हिन्दी तर्जुमो) | |
| 216 | 15634 | महाराजः श्री जसवंतसिंहजी धाम पधारचा जठासु लगाय अर मान-सिंहजी टीके बैठा जठा तांईरी फुटकर बातांरी विगत | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. सम्वत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 27×22 16; 13 | पृ॰ 403–585 | पूर्ण | सन् 1893 | |
| 27.5×21 15; 11 | पृ॰1–317 | ,, | 19 वीं श. | संवत् 1759 से 1805 तक |
| 32.5×24 20; 26 | 1–60 | ,, | 20 वीं श. | ठिकाणां नींवाजरी वहीरी नकल; संवत् 1759–1809 तक |
| 27×22 13; 9 | पृ॰ 441–512 | ,, | सन् 1892 | संवत् 1594–1671 तक |
| 33×21 21; 15 | पृ॰1–28 | ,, | 19 वीं श. | संवत् 1676–1694 तक |
| 32.5×25 21; 34 | 1–76 | ,, | 20 वीं श. | संवत् 1652–1735 तक |
| 27.5×22.5 17; 11 | पृ॰1–211 | ,, | सन् 1891 | |
| 33×21 16; 15 | पृ॰1–99 | ,, | 19 वीं श. | संवत् 1652 से 1694 तक |
| 33×21 30; 24 | पृ॰ 107–121 | ,, | सन् 1911 | अंत में आसोप ठाकुर महेशदासजी के युद्ध में काम आने का एक गीत है। |
| 27×22.5 18; 12 | पृ॰1–210 | ,, | 19 वीं श. | |
| 26×21.5 16; 22 | पृ॰ 46–335 | ,, | 20 वीं श. | प्रथम 46 पृष्ठों में 22 स्फुट विगतें हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 217 | 15644 (5) | महाराजा जसवंतसिंहजी दो परगना रो बदलो कियो तिणरी हकीकत | |
| 218 | 15644 (10) | महाराजा जपवंतसिंहजीरे समयरी विगत | |
| 219 | 15629 | ,, तखतसिंहजीरी ख्यात | |
| 220 | 15645 | ,, भीमसिंहजीरी ख्यात | |
| 221 | 15644 (4) | ,, रामसिंहजी री (आंबेर) हकीकत | |
| 222 | 15639 | ,, विजयसिंहजीरी ख्यात | |
| 223 | 15644 (11) | ,, विजयसिंहजीरा मुत्सदीनै दीवाणरी हकीकत | |
| 224 | 13090 | महिमाई वाक्य | |
| 225 | 15660 | मारवाड़री ख्यात का हिन्दी तर्जुमा | |
| 226 | 15647 (1) | मारवाड़रा धणी खेड़रा गोहिलांरी तवारीख | |
| 227 | 15637 (10) | ,, ,, | |
| 228 | 15648 (6) | मारवाड़रे गजटरो खुलासो | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33.5 × 20.5 35; 7–14 | पृ० 262–266 | पूर्ण | 20 वीं श. | संवत् 1722 की विगत है। |
| 33.5 × 20.5 35; 21–16 | पृ० 290–292 | ,, | ,, | संवत् 1722 में दिल्ली जाते समय की गई राज-व्यवस्था की विगत |
| 32 × 24.5 20; 26 | पृ० 1–255 | | ,, | संवत् 1900 से 1919 तक |
| 31.5 × 26.5 22; 32 | पृ० 1–12 | ,, | ,, | संवत् 1822–1860 तक |
| 33.5 × 20.5 29; 19 | पृ० 260–262 | ,, | ,, | अंत में मेवातरा परगनारी विगत है। |
| 31.5 × 25.5 22; 32 | 1–100 | ,, | ,, | संवत् 1786 से 1849 तक |
| 33.5 × 20.5 35; 21–16 | पृ० 292–298 | ,, | ,, | पृष्ठ 299 पर दिल्ली के पातसाहकी सरकारों का अपूर्ण ब्योरा है। |
| 24 × 12.5 9; 25 | 1–7 | ,, | 1906 | संवत् 1801–1900तककी प्रमुख घटनाए |
| 27.5 × 22.5 13; 10 | पृ० 1–236 | ,, | सन् 1942 | पृष्ठांक 110 वें पर बारह पत्रात्मक शुद्धिपत्र है। |
| 33 × 20 32; 26 | पृ० 1–2 | ,, | सन् 1913 | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32 × 20.5 32; 28 | पृ० 1 2 | ,, | 20 वीं श. | ,, |
| 26.5 × 21 13–17; 18 | पृ० 442–818 | ,, | सन् 1917 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 229 | 15646 | मारवाड़रै परगनारी विगत | मुँहता नैणसी |
| 230 | 15644 (1) | मालोजी सलखावत सूं महाराजा भीमसिंहजी तांईरी हकीकत | |
| 231 | 15637 | मुँहता-नैणसीरी ख्यात | " |
| 232 | 15647 | " " | " |
| 233 | 15635 | मूंदियाड़री ख्यात (राठोड़ांरी ख्यात) | |
| 234 | 15637 (14) 14 | मोहिलांरी वार्ता, छतीसराजकुली, परमारांरी वंशावली, राठोड़ारी वंशावली, (बीकानेर) | |
| 235 | 14642 (2) | राजावांरी विगत | |
| 236 | 15650 (1-47) | राठोड़ाँरा दांनपत्राँरी नकलां | |
| 237 | 15649 (1) | राठोड़ा में खाँप धांधलारी ख्यात | |
| 238 | 15672 | राठोड़ारी ख्यात—मुरारिदानजी की ख्यात रो हिन्दी तर्जुमो | त० श्यामकरण दाधीच |

| माप, से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×24.5<br>20; 8/22 | पृ०1–722 | पूर्ण | सन् 1905 | |
| 33.5×20.5<br>35; 28/12 | पृ०1–169<br>पृ० 193–253 | ,, | 20 वीं श. | 'भंडारी फोजचंदजीरी पुस्तकरी नकल' |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ०1–367 | ,, | 20 वीं श. | |
| 32×20<br>32; 26 | पृ०1–365 | अपूर्ण | सन् 1914 | |
| 32×20.5<br>32; 22 | 1–369 | पूर्ण | 20 वीं श. | अत्यन्त जीर्ण |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 292–305 | ,, | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से; पृ. 305–311 पर जोधपुर बीकानेर श्रीदरबार पाट विराजिया तिणरीविगत, जोधपुररी पीढियां तथा दिल्ली राजा हुआ तिकांरी विगत है। |
| 25×17<br>17; 28 | 94–99 | ,, | ,, | संवत् 809 अनंगपाल से 1598 तक की प्रमुख घटनाएं। |
| 32.5×20.5<br>28; 22 | पृ०1–159 | ,, | ,, | राष्ट्रकूट राजाओं के दानपत्रों की ये नकलें गोरीशंकर हीराचंद ओझा ने महक्मा-तवारीख, जोधपुर, को भेजी थी। प्रारम्भ में विस्तृत सूची पत्र है। सभी दानपत्र इण्डियन एन्टीक्वेरी भा. 18 आदि में प्रकाशित हैं। |
| 31.5×24<br>16; 24 | पृ०1–192 | ,, | 1950 | पृ. 193–196 जेतावतों की ख्यात में सिल दिए गए हैं। |
| 33×26.5<br>18; 20 | पृ०1–688 | ,, | 19 वीं श. | पृ. 665–666, 675–676 अप्राप्त; प्रारम्भ के 18 पृष्ठों में फुटकर बातें व दोहे कवित्तादि हैं। अंतिम पत्र अप्राप्त। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 239 | 15658 | राठोड़ांरी ख्यात (मुरारिदांनजीरी ख्यात) | |
| 240 | 15640 | ,, | |
| 241 | 15647 (4) | राठोड़ांरी तवारीख | |
| 242 | 15637 (14) | ,, | |
| 243 | 15637 (15) | ,, बीकानेर रा राजा अर सरदारांरी ठिकाणां-वार पीढियाँ अर जोधपुर उमरावाँरी पीढियाँ | |
| 244 | 14462 (4) | राठोड़ांरी वंशावली | |
| 245 | 14462 (1) | राठोड़ांरी वंशावली | |
| 246 | 15669 | रावचन्द्रसेन-मालदेवोतरी ख्यात | |
| 247 | 15668 | राव मालदेवजीरी ख्यात | |
| 248 | 15667 | ,, ,, ,, | |
| 249 | 15637 (14)11 | राव रिणमलजीरी वार्ता | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×24.5<br>12; 14 | पृ॰ 1–660 | अपूर्ण | 19 वीं श. | जीर्ण |
| 32×25<br>20; 24 | 1–17 | पूर्ण | 20 वीं श. | प्रारम्भ में सूची-पत्र है । सीहाजी सूं वीरमदेवजी तक |
| 32×20<br>32; 26 | पृ॰ 149–334 | „ | सन् 1914 | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20.5<br>31; 28 | पृ॰ 149–221 | „ | 20 वीं श. | „ |
| 32×20.5<br>32; 24 | पृ॰ 323–328 | „ | „ | „<br>रामकरण आसोप की पुस्तक से |
| 35×26<br>29; 28 | 32–87 | „ | „ | महाराजा अजीतसिंह तक । अंत में संवत् 1850 की पाली में अमल करने की विगत है । |
| 35×26<br>29; 12 | 1–13 | अपूर्ण | „ | पत्राङ्क 13–16 पर तुर्की पातशाहों के नाम तथा सूबों का ब्योरा है । |
| 27×32<br>13; 9 | पृ॰ 353–440 | पूर्ण | ई॰ 1893 | हिन्दी तर्जुमा |
| 27×32<br>13; 9 | पृ॰ 241–351 | „ | ई॰ 1891 | , |
| 27.5×22<br>14; 9 | पृ॰ 1–59 | „ | 19 वीं श. | „ |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ॰ 278–285 | „ | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 250 | 14370 (3) | राव रिणमलजीरी वार्ता | |
| 251 | 15652 | राव सीहाजी से राव कान्हड़देवजी तक तवारीखरा खरड़ांरी नकलां | |
| 252 | 15637 (14) 13 | राव लूणकरणजो (बीकानेर) री वार्ता | |
| प: 253 | 15654 (9) | रूपक—सिवदानसिंह भारथसिंघोत जोधा केसरी सिंघोतरो | वारठ लालेजी |
| 254 | 15637 (4) | वागडिया चहुआणांरी ख्यात | |
| 255 | 15693 (56) | वोड़ा वीरमदे के फरमान पत्र की नकल | |
| 256 | 13682 | श्रीमालियांरा अवंट-गोत्र | |
| 257 | 15637 (15) 6 | संयमराव राठोड़री वार्ता | |
| 258 | 15647 (9) | ,, ,, रै पुत्र मूलराज री वीरताईरी तवारीख | |
| 259 | 15637 (7) | सीरोहीरा धणियांरी ख्यात | |
| 260 | 15637 (1) | सीसोदियांरी ख्यात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×15<br>9; 16 | 88–106 | पूर्ण | 19 वीं श. | 'नैणसी री ख्यात' से |
| 33×21<br>21; 24 | पृ०1–164 | ,, | सन् 1926 | लि. क. बारठ नरहरदास<br>12 विभिन्न ग्रन्थों से संगृहीत |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 291–<br>292 | ,, | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×21<br>30; 24 | 145–168 | ,, | सन् 1911 | लि. क. बारठ जैतदान |
| 32×20.5<br>35; 22 | पृ० 74–<br>75 | ,, | 20 वीं श. | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 25.5×15.5<br>20; 38 | 199 वां | ,, | 17 वीं श. | संवत् 1647 का |
| 22×10.5<br>10; 26 | 1 | ,, | 20 वीं श. | |
| 32×20.5<br>32; 26 | पृ० 352–<br>367 | ,, | ,, | 'नैणसीरी ख्यात' से |
| 32×20<br>32; 26 | 356–365 | ,, | सन् 1914 | 'नैणसी री ख्यात' से |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ०81–106 | ,, | 20 वीं श. | ,, "संवत् 1721 में आडै महेसदास लिख मेल्ही" |
| 32×20.5<br>35; 22 | पृ० 1–54 | ,, | सन् 1916 | 'नैणसी री ख्यात' से; पृ. 54-55 पर गहलोत, पँवार, चहुआण, पडिहार व सोलंकियों की शाखाओं के नाम हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 261 | 15647 (5) | सीसोदियांरी तवारीख | |
| 262 | 15033 (2) | सीहाजीरी पीढियांरी विगत | |
| 263 | 15637 (14) 10 | सोहा सींधलरी वार्ता | |
| 264 | 15649 (3) | सुजाणसिंहोतरी ख्यात | |
| 265 | 15644 (6) | सेखावतां (कछवाहां) री हकीकत | |
| 266 | 15637 (14) 15 | सेतराम-वरदाईसेनोतरी वार्ता | |
| 267 | 15644 (12) | स्फुट विगत संग्रह | |
| 268 | 14462 (3) | हकीकत संग्रह | |
| प: 269 | 15653 | हफत-गुलशननामां तारीख की संक्षेप-भाषा | मू० कामरखाँ |
| 270 | 15637 (14) 7 | हरदास ऊहड़ आदिरी वार्ता | |
| 271 | 15644 (9) | हुमायु अर कछवाहा जेता-दुरगावत नै रायमल-सेखावतरी वेढ हुई तिणरी विगत | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33×20<br>32; 26 | पृ० 334–340 | पूर्ण | सन् 1914 | 'नैणसी री ख्यात' से |
| 17×13.5<br>12; 16 | 8–10 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 10–12 पर पातशाह के सूबों का ब्यौरा है । |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 274–278 | ,, | ,, | 'नैणसी री ख्यात' से |
| 31.5×24<br>14; 19 | पृ०1–73 | ,, | 1950 | संवत् 1732 से प्रारम्भ |
| 33.5×20.5<br>35; 21 | पृ० 266–271 | ,, | 20 वीं श. | 'नैणसी री ख्यात' से |
| 32×20.5<br>32; 28 | पृ० 311–318 | ,, | ,, | ,,<br>पृ. 318–319 पर बीकानेर के राजाओं के नाम तथा सतियों के नाम हैं । |
| 33.5×20.5<br>35; 29 | पृ० 300–304 | ,, | ,, | विगत—गुसांईजीकी, किशनगढ़की, सांभरकी,गढ निर्माणकी, मुंहणोतों की |
| 35×26<br>29; 28 | 16–31 | ,, | ,, | पीढियाँ–मेवाड़री भाटियांरी, देवड़ारी. मोहिलाँरी, सींधलवाटीरी, सोलंकियारो, अकबर रा प्रवाडा, औरंगजेबरा प्रवाड़ा आदि । |
| 21×16<br>19; 15 | 2–125 | अपूर्ण | 1876 | फारसी से जयपुरी भाषा 'ढूंढाड़ी' में अनूदित; प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 32×20.5<br>31; 26 | पृ० 250 261 | पूर्ण | 20 वीं श. | राव मालदेवजी तथा वीरमदेवजीरी वार्त्ता भी है । |
| 33.5×20.5<br>35; 21 | पृ० 285–289 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 5 (1) ऐ० का० | | | |
| 272 | 15654 (10) | अजीतग्रन्थ (पुष्कर-युद्ध-खण्ड) | ईसरदास बारठ |
| 273 | 14463 (11) | अजीतसिंहजी रा दूहा | जगाजी |
| 274 | 14079 (6) | अजीतसिंहजी रो छन्द | |
| 275 | 13515 (3) | अभैविलास | पृथ्वीराज सांदू |
| 276 | 12709 (3) | उदयपुररी गज़ल | कवि खेतल |
| 277 | 13518 (3) | कवित्त अभैसिंहजीरा (अहमदाबादरै युद्धरा) | बखता खड़िया |
| 278 | 15654 | ,, ,, | ,, |
| 279 | 13516 (2) | ,, ,, | ,, |
| 280 | 13784 (20) | कवित्त किशोरसिंहजी के | कृपाराम |
| 281 | 15644 (13) | कवित्त, गीत आदि | पीथल; चारण सिंभूदान |
| 282 | 14437 (3) 9 | कवित्त छत्तीस वंश का | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| | | पूर्ण | | |
| 33×21 26; 24 | पृ० 171–198 | „ | सन् 1911 | र. का.1711;संग्रहकर्त्ता–बारठ किशोरदान अंत में सम्पूर्ण जिल्द का सूचीपत्र है । |
| 20×16.5 19; 26 | 78–80 | „ | 19 वीं श. | |
| 14×13.5 11; 18 | 15–16 | अपूर्ण | 1808 | पत्राङ्क17–30 चारणों की देवी की स्तुति, राजावां रे जनमरी विगत, दिल्लीरा पातसाहांरो ब्योरो, गढ वणावारो ब्योरो है । |
| 23×17 17; 16 | 20–29 | पूर्ण | 1860 | लि. क. सेवग मोतीराम; पत्राङ्क 17–19 अप्राप्त; प्रारम्भ के 17 छन्द नहीं हैं । |
| 23×13 15; 38 | 38–41 | अपूर्ण | गु. 1828 | |
| 22×16 20; 15 | 1–9 | पूर्ण | 19 वीं श. | 68 कवित्त हैं । |
| 32×21 28; 20 | पृ० 13–48 | अपूर्ण | 20 वीं श. | संवत् 1818 की प्रति से प्रतिलिपिकृत 166 कवित्त छप्पय हैं । |
| 22.5×16 32; 28 | 12, 13, 15, 16, 18, 19 | | 20 वीं श. | साथ के अन्य चार पत्रों पर वृन्द के दोहे तथा हरिनाम भजन माहात्य है । |
| 17×13 9; 16 | 20–21 | पूर्ण | 20 वीं श. | ये महाराजा तखतसिंह के पुत्र थे । |
| 33.5×20.5 35; 15 | 304–310 | „ | 20 वीं श. | लगभग 20 कवित्त विभिन्न घटनाओं के हैं । |
| 25×13.5 16; 17 | 169–171 | „ | 19 वीं श. | लि. क. पदमसिंह खाखड़ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 283 | 13784 (17) | कवित्त जैसलमेर महाराजा वैरीसालजीरा | कृपाराम |
| 284 | 13784 (18) | कवित्त जसवंतसिंहजीरा | ,, |
| 285 | 13784 9) | कवित्त जेसल छत्रसिंहजीरा | ,, |
| 286 | 13784 (9) | कवित्त तखतसिंहजीरा | |
| 287 | 13770 (4) 7 | कवित्त बखतसिंहजीरो | |
| 288 | 13517 (2) | कवित्त भीमसिंहजीरा | वीठू उम्मेद |
| 289 | 13511 (23) | कवित्त मलाररावरो (मल्हारराव होल्कर) | |
| 290 | 13784 (7) | ., रीवाँ बाँदूगढ महाराज विश्वनाथ कुंवर रघुनाथसिंहजी के | |
| 291 | 13654 (7) 2 | कवित्त—सतियांरा (कुशालकँवरबाई) | बारठ एजनजी |
| 292 | 13511 (18) | कवित्त सवैया (पृथ्वीराज चौहान आदि) | कवि चंद आदि |
| 293 | 13784 (3) | कवित्त हरनाथ के | हरनाथ |
| 294 | 13761 (28) | कुण्डलिया कल्याणदास रायमलोतरा | आसिया दूदा |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×13<br>9; 15 | 1–11 | पूर्ण | 20 वीं श. | 20 छन्द हैं। |
| 17×13<br>9; 15 | 12–17 | ,, | ,, | |
| 17×13<br>9; 15 | 18–19 | ,, | ,, | |
| 17×13<br>11; 16 | 1–4 | ,, | 20 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 1–28 | ,, | 1861 | पत्राङ्क 29 पर नव नाथों के नाम हैं |
| 21×17<br>16; 14 | 1–4 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 16 छन्द हैं।; वि. सं 1860 में महाराज भीमसिंह केसाथ 26 रानियों के सती होने का उल्लेख है। |
| 17×12<br>11; 19 | 78–83 | पूर्ण | ,, | |
| 17×13<br>10; 18 | 1–8 | ,, | 1916 | |
| 33×21<br>25; 18 | पृ० 127–139 | ,, | सन् 1911 | कवि ग्राम–रूपावास; देखें पूर्व प्रकाशित रा. हि. ह. लि. ग्रन्थ-सूची, भाग 3 |
| 17×12<br>9; 16 | 51–56 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×13<br>11; 15 | 1·4 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16×22.5<br>24; 18 | 16–18 | ,, | 1808 | लि. क. गुरुजी देदा; लि. स्था. जसोल |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 295 | 13778 (2) | केसरीसिंह कांधिलरी दवावैत | |
| 296 | 13778 (9) | गजगुण रूपक-बन्ध | केशोदास गाडण |
| 297 | 15641 (2) | गजसिंह गुणरूपक-वंध | ,, |
| 298 | 13520 (1) 2 | गीत—अजीतसिंहजीरो | |
| 299 | 15060 (16–18) | ,, आयसजी लाडूनाथरो | सेवग वालजी |
| 300 | 13511 (2) | ,, उदयपुर रा आसामियाँरो | |
| 301 | 14412 (3) | ,, करणीसिंहजीरो | चारण परमानंद |
| 302 | 14412 (7) | ,, ,, | चारण पृथ्वीराज |
| 303 | 13520 (1) 1 | ,, गजसिंहजीरो | |
| 304 | 15060 (2) | ,, जगतसिंहजीरो | आसिया बाँकीदास |
| 305 | 14837 (1) | ,, जगरांमजीरो | |
| 306 | 14418 (9) | ,, ठाकुरां श्रीआलमचंदजीरो | आलमचंद |
| 307 | 13509 (4) | ,, तखतसिंहजीरो | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 32×25<br>27; 24 | 3–4 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 32×25<br>30; 27 | 1–47 | अपूर्ण | ,, | प्रारम्भ के 75 छन्द एवं अन्तिमांश अप्राप्त |
| 33×21<br>21; 18 | 1–50 | पूर्ण | ,, | लेखन के बाद में शुद्ध की गई प्रति। |
| 23×17<br>21; 20 | 1 ला | ,, | 19 वीं श. | |
| 17.5×13<br>12; 15 | 16–17 | ,, | 20 वीं श. | जोधपुर वाले तीन गीत हैं |
| 17×12<br>12; 14 | 2 रा | ,, | 19 वीं श. | |
| 14×11<br>7; 16 | 62–66 | ,, | 18 वीं श. | बीकानेर वाले । |
| 14×11<br>7; 16 | 90–92 | ,, | ,, | |
| 23×17<br>21; 20 | 1 ला | ,, | 19 वीं श. | जोधपुर वाले । |
| 17.5×13<br>10; 15 | 2–4 | ,, | 20 वीं श. | जयपुर के दो गीत |
| 29.5×22.5<br>24; 22 | 1 ला | ,, | 19 वीं श. | पत्र के आरम्भ में मुगलों के सूबों की विगत है। |
| 12.5×11<br>10; 15 | 129 वां | ,, | ,, | पत्राङ्क 130–133 पर छत्तीस कारखानों, रागों और पुराणों के नाम हैं। |
| 24×17<br>13; 28 | 55 वां | पूर्ण | ,, | जोधपुर वाले; अन्त में शिवलाल के कवित्त हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 308 | 15060 (10) | गीत तखतसिंहजीरो | |
| 309 | 13519 (3) | ,, देवीसिंहजी सांमसिंघोतरो | |
| 310 | 13519 (5) | ,, ,, | |
| 311 | 13516 (1) | ,, नागोर "आपरा" घेरारौ | |
| 312 | 14463 (26) | ,, नाहरखान राजसिंघोतरो | केशोदास गाडण |
| 313 | 13511 (19) | ,, बखतसिंहजीरो | |
| 314 | 14432 (5) | ,, ,, | |
| 315 | 13520 (1) 4 | ,, बिसनसिंहजीरो | |
| 316 | 13519 (2) | ,, भंडारी भवानीदासजी दीवाणरो | |
| 317 | 13511 (53) | ,, भंडारी मानमलरो | दौलतराम |
| 318 | 13519 (4) | ,, भाद्राजण वालारो | |
| 319 | 12706 (3) 5 | ,, मानसिंहजीरो | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि सम्वत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17.5×13<br>11; 15 | 9–10 | पूर्ण | 20 वीं श. | जोधपुर वाले |
| 22×17<br>18; 16 | 36 वां | ,, | 19 वीं श. | सीकर वाले |
| 22×17<br>20; 18 | 38 वां | ,, | ,, | ,, |
| 25.5×16<br>17; 14 | 2, 5 वां | अपूर्ण | 20 वीं श | प्रारम्भ में अमरसिंह के गीत का अंतिमांश है । |
| 20×16.5<br>22; 22 | 238–240 | पूर्ण | 1763 | लि. क. जोगीदास; पत्राङ्क 237 पर 'जोगा' कृत एक गीत तथा 239–240 पर म. पृथ्वीराजकृत "दाता अर सूररो संवाद" है । |
| 17×12<br>9; 14 | 56–58 | ,, | 19 वीं श. | जोधपुर–नागोर वाले |
| 12×9.5<br>11; 13 | 22–24 | ,, | 1858 | पत्राङ्क 25–27 पर पार्श्वनाथस्तवन तथा 27–30 पर औषधादि संग्रह है । |
| 23×17<br>23; 21 | 2 रा | ,, | 19 वीं श. | |
| 22×17<br>18; 18 | 35 वां | ,, | ,, | इसी के बाद भंडारी कल्याणदास के कवित्त हैं । |
| 17×12<br>9; 14 | 226–227 | ,, | ,, | लि. क. सेवगराम; लि. स्था. जालोर |
| 22×17<br>17; 16 | 37–38 | ,, | ,, | आगे माधोसिंहजी के गीत का प्रारम्भ मात्र है । |
| 15.5×11.5<br>7; 13 | 29–30 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 320 | 12706 (5) | गीत मार्नासहजीरो | |
| 321 | 13509 (3) | ,, ,, | |
| 322 | 13670 (4) 1 | ,, ,, | |
| 323 | 13770 (2) | ,, विजयसिंहजीरो | |
| 324 | 13511 (1) | ,, ,, | |
| 325 | 13511 (15) | ,, विजयसिंहजीरो | |
| 326 | 13511 (12) | ,, विषहर | न्यालचंद नाबरिया |
| 327 | 13549 (4) | गीत-संग्रह—<br>(1) मरुधर छंद,<br>(2) देईदासरी पाढगति रो छन्द<br>(3) गीत भाटी रुघनाथसिंहरो-दिल्लीरी राड़रो<br>(4) गीत भैरवी सपंखरो-भाटी तेजसी रामावतरो<br>(5) गीत विधानीक दुरगदासरो<br>(6) गीत अजबसिंहजीरो कह्यो-<br>(7) गीत सावभड़ो अर्जुनरो<br>(8) जेतसी कूंपावतरी नीसाणी | कविखेतों |
| 328 | 14412 (10) | गीत आदि संग्रह—<br>(1) पातशाहरी नीसाणी<br>(2) जयसिंहजीरो कवित्त<br>(3) भाटी जोगीदासरी नीसाणी | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11.5<br>7; 13 | 34–35 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24×17<br>13; 28 | 54 वां | ,, | ,, | |
| 23.5×16<br>14; 32 | 18 वां | ,, | ,, | |
| 10×9<br>9; 12 | 5–6 | ,, | ,, | पत्राङ्क 6 पर जेठमल कृत "चुगली" का कवित्त है। |
| 17×12<br>10; 14 | 1–2 | ,, | ,, | |
| 17×12<br>9; 16 | 42–44 | ,, | ,, | पत्राङ्क 44–46 पर स्फुट प्रास्ताविक छन्द हैं। |
| 17×12<br>13; 25 | 35 वां | ,, | ,, | अन्त में एक कवित्त है। |
| 25×10.5<br>18; 50 | 11–12 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1749 |
| 14×11<br>7; 16 | 104–136 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| | 14412 (10) | (4) सवैयो पातसाह अकबररो<br>(5) गीत सूरजसिंहजीरो<br>(6) गीत मेहता आसकरणरो<br>(7) ,, मेहता रायमलजीरो<br>(8) ,, मेहता ठाकुरसिंहजीरो<br>(9) ,, ,, राजसिंहजीरो<br>(10) ,, ,, राव महेशदास दिल्लीपतिरी<br>(11) ,, महाराजा रायसिंहजीरो<br>(12) कवित्त मुहता श्री— ठाकुरसिंहजीरो गुण कथन<br>(13) गीत–महाराजा श्री— सुजाणसिंहजीरो<br>(14) गीत मेहता आसकरणरो<br>(15) ,, जैमल मोहणोतरो<br>(16) ,, चारण सूरताणरो कह्यो | <br><br><br><br>चारण खींवादाढाल<br><br><br><br><br><br><br><br><br>चारण दयाल<br>चारणदयाल<br>चारण सुरताण |
| 329 | 14412 (9) | गीतादि संग्रह—<br>(1) महता ठाकुरसी रा दूहा<br>(2) गीत महता पनैजीरो<br>(3) गीत महता राजसीरो | |
| 330 | 13511 (13) | गीतादि संग्रह—<br>(1) दूहा हाथियांरा<br>(2) गीत गजसिंहजीरो<br>(3) ,, अभैसिंहजीरो<br>(4) ,, बखतसिंहजीरो<br>(5) ,, विजैसिंहजीरो | |
| 331 | 15060 (14) | गीत सपंखरो–रतनसिंह महेशदासोतरो | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×11<br>7; 16 | 104–136 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 14×11<br>7; 16 | 100–104 | ,, | ,, | |
| 17×12<br>9; 16 | 36–38 | ,, | ,, | |
| | 39 वां | | | |
| | 39 वां | | | |
| | 40 वां | | | |
| | 40–41 | | | |
| 17.5×13<br>12; 16 | 13–14 | ,, | 20 वीं श. | अंत में दान विषयक गीत है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 332 | 13511 (52) | गीत सांणोर 'राजा मोलियौ आंबैर लाल" | दौलतराम |
| 333 | 13520 (1) 3 | गीत सावझ़ड़ो–हरीसिंहजीरो, चूकरा भावरो | |
| 334 | 15060 (5–7) | गीत छोटो सांणोर 'आया खड़ त्राहर असह'<br>गीत छोटो सांणोर-तखतसिंहजी रो | सेवग मगदत्त |
| 335 | 15060 (11–13) | गीत छोटो साँणोर-मानसिंहजीरो (मरसिया) | |
| 336 | 15641 (1) | गुण आठ भाषा चित्र श्रीगजसिंहजीरो | हेमकवि |
| 337 | 13769 (51) | गोगा-छन्द | |
| 338 | 14656 (14) | गोरा-बादल री वार्त्ता | जटमल नाहर धर्मसी सुत |
| 339 | 14470 (4) | " " | " |
| 340 | 13784 (12) | छन्द नाराच-महाराजा रामसिंहजीरो | सूरजमल मीसण |
| 341 | 13511 (48) | छत्रसिंह रामसिंघोतरी दवावैत | चोथे (चोथमल) |
| 342 | 15654 (7) | छप्पय सतियांरा (ऊमादे भटियाणीरा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12<br>14; 20 | 226 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 23×17<br>23; 21 | 2 रा | ,, | ,, | |
| 17.5×13<br>11; 15 | 5–9 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17.5×13<br>11; 15 | 10–12 | ,, | ,, | |
| 35.5×21<br>21; 18 | 1–49 | ,, | 19 वीं श. | शुद्ध की गई प्रति |
| 13.5×10.5<br>13; 20 | 245–246 | अपूर्ण | 18 वीं श. | 13 छन्द हैं । |
| 24×15<br>35; 24 | 68–73 | पूर्ण | 1814 | र. का. 1775; लि. क. भीमराज लि. स्था- कर्मावास; पत्राङ्क 73–77 पर उदयराज. मीरदान, खेम, कविगद, देवीदास आदि के कवित्त हैं । |
| 20×16<br>18; 24 | 5–18 | ,, | 1802 | लि. क. दोलतगिरि<br>लि. स्था. कालाउना |
| 17×13<br>9; 14 | 1–9 | ,, | 1930 | 28 छन्द हैं । लि. क. कृपाराम |
| 17×12<br>12; 20 | 211–217 | ,, | 19 वीं श. | |
| 33×21<br>26; 19 | पृ०123–125 | ,, | सन् 1911 | 13 छप्पय हैं । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 343 | 14458 | दूहा–संग्रह—<br>(1) राणिगदे सोलंकीरा<br>(2) जसाह रिधमलऊतरा<br>(3) ओढा रा<br>(4) राव परमाररा<br>(5) वणारऊतरा<br>(6) जेसै चुगलऊतरा<br>(7) गांगै डूंगरसीयोतरा<br>(8) तेजसी डूंगसीयोतरा<br>(9) काछिवा सोढारा<br>(10) सूरै मेहाऊतरा<br>(11) बीदै भाटी पूंगलीयैरा<br>(12) रांणा सांगारा<br>(13) राँणा प्रतापरा<br>(14) राउल तेजसीयोतरा<br>(15) बिजैसीरा<br>(16) गजैकुँवरऊतरा<br>(17) सांगा नगराजोतरा<br>(18) मूलवा बोचऊतरा<br>(19) विजै हरिराजोतरा<br>(20) नगै भारमलोतरा<br>(21) कापडियारा<br>(22) बीजाणंदरा<br>(23) करन लाखाऊतरा<br>(24) पाबू धांधल आसथानोतरा<br>(25) कान्हड़दे सोनिगरा रा<br>(26) ताजीमै गहलरा<br>(27) राजा मानसिंघरा<br>(28) आतमारा<br>(29) जगतसिंह मानसिंघीतरा<br>(30) राणा हमीररा<br>(31) राणा मोकलरा<br>(32) रणबटरा<br>(33) राघोदास खींवाऊतरा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति प्रत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 30×18<br>25; 18 | 26 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| | 26–27 | | | |
| | 27 वां | | | |
| | 28 वां | | | |
| | 28 वां | | | |
| | 29 वां | | | |
| | 29 वां | | | |
| | 32–33 | | | |
| | 33 वां | | | |
| | 34 वां | | | |
| | 35 वां | | | पत्राङ्क 36–37 अप्राप्त |
| | 38 वां | | | |
| | 38 वां | | | |
| | 39 वां | | | |
| | 39 वां | | | |
| | 40 वां | | | |
| | 40 वां | | | |
| | 41 वां | | | पत्राङ्क 42–43 अप्राप्त |
| | 44 वां | | | |
| | 44 वां | | | |
| | 45 वां | | | |
| | 45 वां | | | |
| | 46 वां | | | |
| | 46 वां | | | |
| | 47 वां | | | |
| | 47 वां | | | पत्राङ्क 48–49 अप्राप्त |
| | 50 वां | | | |
| | 51 वां | | | |
| | 51–52 | | | पत्राङ्क 54–55 अप्राप्त |
| | 53 वां | | | |
| | 56 वां | | | |
| | 59 वां | | | |
| | 56–59 | | | पत्राङ्क 61–77 पर अन्य स्फुट दोहे हैं । पत्र अस्त-व्यस्त हैं । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 344 | 14837 (6) | पाबूजी रा छन्द | |
| 345 | 13769 (60) | पाबूजीरा छन्द | |
| 346 | 15087 | पृथ्वीराज रासो(महोबा खण्ड) | चंदवरदाई |
| 347 | 15090 | पृथ्वीराजरासो (कनवजखण्ड) | चंदवरदाई |
| 348 | 15654 (5) | पोकरण ठाकुर देवीसिंहजीरी झमाल | सवलाल लाळस |
| 349 | 13784 (2) | मानसिंहजीरा वसूरणा | चैनदान |
| 350 | 13511 (45) | मैणा चवांलीस साखांरा छन्द | हरिराम |
| 351 | 14079 (13) | रतनसिंह महेशदासोतरी वचनिका | खिड़िया जगा |
| 352 | 14717 (3) | „ „ | „ |
| 353 | 14463 (5) | „ „ | „ |
| 354 | 15654 (4) | „ „ | „ |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 29.5×22.5 27; 18 | 52–54 | पूर्ण | गु. 1812 | पत्राङ्क 56 पर नागोर की नींव लगाने का तथा बखतसिंह का गीत खिड़िया केसरीसिंह कृत है। पत्राङ्क 56 से 62 पर स्फुट पद, गीत, औषधादि हैं। |
| 13.5×10.5 13; 20 | 267–272 | ,, | 1704 | लि. क. स्यामा; लि. स्थान मेदपाट -देश लाहा ग्राम। प्रति खण्डित |
| 22×15 25; 18 | 1–44 | ,, | 1862 | लि. क. गुसांई ग्यान भारथी लि. स्था. दोलतपुरा-लालसोट प्रारम्भ के 4 पत्रों में सूर्यस्तुति आदि तथा अंत के 5 पत्रों में लहसुन प्रयोग; दोहा, सवैया, झमाल पद आदि है। |
| 32×22 26; 20 | 1–130 | ,, | 19 वीं श. | |
| 33×21 28; 17 | पृ०95–102 | ,, | सन् 1911 | अराजणियाला के भाटियों से हुए युद्ध का वर्णन है। |
| 17×13 9; 14 | 1–13 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12 12; 18 | 204–206 | ,, | 1850 | लि. क. सेवगराम; लि. स्थान सोजत |
| 14×13.5 12; 22/15 | 85–125 | ,, | 1795 | लि. क. कृपाहंस; लि. स्था. वेनातट |
| 22×20 17; 26 | 1–10 | अपूर्ण | गु. 1838 | 127 छन्द |
| 20×16.5 19; 26 | 45–58 | ,, | 1763 | र. का. 1715 लि. क. जोगीदास; लि. स्था. ग्राम भेड़ |
| 33×21 30; 24 | पृ० 65–94 | पूर्ण | 20 वीं श. | 1822 की प्रति से प्रतिलिपिकृत |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 355 | 15654 (3) | रस-गुलजार | बदनजी मीसण |
| 356 | 15630 | राजरूपक | रतनू वीरभाँण |
| 357 | 15631 | ,, | ,, |
| 358 | 13779 (11) | ,, | ,, |
| 359 | 15654 (1) | राव अमरसिंह (नागोर) के झूलणे | दुरसा आढा |
| प: 360 | 13751 | रूपग पार पोरसातन (पुरुषार्थ-प्रकाश) | आसिया मोड़ा |
| 361 | 13784 (14) | वीरमायणरी नीसाणियां | ढाढी बादर |
| 362 | 13511 (51) | वीसर-मूंता मोकमसिंह चांणोद रा कामदाररो | दौलतराम |
| 363 | 13513 (8) | वीसर-मोदी टीकमदासरो, भाटी सूरजमलरो | |
| 364 | 15655 | शत्रुसल्य (शत्रुशल्ल) चरित्र का तर्जुमा | मू. सूरजमल मीसण |
| 365 | 13779 (2) | सूरज प्रकास | कविया करणीदान |
| 366 | 15651 | ,, | ,, |
| 367 | 15657 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि सम्वत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33×21<br>30; 17 | 49–64 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 33.5×20.5<br>34; 21/24 | 1–133 | ,, | सन् 1902 | लि. क. रतनू जालो; लि. स्था.धडोईग्राम |
| 33.5×20.5<br>25; 24 | 1–368 | ,, | सन् 1910/ 1911 | 161 वें पत्र तक टिप्पणियां एवं शब्दार्थ दिए हैं। |
| 32.5×25.5<br>31; 32 | 1–89 | ,, | 1884 | लि. क. बोड़ा मगनदत्त<br>लि. स्था. योधनगर |
| 33×21<br>28; 14 | पृ० 1–11 | ,, | 20 वीं श | 70 छन्द हैं। प्रारम्भ में प्राचीन प्रति का सूचीपत्र है। |
| 33×20<br>27; 26 | 1–94 | ,, | 1935 | लि. क. किशनलाल बोहरा<br>लि. स्था. जोधपुर; र. का. 1916 |
| 17×13<br>9; 15 | 1–50 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12<br>15; 24 | 223–225 | ,, | 19 वीं श. | 225–226 पर कवित्त हैं। |
| 24×16<br>22; 15 | 120–122 | ,, | 20 वीं श. | अंत में कोडारियांरो कवित्त है। |
| 27.5×18.5<br>20; 17/20 | पृ० 1–70 | ,, | ,, | |
| 32.5×25.5<br>31; 32 | 1–95 | ,, | 1884 | र. का. 1787; लि. क. बोड़ा मगनदत्त<br>लि. स्था. योधनगर |
| 33.5×20.5<br>26; 16 | पृ० 1–322 | ,, | सन् 1915 | 1832 की प्रति से प्रतिलिपिकृत |
| 34×21<br>31; 24 | पृ० 1–251 | ,, | 20 वीं श. | अंतिम दो पत्र खण्डित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 5(2) का. 368 | 14549 (1) | अक्षर-बावनी | कविसार |
| 369 | 13791 (2) | अवतार-चरित्र | नरहरिदास बारठ |
| 370 | 13791 (1) | ,, | ,, |
| 371 | 14682 | ,, के स्फुट सचित्र पत्र | ,, |
| 372 | 15004 | ,, (रामचरित्र) | ,, |
| 373 | 14470 (1) | उदयराज-बावनी | उदयराज |
| 374 | 14549 (3) | ,, | ,, |
| 375 | 14408 (2) | ऊषा-अनिरुद्ध-गुणवर्णन | |
| 376 | 13511 (44) | कलजुगरी नीसाणी | अखैराम |
| 377 | 13513 (10) | ,, ,, | कवि सेखो |
| 378 | 15055 | कवितावली (कवित्त रामायण) | गो० तुलसीदास |
| 379 | 15222 (3) | ,, | ,, |
| 380 | 14252 (1) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25×10.5 18; 48 | 1–4 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 31.5×19.5 21; 18 | 129–619 | अपूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1733 |
| 31.5×19.5 21; 18 | कुल 1–305 | ,, | 1928 | मूल पत्राङ्क 620 से हैं। दोनों गुटकों में कृति पूर्ण है। |
| 36×24 31; 22 | कुल 1–24 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. पुरोहित बंशीधर; चि. सं. 29 |
| 30.5×24 32; 25 | कुल 63 | ,, | ,, | बीच-बीच के अनेक पत्र अप्राप्त हैं। |
| 20×16 15; 34 | 1–8 | पूर्ण | 1812 | लि. क. देवसागर लि. स्था. धमोत्तरनगर (मालवा) |
| 25×10.5 18; 48 | 7–10 | ,, | 1761 | र. का. 1676 |
| 15×10 16; 17 | 12–31 | अपूर्ण | गु. 1780 | पत्राङ्क 31–58 पर प्राकृत में स्तुति-स्तोत्र-संग्रह है। |
| 17×12 11; 18 | 200–204 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1875 |
| 24×16 25; 18 | 126–127 | अपूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1805; पत्राङ्क 130 पर जांनीरासो 'वीसर' का प्रारम्भ है। |
| 31.5×14.5 12; 34 | 1–50 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 13 वां दो बार |
| 29.5×14.5 13; 38 | 3–41 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 1, 2, 6, 29-31, 33 वां अप्राप्त |
| 32×13.5 10; 40 | 1–16; 1–20 | पूर्ण | 1913 | लि. क. ब्राह्मण मूलप्रताप लि. स्था. भागनगर, चूड़ी बाजार |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 381 | 14253 | कवितावली (कवित्त रामायण) | गो॰ तुलसीदास |
| 382 | 14254 | " | " |
| 383 | 14774 | " | " |
| 384 | 14412 (11) | कृष्णरुषमणि री वेलि | म॰ पृथ्वीराज राठौड़ |
| 385 | 14461 (1) | " सटीक | " |
| 386 | 13778 (3) | " " | " |
| 387 | 14756 (17) | " " | " |
| 388 | 14463 (3) | " " | " |
| 389 | 15070 (2) | " रो विजै-विवाह | सांयाजी भूला |
| 390 | 13511 (21) | केशवबावनो | केशवदास |
| 391 | 14306 (1) | " | " |
| 392 | 13752 (2) | ख्याल | महाराजा बहादुरसिंह |
| 393 | 14470 (2) | गजमोख (क्ष) री नीसाणी | माधवदास धधवाड़िया |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 29.5 × 14.5<br>12; 34 | 1–42 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 231 छन्द तक |
| 30 × 14<br>14; 40 | 1–12 | ,, | ,, | प्रारम्भ में रेखते तथा अंत में एकश्लोकी रामायण है। |
| 30.5 × 15.5<br>16; 52 | 1–34 | पूर्ण | 1913 | |
| 14 × 11<br>8; 16 | 139–216 | पूर्ण | 1707 | र. का. 1644 |
| 22.5 × 13<br>11; 19 | 1–39 | पूर्ण | 1749 | लि. क. कनकसोमगणि<br>लि. स्था. अणहिलपुर |
| 32 × 25<br>27; 24 | 1–28 | पूर्ण | 1918 | |
| 24 × 15<br>35; 24 | 84–95 | अपूर्ण | गु. 1814 | 74 वें ढाले तक<br>कीटविद्ध |
| 20 × 16.5<br>19; 26 | 5–42 | पूर्ण | 1763 | लि. क. मुनि जोगीदास |
| 15 × 12<br>7; 14 | 1–2 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पांच छन्द मात्र; र. का. 1638 |
| 17 × 12<br>13; 22 | 61–70 | ,, | 19 वीं श. | |
| 26 × 11.5<br>15; 32 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | अंत में धर्मसी कृत सवैया त्रीवीसा है। |
| 27 × 19<br>26; 21 | 1-6 | ,, | 19 वीं श. | 81 पद्य हैं। |
| 20 × 16<br>15; 20 | 9–12 | पूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 394 | 14463 (8) | गजमोख (क्ष) री नीसाणी | माधवदास धधवाड़िया |
| 395 | 13765 (8) | „ | „ |
| 396 | 12717 (9) | घोड़ा-कुतूहल | |
| 397 | 14549 (2) | छीहलबावनी | छीहल सुत नाथा |
| 398 | 13737 (7) | ढोला-मारूरा दूहा सचित्र | |
| 399 | 14934 | दुष्टगंजन पंचाननी | सुजान (?) |
| 400 | 14359 (1) | नागदमन | सांयाजी भूला |
| 401 | 14463 (7) | „ | „ |
| 402 | 14470 (6) | „ | „ |
| 403 | 15070 (3) | „ | „ |
| 404 | 15101 (2) | „ | „ |
| 405 | 12717 (5) | पंच सहेलीरा दूहा (री वात) | कवि छीहल |

| माप से, मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20×16.5<br>19; 26 | 73–74 | पूर्ण | 1763 | लि. क. जोगीदास; लि. स्था. भेडग्राम। पत्राङ्क 74–75 पर दशावतार-वर्णन है |
| 22×16<br>17; 17 | 57–59 | " | 1771 | लि. क. श्वेताम्बर मायाचंद<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 21.5×14<br>15; 20 | 73–74 | " | 19 वीं श. | 22 दोहों में घोड़ों की जाति (प्रकार) है। |
| 25×10.5<br>18; 48 | 4–7 | " | 18 वीं श. | र. का. 1584 |
| 21.5×14.5<br>12; 24 | 1–26 | अपूर्ण | " | चित्र पूरे पत्र पर बड़े आकार के हैं। चित्र सं 12; 161 दोहे हैं। पत्राङ्क 23 वां अप्राप्त, जीर्ण व खण्डित। |
| 21×15<br>16; 20 | 1–14 | " | 1921 | लि. क. नयनसुख; पत्राङ्क 2 रा अप्राप्त 112 छन्द हैं। |
| 14.5×11<br>10; 18 | 36–54 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×16.5<br>19; 26 | 66–72 | " | 1763 | अंत में सांयाजी कृत एक गीत है। |
| 20×16<br>18; 22 | 28–36 | " | गु. 1803 | अंत में जसवंतसिंह कृत साखी है। |
| 15×12<br>8; 14 | 2–41 | " | 1803 | लि. क. सीताराम पंडा; पत्र एक तरफ लिखे गए हैं। |
| 23×14<br>16; 10 | 1–14 | " | 1813 | पत्राङ्क 14–16 पर चार वेद, अठारह पुराण, चार युग आदि ज्ञातव्य हैं। |
| 21.5×14<br>13; 28 | 62–66 | " | 1795 | र. का. 1575; लि. क. उत्तमराज लि. स्था. खेदरपुर (खेरवा) अगले पत्र पर 24 तीर्थङ्कर-नाम व प्रहेलिकाएं हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 406 | 14412 (6) | पंचसहेलीरा दूहा (री वात) | कवि छीहल |
| 407 | 14463 (15) | ,, | ,, |
| 408 | 14712 (3) | बिहारी सतसई | बिहारीदास |
| 409 | 14904 | ,, | ,, |
| 410 | 14906 | ,, | ,, |
| 411 | 15071 | ,, | ,, |
| 412 | 13077 | बिहारी सतसई सटीक | बिहारीदास |
| 413 | 13510 | ,, ,, | ,, टी. राधाकृष्ण |
| 414 | 13737 (1) | ,, | ,, |
| 415 | 13784 (11) | ,, | ,, |
| 416 | 13789 (1) | ,, ,, | ,, टी. राधाकृष्ण |
| 417 | 13830 (5) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×11<br>7; 16 | 81–89 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 20×16.5<br>25; 24 | 144–146 | ,, | ,, | |
| 21.5×19<br>15; 17 | 78–133 | ,, | 1890 | दोहों के प्रारम्भ में शीर्षक दिए हैं। |
| 14.5×12.5<br>16;17 | 9–55 | अपूर्ण | 1812 | ,, ,,<br>पत्राङ्क 1–8, 31–44 अप्राप्त |
| 14.5×12.5<br>15; 18 | 1–55 | ,, | ,, | पत्राङ्क 1–8 अप्राप्त |
| 17.5×13<br>9; 22 | 4–72 | ,, | 1840 | पत्राङ्क 1–3 अप्राप्त; 709 दोहे हैं।<br>लि. क. उपाध्याय बिहारीलाल |
| 25.5×11.5<br>17; 36 | 1–43 | ,, | 19 वीं श. | 224 दोहों तक |
| 20×16<br>18; 26 | 1–143 | ,, | ,, | टीका कवित्त बद्ध है।<br>कुल 976 दोहे हैं। (?) |
| 21.5×14.5<br>12; 24 | 17–38 | ,, | 1799 | पत्राङ्क 39–49 पर 'आदित्यहृदयस्त्रोत' है जिसके प्रारम्भ में एक चित्र है। |
| 17×13<br>9; 14 | 1–12 | ,, | 20 वीं श. | 65 दोहे हैं। |
| 22×18<br>15; 21 | 1–153 | पूर्ण | 1814 | टी. र. का. 1780; र. स्था. आगरा<br>लि. क. हेमराज; लि. स्था. सवाईजैपुर<br>745 दोहे हैं। |
| 13×9.5<br>13; 14 | 23–27 | अपूर्ण | 18 वीं श. | 30 दोहे हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 418 | 14287 | बिहारी सतसई सटीक | बिहारीदास |
| 419 | 14767 (1) | महादेवजीरो ब्यावलो | |
| 420 | 15039 | रामकथा (गद्य) | |
| 421 | 13339 (8) | ,, | युगजीवन (जगजीवन) |
| 422 | 13670 (1) | रामचन्द्रिका | केशवदास |
| 423 | 13788 | ,, | ,, |
| 424 | 13491 | रामचरितमानस | गो० तुलसीदास |
| 425 | 13891 | ,, (प्रथम सोपान) | ,, |
| 426 | 13666 | ,, | ,, |
| 427 | 14061 | ,, | ,, |
| 428 | 14100 | ,, | ,, |
| 429 | 14292 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 35×16.5<br>17; 52 | 1–8 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 350 दोहे हैं। |
| 27×17<br>15; 28 | 1–5 | ,, | ,, | किनारे त्रुटित |
| 27.5×18<br>19; 14 | कुल 36 | ,, | ,, | |
| 20×14<br>11; 28 | 1–4 | ,, | ,, | लि. क. लक्ष्मीराम बहेचर<br>लि. स्था. धोलका |
| 23.5×16<br>17; 30 | 12–35 | ,, | ,, | प्रारम्भ के 11 पत्र अप्राप्त |
| 28×19<br>22; 20 | 3–153 | ,, | ,, | प्रारम्भ के 27 छन्द अप्राप्त; कीट विद्ध पत्राङ्क 144–153 तक पाठ क्षतिग्रस्त |
| 21×15<br>17; 13 | कुल 108 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 31.5×15.5<br>13; 48 | 1–95 | ,, | 1857 | लि. क. रामनाथ; लि. स्था. फतेपुर<br>जलसिक्त-त्रुटित |
| 30.5×15<br>5; 36 | 1–7 | अपूर्ण | 20 वीं श. | सातों काण्डों में संस्कृत के श्लोकों के टिप्पण मात्र हैं। |
| 30×14<br>12; 30 | कुल 357 | पूर्ण | 1865 | लि. क. वैष्णु स्यांम; लि. स्था. वाघड़ी |
| 22×10.5<br>9; 28 | कुल 671 | अपूर्ण | 1811–1868 | अनेक प्रतियों से ग्रन्थ पूरा करने का प्रयत्न किया गया है। बालकाण्ड में पत्राङ्क 91, 92, 94, 96, 98 व 207 वां पत्र अप्राप्त। |
| 32×16<br>13; 38 | कुल 120 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. सदाराम.; लि. स्थान डीडपुर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 430 | 14322 | रामचरितमानस | गो॰ तुलसीदास |
| 431 | 14419 | ,, | ,, |
| 432 | 14896 (3) | ,, | ,, |
| 433 | 14755 | ;, | ,, |
| 434 | 15100 | ,, | ,, |
| 435 | 15219 | ,. | ,, |
| 436 | 14293 | ,, (अयोध्याकाण्ड) | ,, |
| 437 | 14260 | ,, (बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड) | ,, |
| 438 | 14321 | ,, (उत्तरकाण्ड) | ,, |
| 439 | 14248 | ,, (बालकाण्ड) | ,, |
| 440 | 13672 | ,, (लवकुशकाण्ड) | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5×11<br>11; 34 | कुल 275 | पूर्ण | 1856 | |
| 29×21<br>21; 22 | 2–324 | अपूर्ण | 1865 | आद्यन्त पत्र अप्राप्त; जलसिक्त लि. क. ब्राह्मण चतुरभुज खंडेलवाल |
| 16×11<br>11; 20 | 1–125 | ,, | 1845 | पत्राङ्क 39-44 अप्राप्त; 126–132 पर स्फुट पद हैं। |
| 24×13.5<br>15; 36 | कुल 304 | पूर्ण | 1862–63 | बालकाण्ड के पत्राङ्क 43–45 दो वार |
| 28×13.5<br>11; 38 | कुल 426 | ,, | 1899–1900 | लि. क. मनसाराम ब्राह्मण नौरंग लि. स्था. वलारां (मालवा-रामपुरा) |
| 29×14<br>13; 42 | कुल 272 | अपूर्ण | 1841–1847 | लि. क. लिछमणदास; लि. स्था. सवाई जयपुर; जीर्ण प्रति; अरण्यकाण्ड में पत्राङ्क 14वां अप्राप्त; लंकाकाण्ड में पत्राङ्क 2रा अप्राप्त; अयो०काण्डमें पत्राङ्क 3रा अप्राप्त; सुन्दरकाण्ड में पत्राङ्क 2रा अप्राप्त, सुन्दरकाण्डकी दो प्रतियां हैं। |
| 30×16<br>14; 48 | 1–65 | पूर्ण | 1854 | लि. क. नंदराम |
| 28.5×16.5<br>12; 38 | 1–132<br>1–101 | ,, | 1916<br>1903 | लि. क. फतेराम<br>लि. स्था. सारोल्यानग्रे (अचरोल) |
| 23×12<br>9; 30 | 6–77 | अपूर्ण | 1869 | पत्राङ्क 7 वां अप्राप्त; लि. स्था. अयोध्य |
| 34×16<br>12; 40 | 1–93 | पूर्ण | 1903 | लि. क. गोरधन; लि. स्था. श्रीपुरनगर |
| 24×16.5<br>22; 16 | 1–33 | ,, | 1928 | लि. क. डालचंद; लि. स्था. परगना मेरठ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 441 | 14286 | रामचरितमानस (लंकाकाण्ड) | गो॰ तुलसोदास |
| 442 | 13972 (2) | ,, (अरण्यकाण्ड, लंकाकाण्ड) | ,, |
| 443 | 13770 (21) | रामदास वैरावतरी आखड़ियाँ (गद्य) | |
| 444 | 14600 (4) | राम-बत्तीसी | कवि जगन पुष्करणां |
| 445 | 14406 (1) | रामगुण-रासो | माधवदास धधवाड़िया |
| 446 | 14463 (17) | ,, | ,, |
| 447 | 15101 (1) | ,, | ,, |
| 448 | 14903 | ,, | ,, |
| 449 | 12810 | रामविजय (वाल्मीकि नाटकाधार) | |
| 450 | 13766 | रामायण-भाषा (गद्य) | |
| 451 | 14463 (24) | रुषमणीजीरी जति (नख-शिख) | मू॰ पृथ्वीराज; टी॰सेवग मानाजी |
| 452 | 15654 (8) | रूपादेजीरी वेल | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 30×15<br>10; 34 | 1–85 | पूर्ण | 1900 | लि. क. फतेराम;<br>लि. स्था. सरोत्या नगर (अचरोल) |
| 21×16<br>19; 18 | 1–34<br>1–87 | ,, | 1887 | चित्र सं 4 (चित्रित पत्राङ्क 22,39, 43, 69) लि. क. तिवाड़ी खीमजी छगनजी लि. स्था. कच्छ देशे-भुजनगर |
| 10×9<br>10; 12 | 68–74 | ,, | 1862 | 84 बातें नहीं करने का संकल्प है। |
| 25×12<br>13; 38 | 36–37 | अपूर्ण | 17 वीं श. | प्रारम्भ के 20 छन्द अप्राप्त |
| 22×15<br>21; 15 | 1–59 | पूर्ण | 1733 | जीर्ण–कीटविद्ध |
| 20×16.5<br>20;21 | 150–201 | पूर्ण | 1765 | र. स्था. गाँव बलूंदा<br>वाल्मीकि रामायण पर आश्रित। |
| 23×14<br>21; 18 | 1–73 | पूर्ण | 1812 | लि. क. गंगाराम |
| 15.5×11.5<br>11; 17 | 1–105 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भके3 पत्रों पर बारखड़ी तथा पत्राङ्क 15 तक वाजीद, कबीर आदि के पद हैं। |
| 26×14<br>10; 30 | 1–13 | अपूर्ण | 19 वीं श. | मराठी भाषा में है। 38 वां अध्याय मात्र। |
| 21.5×14<br>18; 16 | 12–217 | ,, | 19 वीं श. | प्रथम 11 पत्र एवं अंतिमांश अप्राप्त |
| 20×16.5<br>22; 22 | 235–236 | पूर्ण | 18 वीं श. | प्रारम्भ में जगंनाथ के कवित्त हैं। पत्राङ्क 236 पर ही गीतांरी जातिरो गीत है। |
| 33×21<br>33; 30 | पृ० 141–144 | ,, | सन् 1911 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 453 | 14357 (6) | वागबत्तीसी | |
| 454 | 13782 | विनयपत्रिका | गो॰ तुलसीदास |
| 455 | 14749 | ,, | ,, |
| 456 | 14379 (2) | वृन्द (विनोद) सतसई | वृन्दकवि |
| 457 | 14712 | ,, | ,, |
| 458 | 15428 | ,, | ,, |
| 459 | 14471 | ,, | ,, |
| 460 | 12709 (18) | ,, | ,, |
| 461 | 14045 (1) | ,, | ,, |
| 462 | 14361 | ,, | ,, |
| 463 | 15063 | ,, | ,, |
| 464 | 14279 (1) | वैराग्यशतक-भाषा | कवि देव (देवदत्त) |
| 465 | 15059 | शतकत्रय-भाषा (नीति, शृङ्गार, वैराग्य मंजरी) | सवाई प्रतापसिंह |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16×12.5<br>14; 16 | 26–28 | पूर्ण | 1911 | प्रारम्भ में 78 फूलों की विगत है। |
| 24×16.5<br>15; 15 | 1–183 | " | 1902 | प्रथम पांच पत्रों पर विस्तृत सूचीपत्र हैं। |
| 37.5×18<br>18; 52 | 1–39 | " | 19 वीं श | लि. क. तरणदास निरंजनो; जीर्ण |
| 31.5×13.5<br>20; 22 | 1–22 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 503 दोहे हैं। |
| 21.5×19<br>15; 17 | 27–77 | पूर्ण | 1890 | र. का. 1761–ढाका; लि. क. नथमल<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 22×16.5<br>18; 22 | 1–6 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 231 दोहे हैं। |
| 20×14.5<br>17; 16 | 1–44 | पूर्ण | " | र. का. 1761–ढाका; लि. क. हरिवंश<br>715 दोहे हैं। |
| 23×13<br>15; 34 | 29–52 | " | " | 707 दोहे हैं। |
| 14×11<br>13; 16 | 1–52 | " | 1835 | त्रुटित |
| 15×11<br>8; 18 | 4–90 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ के 13 दोहे अप्राप्त |
| 22×17<br>17; 18 | पृ० 1–74 | पूर्ण | 1959 | |
| 15.5×10<br>8; 15 | 1–42 | " | 1857 | लि. क. देवा माली; लि. स्था. माचड़ी |
| 23×16<br>17; 16 | 1–14 | " | 1888 | र. का. 1852–जयपुर<br>लि. क. गोरीलाल |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 466 | 14579 | श्रृङ्गारशतक | |
| 467 | 14434 (1) | शिवरीमंगल | गो॰ तुलसीदास |
| 468 | 14447 | शिव-विवाहलो सचित्र | |
| 469 | 13769 (59) | हंस-बगुलारो झगड़ो | छीहल |
| 5 (3) स्फुट काव्य | 13511 (8) | कवित्त-करतार बावनीरा | |
| 471 | 15096 (2) | कवित्त-कलजुगरा | कवि गद |
| 472 | 13778 (8) | कवित्त-कृष्णचन्द्ररा आदि | |
| 473 | 13513 (6) | कवित्त-गुसांईजीरा | |
| 474 | 13520 (3) | कवित्त-घनानन्द के | घनानंद |
| 475 | 13511 (54) | कवित्त-घोड़ा आदिरे नांमारा | कविदास; मीरदांन |
| 476 | 13511 (20) | कवित्त-चवदैविद्या आदि के | |
| 477 | 13784 (6) | कवित्त-जोगमायारा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×10.5 13; 48 | 1–5 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 11×75 6; 12 | 1–7 | ,, | गु. 1880 | |
| 24×16.5 18; 15 | 1–21 | अपूर्ण | 19 वीं श. | चित्र सं. 29; पत्राङ्क 3, 12 अप्राप्त पड़दायतजी चंपतरायजी पठनार्थ |
| 13.5×10.5 13; 24 | 265–266 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 17×12 13; 25 | 28–32 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20.5×15.5 16; 22 | 13–21 | पूर्ण | 1836 | स्फुट सवैया दोहे भी हैं। |
| 23×25 27; 26 | 21–29 | ,, | 20 वीं श. | बिहारी के दोहे भी हैं। |
| 24×16 22; 15 | 114–116 | ,, | ,, | |
| 23×17 15/20;15/20 | 1–12 | ,, | 19 वीं श. | 91 छन्द हैं। |
| 17×12 16; 24 | 228 वां | ,, | ,, | घोड़ा, बरछी, तलवार हैं। ढाल, कबाण आदि शोर्षक से हैं। पत्राङ्क 229 पर देवताओं के नाम; उनके वाहन शत्रु आदि के नाम हैं। |
| 17×12 9; 16 | 58–60 | अपूर्ण | 19 वीं श. | षट्वंश, राशि, जीव, ज्ञान, आदि के हैं। |
| 17×13 10; 18 | 6–7 | पूर्ण | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 478 | 13511 (14) | कवित्त-दानी को | |
| 479 | 15033 (4) | कवित्त-देवीदास ग्रादि के | देवीदास; केशव; दीनदरवेश |
| 480 | 13830 (3) | कवित्त-नवरत्नरा | |
| 481 | 13778 (7) | कवित्त-पेटरा | दुरसाग्राढा |
| 482 | 13784 (4) | कवित्त-वसंत व होली के | |
| 483 | 13511 (26) | कवित्त-ब्रह्माजीरा, सात दीपांरा | |
| 484 | 13797 | कवित्त-भूषण के | भूषण |
| 485 | 14475 (2) | कवित्त-राजनीति ग्रादि के | देवीदास; केसोदास, सूरत, सुन्दरदास, वनारसी |
| 486 | 13511 (33) | कवित्त-वल्लभकुलरा | |
| 487 | 13513 (7) | कवित्त-श्रीमालप्रदेशरी उतपत्तीरा | |
| 488 | 13511 (34) | कवित्त-सभासाररा | |
| 489 | 15051 (2) | कवित्त-हाथियांरा, घोड़ारा वखाणरा ग्रादि | गंगादान सांदु |
| 490 | 13511 (36) | कवित्त-कुण्डलियादि | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12<br>9; 16 | 42 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | . |
| 17×13.5<br>15; 18 | 18–23 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 18 पर महाराजा अभयसिंह का गीत व 22पर म०भीमसिंहजीका गीत है। |
| 13×9.5<br>10; 14 | 15–18 | ,, | 18 वीं श. | |
| 32×25<br>27; 26 | 18–20 | ,, | 20 वीं श. | म. जसवंतसिंह परक कवित्त भी है। |
| 17×13<br>11; 16 | 1–4 | ,, | ,, | म. तखतसिंह व स्वरूपसिंह से संबंधित |
| 17×12<br>11; 19 | 88–90 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24×11.5<br>22; 65 | 8–18 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 8–18 तक की फोटो कॉपी 11 प्लेटों में हैं। |
| 19×15.5<br>13; 20 | 1–18 | अपूर्ण | 20 वीं श. | संतों की वांणी के भी कवित्त हैं। |
| 17×12<br>9; 16 | 105–108 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24×16<br>22; 15 | 117–119 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12<br>8; 16 | 109–115 | ,, | 19 वीं श. | |
| 29×21<br>20; 22 | 3–5 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12<br>10; 16 | 128–132 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 133 पर रागों के नामों का कवित्त है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 491 | 13511 (47) | कवित्त-कुण्डलियादि | केहरी, गुमान |
| 492 | 15051 (7) | ,, ,, | |
| 493 | 13511 (25) | ,, ,, | केहरि |
| 494 | 14914 (16) | कवित्त फुटकर | कवि सार |
| 495 | 14914 (63) | ,, (राधाकृष्णपरक) | जसराज (जिनहर्ष) |
| 496 | 14379 (1) | ,, | वहादर, कालिदास आदि |
| 497 | 14424 (1) | ,, | |
| 498 | 14424 (4) | ,, | |
| 499 | 14437 (3) 3 | ,, साखी | विजयराम |
| 500 | 13770 (24) | ,, | केहरी |
| 501 | 13784 (5) | ,, | पद्माकर |
| 502 | 15051 (4) | ,, | नाथ, केशव, कासीराम |
| 503 | 13509 (6) | ,, | मानसिंह, आदि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12<br>10; 16 | 209–211 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 29×21<br>22; 20 | 10–11 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 11 वें पर गीत सांणोर है । |
| 17×12<br>11; 19 | 85–88 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>14; 30 | 122 वां | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 98–121 व 123 अप्राप्त |
| 15.5×11<br>12; 22 | 227 वां | ,, | ,, | |
| 21.5×13.5<br>12; 10 | 1–3 | ,, | 19 वीं श. | |
| 13×10.5<br>7; 12 | 1–4 | ,, | 20 वीं श. | |
| 13×10.5<br>7; 12 | 68–72 | ,, | ,, | |
| 25×13.5<br>20; 18 | 70 वां | ,, | 1814 | पत्राङ्क 71 पर 'टीपणा री पाटी' तिथि-फल विचार है । |
| 10×9<br>10; 14 | 1–5 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×13<br>10; 18 | 5 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 29×21<br>26; 24 | 7–8 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24×17<br>13; 28 | 73 वां | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 504 | 13770 | कवित्त फुटकर | हितराम |
| 505 | 13511 (49) | ,, | कासीराम |
| 506 | 15294 (3) | ,, | चन्द्रभाण, गिरधरकविराय |
| 507 | 14519 (8) | ,, | वलभद्र ग्रादि |
| 508 | 14643 (4) | ,, | रसखान, कविगद, कविलाल, बीरबल, सुन्दर |
| 509 | 13515 (4) | ,, सवैया, कुण्डलियादि | सूरज, वृन्द, मांन, मंछ, देव, गंग, जयकृष्ण, गिरधर, जान, घनानंद |
| 510 | 13519 (1) | ,, | वल्लभ, चिंतामनि, मंछ, तोष, वृन्द, सूरज, किल्याणचंद |
| 511 | 13670 (2) | ,, | शिवनाथ |
| 512 | 13670 (5) | ,, | चंद, कासीरांम |
| 513 | 13770 (4) | ,, | |
| 514 | 13511 (3) | ,, | |
| 515 | 13513 (3) | ,, | कवि छाजू, खेतसी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10×9<br>9; 12 | 22 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>13;20 | 219–220 | ,, | ,, | |
| 9.5×9<br>7; 8 | 6–11 | ,, | ,, | पत्राङ्क 12–15 पर स्फुट शकुनविचार है। |
| 22×17<br>19; 18 | 6–7 | ,, | ,, | |
| 24.5×15.5<br>15; 34 | 17–20 | ,, | 1919 | पत्राङ्क 22 पर पल्लीपतन विचार व 23 पर स्फुट गीत व दोहे हैं। |
| 23×17<br>17; 16 | 2–20<br>2–3,3–4<br>5–6<br>8, 16, 18 | ,, | 1860 | रीतिबद्ध हैं। |
| 22×17<br>16; 18 | 30–34 | ,, | 19 वीं श. | प्रारम्भ के 29 पत्र अप्राप्त |
| 23.5×16<br>12; 30 | 36 वां | ,, | ,, | 37 वें पत्र पर दोहे व गीत हैं। |
| 23.5×16<br>20; 38 | 19–21 | पूर्ण | ,, | |
| 10×9<br>9; 12 | 25–27 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>12; 14 | 3–6 | ,, | ,, | |
| 24×16<br>23; 15 | 48–50 | ,, | 20 वीं श. | खेतसी कृत 'बीसर ढूंढियारो' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 516 | 12706 (2) | कवित्त फुटकर | पद्माकर |
| 517 | 13770 (8) | ,, | कवि देवी (?) |
| 518 | 13520 (2) | ,, रीतिवद्ध | |
| 519 | 15033 | ,, दोहादि | |
| 520 | 13511 (31) | ,, ,, | उदैराज, कविरूप कविगद |
| 521 | 14470 (3) | ,, | कविगद |
| 522 | 12706 (19) | ,, | |
| 523 | 14339 (15) | कवित्त दोहा रेखतादि | नवल, आनन्दघन, चेतन |
| 524 | 14418 (2) | कवित्त सवैयादि | |
| 525 | 13515 (2) | ,, | भेरू कवि, नाथ, ठाकुर, सुन्दर, देव, गंग, वृन्द, उदयराज |
| 526 | 13511 (38) | ,, | गिरधर, गंग, उदैराज |
| 527 | 13770 (19) | ,, | कविगद, जगदीश, सूरत, कल्याण दलपत, वृन्द |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11.5<br>6; 3 | 28 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | म. प्रतापसिंह विषयक;<br>पत्राङ्क 1–23 पर अंकपाटी है। |
| 10×9<br>9; 12 | 42–43 | " | " | पत्राङ्क 24–27 अप्राप्त |
| 23×17<br>19; 18 | 3–4 | " | " | प्रारम्भ के 44 कवित्त अप्राप्त |
| 17×13.5<br>12; 16 | 4–7 | " | 20 वीं श. | पत्राङ्क 7–8 पर नगर बसाने की विगत है । |
| 17×12<br>9; 15 | 98–99<br>103–104 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×16<br>15; 20 | 1–5 | " | " | लि॰ क. भाट खेमा<br>लि. स्था. नागोर |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 84–109 | पूर्ण | " | |
| 12×13.5<br>15; 20 | 63–65 | " | 1848 | |
| 12.5×11<br>10; 15 | 27–33 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 22 पर 'मुहूर्त विचार' एवं पत्राङ्क 23–27 पर पर्वत, महादेव, रत्न, चक्रवर्तियों केनाम तथा औषधी संग्रह है। पत्राङ्क 34–35 अप्राप्त |
| 23×17<br>16; 12 | 11–13<br>13–16 | " | 1860 | |
| 17×12<br>10; 16 | 171–181 | " | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>10; 14 | 40–59 | " | " | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 528 | 13770 (22) | कवित्त सवैयादि | |
| 529 | 15051 (1) | ,, | बालकृष्ण, रसखान, बुत्रराय |
| 530 | 13511 (28) | ,, | गंग आदि |
| 531 | 12706 (17) | ,, | बीरदराज, कविराय |
| 532 | 13513 (1) | ,, | गंग, कविमान, कवि सुन्दर, कवि ठाकुर, आलम, वृन्द, वृजनिधि, कविगद, रसखान, रज्जब, गिरधर कविराय; देवीदास |
| 533 | 14913 (6) | ,, | |
| 534 | 15052 (3) | ,, | कविराम, भूषरण, ठाकुर, पृथ्वीराज, नाथ, गंग |
| 535 | 14656 (15) | ,, | उदयराज, मीरदान, खेम, कविगद देवीदास, हमीर, ब्रह्मदास, गंग, कासीराम, धर्मसी, केसवदास |
| 536 | 13494 (22) | कागद की पैठे–गुरां ने भेजने की | |
| 537 | 14899 (2) | कागदरी नकल | |
| 538 | 12730 (2) | कागद स्याही को झगड़ो | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10×9<br>10; 14 | 75–88 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 29×21<br>22; 28 | 1–2 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12<br>11; 19 | 92–93 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 74–76 | ,, | ,, | |
| 24×16<br>23; 17 | 39, 39, 33<br>33, 35, 37<br>38. 39, 46<br>40, 42, 42<br>45, 45–46 | ,, | ,, | |
| 16×11<br>8; 18/22 | 33. 43 | ,, | गु. 1865 | |
| 25×20<br>17; 14 | 21–38 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 21 पर म. तखतसिंह के कवित्त हैं। |
| 24×15<br>35; 24 | 73–81 | ,, | गु. 1814 | पत्राङ्क 78–81 पर राधाकृष्ण श्रृंगार परक 67 सवैये हैं। |
| 20×16<br>13; 20 | 120–122 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14×11<br>9; 18 | 163–168 | ,, | गु. 1900 | पति और पत्नी द्वारा भेजे जाने वाले प्रेम पत्रों के संबोधनादि एवं पत्राङ्क 169–175 पर औषधी संग्रह व शाबर मंत्रादि हैं। |
| 17×12.5<br>19; 18 | 76 वां | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 539 | 13770 (6) | कुण्डलिया | गिरधर कविराय |
| 540 | 13511 (17) | ,, | ,, |
| 541 | 13511 (42) | ,, | जसराज हरधवलोतरा |
| 542 | 14371 (1) | ,, | |
| 543 | 15060 (1) | गीत—छोटो सांणोर | |
| 544 | 13511 (27) | गोत—सपखरो-अवतारांरो | |
| 545 | 14463 (2) | गीत—सावझडो-इन्द्ररो | भो० मानाजी |
| 546 | 12706 (18) | गीत—बनारो | |
| 547 | 13770 (1) | गीत—मनरो | |
| 548 | 15060 (15) | गीत—वर्षाऋतुरो | |
| 549 | 13511 (6) | गीत संग्रह—<br>(1) इन्द्ररो<br>(2) जलन्धरनाथजीरो<br>(3) मल्लीनाथजीरो<br>(4) महादेवजीरो | चारण रामचन्द्र |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10×9<br>9; 12 | 36–37 | पूर्ण | 19 वीं श | |
| 17×12<br>9; 16 | 50–51 | ,, | ,, | |
| 17×12<br>14; 22 | 195–198 | ,, | 1849 | लि. क. सेवग विरधीचंद |
| 22.5×15.5<br>14; 14 | 1–8 | ,, | 19 वीं श. | शिक्षाप्रद 34 कुण्डलियादि हैं। |
| 17.5×13<br>10; 15 | 1–2 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×12<br>11; 19 | 91 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×16.5<br>19; 26 | 4 था | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 10 | 78–83 | ,, | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 4–5 | ,, | ,, | प्रथम 3 पत्र अप्राप्त |
| 17.5×13<br>9; 14 | 14–15 | ,, | 20 वी श. | |
| 17×12<br>13; 25 | 23–24<br>24–25<br>25 वां<br>25–26 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 550 | 13513 (5) | गीत संग्रह—<br>(1) पोहकरणांरो<br>(2) प्रोयतांरो<br>(3) गोरधनजीरो<br>(4) कवित्त सेवग थानमलजीरो | |
| 551 | 15293 (28) | गीत संग्रह—<br>(1) साल्हकुंवर गोगाजीरो | |
| 552 | 14412 (1) | गीत-संग्रह—<br>(1) श्रीसाँवलजीरो<br>(2) जिनदासजीरोआदि | |
| 553 | 14079 | गीत सपंखरो | |
| 554 | 15060 (4) | गीत वड़ो-साणोर | |
| 555 | 15051 (5) | गीत साणोर | |
| 556 | 13513 (4) | ,, | |
| 557 | 15060 (3) | ,, | |
| 558 | 14357 (9) | गूढार्थ संग्रह | |
| 559 | 14370 (2) | ,, | |
| 560 | 13511 (16) | छन्द नाहरखांनजीरो– | नाहरखांन |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×16<br>22; 15 | 109–114 | पूर्ण | 20 वीं श. | गुटके के मध्य से पत्राङ्क संख्या 109 लगी है। |
| 25.5×15.5<br>32; 44 | 54 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 14×11<br>9; 18 | 47–52 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 51 वां अप्राप्त |
| 14×13.5<br>12; 15 | 31–32 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17.5×13<br>10; 15 | 5 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 29×21<br>26; 24 | 8 वाँ | ,, | ,, | |
| 24×16<br>21; 13 | 52 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 17.5×13<br>10; 15 | 4–5 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16×12.5<br>11; 24 | 37–39 | ,, | गु. 1911 | |
| 21×15<br>5; 16 | 73–83 | ,, | 19 वीं श. | 50 पद्य हैं। टिप्पण में शब्दार्थ हैं। |
| 17×12<br>9; 16 | 46–50 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 561 | 13770 (4) | छप्पय | कविदास, देवो |
| 562 | 12706 (4) | जमालरा दूहा | जमाल |
| 563 | 13778 (1) | जसराज-झालारा कुण्डलिया | |
| 564 | 13770 (18) 4 | दूहा–अधूरा पूरारा | |
| 565 | 12706 (13) | दूहा–आठपोहररा | |
| 566 | 13770 (18) 2 | दूहा–इसकरा | |
| 567 | 12697 (4) | दोहा–कागदरा आदि | कवि मथुरेश |
| 568 | 13770 (18) 6 | ,,　,, | |
| 569 | 13511 (32) | ,,　कामकलारा | वृन्द |
| 570 | 14357 (8) | ,,　किसनियाँ आदिरा | किशन, हरिदास |
| 571 | 12709 (16) | ,,　गुरु-चेलारा | |
| 572 | 13513 (9) | ,,　,, | |
| 573 | 14079 (5) | ,,　छांटमा | बिहारिदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10×9<br>9; 12 | 28 वाँ<br>25 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>7; 13 | 30–34 | ,, | ,, | |
| 32×25<br>27; 24 | 1–3,<br>20 वां | ,, | 20 वीं श. | 44 पद्य हैं। |
| 10×9<br>10; 14 | 34–37 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 67–68 | पूर्ण | ,, | |
| 10×9<br>10; 14 | 27–30 | पूर्ण | ,, | 10 दोहे हैं। |
| 16.5×17<br>12; 16 | 234–237 | ,, | गु. 1823 | अंत में षट्ऋतु वर्णन के दो कवित्त हैं। |
| 10×9<br>10; 14 | 38–39 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>9; 15 | 100–101 | ,, | ,, | |
| 16×12.5<br>16; 20 | 34–36 | ,, | गु. 1911 | |
| 23×13<br>16; 34 | 136–137 | पूर्ण | 19 वीं श. | 30 प्रश्नोत्तर हैं। |
| 24×16<br>22; 15 | 123–126 | पूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 128 पर गूढार्थ हैं। |
| 14×13.5<br>10; 18 | 10–12 | ,, | 1790 | 'सतसई' के हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 574 | 12729 (7) | दोहा-दारूरा दोपका | |
| 575 | 14357 (7) | दोहा-पखवाड़ा ग्रादिरा | गोविंददास, भद्रसेन, थांन. कविगद, मालदास, तुलसी, कमाल, सीतलपुरी. दीनदरवेश |
| 576 | 13770 (18) 3 | दोहा-पखवाड़ारा | |
| 577 | 12717 (13) | दोहा-पनरे तिथिरा; बारे-मासरा | |
| 578 | 14079 (4) | दोहा-प्रास्ताविक | |
| 579 | 14079 (15) | ,, ,, | |
| 580 | 12697 (3) | दोहा-फूलपृच्छारा | सुन्दरदास |
| 581 | 14418 (1) | दोहा-फूलबत्तीसीरा | |
| 582 | 12706 (14) | दोहा-बरसातरा | |
| 583 | 12706 (16) | दोहा-बारेमासरा | |
| 584 | 12706 (19) | ,, ,, | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×12.5<br>16; 24 | 89–91 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 16×12.5<br>16; 20 | 29–35 | ,, | गु. 1911 | रेख़ता, सवैया; सुभाषितादि हैं। |
| 10×9<br>10; 14 | 31–33 | ,, | 19 वीं श. | |
| 21.5×14<br>13; 27 | 74–76 | पूर्ण | गु. 18 वीं श. | अंत में शत्रुंजय स्तवन है। |
| 14×13.5<br>13; 18 | 8–9 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 14×13.5<br>14; 16 | 140–141 | पूर्ण | 1790 | लि. क. देवचन्द; लि. स्था. इन्द्राणा पत्राङ्क 143–144 पर छत्तीस कारखानों के नाम हैं। |
| 16.5×17<br>15; 17 | 231–233 | पूर्ण | 1823 | 31 दोहे हैं। |
| 12.5×11<br>10; 15 | 5–9 | पूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ के 4 पत्रों पर शकुनावली, पत्राङ्क 10–17 पर औषधीसंग्रह एवं पत्राङ्क 18-21 पर तांत्रिक जंत्रियां हैं। |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 68–70 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 73–74 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 62–63 | पूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 585 | 13770 (18) 5 | दोहा-बीड़ारा | |
| 586 | 13770 (16) | दोहा-मित्रनै लिखै जिका | |
| 587 | 14358 (7) | दोहा-संग्रह | बुधराव |
| 588 | 15061 (3) | " | महन्त मुकन्ददास |
| 589 | 13770 (14) | " (प्रकीर्ण) | |
| 590 | 14678 | दोहा-संजोग सिणगाररा | |
| 591 | 15052 (2) | " " तथा कवित्त-सवैया-संग्रह | कविराम, भूषण, पृथ्वीराज, जमाल आदि |
| 592 | 12717 (14) | दोहा-सज्जनरा (पुरुष-स्त्री परिहास) | |
| 593 | 12706 (12) | दोहा-सात-वाररा | |
| 594 | 14079 (3) | " " | |
| 595 | 13770 (3) | दोहा-सात-सखियांरा | |
| 596 | 12706 (15) | " " | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 10×9<br>10; 14 | 37–38 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>10; 14 | 6–9 | ,, | 1862 | |
| 15.5×11.5<br>11; 18 | 132–134 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>20; 18 | 26·27 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 28–29 पर कवित्तादि हैं। |
| 10×9<br>9; 12 | 154–173 | | 1862 | 132 दोहे हैं। |
| 17×13<br>9; 16 | कुल 27 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25×20<br>17; 14 | 7–9;<br>21–38 | ,, | 20 वीं श. | 51 दोहे हैं। पत्राङ्क 12–18 पर उर्दू-लिपि में रमल आदि तथा 10–11, 19–20 पर कवित्तादि हैं |
| | | ,, | | |
| 21.5×14<br>13; 27 | 77–79 | ,, | 18 वीं श. | 23 दोहे हैं। बाद में 6 शृङ्गारिक दोहे और हैं। |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 66 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 14×13.5<br>13; 18 | 7 वां | ,, | गु. 1790 | |
| 10×9<br>9; 12 | 18–20 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 70–73 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 597 | 14416 (6) | पनरेतिथिरा सवैया | तुरसी |
| 598 | 12706 | ,, | जसराज (जिनहर्ष) |
| 599 | 13519 (9) | ,, | ,, |
| 600 | 12717 (8) | ,, | ,, |
| 601 | 14914 (8) | ,, | ,, |
| 602 | 14428 (3) | पखवाड़ो | |
| 603 | 13770 (17) | पत्र लेखन विधि (स्त्री ने लिखै जिकी ओपमा) | |
| 604 | 15298 (2) | परची सोना-लोहा की | |
| 605 | 14914 (1) | पृथ्वीराजरी भावना (गीत) | |
| 606 | 15033 (6) | प्रहेलिका(आडियाँ) एवं दोहा-संग्रह | |
| 607 | 13511 (30) | प्रास्ताविक | कविगद, नरहर |
| 608 | 14371 (5) | ,, | वृन्द आदि |
| 609 | 13505 (18) | प्रेमपत्री लेखन विधि | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×11.5<br>12; 12 | 31–34 | पूर्ण | 1819 | |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 64–65 | ,, | 19 वीं श. | |
| 22×17<br>19; 18 | 7–8 | अपूर्ण | ,, | |
| 21.5×14<br>14; 30 | 71–73 | पूर्ण | 1852 | लि. क. बलराज; लि. स्था. बीदपुर |
| 15.5×11<br>13; 28 | 126–128 | ,, | 1757 | लि. क. मनसाराम; लि. स्था. बीलाड़ा |
| 17×17<br>13; 16 | 54–55 | ,, | 20 वीं श. | |
| 10×9<br>10; 14 | 10–18 | ,, | 19 वीं श. | |
| 26.5×22.5<br>11; 20 | 116–118 | ,, | ,, | आगे भरथरी का कवित्त है। |
| 15.5×11<br>15; 30 | 40 वां | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 1–39 अप्राप्त |
| 17×13.5<br>12; 15 | 28–31 | ,, | 20 वीं श. | नगरों तथा वस्तु परक पहेलियां हैं। |
| 17×12<br>11; 19 | 97 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 22.5×15.5<br>17; 15 | 38–40 | ,, | 1886 | 44 पद्य हैं। |
| 16×11.5<br>14; 18 | 56–60 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 60–62 पर तपागच्छ नायक विजयसेन सूरि की स्तुति है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 610 | 14643 (2) | फूल चितवरणी आदि सुभाषित-संग्रह | सुन्दर, बुधराव, खेतसी |
| 611 | 14681 | बारहमासा के चित्र | |
| 612 | 15032 (2) | बारामासी | |
| 613 | 12706 (8) | बारामासो | |
| 614 | 13609 (4) | बारामासो | रामचन्द्र दूबे |
| 615 | 14474 (1) | ,, (किशनजीरो) | |
| 616 | 15086 (3) | ,, | |
| 617 | 14339 (1)1–2 | ,, (कृष्ण-राधा, नेम-राजुल) | |
| 618 | 14412 (4) | बारामासो व स्फुट दोहा | |
| 619 | 13769 (3) | भंगी संवाद | |
| 620 | 12706 (9) | राज-मजलिस | |
| 621 | 13769 (6) | रामचन्द्रजीरा भूलणा | मुनि टीकम |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×15.5<br>15; 34 | 9-13 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 24.5×15.5 | 1-5 | ,, | 19 वीं श. | चित्र सं.-5 चैत्र, आषाढ, सावण, आसोज, फागुण मास के चित्र हैं। |
| 16×11<br>13; 16 | 13-16 | ,, | ,, | 12 पद्य हैं। |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 56-59 | ,, | ,, | |
| 19×15<br>16; 18 | 16-26 | ,, | गु. 1789 | 147 छन्द हैं। पत्र एक ओर लिखे हैं। |
| 19.5×14.5<br>20; 14 | 2-4 | ,, | 1846 | पत्राङ्क 1-2 पर सुन्दरदास, तुलसी, माधोदास आदि के पद हैं। पत्राङ्क 4-7 पर ठाकुरांरा नाम, चौवीस अवतार नाम, एकादशी फल विचार है। |
| 20.5×15.5<br>12; 19 | 83 वां | अपूर्ण | 1854 | पत्राङ्क 83-84 पर कविगद कृत दोहे व श्लोकादि हैं। |
| 12×13.5<br>15; 18 | 1-4 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 14×11<br>7; 16 | 66-72<br>72-74 | ,, | 18 वी श. | |
| 13.5×10.5<br>11; 17 | 45-46 | ,, | 1704 | लि. स्था. ल्हुड़ावण |
| 15.5×11.5<br>9; 18 | 59-62 | ,, | 19 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>14; 20 | 54-56 | ,, | 1706 | लि. क. सांमां; लि. स्था. जोजावर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 622 | 13509 (8) | रूपदीप (कवित्त) | साधुरांम. आसकरन |
| 623 | 13789 (3) | रैंनरूपारस | |
| 624 | 13519 (7) | षड्ऋतु वर्णन | |
| 625 | 14357 (5) | संयोग बत्तीसी आदि | |
| 626 | 14357 (4) | सवैया इकतीसा आदि | कवि व्यास, सुन्दरदास |
| 627 | 14412 (8) | सवैयो-लिखमीनारायणजीरो, सूरजसिंहजीरो | |
| 628 | 14412 (5) | ,, श्रीकृष्ण-लीलारो | |
| 629 | 13499 (1) | सास-बहूरो झगड़ो | |
| 630 | 12706 (6) | सीलोको | |
| 631 | 14128 | सुभाषित संग्रह सस्तवक | |
| 632 | 12732 | ,, एवं पहेलियां | |
| 633 | 14756 (16) | ,, | उदयराज |
| 634 | 14463 (9) | स्फुट छंद | कवि दूदा |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×17<br>13; 26 | 75–76 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 22×18<br>17; 26 | 156 वाँ | ,, | गु. 1814 | 20 पद्य हैं। |
| 22×17<br>19; 18 | 5–6 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×12.5<br>14/17; 18/22 | 1–16 | ,, | 1911 | 86 पद्य हैं। |
| 16×12.5<br>13; 18 | 6–16 | ,, | ,, | |
| 14×11<br>7; 16 | 94–100 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 92–93 पर स्फुट पद्य हैं। |
| 14×11<br>7; 16 | 74–81 | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×10.5<br>10; 26 | 1–2 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>8; 15 | 36-43 | ,, | 19 वीं श. | एक वस्तु के बिना दूसरे का अभाव इसी भाव पर 22 छन्द हैं। |
| 25×12<br>6; 40 | 1–15 | ,, | 19 वीं श. | |
| 21×16<br>20; 30 | 86 वां | ,, | 19 वीं श. | जलसिक्त |
| 24×15<br>35; 24 | 82–83 | ,, | गु. 1814 | 35 दोहे हैं। |
| 20×16.5<br>19; 26 | 76 वां | ,, | 1765 | लि. क. जोगीदास; लि. स्था. गांव भेड़ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 635 | 12732 (5) | स्फुट सवैया | गुणचंद |
| 636 | 13511 (24) | ,, ,, | |
| 637 | 13511 (50) | ,, ,, | गिरधर कविराय |
| 638 | 13770 (4) 2-3 | ,, ,, | कवि हेम, केसोदास गाड़ण |
| 639 | 13770 (4) 7 | ,, ,, | सुन्दरदास |
| 640 | 15051 (3) | ,, ,, देशलक्षणरा | ,, |
| 641 | 13498 (3) | हीयाली ; गुनसदोतरा(कहमुकरी) | |
| 642 | 13505 (17) | हीयाली | |
| 6 नी. शा. 643 | 13781 | नसीहतनामा | |
| प: 644 | 14435 (1) | नसीहतरा दूहा | गुलराज कायस्थ |
| 645 | 13770 (18) | नीतिरा दोहा | |
| 646 | 13511 (35) | राजनीतिरा कवित्त | देवीदास |
| 647 | 13512 (10) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×16<br>15; 22 | 85 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>11; 19 | 83–85 | „ | 19 वीं श. | श्रीकृष्ण, विष्णु, हनुमान परक |
| 17×12<br>11; 20 | 220–222 | „ | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 23–24 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 38–41 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 29×21<br>26; 24 | 6 ठा | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 14.5×12<br>14; 18 | 88–89 | पूर्ण | 1670 | 11 मुकरियां हैं। |
| 16×11.5<br>11; 16 | 54–55 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 27×18.5<br>23; 20 | 1–3 | अपूर्ण | 1942 | |
| 16×13.5<br>12; 12 | 1–26 | पूर्ण | 1935 | अंतिम दोपत्रोंमें गुलराजकृत 'अमल-बत्तीसी है। लि. क. स्वयं ग्रन्थकार; र. का. 1935 |
| 10×9<br>10; 14 | 19–27 | पूर्ण | 19 वीं श. | 56 दोहे हैं। |
| 17×12<br>8; 16 | 116–127;<br>139–169 | „ | 1845 | लि. क. विरदीचंद; पत्राङ्क 170-171 पर श्रीकृष्ण संबंधी कवित्त हैं। |
| 15×11.5<br>7/10; 14/18 | 1–55 | पूर्ण | 1861 | लि.क. विरधीचंद; जलसिक्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 648 | 13515 (1) | राजनीतिरा कवित्त | देवीदास |
| 649 | 13770 (25) | ,, | ,, |
| 650 | 14318 | ,, | ,, |
| 651 | 15033 (4) | ,, आदि | देवीदास, केशव, दीनदरवेश |
| 652 | 13959 (2) | राजनीतिरा छप्पय | |
| 653 | 12729 (5) | राजियारा दोहा | कृपाराम बारठ |
| 654 | 15051 (6) | ,, | ,, |
| 655 | 14388 (5) | लघुचाणक्य राजनीति भाषा | भावनादास |
| 656 | 13770 (2) | लुकमान हकीमरी नसीहत | |
| 657 | 13768 (1) | सिखामणी | |
| 658 | 13770 (20) | ,, | |
| 659 | 12717 (7) | सीख व मूर्ख कथन | |
| 660 | 15033 (3) | स्फुट सीखें | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23×17<br>18; 16 | 3–27 | अपूर्ण | 1860 | प्रथम दो पत्र अप्राप्त;<br>लि. क. सेवग मोतीराम; लि. स्था. सोजत |
| 10×9<br>10; 14 | 1–11 | ,, | 1862 | लि. स्था. कंटालिया ग्राम |
| 23.5×12<br>19/30; 12 | 1–22 | ,, | 1809 | लि. क. वैद्य सिवलाल मलूकचंद<br>लि. स्था. वड़नगर |
| 17×13.5<br>15; 18 | 18–23 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 18 पर महाराजा अभयसिंह व भीमसिह का गीत है । |
| 17×10.5<br>9; 20 | 25–28 | ,, | 19 वीं श. | 9 छन्द है । |
| 16.5×12.5<br>12; 24 | 64 वां | ,, | 20 वीं श. | 104 दोहे हैं । |
| 29×21<br>22; 20 | 9–10 | ,, | 20 वीं श. | 18 दोहे हैं । |
| 12.5×11.5<br>11; 14 | 2–6 | ,, | ,, | पत्राङ्क 7–10 पर पद एवं नुस्खे हैं । |
| 10×9<br>9; 12 | 7–17 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×12<br>16; 12 | 1–3 | ,, | 1898 | लि. क. मूलजी |
| 10×9<br>10; 12 | 59–67 | ,, | 19 वीं श. | 113 सीखें हैं । |
| 21.5×14<br>15; 22 | 69–70 | ,, | 18 वीं श. | 68 सीखें व 68 मूर्खतापूर्ण कार्यों के नाम हैं । |
| 17×13.5<br>13; 16 | 12–16 | ,, | 20 वी श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 7 भक्ति साहित्य | 14473 (10) | अग्रदासजी की वांणी | अग्रदास |
| 662 | 15297 (9) | अष्टक लीला | हरिराय |
| 663 | 15297 (10) | आचार्यजी के स्वरूप को चिंतवन; गुसांईजी को चिंतवन | ,, |
| 664 | 14046 (1) | आचार्यजी को स्वरूप वर्णन | |
| 665 | 13691 (1) | आचार्य महाप्रभु के प्रागट्य की वार्ता | ,, |
| 666 | 14741 (20) | आत्मा बोध, पंचमाश, सोलहतिथि, ज्ञानमाला | गोरखनाथ |
| 667 | 13494 (4) | आदिबोध | रामदास |
| 668 | 14398 (5) | इंदव छन्द | सुन्दरदास |
| 669 | 13798 (2) | इश्क-चमनरादोहा | नागरीदास |
| 670 | 14898 (2) | ,, | ,, |
| 671 | 14373 (2) | उपदेश चितीवरण | सुखराम |
| 672 | 14475 (9) | उपदेश दिढावरणी | फरीद |
| 673 | 14281 | उर्जन (अर्जुन) दासजी की परची एवं जन्मलीला | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×12.5<br>22; 10 | 91–115 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 21×16<br>13; 12 | 5–11 | अपूर्ण | 20 वीं श. | प्रारम्भ के 4 पत्र अप्राप्त |
| 21×16<br>13; 12 | 11–17;<br>17–22 | ,, | ,, | पत्राङ्क 13 वां अप्राप्त |
| 15.5×12.5<br>11; 18 | 1–10 | पूर्ण | 19 वीं श. | कीटविद्ध; 10 वें पत्र पर पद्मपुराण के अनुसार यमुना के 30 नाम है। |
| 29×19<br>15; 16 | 1–107 | पूर्ण | ,, | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 329–340 | पूर्ण | ,, | |
| 20×16<br>13; 20 | 22–28 | ,, | ,, | |
| 10×8<br>6; 10 | 41–48 | ,, | गु. 1922 | |
| 22×18<br>17; 26 | 154–155 | अपूर्ण | गु. 1814 | 36 दोहे हैं। |
| 16.5×12<br>9; 18 | 1–6 | पूर्ण | गु. 1904 | पत्राङ्क 7–8 पर स्फुट दूहा-कवित्त हैं। |
| 20×16<br>13; 16 | 16–21 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 15–16 पर मृग प्रसंग के पद हैं। |
| 19×15.5<br>14; 20 | 84–87 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 17×11<br>20; 11 | 1–27;<br>28–36 | ,, | ,, | र. का. परची 1953 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 674 | 14043 (20) | कक्का बत्तीसी | कबीरदास |
| 675 | 15053 (2) | " | |
| 676 | 15061 (1) | " | |
| 677 | 14369 (10) | कनीरांमजी की वाणी | कनीरांम शिष्य पीथारांम |
| 678 | 13960 (5) | कबीरदासजी की गूदड़ी | कबीरदास |
| 679 | 14475 (7) | कबीरदासजी का छुटकर सबद | " |
| 680 | 13960 (2) | कबीरदासजी की परची | अनन्तदास |
| 681 | 14423 (5) | " " | " |
| 682 | 14376 (11) | " " | " |
| 683 | 14392 (7) | " " | " |
| 684 | 14741 (9) | " " | " |
| 685 | 14716 (4) | " " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24 × 16.5<br>12; 26 | 20–21 | पूर्ण | गु. 1912 | |
| 26.5 × 16.5<br>23; 19 | 4–6 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1874; पत्राङ्क 6–8 पर चारभुजा के पद, पावस का कवित्त, जिनस्तुति, हनुमानजी का कवित्त तथा गीत हैं। |
| 23.5 × 15.5<br>22; 16 | 6–7 | ,, | 19 वीं श. | कीटविद्ध; पत्राङ्क 1–5 पर कृष्ण और वर्षा का रूपक आदि स्फुट कवित्तादि हैं। |
| 22 × 15<br>16; 36 | 272–275 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 14.5 × 10.5<br>9; 14 | 81–89 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 19 × 15.5<br>14; 20 | 59–73 | ,, | 20 वीं श. | |
| 14.5 × 10.5<br>9; 14 | 2–36 | ,, | 19 वीं श. | |
| 11 × 11<br>10; 12 | 128–163 | ,, | 20 वीं श. | |
| 21.5 × 15 5<br>24; 18 | 44–54 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 34–44 पर विष्णुसहस्रनाम है। |
| 11 × 9.5<br>7; 13 | 62–66 | ,, | 20 वीं श. | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 176–199 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 21 × 14.5<br>25; 21 | 282–290 | ,, | 1826 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 686 | 14473 (8) | कबीरदासजी का रेखता | कबीरदास |
| 687 | 13494 (9) | कबीर-रैदास गोष्ठी | रैदास |
| 688 | 14741 (11) | कबीर-रैदास को संवाद | सैना भगत |
| 689 | 14741 (22) | कबीरदासजी की वांणी | कबीरदास |
| 690 | 14068 (2) | ,, ,, | ,, |
| 691 | 14337 (2) | ,, ,, | ,, |
| 692 | 14414 | ,, ,, | ,, |
| 693 | 14395 (1) | ,, ,, | ,, |
| 694 | 14392 (8) | ,, ,, | ,, |
| 695 | 14716 (1) | ,, ,, | ,, |
| 696 | 13737 (8) | ,, की साखियां (अंगबद्ध) | ,, |
| 697 | 13770 (11) | ,, ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 82–85 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 85–87 पर 'कमाल' कृत रेखते हैं। |
| 20×16<br>13; 20 | 45–52 | „ | 19 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 222–230 | „ | „ | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 361–474 | „ | „ | अंतिम पत्र अप्राप्त |
| 15×14<br>19; 22 | 1–80 | „ | 1845 | जीर्ण एवं त्रुटित |
| 14×12.5<br>14; 22 | 382–386 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15×10<br>12; 22 | 17–96 | „ | 1803 | जीर्ण; पत्राङ्क 1–16 अप्राप्त |
| 11×9.5<br>8; 12 | 73–197 | „ | 1884 | लि. क. सीताराम; लि. स्था. देसणोक पत्राङ्क 1–72 अप्राप्त |
| 11×9.5<br>7; 13 | 67–107 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 21×14.5<br>25; 21 | 1–49 | „ | 1826 | लि. क. मंगलदास; लि. स्था. डीडवाणा पत्राङ्क 5–7 पर वाजीदकृत श्रीमुखनामा तथा जगजीवन के पद हैं। |
| 21.5×14.5<br>11; 24 | 1-6 | अपूर्ण | 18 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 83–136 | पूर्ण | 1862 | लि. क. भीखनदास गौड़ लि. स्था. कंटालिया |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 698 | 14391 (1) | कबीरदासजी की साखियाँ(ग्रंगबद्ध) | कबीरदास |
| 699 | 14473 (5) | ,, ,, | ,, |
| 700 | 14478 (2) | ,, ,, | ,, |
| 701 | 14742 (1) | ,, ,, | ,, |
| 702 | 14913 (4) | ,, ,, | ,, |
| 703 | 14913 (1) | ,, ,, | ,, |
| 704 | 15098 (4) | ,, ,, | ,, |
| 705 | 15234 | , ,, | ,, |
| 706 | 15240 (2) | कबीरदासजी के पद एवं कृतिसंग्रह | ,, |
| 707 | 13514 (4) | कबीरदासजी की साखी | ,, |
| 708 | 13494 (2) | करणसागर | ग्वालवाल |
| 709 | 14913 (5) | करन-चितावणी | सुन्दरदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×10<br>10; 18 | 3–91 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1–2 अप्राप्त;<br>अंग 59, साखी 926 |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 45–57 | अपूर्ण | „ | पत्राङ्क 55 वां अप्राप्त |
| 11.5×9.5<br>9; 15 | 351–355 | „ | 20 वीं श. | |
| 15.5×11<br>11; 19 | 1–111 | पूर्ण | गु. 1833 | अंग 64, साखी 1372 |
| 16×11<br>8; 18 | 14–24 | अपूर्ण | 1865 | |
| 16×11<br>8; 18 | 1–21 | „ | 1865 | पत्राङ्क 2 अप्राप्त |
| 16×11.5<br>11; 18 | 1–57 | „ | 1847 | लि. क. मानसिंह; लि. स्थान इन्दोर पत्राङ्क58–59 पर 'चतु:श्लोकी भागवत' पत्राङ्क 60 पर 'कायाकल्प' की 'ओषधी' एवं पत्राङ्क 61–63 पर 'नरसी के पद' हैं। |
| 21.5×15<br>24; 18 | 1–29 | „ | 19 वीं श. | पत्राङ्क10–12 पर 'भक्त विरुदावली' है। |
| 15×11<br>12; 20 | 324–523 | पूर्ण | „ | पद 404, ग्रन्थ-कृतियां 8 |
| 16×12.5<br>16; 12 | 15–21 | „ | 20 वीं श. | अंत में सुखराम कृत पद है। |
| 20×16<br>13; 20 | 10–20 | „ | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>8; 18 | 24–32 | „ | 1865 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 710 | 14418 (8) | करुणाबत्तीसी | माधोदास |
| 711 | 14470 (7) | ,, | ,, |
| 712 | 13770 (23) | ,, | ,, |
| 713 | 14365 (4) | ,, | ,, |
| 714 | 14960 (7) | ,, | ,, |
| 715 | 14897 (4) | ,, | ,, |
| 716 | 13830 | कवित्त | निपटजी |
| 717 | 13960 (4) 1 | ,, | ग्वालबाल |
| 718 | 13960 (4) 2 | कुण्डलिया | मनीराम |
| 719 | 13494 (29) | ,, | सुरतराम |
| 720 | 13511 (29) | ,, | अग्रदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12.5×11<br>10; 15 | 115–129 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 128 वां अप्राप्त |
| 20×16<br>12; 18 | 37-47 | पूर्ण | 1810 | लि. क. गुसांई दौलतगिरि<br>लि. स्था. ग्राम मगरा; पत्राङ्क 47–78 पर सुभाषित एवं हेजे की औषधी है । |
| 10×9<br>10; 14 | 1–20 | ,, | 1862 | लि. स्था. कंटालिया; पत्राङ्क 27 पर सात सुख हैं । |
| 15×10.5<br>11; 16 | 105–116 | ,, | 1888 | |
| 17×15<br>21; 19 | 409–415 | ,, | 1871 | |
| 11.5×8<br>7; 12 | 111–134 | ,, | 1903 | लि. क. जीवणदास; लि. स्था. जैतारण अगले पांच पत्रों में कबीरदास की साखियां हैं । |
| 13×9.5<br>14; 20 | 1–3 | ,, | 18 वीं श. | |
| 14.5×10.5<br>9; 14 | 71 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 14.5×10.5<br>9; 14 | 72–75 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 20 | 152–154 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>11; 19 | 94–95 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 96 पर हिरकिया (पागल)री औषधी है । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 721 | 14423 (2) | कृपन को अंग | वाजीद |
| 722 | 14362 (3) | कृष्ण-रुक्मिणीरो व्याहलो | जनहरीदास |
| 723 | 13749 (4) | खेमदासजी का रेखता | खेमदास |
| 724 | 14383 (2) | गघ्घर निसांणी | जनहरिया |
| 725 | 13494 (24) | गरभ चितावणी | रामदास |
| 726 | 13770 (9) | ,, व स्फुट अंग | ,, |
| 727 | 14394 (2) | ,, | ,, |
| 728 | 14351 (6) | ,, | लालदास |
| 729 | 14365 (6) | ,, | रामचरण |
| 730 | 13765 (6) | गुणनिंद्या-स्तुति | ईसरदास बारठ |
| 731 | 14463 (18) | ,, | ,, |
| 732 | 13494 (1) | गुण-बोध | ध्याँनदास |
| 733 | 14463 (13) | गुण-वैराट | ईसरदास बारठ |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 11×11<br>9; 12 | 14–20 | पूर्ण | 20 वीं श. | अरिल्ल छन्द है । |
| 16×11<br>9; 15 | 37–42 | ,, | 18 वीं श. | |
| 16.5×10.5<br>11; 24 | 521–526 | ,, | 1847 | लि. क. साध माणकदास |
| 16×12.5<br>8; 22 | 1–4 | ,, | 1928 | |
| 20×16<br>13; 20 | 127–136 | ,, | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 44–69 | ,, | 1862 | पत्राङ्क 70 पर चोवीस अवतारों के नाम हैं । |
| 11.5×10<br>9; 12 | 58–77 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14.5×11<br>10; 16 | 49-56 | अपूर्ण | ,, | प्रारम्भिक अंश अप्राप्त |
| 15×10.5<br>11; 16 | 126–140 | पूर्ण | 1888 | |
| 22×16<br>16; 17 | 17–41 | ,, | 1771 | लि. क. मायाचंद; लि. स्था. योधपुर |
| 20×16.5<br>20; 21 | 201–215 | ,, | 1765 | पत्राङ्क 217--219 पर तंत्रोपचार है । लि. क. जोगीदास |
| 20×16<br>13; 20 | 93–95 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×16.5<br>25; 24 | 127–137 | ,, | 1764 | लि. क. जोगीदास |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 734 | 14370 (1) | गुण हरिरस | ईसरदास बारठ |
| 735 | 14463 (6) | ,, | ,, |
| 736 | 14470 (5) | ,, | ,, |
| 737 | 14478 (3) | ,, | ,, |
| 738 | 14359 (7) | ,, | ,, |
| 739 | 14079 (11) | ,, | ,, |
| 740 | 13498 (4) | गुनगंजन नामों | वाजीद |
| 741 | 14284 (1) | गुरु-उपदेशादि | सेवादास |
| 742 | 14411 (1) | गुरु-उपदेश | पुष्करदास शिष्य चतरदास |
| 743 | 13502 | गुरु-प्रकरणादि | ग्वालवाल |
| 744 | 14392 (1) | गुरु-मंत्र | सेवादास |
| 745 | 13494 (11) | गुरु-महिमा | रामदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×15<br>9; 16 | 38–64 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 2–14 अंकपाटी; पत्राङ्क 15–24 सीधोवर्णा एवं लघु चाणक्य का चतुर्थ अध्याय है। |
| | | ,, | | |
| 20×16.5<br>19; 26 | 58–66 | ,, | 1763 | लि. क. जोगीदास; लि. स्था. भेड़ग्राम |
| 20×16<br>18; 22 | 18–27 | | 1803 | लि. क. दौलतगिरि; अन्त में अमरेस कृत स्फुट कवित्त, सवैया हैं। |
| 11.5×9.5<br>9; 15 | 355–388 | ,, | 20 वीं श. | |
| 14.5×11<br>10; 18 | 26–45 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. रूपदास; लि. स्था. नागपुर |
| 14×13.5<br>15; 18 | 65–77 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14.5×12<br>10; 24 | 94–127 | ,, | 1670 | लि. क. गोपाल बछिल |
| 10×8<br>7; 13 | 1–32 | ,, | 1911 | लि. क. उदयराम; लि. स्था. खींवसर |
| 15.5×10.5<br>10; 18 | 2–9 | अपूर्ण | 1842 | प्रथम पत्र अप्राप्त; र. स्था. डीडवाणा लि. क. बदरीनाथ निरंजनी |
| 33×16.5<br>13; 44 | 1–92 | पूर्ण | 19 वीं श. | 9 प्रकरणों में पौराणिक भक्तों के आख्यान युक्त। |
| 11×9.5<br>7; 12 | 1–11 | ,, | 20 वीं श. | |
| 20×16<br>11; 20 | 55–61 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 746 | 14043 (8) | गुरु-माहिमा | रामदास |
| 747 | 13494 (25) | गुरु-शिष्य-संवाद | परमराम |
| 748 | 13494 (3) | ,, | ,, |
| 749 | 14068 (5) | गोरखनाथजीरा ग्रन्थ<br>(1) सृष्टि पुराण<br>(2) चौवीस सिद्धि<br>(3) रहराशि<br>(4) दयाबोध<br>(5) ज्ञानमाला<br>(6) पद एवं सबदी | गोरखनाथ |
| 750 | 14716 (6) | गोरखनाथजीरा ग्रन्थ<br>(1) दत्तगुष्ठी<br>(2) ज्ञानतिलक<br>(3) सृष्टि पुराण<br>(4) रहरासि<br>(5) दयाबोध<br>(6) पद-संग्रह | ,, |
| 751 | 13494 (14) | गोरखनाथजीरा पाँच वरत | |
| 752 | 14716 (7) | ,, री सबदी | गोरखनाथ |
| 753 | 13770 (12) | चन्द्रायणा | वाजीद |
| 754 | 14756 (13) | ,, (रामायण) | जन सारंग |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5 × 17<br>13; 28 | 1–5 | पूर्ण | गु. 1910 | |
| 20 × 16<br>13; 20 | 136–139 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20 × 16<br>9; 12 | 77–84 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15 × 14<br>19; 22 | 188–199 | पूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ में गोरखनाथजी के बत्तीस लक्षणादि हैं। |
| 21 × 14.5<br>25; 21 | 398–415 | पूर्ण | गु. 1826 | पत्राङ्क 414 दो बार |
| 20 × 16<br>11; 20 | 78 वां | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 21 × 14.5<br>25; 21 | 415–425 | पूर्ण | गु. 1826 | |
| 10 × 9<br>9; 12 | 137–145 | पूर्ण | 1862 | लि. क. भीखनदास गौड़<br>लि. स्था. कंटालिया |
| 24 × 15<br>35; 24 | 65–67 | पूर्ण | गु. 1811 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 755 | 14046 (3) | चरन-चिन्हानि | वल्लभदास |
| 756 | 13494 (13) | चांणकबोध | किसनदास |
| 757 | 14285 (2) | चितावणी को अंग | जनमुरली |
| 758 | 14043 (9) | ,, | कनीराम |
| 759 | 14352 (4) | ,, | रामचरणदास |
| 760 | 14392 (9) | ,, | ,, |
| 761 | 14473 (1) | ,, | प्रेमदास |
| 762 | 14714 (2) | ,, | सुन्दरदास |
| 763 | 14897 (3) | ,, | रामचरणदास |
| 764 | 15016 | चुरेलीना भेख | |
| 765 | 14352 (6) | चौरासी बोल | जगंनाथ |
| 766 | 14475 (1) | ,, | ,, |
| 767 | 15297 (8) | चौरासी वैष्णवों का बोल | हरिदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×12.5 11; 16 | 20–25 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 25-34 पर हरिदासकृत 'कृष्णप्रेमामृत' है। |
| 20×16 11; 20 | 62–77 | ,, | 19 वीं श. | अंत में तंबाखू का दोहा है। |
| 10×7.5 8; 12 | 43–53 | ,, | ,, | |
| 24.5×17 13; 28 | 6–20 | पूर्ण | 1912 | |
| 13.5×10.5 8; 12 | 45–65 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 11×9.5 7; 14 | 108–135 | पूर्ण | 20 वीं श. | लि. क. नवलसिंह रामस्नेही लि. स्था. अहिपुर; पत्राङ्क 1–18 अप्राप्त |
| 12.5×12.5 22; 10 | 19–20 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 10.5×8 7; 12 | 51–75 | पूर्ण | 20 वी श. | |
| 11.5×8 7; 12 | 85–111 | ,, | गु. 1903 | |
| 17.5×11.5 14; 14 | 1–10 | ,, | 19 वीं श. | राधा-कृष्ण लीला |
| 13.5×10.5 8; 12 | 71–76 | ,, | ,, | |
| 19×15.5 14; 20 | 92–94 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 21×16.5 15; 12 | 45–51 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 768 | 14247 | चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता | हरिराय |
| 769 | 15238 (3) | छासठ अपराध | |
| 770 | 14068 (13) | जड़भरथरी-चरित्र | जनगोपाल |
| 771 | 14741 (14) | ,, | ,, |
| 772 | 15099 (6) | ,, | ,, |
| 773 | 14741 (19) | जनहरीदास की कृतियां<br>(1) ब्रह्म-स्तुति<br>(2) प्राणमात्रा<br>(3) वीरारस वैरागी<br>(4) हंस परमौध | जनहरीदास |
| 774 | 14392 (3) | जनहरीदास की कृतियां<br>(1) नाममाला<br>(2) मनहठ<br>(3) मनप्रसंग<br>(4 मन मतो जोग<br>(5) मन उपदेश<br>(6) गात्रा का पद | ,, |
| 775 | 14340 (4) | जनहरीदास की वांणी व (तीसपदी, चन्द्रायणा) | ,, |
| 776 | 14359 (10) | ,, | ,, |
| 777 | 15095 (4) | ,, एवं कृति संग्रह | ,, |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 33×23.5<br>26; 28 | 1–345 | पूर्ण | 1890 | अंतिम पत्र खण्डित |
| 14.5×13.5<br>10; 12 | 3–38 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14<br>19; 22 | 274–279 | ,, | ,, | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 266–278 | ,, | ,, | |
| 18×12<br>10; 18 | 172–184 | ,, | गु. 1898 | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 314–329 | ,, | 19 वीं श. | |
| 11×9.5<br>7; 13 | 1–48 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24×14<br>12; 24 | 101–123 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 118–119 पर अग्रदास के पद हैं । |
| 14.5×11<br>10; 18 | 2–35 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>लि. क. रूपदास; लि. स्था. नागोर |
| 15×11<br>9; 19 | 71–199 | पूर्ण | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 778 | 15099 (1) | जनहरीदास की साखियां | जनहरीदास |
| 779 | 14742 (2) | ,, कुण्डलिया, चन्द्रायणा, रेखता पद, कड़खा | ,, |
| 780 | 13494 (16) | जन्मपत्रिका की रमैणी | कबीरदास |
| 781 | 14044 (3) | जन्माष्टमी की बधाई का पद | सूरदास |
| 782 | 14381 (3) | जोगेश्वरी वांणी-संग्रह | गोरखनाथ, हणवंत, कणेरीपाव हालीपाव, चापरनाथ आदि |
| 783 | 14352 (7) | झूलणा | सेवगराम |
| 784 | 15437 | ज्ञान-कक्को | |
| 785 | 14472 (1) | (1) ज्ञान चौंतीसी<br>(2) कबीर-धर्मदास संवाद<br>(3) रमैनी आदि | कबीरदास |
| 786 | 14473 (6) | ज्ञानजी की साखी | संतज्ञानी |
| 787 | 13339 (4) | ज्ञान-प्रकाश | जगजीवन |
| 788 | 14396 (3) | ज्ञानमाला | शम्भूनाथ |
| 789 | 13746 (3) | ज्ञानरसिक-गुणविलास | रामसजन शिष्य रामचरण |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×12<br>11; 22 | 1–9 | पूर्ण | गु. 1898 | |
| 15.5×11<br>11; 19 | 111–270 | ,, | गु. 1833 | |
| 20×16<br>13; 20 | 81–92 | ,, | 19 वीं श. | |
| 22×13.5<br>24; 12 | 85–86 | ,, | ,, | राग-देशगंधार |
| 20×11<br>22; 12 | 42–75 | ,, | गु. 1810 | |
| 13.5×10.5<br>8; 12 | 76–89 | ,, | 1921 | पत्राङ्क 90–92 पर हनुमानजी के कवित्त हैं। |
| 22×11<br>7; 21 | 1–4 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×14<br>13; 13 | 1–139 | पूर्ण | 1834 | रमैनी 1884 में लिखी गई है। |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 57–68 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×14<br>11; 26 | 1–14 | ,, | ,, | र. का. 1772 |
| 11×8<br>11; 18 | 1 | ,, | ,, | अंतिम पत्र पर |
| 14×12<br>17; 15 | 134–146 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 790 | 14043 (3) | ज्ञानलीला | रामानन्द |
| 791 | 14388 (1) | ,, | ,, |
| 792 | 14412 (2) | ठाकुरांरो चौमासो | |
| 793 | 13737 (6) | ठाकुरांरो वारेमासो | संत जगो |
| 794 | 14398 (6) | तुरसीदासजी की वांणी (गुरुदेव को अंग) | जनतुरसी |
| 795 | 14068 (6) | ,, एवं कृति-संग्रह | ,, |
| 796 | 14411 (4) | ,, | ,, |
| 797 | 14337 (4) | ,, | ,, |
| 798 | 14709 (3) | ,, एवं कृति-संग्रह (करणीसार, साधुलक्षण, तत्त्वगुणभेद आदि) | ,, |
| 799 | 14716 (9) | तुरसीदासजी का कृति-संग्रह | ,, |
| 800 | 14423 (3) | ,, ,, | ,, |
| 801 | 14360 (5) | ,, की फुटकर साखी | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×17<br>11; 24 | 4–6 | पूर्ण | गु. 1910 | |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 1–4 | ,, | गु. 1920 | पत्राङ्क 5–6 पर कबीर कृत 'राममंत्र' है |
| 14×11<br>7; 16 | 53–61 | ,, | 18 वीं श. | |
| 21.5×14.5<br>12; 24 | 1–3 | ,, | 1799 | |
| 10×8<br>5; 14 | 49–55 | ,, | गु. 1922 | |
| 15×14<br>19; 22 | 199–242 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×10.5<br>10; 18 | 22–70 | ,, | गु. 1842 | |
| 14×12.5<br>14; 22 | 1–19 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 26.5×12.5<br>13; 46 | 78–186 | पूर्ण | ,, | कीटविद्ध, 'परचोविधान' अपूर्ण है। |
| 21×14.5<br>25; 23 | 428–545 | ,, | गु. 1826 | |
| 11×11<br>11; 12 | 20–39 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×10<br>10; 18 | 316–383 | पूर्ण | 1842 | लि. क. साध संतोषदास |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 802 | 14437 (3) 8 | त्रिलोचनजी की परची | अनन्तदास |
| 803 | 14741 (5) | ,, | ,, |
| 804 | 14068 (5) 1 | दत्तगुष्टि (गोष्ठी) | गोरखनाथ |
| 805 | 14741 (27) | दयालजी की परची | जनहरीदास |
| 806 | 14373 (6) | दरियादास की वांणी | जनदरिया |
| 807 | 14416 (8) | दशदान, गुरु-शिष्य-प्रश्नोत्तर, गोरख वचन | गोरखनाथ |
| 808 | 15297 (6) | दश नामावली, नामरत्न नामावली | |
| 809 | 14337 (6) | दादूदयालजी को कृत (कृति-संग्रह) | दादूदयाल |
| 810 | 14381 (1) | दादूदयालजी की वांणी (साखी) | ,, |
| 811 | 13749 (1) | ,, एवं पद-संग्रह | ,, |
| 812 | 14362 (2) | ,, साखी | ,, |
| 813 | 15240 (1) | , साखी एवं पद-संग्रह | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25×13.5<br>14; 12 | 151–157 | पूर्ण | 1814 | लि.क. साध गोपाल; लि. स्था. गांव गूढा पत्राङ्क 158–160 पर हरिहर कृत विष्णुपंजर स्तोत्र है । |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 84–87 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14<br>19; 22 | 185–188 | ,, | ,, | साथ में 'ज्ञानदीप प्रबोध' भी है । |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 497–502 | ,, | ,, | |
| 20×16<br>15; 16 | 1–5 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 12×11.5<br>12; 12 | 39–43 | पूर्ण | गु. 1892 | |
| 21×16.5<br>10; 10 | 28–38 | ,, | 20 वीं श. | संस्कृत में हैं । |
| 14×12.5<br>14; 22 | 1–73 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20.5×11<br>22; 12 | 10–23 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ के 9 पत्र अप्राप्त |
| 16.5×10.5<br>11; 24 | 1–346 | पूर्ण | 1847 | लि. क. साध माणकदास; जीर्ण; पद 27 रागों में हैं । |
| 16×11<br>10; 15 | 8–25 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 25–31 पर संतों के पद संग्रह हैं। |
| 15×11<br>12; 20 | 8–189;<br>189–324 | पूर्ण | | पत्राङ्क 1–7 अप्राप्त; अंग 37, साखी 2704, राग 27, पद 440 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 814 | 14452 (1) | दानलीला सचित्र | नंदराम |
| 815 | 15032 (1) | ,, | |
| 816 | 14043 (24) | दासजीरी चौपइयां | दास |
| 817 | 13480 (3) | दृष्टांत-संग्रह | |
| 818 | 14392 (5) | देवजी की अष्टपदी | जनमुरली |
| 819 | 14482 (5) | देवीदासजी की वाणी | देवादास<br>सं. क. हरीदास |
| 820 | 14482 (7) | ,, कृति संग्रह | ,, |
| 821 | 13494 (27) | देवी को अंग | कबीरदास |
| 822 | 14475 (5) | द्यालदासजी के कवित्त एवं नामप्रताप | द्यालबाल (जनरामा) |
| 823 | 15369 (4) | द्यालदासजी के गीत | ,, |
| 824 | 14352 (10) | द्यालदासजी के छुटकर सबद | ,, |
| 825 | 14043 (10) | ,, की वाणी | ,, |
| 826 | 14364 (13) | ,, ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×16.5<br>11; 16 | 1–12 | पूर्ण | 20 वीं श. | चित्र सं 32; र. का. 1762 |
| 16×11<br>13; 10 | 7–13 | अपूर्ण | 1853 | पत्राङ्क 1–6 अप्राप्त; लि. क. सेवाराम |
| 24×16.5<br>14; 40 | 39–41 | ,, | गु. 1912 | |
| 17×14<br>13; 26 | 252–265 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 11×9.5<br>7; 13 | 55–59 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24.5×12<br>35; 15 | 264–445 | ,, | गु. 1844 | |
| 24.5×12<br>35; 15 | 501–527 | अपूर्ण | गु. 1844 | |
| 20×16<br>13; 20 | 150–151 | ,, | 19 वीं श. | |
| 19×15.5<br>14; 20 | 32–40 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 22×15<br>16; 36 | 222–226 | ,, | 19 वीं श. | पाँच गीत हैं। |
| 13.5×10.5<br>10; 16 | 108–112 | ,, | गु. 1921 | |
| 24.5×17<br>13; 22 | 21–29 | अपूर्ण | गु. 1912 | |
| 13×11<br>10; 10 | 32–42 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 827 | 14369 (5) | द्यालदासजी के हरजस | द्यालबाल |
| 828 | 14480 (2) | द्विजकन्या-संवाद | दादूदयाल |
| 829 | 15309 | ,, भाषा | कबीरदास |
| 830 | 14351 (2) | धन्नांजी की परची | अनन्तदास |
| 831 | 14411 (2) | ,, | ,, |
| 832 | 14741 (7) | ,, | ,, |
| 833 | 14913 (3) | ,, | ,, |
| 834 | 14405 (1) | धर्मचितावणी आदि | सेवादास |
| 835 | 15099 (2) | धर्म-युधिष्टर-संवाद भाषा | जनदयाल |
| 836 | 14929 (1) | ध्यांन-मंजरी | अग्रदास |
| 837 | 14066 (5) | ध्यांन-लीला | माधोदास |
| 838 | 14048 (4) | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल |
| 839 | 14068 (15) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 22×15<br>16; 36 | 226-238 | पूर्ण | 19 वीं श. | 24 रागों में निबद्ध |
| 17×8<br>8; 17 | 159–203 | „ | „ | |
| 29.5×13.5<br>9; 34 | 1–21 | „ | 1934 | लि. क. हीरादास; लि. स्था. जोधपुर |
| 14.5×11<br>10; 18 | 18–25 | „ | 19 वीं श. | |
| 15.5×10.5<br>10; 18 | 9–16 | „ | गु. 1842 | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 167–171 | „ | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>8; 18 | 8–14 | „ | 1865 | |
| 16×10.5<br>10; 16 | 1–18 | „ | 19 वीं श. | |
| 18×12<br>11; 22 | 10–44 | „ | गु. 1898 | |
| 22×11.5<br>9; 22 | 1–8 | „ | 20 वीं श. | |
| 22×16<br>14; 14 | 1–7 | „ | 1759 | लि. क. हरदैराम |
| 15.5×10<br>11; 26 | 1–18 | „ | 19 वीं श. | |
| 15×14<br>19; 22 | 290–303 | „ | „ | पत्राङ्क 299 के बाद पत्र संख्या 291 से पुनः लगी हुई है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 840 | 14078 (2) | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल |
| 841 | 14202 | ,, | ,, |
| 842 | 14261 | ,, | ,, |
| 843 | 14334 (2) | ,, | ,, |
| 844 | 14359 (17) | ,, | परमानन्द |
| 845 | 14365 (1) | ,, | जनगोपाल |
| 846 | 14376 (5) | ,, | ,, |
| 847 | 14676 (2) | ,, सचित्र | ,, |
| 848 | 14741 (1) | ,, | ,, |
| 849 | 14896 (2) | ,, | ,, |
| 850 | 14897 (2) | ,, | ,, |
| 851 | 14904 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5 × 15<br>15; 16 | 1–18 | पूर्ण | गु. 1729 | प्रारम्भ के 3 पद अप्राप्त |
| 20.5 × 11.5<br>12; 28 | 7–19 | अपूर्ण | 1900 | पत्राङ्क 19-20 पर रामचन्द्रजी की स्तुति है। |
| 29 × 13.5<br>15; 42 | 1–8 | " | 1821 | लि. क. वैष्णव किसोरदास |
| 15 × 10.5<br>9; 22 | 1–29 | " | 20 वीं श. | गुटके के प्रारम्भ में 'विष्णुपंजरस्तोत्र' है। |
| 14.5 × 11<br>9; 18 | 82–91 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 92–93 पर माधोदास कृत 'हनुमान जयति' तथा 93–97 पर पद-संग्रह हैं। |
| 15 × 10.5<br>10; 15 | 1–32 | " | गु. 1888 | पत्राङ्क 32–33 पर श्रीकृष्ण के 28 नाम हैं। |
| 21.5 × 15.5<br>20; 18 | 58–72 | " | 18 वीं श. | पत्राङ्क 55–57 पर 'दधिदांन-इकतोसी' है। |
| 21.5 × 12.5<br>11; 24 | 28–46 | " | 1848 | चि. सं. 7 |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 1–24 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16 × 11<br>11; 20 | 34–60 | " | " | |
| 11.5 × 8<br>7; 12 | 28–85 | " | गु. 1903 | प्रारम्भ के 27 पत्रों में 'गीता' है। |
| 11 × 10.5<br>10; 14 | 1–39 | अपूर्ण | 1841 | तृतीय पत्र अप्राप्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 852 | 14940 | ध्रुव-चरित्र | जनगोपाल |
| 853 | 15070 (1) | ,, | मुरलीदास |
| 854 | 15095 (2) | ,, | जनगोपाल |
| 855 | 15099 (8) | ,, | ,, |
| 856 | 14909 (3) | नरसीजीरो माहेरो | वसंत |
| 857 | 13503 (1) | नरसीजीरो माहेरो | वसंत |
| 858 | 14365 (5) | नरसी मेहतारी हुंडी | जेठमल कायस्थ |
| 859 | 14418 (12) | ,, | ,, |
| 860 | 13972 (3) | नागलीला | सूरदास |
| 861 | 14359 (2) | नामदेवजी की परची | अनन्तदास |
| 862 | 14043 (12) | ,, | ,, |
| 863 | 14437 (3) | ,, | ,, |
| 864 | 14925 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×13.5<br>11; 17 | 1–29 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15×12<br>9; 18 | 1–15 | ,, | ,, | 105 छन्द हैं। |
| 15×11<br>9; 19 | 33–60 | ,, | ,, | |
| 18×12<br>12; 18 | 312–334 | ,, | गु. 1898 | |
| 8.5×12<br>8; 16 | 112–126 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>13; 21 | 1–9 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×10.5<br>11; 16 | 116–126 | ,, | 1889 | र. का 1710 (?) 1720 (?)<br>र. स्था. अहिपुर |
| 12.5×11<br>10; 15 | 141–148 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 21×16<br>19; 18 | 87–88 | पूर्ण | 1887 | लि. क. खीमजी छगनजी तिवाड़ी<br>लि. स्था. भुजनगर |
| 14.5×11<br>12; 16 | 7–13 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1645 |
| 24.5×17<br>14; 20 | 46–59 | अपूर्ण | गु. 1912 | |
| 25×13.5<br>14; 12 | 143–151 | पूर्ण | 1814 | लि. क. साध गोपाल;<br>लि. स्था. गिरवा गांव गूढा; पत्राङ्क 78–142 पर 'गीता' है। |
| 30.5×15<br>15; 32 | 1–2 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 865 | 14741 (8) | नामदेवजी की परची | अनन्तदास |
| 866 | 13497 (7) 45 | नामदेव-पातशाह का झगड़ा | कबीरदास |
| 867 | 15240 (3) | नामदेवजी की वाणी (पद-संग्रह) | नामदेव |
| 868 | 14716 (12) | ,, | ,, |
| 869 | 14741 (28) | नामदेवजी की महिमा का पद | |
| 870 | 14073 (2) 3 | ,, की साखी | ,, |
| 871 | 14475 (8) | नामप्रताप आदि | परसराम |
| 872 | 14373 (5) | ,, | रामचरण |
| 873 | 14285 (1) | ,, एवं चितावणी | ,, |
| 874 | 14364 (7) | ,, माहात्म्य एवं समयसार | जनतुरसी |
| 875 | 14351 (5) | नाम-महिमा, राम-रक्षा | रामानन्द |
| 876 | 14741 (23) | ,, एवं जखड़ी | वाजीद |
| 877 | 14741 (16) | ,, एवं चितावणी | सेवादास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 171–176 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 18 × 13.5<br>9; 19 | 147–149 | पूर्ण | ,, | |
| 15 × 11<br>12; 20 | 523–562 | ,, | ,, | |
| 21 × 14.5<br>25; 22 | 555–575 | ,, | 1826 | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 502–503 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5 × 10<br>9; 18 | 273–276 | ,, | 19 वीं श. | |
| 19 × 15.5<br>14; 20 | 73–84 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 20 × 16<br>14; 16 | 43–49 | ,, | 20 वी श. | |
| 10 × 7.5<br>8; 12 | 1–43 | ,, | 19 वीं श. | |
| 13 × 11<br>10; 14 | 5–40 | ,, | 1963 | लि. क. हिम्मतराम; लि. स्था. मूँडवा |
| 14.5 × 11<br>12; 20 | 43–48 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 476–480 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 287–295;<br>295–303 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 878 | 14709 (2) | नाम-महिमा एवं चितावणी | सेवादास |
| 879 | 13514 (1) | नाम-माहात्म्य | घमंडीदास |
| 880 | 14071 (2) | नामरत्न की टीका | हरिराय |
| 881 | 15589 | नाम हीरावली तथा व्रज-लीला | दामोदर |
| 882 | 15095 (1) | नारायणलीला | माधवदास |
| 883 | 15297 (7) | नित्यलीला | हरिराय |
| 884 | 14048 (1) | निपटजी का सवैया | निपटजी |
| 885 | 13494 (5) | निरालंभ | रामदास |
| 886 | 12804 | निर्णयसार | कबीरदास |
| 887 | 14388 (2) | निसाणी | पेमदास शिष्य बालकदास |
| 888 | 13960 (4) 3 | निसाणी आदि | मनीराम |
| 889 | 13960 (1) | पखवाड़ो | भीखमदास |
| 890 | 13498 (2) | पद-संग्रह | अग्रदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26.5×12.5<br>13; 46 | 72–78 | पूर्ण | 19 वीं श. | कीटविद्ध |
| 16×12.5<br>16; 12 | 1–5 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 17×18<br>11; 17 | 21–56 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 20.5×9<br>7; 24 | 1–4 | „ | 19 वीं श. | श्रीकृष्णनाम-गुणकथन |
| 15×11<br>9; 19 | 1–32 | „ | „ | |
| 21×16.5<br>13; 12 | 41–45 | „ | 20 वीं श. | |
| 15.5×10<br>11; 26 | 1–7 | „ | 19 वीं श. | जीर्ण; अंत में राघोदास तथा रज्जब के भी पद हैं। |
| 20×16<br>13; 20 | 28–30 | „ | „ | |
| 25×15<br>15; 32 | 1–16 | „ | 1819 | जीर्ण-कीटविद्ध |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 7–11 | „ | गु. 1920 | |
| 14.5×10.5<br>9; 14 | 76–80 | „ | 19 वीं श. | |
| 14.5×10.5<br>12; 16 | 1–2 | „ | „ | अंत में 'मीरां' का पद है। |
| 14.5×12<br>14; 18 | 83–87 | „ | 1670 | गुटके के पत्र अस्त-व्यस्त हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 891 | 13503 (5) 8 | पद-संग्रह | अग्रदास |
| 892 | 13497 (7) 1 | " | कबीरदास |
| 893 | 13503 (3) 3 | " | " |
| 894 | 13503 (5) 1 | " | " |
| 895 | 13503 (4) 6 | " | " |
| 896 | 13767 (1) 10 | " | " |
| 897 | 14043 (13) 11 | " | " |
| 898 | 14382 (4) | " | " |
| 899 | 13497 (7) 26 | " | काजीमहमद |
| 900 | 13497 (7) 32 | " | कालू |
| 901 | 14071 (1) 4 | " | कुम्भनदास |
| 902 | 13767 (1) 5 | " | खींवा |
| 903 | 13503 (5) 10 | " | खेम |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 3, 4, 11 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 11–160 | ,, | ,, | पत्राङ्कों का विवरण परिशिष्ट में देखें। |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 6–7 | ,, | ,, | |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 1–3, 6,8,<br>9, 11–14 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 6–7 | ,, | ,, | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 5–6 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24×16.5<br>13; 36 | 21–23<br>45–47,<br>51 | ,, | गु. 1912 | |
| 11×9.5<br>7; 13 | 49–53 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 53–55 पर अठाईसनाम, एकश्लोकी रामायण व भागवत है। |
| 18×13.5<br>9; 19 | 68-69 | | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 100–101 | ,, | ,, | ,, |
| 17×18<br>11; 17 | 15 वां | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 20 पर अष्टछाप के कवियों की प्रशंसा का पद है। |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 3 रा | ,, | ,, | |
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 5 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 904 | 13767 (1) 11 | पद-संग्रह | खेम |
| 905 | 13497 (7) 43 | ,, | गरीबदास |
| 906 | 14431 (1) | ,, हरिजस | गुलराज कायस्थ |
| 907 | 14431 (2) | ,, व स्नेहलीला | ,, |
| 908 | 13497 (7) 4 | ,, | गैस |
| 909 | 13503 (5) 16 | ,, | जनगोपाल |
| 910 | 14381 (2) | ,, | गोरखनाथ |
| 911 | 13503 (4) 7–8 | ,, | घाटमदास; चिमनाबाई |
| 912 | 13501 (3) 2 | ,, | जनचेतन |
| 913 | 14073 (7) | ,, | छाजू |
| 914 | 15240 (4) | ,, | छीतमदास |
| 915 | 13497 (7) 38 | ,, | ,, |
| 916 | 14068 (11) | ,, | जगजीवनदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 7 वां | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 152वां | ,, | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 17.5×13.5<br>11; 11 | 1–7 | ,, | 20 वीं श. | लि. क. गुलराज कायस्थ |
| 17.5×13.5<br>12; 11 | 8–56 | ,, | ,, | लि. क. गुलराज कायस्थ |
| 18×13.5<br>9; 19 | 13 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>15; 24 | 14 वां | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 20.5×11<br>22; 12 | 23–42 | ,, | गु. 1810 | |
| 20.5×11<br>12; 24 | 6–7 | ,, | 19 वीं श. | |
| 12×8<br>9; 12 | 162–168 | ,, | गु. 1860 | रागवद्ध |
| 15.5×10<br>9; 18 | 290 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×11<br>12; 20 | 562–566 | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 127 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15×14<br>19; 22 | 269–271 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 917 | 13767 (1) 12 | पद-संग्रह | जगजीवनदास |
| 918 | 13497 (7) 39 | ,, | जानकीदास |
| 919 | 14476 (1) | ,, हरजस | जैमलदास |
| 920 | 14364 (2) | ,, ,, | ,, |
| 921 | 13503 (2) | ,, ,, | ,, |
| 922 | 14479 (3) | ,, ,, | ,, |
| 923 | 14394 (4) | ,, | ,, |
| 924 | 14043 (5) | ,, | ,, |
| 925 | 13497 (7) 33 | ,, | जनज्ञानी |
| 926 | 13497 (7) 23 | ,, | जनतुरसी |
| 927 | 13503 (5) 13 | ,, | ,, |
| 928 | 14423 (4) | ,, | ,, |
| 929 | 14766 (2) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 7 वाँ | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 129 वां | ,, | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 17.5×11.5<br>9; 19 | 6–22 | ,, | ,, | पत्राङ्क 1–5 अप्राप्त |
| 13×11<br>10; 14 | 3–4 | ,, | ,, | |
| 23.5×15.5<br>13; 30 | 1–5 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 15×10<br>8; 16 | 186–191 | ,, | गु. 1898 | |
| 11.5×10<br>9; 12 | 84–90 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24.5×17<br>11; 24 | 7–8 | ,, | गु. 1910 | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 103 वां | ,, | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 55, 163 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 7–8 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 11×11<br>11; 12 | 39–127 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16×11<br>10; 22 | 57–91 | ,, | 1763 | लि. स्था. आसोप; पत्राङ्क 56 अप्राप्त पत्राङ्क 92 पर सूरदास का पद है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 930 | 13497 (7) 19 | पद-संग्रह | तुलसीदास |
| 931 | 13503 (5) 7 | " | " |
| 932 | 13503 (4) 4 | " | " |
| 933 | 14068 (12) | " | दादूदयाल |
| 934 | 13497 (7) 27 | " | " |
| 935 | 13497 (7) 10 | " | दूलहराम |
| 936 | 13494 (15) | " | दीन; नृसिंहदास |
| 937 | 13497 (7) 29 | " | देवादास |
| 938 | 14043 (13) 19 | " | द्यालवाल |
| 939 | 13497 (7) 5 | " | धन्ना |
| 940 | 13497 (7) 20 | " | नरसी |
| 941 | 13503 (5) 2 | " | " |
| 942 | 14043 (13) 5 | " | नागरीदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×13.5<br>9; 19 | 39, 82, 134–135, 164, 165 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 5, 11, 12 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>12; 24 | 3–4 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15×14<br>19; 22 | 271–273 | ,, | 1845 | लि. क. भगवानदास |
| 18×13.5<br>9; 19 | 89 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 23,24,70 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 20×16<br>11; 20 | 78–80 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 92–94; 143–144 | ,, | 19 वी श. | |
| 24×16.5<br>14; 30 | 60–61 | ,, | गु. 1912 | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 14 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 42, 62, 71, 78, 160–161 | ,, | 19 वीं श. | राबगद्ध |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 6–13 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>13; 39 | 2 रा | ,, | गु. 1912 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 943 | 13503 (5) 5 | पद-संग्रह | नानग |
| 944 | 13497 (7) 15 | ,, | ,, |
| 945 | 13767 (1) 6 | ,, | नापा |
| 946 | 13497 (7) 21 | ,, | ,, |
| 947 | 13497 (7) 12 | ,, | नामदेव |
| 948 | 13503 (5) 4 | ,, | ,, |
| 949 | 13767 (1) 3 | ,, | ,, |
| 950 | 14068 (7) 2 | ,, | ,, |
| 951 | 14043 (13) 10 | ,, | निरभैराम |
| 952 | 14073 (6) | ,, | नैनूदास |
| 953 | 13497 (7) 24 | ,, | परमानन्द |
| 954 | 13767 (1) 9 | ,, | ,, |
| 955 | 13503 (14) 5 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 3 रा | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 12 | 54 वाँ | ,, | ,, | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 3 रा | ,, | 20 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 44 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 34 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 3, 10, 12 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 3 रा | ,, | 20 वीं श. | रागबद्ध |
| 15×14<br>19; 22 | 245–250 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24×16.5<br>12; 34 | 15 वां | ,, | गु. 1912 | |
| 15.5×10<br>9; 18 | 288–289 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 57 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 5 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 7 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 956 | 14071 (1) 2 | पद-संग्रह | परमानन्द |
| 957 | 14043 (13) 9 | ,, | परसराम |
| 958 | 13497 (7) 30 | ,, | ,, |
| 959 | 13503 (3) 4-5 | ,, | पीपा; पूरणदास |
| 960 | 13497 (7) 40 | ,, | पोहकरराम |
| 961 | 13497 (7) 25 | ,, | बखतावर |
| 962 | 13503 (3) 1 | ,, | ,, |
| 963 | 13497 (7) 36 | ,, | बखना |
| 964 | 13767 (1) 13 | ,, | ,, |
| 965 | 13767 (1) 2 | ,, | बेनी |
| 966 | 13497 (7) 44 | ,, | ब्रंह्मदास |
| 967 | 14043 (13) 2 | ,, | भगत (दास) |
| 968 | 13767 (1) 1 | ,, | भगत (जन) |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×18<br>11; 17 | 11, 12, 14–17 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 24×16.5<br>13; 36 | 4–5 | ,, | गु. 1912 | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 95 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 7–8 | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 134 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 64, 139 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 6 ठा | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 119, 123 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 7 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 2 रा | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 154–155 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>13; 39 | 1 ला | ,, | गु. 1912 | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 2 रा | ,, | 20 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 969 | 13497 (7) 31 | पद-संग्रह | भागीरथ (जन) |
| 970 | 14043 (13)15-16 | „ | भीखमदास; जनभावन |
| 971 | 13503 (3) 7 | „ | मलूकदास |
| 972 | 13503 (5) 11 | „ | माधोदास |
| 973 | 13497 (7) 2 | „ | मीरांबाई |
| 974 | 13503 (5) 2 | „ | „ |
| 975 | 13503 (4) 5 | „ | „ |
| 976 | 14043 (13) 8 | „ | „ |
| 977 | 14043 (13) 6 | „ | (जन) मुरली |
| 978 | 13497 (7) 13 | „ | मुरलीराम |
| 979 | 13503 (4) 3 | „ | मूलदास |
| 980 | 13767 (1) 14 | „ | मोहन |
| 981 | 13508 (1) 1 | „ | राघव |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×13.5<br>9; 19 | 97 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 24×16.5<br>12; 32 | 43,<br>48–49 | ,, | गु. 1912 | |
| 23.5×15.5<br>5; 15 | 9 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 5 वां | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 18–159 | ,, | ,, | पत्राङ्कों का विवरण परिशिष्ट में देखें। |
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 1, 2, 4,<br>7, 9, 14 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 23.5×15.5<br>12; 24 | 4, 6, 7 | ,, | ,, | |
| 24×16.5<br>13; 36 | 4 था | ,, | गु. 1912 | |
| 24×16.5<br>13; 39 | 2 रा | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 28–30 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 23.5×15.5<br>12; 24 | 2–3 | ,, | ,, | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 8–9 | ,, | 20 वीं श. | |
| 12×6<br>6; 13 | 1–4 | ,, | 1842 ई. | लि. क. कुसालीराम; चार्ल्स जॉर्ज डिक्सन के बड़ दौरे में लिपिकृत |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 982 | 13501 (2) | पद-संग्रह | रामचरण |
| 983 | 13497 (7) 7 | ,, | रामजन |
| 984 | 13503 (5) 15 | ,, | ,, |
| 985 | 14043 (13) 12 | ,, | रामदास |
| 986 | 13494 (18) | ,, | ,, |
| 987 | 13503 (5) 3 | ,, | ,, |
| 988 | 13501 (3) 1 | ,, | रामप्रताप |
| 989 | 13497 (7) 6 | ,, | ,, |
| 990 | 13501 (3) 3 | ,, | रामवल्लभ |
| 991 | 13497 (7) 17 | ,, | ,, |
| 992 | 13497 (7) 16 | ,, | रामलोचन |
| 993 | 13746 (2) | ,, | रामसजन |
| 994 | 13767 (1) 4 | ,, | रामानन्द |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×8<br>7; 12 | 7–154 | पूर्ण | 1860 | राग 24, पद 147 |
| 18×13.5<br>9; 19 | 17, 24 | „ | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 9–10 | „ | „ | रागवद्ध |
| 24×16.5<br>12; 20 | 23 वां | „ | 20 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 25 | 96 वां | „ | „ | |
| 23.5×15.5<br>16; 26 | 1 ला | „ | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 12×18<br>9; 12 | 155–162 | „ | 1860 | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 15–16, 27, 126 | „ | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 12×8<br>9; 12 | 168 वां | „ | 1860 | अंत में शिष्य-परम्परा है । |
| 18×13.5<br>9; 19 | 70–71 | „ | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 66, 67, 135, 137 | „ | „ | रागवद्ध |
| 14×12<br>17; 15 | 108–134 | „ | 20 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 3 रा | „ | „ | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 995 | 13497 (7) 35 | पद-संग्रह | रूपदास |
| 996 | 13497 (7) 28 | ,, | रैदास |
| 997 | 14043 (13) 1 | ,, | ,, |
| 998 | 13503 (3) 2 | ,, | ललनासखी |
| 999 | 13497 (7) 3 | ,, | लालपुरी |
| 1000 | 13767 (1) 8 | ,, | वाजीद |
| 1001 | 13497 (7) 9 | ,, | ,, |
| 1002 | 14071 (1) 3 | ,, | विष्णुदास |
| 1003 | 14043 (13) 3 | ,, | विसनदास |
| 1004 | 13497 (7) 42 | ,, | वीरभद्र |
| 1005 | 14388 (11) | ,, (कुण्डलिया) | संग्रामदास |
| 1006 | 13501 (1) | ,, | संतदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र. अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×13.5<br>9; 19 | 107–114 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 90 वां | „ | „ | रागवद्ध |
| 24×16.5<br>13; 39 | 1 ला | „ | 1912 | |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 6 ठा | „ | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 12–13 | „ | „ | रागवद्ध |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 4 था | „ | 20 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 21 वां | „ | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 17×18<br>11; 17 | 11 वां | „ | 20 वीं श. | |
| 24×16.5<br>13; 39 | 1 ला | „ | 1912 | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 144–145 | „ | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 12.5×11.5<br>9; 12 | 43–63 | „ | 20 वीं श. | अस्त-व्यस्त |
| 12×8<br>7; 12 | 1–6 | „ | 1860 | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1007 | 15296 (1) | पद-संग्रह (कवित्त) | सतीदास |
| 1008 | 14043 (13) 4 | ,, | सीतलअली |
| 1009 | 14048 (2) | ,, | सुन्दरदास |
| 1010 | 13497 (7) 18 | ,, | जनसुन्दर |
| 1011 | 13497 (7) 38 | ,, | सुखमनदास |
| 1012 | 13503 (4) 1 | ,, | सुखराम |
| 1013 | 13497 (7) 22 | ,, | ,, |
| 1014 | 13503 (5) 6 | ,, | सुखसागर |
| 1015 | 13497 (7) 14 | ,, | सूरदास |
| 1016 | 13503 (4) 2 | ,, | ,, |
| 1017 | 14043 (13) 17 | ,, | ,, |
| 1018 | 14071 (1) 1 | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12.5<br>11; 12 | 1–31 | पूर्ण | 1918–1925 | उदयपुर के जगदीश मंदिर का उल्लेख है। प्रारम्भ व अंत में सिवलाल, दीनदरवेश तथा तुलसी के कवित्त हैं। पत्राङ्क34–49 पर घरू हिसाव व पहाड़े हैं। पत्राङ्क 50–52 पर स्फुट कवित्त हैं। |
| 24×16.5<br>13; 13 | 2 रा | ,, | 1912 | |
| 15.5×10<br>10; 24 | 1–2 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 37, 79 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 128 वां | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 23.5×13.5<br>12; 24 | 1 ला | ,, | ,, | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 50 वां | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 23.5×13.5<br>16; 26 | 4 था | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 31-167 | ,, | ,, | *पत्राङ्कों का विवरण परिशिष्ट में देखें। |
| 23.5×15.5<br>12; 24 | 1, 3 | ,, | ,, | |
| 24×16.5<br>13; 36 | 50 वां | ,, | 1912 | |
| 17×18<br>11; 17 | 1–10, 13, 17, 18 | ,, | 20 वीं श. | रागवद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1019 | 14380 (1) | पद-संग्रह | सूरदास |
| 1020 | 14043 (13) 13 | " | " |
| 1021 | 13497 (7) 34 | " | जनसेवादास |
| 1022 | 14043 (13) 14 | " | जनसेवादास |
| 1023 | 13497 (7) 41 | " | स्यामसखी |
| 1024 | 14043 (13) 7 | " | जनहरिराम |
| 1025 | 13503 (3) 6 | " | शाहहुसैन |
| 1026 | 13497 (7) 11 | " | " |
| 1027 | 13497 (7) 8 | " | हरिदास |
| 1028 | 13767 (1) 7 | " | " |
| 1029 | 12699 (7) | " | " |
| 1030 | 13490 (9) 1–2 | पद-संग्रह अभ्यंग प्रात समे के | कृष्णदास, चतुर्भुज |
| 1031 | 14046 (16) 1–4 | " आचमन के | कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, चतुर्भुज, कुम्भनदास, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19×14<br>14; 20 | 68–78<br>+6 | पूर्ण | 18 वीं श. | अस्त-व्यस्त; 6 पत्र और हैं। |
| 24×16.5<br>12; 24 | 24 वां | ,, | 1912 | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 104–105 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>11; 22 | 25 वाँ | ,, | 1912 | |
| 18×13.5<br>9; 12 | 139–140 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>13; 36 | 4, 57–60 | ,, | 1912 | |
| 23.5×15.5<br>13; 26 | 8 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×13.5<br>9; 19 | 26 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 18×13.5<br>9; 19 | 20–21,<br>37, 56 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×11.5<br>10; 20 | 4 था | ,, | 20 वीं श. | |
| 25×14<br>17; 12 | 38–43 | ,, | 19 वीं श. | पत्र अस्त-व्यस्त |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 25 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>10; 10 | 73, 73–74<br>75, 76 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1032 | 14738 (22) 1-4 | पदसंग्रह आचवन के | जनकल्याण, कृष्णदास मुरारिदास, परमानन्द |
| 1033 | 13691 (2) 1-5 | " आचार्यजी के | हरिदास, परमानन्द, सूरदास, छीतस्वामी, रसिक |
| 1034 | 13749 (5) 1-5 | " आरती के | नामदेव, जगजीवन, गरीबदास जगनाथ, प्रागदास |
| 1035 | 14284 (4) | " | जनसेवादास |
| 1036 | 14738 (41) 1-2 | " गुरुभक्ति | सूरदास, रसिक |
| 1037 | 14046 (8) 1-2 | " आरती-मंगला के | चतुर्भुजदास, जनभगवान |
| 1038 | 14738 (9) 1-4 | " " | चतुर्भुजदास, हित हरिदास, सूरदास, परमानन्द |
| 1039 | 14738 (23) 1-3 | " " | कृष्णदास, सूरदास, परमानन्द |
| 1040 | 14046 (12) | " " राजभोग समय के | परमानन्द, सूरदास |
| 1041 | 14738 (31) 1-2 | " संध्या पाछें | चत्रभुजदास, परमानन्द |
| 1042 | 14738 (32) | " शृङ्गार उतारने के | सूरदास |
| 1043 | 14738 (27) 1-4 (30) 1-6 | " आवनी के | छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु, परमानंद, नंददास, चतुर्भुजदास, कृष्णदास परमानन्द, सूरदास, नन्ददास, छीतस्वामी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 58–59 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 22×19<br>15; 16 | 108–112 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 16.5×10.5<br>11; 24 | 526–530 | ,, | 1847 | लि. क. साध माणकदास |
| 10×8<br>7; 13 | 144–147 | ,, | 1911 | लि. क. उदयराम; लि. स्था. खींवसर |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 96 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 44–45 | ,, | ,, | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 33–34 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 59–64 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 55–58 | ,, | ,, | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 74 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 74–76 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 67–70;<br>71–74 | ,, | ,, | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1044 | 14046 (19) 1-2 | पदसंग्रह-आसरे के | परसोत्तम, कृष्णदास |
| 1045 | 15069 (5) 1-11 | " इन्द्रमान-भंग के | सूरदास, कृष्णदास, परमानन्द, आसकरण, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, नागरीदास, नंददास, गोविन्दप्रभु, विष्णुदास, छीतस्वामी |
| 1046 | 14046 (13) 1-4 | " उठापन के | छीतस्वामी, सधनदास, सूरदास, नन्ददास |
| 1047 | 14738 (24) 1-2 | " उत्थापन के | गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास |
| 1048 | 14738 (14) 1-2 | " उरहाने के | परमानन्द, सूरदास |
| 1049 | 13490 (18) | " उरहाने के | सूरदास, चतुर्भुजदास |
| 1050 | 14046 (7) 1-3 | " कलेऊ के | सूरदास, चतुर्भुजदास, कुम्भनदास |
| 1051 | 14738 (5) 1-3 | " कलेऊ के | परमानन्द, सूरदास, जगन्नाथ |
| 1052 | 12899 (1) | " कांनजी नुं कीरतन के | |
| 1053 | 14914 (27) | " काया-गीत के | महमद |
| 1054 | 15297 (2) 1-8 | " कीर्तन-संग्रह | गोविन्दप्रभु, सूरदास, परमानन्द, रसिकनाथ, जनभगवान, आसकरन, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×12.5<br>10; 10 | 84–85,<br>88, 89 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×13.5<br>16–21; 14–22 | 129–151 | ,, | ,, | रावगद्ध |
| | | ,, | | |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 58–62 | ,, | ,, | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 64–65 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 48–50 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 39-40 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 39–43 | ,, | ,, | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 18–21 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 26.5×14<br>12; 29 | 1 ला | ,, | ,, | लि. क. भाई हरजीवन |
| 15.5×11<br>13; 24 | 144 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 21×16.5<br>14; 12 | 1–9 | ,, | 20 वीं श. | प्रथम पत्र खंडित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1055 | 14969 (2) 1-2 | पदसंग्रह-कीर्तन के | नारायण, वाजीद, बालकराम, रसिकनाथ, केवलराम. सूरदास, तानसेन, तुलसीदास, कबीर, नरसी, वृजनिधि, द्वारकेश, मीरां, चन्द्रसखी, ब्रह्मदास, बखतावर, नंददास अग्रदास. परमानन्द, हमीदखांन, विष्णुदास |
| 1056 | 14738 (8) 1-9 | " खंडिता के | कृष्णदास, भगवान, चतुर्भुजदास सूरदास, परमानन्द, छीतस्वामी, तानसेन, नन्ददास, गोविन्दप्रभु |
| 1057 | 14738 (3) 1-3 | " गंगाजी के | नन्ददास, गदाधर, परमानन्द |
| 1058 | 13490 (3) | " " | नन्ददास, परमानन्द |
| 1059 | 14043 (19) | " गरवी के | नरसी |
| 1060 | 14738 (26) 1-2 | " गाय बुलायबे के | चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु |
| 1061 | 14738 (33) 1-6 | " गाय दुहने के | रसिक, चतुर्भुजदास, धरमदास. कृष्णदास, आसकरन, नन्ददास |
| 1062 | 15069 (7) | " गोपाष्टमी के | चतुर्भुजदास, सूरदास, विट्ठल, परमानन्द, गोविन्दप्रभु |
| 1063 | 14986 (1) | " गोपीचंद भरथरी के | |
| 1064 | 13494 (20) | " " | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19.5×14<br>12; 20 | 1–25 | पूर्ण | गु. 1878–1900 | लि. क. देवकरण सेवग; पत्राङ्क 27 पर तत्वज्ञान को टीप व पत्राङ्क 28 पर तुलसीदास का पद है। |
| | | ,, | | |
| | | ,, | | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 25–33 | ,, | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| | | ,, | | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 9–10 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 19–20 | ,, | ,, | |
| 24×16.5<br>12; 26 | 17–18 | ,, | गु. 1912 | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 66–67 | ,, | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 76–80 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 20×13.5<br>17; 14 | 153–160 | ,, | ,, | |
| 16×11<br>11; 20 | 23–24 | ,, | ,, | पत्राङ्क 1–22 अप्राप्त |
| 20×16<br>13; 20 | 116–119 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1065 | 14411 (3) | पदसंग्रह-गोपीचन्द भरथरी के | |
| 1066 | 13767 (5) 6 | ,, ,, | |
| 1067 | 14073 (4-5) | ,, ,, | |
| 1068 | 14741 (18) | ,, ,, | |
| 1069 | 15069 (2) 1-17 | ,, गोवर्द्धन पूजा-कीर्तन के | सूरदास, परमानन्द. नन्ददास, विट्ठल, जनदयाल, कुंभनदास, हरिदास, लालदास रामदास, कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु, विष्णुदास, आसकरन, कृष्णदास, वल्लभ |
| 1070 | 15069 (3) | ,, गोवर्द्धन पूजा के | सूरदास |
| 1071 | 14738 (13) 1-2 | ,, ग्वाल के | परमानन्द, सूरदास |
| 1072 | 13490 (23) | ,, ग्वाल के | ,, ,, |
| 1073 | 13490 (16) | ,, घैया (माखन) के | ,, ,, |
| 1074 | 13490 (22) | ,, चंदा के | ,, ,, |
| 1075 | 15069 (2) 1-17 | ,, चोपड़-कीर्तन के | विट्ठल |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×10.5<br>10; 18 | 16–22 | पूर्ण | 1842 | |
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 63–65 | " | 20 वीं श. | |
| 15.5×10<br>9; 18 | 282–288 | " | 19 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>11; 22 | 307–310 | " | " | पत्राङ्क 310-314 पर छीतमदास कृत जखड़ी है। |
| 20×13.5<br>16; 14 | 26–90 | " | , | पत्राङ्क 56–57 अप्राप्त |
| 20×13.5<br>16; 14 | 91–107 | " | " | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 42–43 | " | " | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 43 वां | " | " | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 38–39 | " | " | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 42–43 | " | " | रागबद्ध |
| 20×13.5<br>16; 14 | 121–125 | " | " | रागबद्ध; पत्राङ्क 111-120 अप्राप्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1076 | 13490 (28) 1–9 | पदसंग्रह–छाक के | परमानन्द, ऋषिकेसव, स्यामदास चतुर्भुजदास, विट्ठल, गोविन्दप्रभु, कृष्णदास, आसकरन, सूरदास |
| 1077 | 14046 (11) 1–4 | " छाक के | सूरदास, जनभगवान, रामदास, परमानन्द |
| 1078 | 14738 (20) 1–4 | " छाक के | परमानन्द, जनभगवान, रामदास, चतुर्भुजदास |
| 1079 | 14738 (4) 1–5 | " जगायबे के | चतुर्भुजदास, परमानन्द, आसकरन, सूरदास, नन्ददास |
| 1080 | 13490 (2) 1–3 | " जमुनाजी के | सूरदास, परमानन्द, छीतस्वामी |
| 1081 | 14043 (18) | " झगड़ो | |
| 1082 | 14073 (2) | " ठीकरीनाथ के | ठीकरीनाथ |
| 1083 | 12699 (5) | " डोल के | |
| 1084 | 14738 (7) 1–5 | " दधिमंथन के | गोविन्दप्रभु, आसकरन, चतुर्भुज, सूरदास, नन्ददास |
| 1085 | 13490 (20) | " दधिमंथन के | सूरदास, गोविन्दप्रभु |
| 1086 | 14738 (28) | " दान के | सूरदास |
| 1087 | 13490 (25) | " दान के | कुम्भनदास, चतुर्भुजदास, विट्ठल |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×16.5 22; 19 | 55–59 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 15.5×12.5 11; 16 | 52–54 | „ | „ | |
| 16.5×13.5 12; 20 | 54–56 | „ | „ | रागबद्ध |
| 16.5×13.5 12; 20 | 10–18 | „ | „ | रागबद्ध |
| 25.5×16.5 22; 19 | 18–19 | „ | „ | रागबद्ध |
| 24×16.5 12; 28 | 15–16 | „ | गु. 1912 | |
| 15.5×10 9; 18 | 271–272 | „ | 19 वीं श. | |
| 25×14 17; 12 | 31 वां | „ | „ | |
| 16.5×13.5 12; 20 | 23–25 | „ | „ | |
| 25.5×16.5 22; 19 | 40–41 | „ | „ | रागबद्ध |
| 16.5×13.5 12; 20 | 70–71 | „ | „ | |
| 25.5×16.5 22; 19 | 44–45 | „ | „ | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1088 | 13490 (15) | पदसंग्रह–दामोदर-लीला के | सूरदास |
| 1089 | 13490 (4) | ,, दुहिबे के | कुम्भनदास, परमानन्द |
| 1090 | 14738 (35) | ,, दूध के | परमानन्द, आसकरन, रसिक, सूरदास |
| 1091 | 14071 (5) | ,, धोल के | नरसी |
| 1092 | 14046 (6) 1–4 | ,, नित्य के | छीतस्वामी, चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द |
| 1093 | 13490 (1) 1–9 | ,, ,, | नंददास, द्वारकेश, रामदास, परमानन्द, कृष्णदास, रसिकदास, सूरदास, चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु |
| 1094 | 13490 (1) 10–15 | ,, ,, | दामोदर, भगवान, गोपालदास, केसोदास, छीतस्वामी, हितहरिवंश |
| 1095 | 12699 (4) 1–3 | ,, विहार के | दामोदर, माधोदास, नागरीदास |
| 1096 | 14738 (1) | ,, ,, | हरिदास, परमानन्द, व्यास, कृष्णदास, रसिकदास, नंददास द्वारिकेश, जगन्नाथ, माधोदास, छीतस्वामी |
| 1097 | 14043 (17) | ,, पन्द्रह-तिथि के | नरसी |
| 1098 | 14738 (17) | ,, पनघट के | परमानन्द, सूरदास, कृष्णदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5 × 16.5<br>22; 19 | 38 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 25.5 × 16.5<br>22; 19 | 20 वां | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 16.5 × 13.5<br>12; 20 | 83–84 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 17 × 18<br>11; 17 | 81 वाँ | ,, | 20 वीं श. | |
| 15.5 × 12.5<br>11; 16 | 35–39 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25.5 × 16.5<br>22; 19 | 3–18 | ,, | ,, | रागवद्ध; पत्राङ्क 1–2 अप्राप्त |
| 25.5 × 16.5<br>22; 19 | 9, 11,13,<br>15, | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25 × 14<br>17; 12 | 24–30 | ,, | ,, | |
| 16.5 × 13.5<br>12; 20 | 1–4 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 24 × 16.5<br>12; 28 | 14–15 | ,, | गु. 1912 | |
| 16.5 × 13.5<br>12; 20 | 47–48,<br>63–64 | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1099 | 14738 (14) | पदसंग्रह–पलना के | सूरदास, परमानन्द, चतुर्भुजदास, कृष्णदास |
| 1100 | 13490 (35) | " पोढने के | कृष्णदास |
| 1101 | 14046 (18) | " " | परमानन्द, आसकरन, सूरदास |
| 1102 | 14043 (29) | " प्रभाती के | सूरदास |
| 1103 | 13490 (7) | " फल-फुलेरी के | गोविन्दप्रभु, परमानन्द |
| 1104 | 13490 (13) | " बलदेवजी के खिजाने के | सूरदास |
| 1105 | 12699 (1) | " बसंत के | हरिदास, कृष्णदास, हितहरिवंश |
| 1106 | 14071 (4) | " बाँसुरी के | सूरदास |
| 1107 | 15238 (2) | " " | सूरदास |
| 1108 | 14909 (2) | " बारामासी के | सूरदास, भवानीदास |
| 1109 | 13490 (21) 1–4 | " बाल-लीला के | नंददास, परमानन्द, सूरदास, चतुर्भुजदास |
| 1110 | 14738 (15) 1–3 | " " | कुम्भनदास, सूरदास, परमानन्द |
| 1111 | 14738 (34) 1–6 | " बीड़ी (पान) के | कुम्भनदास, लछीराम |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×12.5 12; 20 | 43–44 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 25.5×16.5 22; 19 | 78 वां | ,, | ,, | रागबद्ध; अन्तिम पत्र पर द्वारिकेश व विट्ठल के पद हैं। |
| 15.5×12.5 10; 10 | 81–83 | ,, | ,, | |
| 24×16.5 14; 38 | 61–63 | ,, | गु. 1912 | |
| 25.5×16.5 22; 19 | 23 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 25.5×16.5 22; 19 | 37 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25×14 17; 12 | 3–8 | ,, | ,, | प्रथम दो पत्र अप्राप्त |
| 17×18 11; 17 | 80–81 | ,, | 20 वीं श. | |
| 14.5×13.5 10; 12 | 1–3 | ,, | 19 वीं श. | |
| 8.5×12 8; 16 | 55-60 | ,, | ,, | |
| 25.5×16.5 22; 19 | 41–42 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5 12; 20 | 44–45 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5 12; 20 | 84 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1112 | 14738 (34) 1–6 | पदसंग्रह–ब्यालू के | परमानन्द, सूरदास, मुरलीदास, जगजीवन, आसकरन, स्यामदास |
| 1113 | 13767 (5) 8 | " भक्त-विरुदावली | जनगोपाल |
| 1114 | 14073 (3) | " भरथरी की महिमा के | कालू |
| 1115 | 15069 (6) | " भाईदूज | आसकरन, रामदास |
| 1116 | 14738 (25) 1–4 | " भोग के | गोविन्दप्रभु, परमानन्द, कुम्भनदास, रामदास |
| 1117 | 13490 (30) | " भोग सरते समय के | परमानन्द, जगजीवन, छीतस्वामी |
| 1118 | 13490 (29) | " भोजन के | परमानन्द |
| 1119 | 13490 (8) | " मंगला के | चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द, गदाधर, जनभगवान |
| 1120 | 14738 (16) | " माखन-चोरी के | सूरदास, परमानन्द |
| 1121 | 13490 (17) | " माखन-चोरी के | सूरदास, परमानन्द |
| 1122 | 13490 (14) | " माटी के | सूरदास |
| 1123 | 14046 (17) 1–3 | " मान के | सूरदास, नंददास, कृष्णदास |
| 1124 | 14738 (38–39) 1–6 | " मान के | कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास चतुर्भुजदास, सूरदास, परमानन्द |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 80–83 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 61–62;<br>126, 132 | ,, | ,, | |
| 15.5×10<br>9; 18 | 277–282 | ,, | ,, | |
| 20×13.5<br>17; 19 | 152 वां | ,, | , | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 65–66 | ,, | , | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 59–60 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 59 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 3 रा | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 46–47 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 39 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 37–38 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>10; 10 | 77–80 | ,, | ,, | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 89–93 | ,, | ,, | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1025 | 14738 (40) 1–6 | पदसंग्रह–मिलाप के | रसिकदास, कृष्णदास, नंददास आसकरन, कुम्भनदास, सूरदास |
| 1026 | 14738 (2) 1–6 | " यमुनाजी के | परमानन्द, छीतस्वामी, रसिकदास, सूरदास, गोविन्दप्रभु, नंददास |
| 1027 | 15074 (3) 1–7 | " रथ के | गोविन्दप्रभु, कृष्णदास, माधौदास, सूरदास, कुम्भनदास, नंददास, विट्ठल |
| 1028 | 15074 (2) 1–3 | " राखी के | गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास, आसकरन |
| 1029 | 13767 (7) 1–13 | " रागकल्याण के | दादूदयाल, महीधर, गो॰तुलसीदास, सूरदास, गरीबदास, हुसैन, वसंत, कबीर, जगन्नाथ, रज्जब, सुन्दरदास, जनकिसोर, नानक |
| 1030 | 13767 (9) 1–5 | " राग कालंगडा के | मीरां, नरसी, बखनो, नामदेव, कबीर |
| 1031 | 13767 (4) 1–13 | " (सबद) राग काफी के | अग्रदास, मीरां, शाहहुसैन, कबीर, रज्जब, सुन्दरदास, सीतलपुरी, बखतावर, बखना, तुरसी, जोगीदास, सूरदास, केवलराम, नागरीदास, पेम |
| 1032 | 14043 (13) | " राग कालेरो के | वगतभारती |
| 1033 | 13767 (10) 1–2 | " राग खट के | चरनदास, नरसी |
| 1034 | 13767 (6) 1–5 | " राग खमाइची के | मलूकदास, मीरां, शाहहुसैन, सुन्दरबिरहन, बगतावर |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×13.5 12; 20 | 93–96 | पूर्ण | 19 वीं श. | रावगद्ध |
| 16.5×13.5 12; 20 | 4–9 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 17.5×11.5 8; 12 | 54–71 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 17.5×11.5 8; 12 | 52–54 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×11.5 7; 18 | 99–112 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×11.5 7; 18 | 132-137 | ,, | ,, | |
| 16.5×11.5 7; 18 | 35–56; 138 वां | ,, | ,, | |
| 24×16.5 12; 30 | 46 वां | ,, | 1912 | |
| 16.5×11 5 7; 18 | 136 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×11.5 7; 18 | 96–99 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1135 | 14043 (22) | पदसंग्रह-राग गरबी | |
| 1136 | 14046 (5) | " राग गौड़ी के | नंददास |
| 1137 | 13767 (11) 1-2 | " राग चरचरी के | नरसी; कबीर |
| 1138 | 13767 (2) 1-12 | " (सबद) राग बसंत के | खींवा; दादू; जनबीठल; कबीर जगजीवन; जगभगतो; जनगोपाल नानक. सुन्दर; बखनो, मुकंद हरदास |
| 1139 | 14044 (4) | " राग बिलावल के | |
| 1140 | 13767 (12) 1-2 | " राग भैरवी के | मीरां, कबीर |
| 1141 | 15074 (2) 1-19 | " राग मलार (कीर्तन) के | नंददास, कुम्भनदास, तानसेन छीतस्वामी, कृष्णदास, भगवान व्यास, हरिदास, हितहरिवंश सूरदास, चत्रभुज, आनन्दघन नागरीदास, कल्याण, रूपसिंह गोविन्दप्रभु, मदनराय, बिहारीदास परमानन्द |
| 1142 | 13767 (5) 1-15 | " राग सोरठ के | बखतावर; कबीर; मीरां; दास नैनोदास, ब्रजनिधि, बखना, सूरदास;सुन्दरदास, नामदेव रज्जब; काजीमहमद; हरिदास हुसैन, जनतुरसी |
| 1143 | 14043 (23) 1-4 | " " | सुखराम; मीरां पूरणदास, दादू |

| माप से. मीं. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×16.5<br>17; 28 | 34 वां | पूर्ण | 1912 | |
| 15.5×12.5<br>12; 16 | 34 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 138; 139 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 1–31 | ,, | ,, | 1–2; 2–3; 5; 6–8, 30–31<br>6; 8–10; 10;<br>11; 12; 13<br>29–30 |
| 22×13.5<br>24; 12 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | 'गोद बैठ गोपाल कहति व्रजराजसों' की तुक पर 40 पद हैं। |
| 16×11.5<br>7; 18 | 140–141 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17.5×11.5<br>9; 12 | 1–52 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 56–96 | ,, | 20 वीं श. | 56,72,76,78, 84–86; 57–60.66;<br>67–69,71,75–76, 78–81, 86–87;<br>61–63,65–66; 70, 89; 73,76–77,<br>90–91,74; 82–84; 87–89<br>90; 91; 92, 95–96<br>93; 93–94 |
| 24×16.5<br>17; 40 | 35; 51<br>52 वां | ,, | 1912 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1144 | 13767 (3) 1-5 | पदसंग्रह-राग होरी के | कवीर; दादू; सूरदास; लछीराम मीरां, वल्लभदास, नारायणदास जनभगतो, चैन; सुखजीवन |
| 1145 | 13490 (32) 1-16 | " राजभोग के | परमानन्द, तानसेन, सूरदास गोविन्दप्रभु,नागरीदास; कृष्णदास हरिदास;चतुर्भुजदास. कुम्भनदास विट्ठल, छीतस्वामी; हितहरिवंश नंददास; रामदास; जगजीवन आसकरन |
| 1146 | 14738 (19) 1-3 | " " | सूरदास, परमानन्द, गोविन्दप्रभु |
| 1147 | 14046 (10) | " " | परमानन्द; सूरदास |
| 1148 | 14073 (2) 2 | " रामचन्द्रजी के | रुघनाथ |
| 1149 | 13490 (19) | " लगन के | परमानन्द |
| 1150 | 14043 (21) | " लावणी के | ग्वालबाल दास |
| 1151 | 14043 (23) | " वंशी के | |
| 1152 | 13503 (5) 17 | " वधावा रा | सीतलअलि |
| 1153 | 14043 (15) 1-8 | " " | सूरतराम; नरसी; सुखसागर कान्हड़; तुलसीदास; मीरां कवीरदास, सुखराम |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×11.5<br>7; 18 | 13–99 | पूर्ण | 20 वीं श. | 13–14, 16,21,23, 31-32; 15–16, 24–27; 17–18; 18–19<br>19, 33; 20, 99; 22<br>28; 29 वां |
| 25·5×16.5<br>22; 19 | 61–75<br>64 वां<br>67; 69;<br>70; 71;<br>72; 73<br>74 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 50–54 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 48–51 | ,, | ,, | 47, 49,51; 48–50 |
| 15.5×10<br>9; 18 | 272–273 | ,, | ,, | |
| 22.5×16.5<br>22; 19 | 40 वां | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>11; 22 | 25–27<br>31 वां | ,, | गु. 1912 | |
| 24×16.5<br>11; 22 | 34 वां | ,, | ,, | |
| 23.5×15.5<br>15; 24 | 14 वां | ,, | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 24×16.5<br>13; 26 | 6–44 | ,, | गु. 1912 | 6; 6, 13, 14; 13;<br>28; 28, 37–38; 28 वाँ<br>29, 44; 37 वां |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1154 | 14043 (15) 9-15 | पदसंग्रह-वधावा के | बाईरांना, रामेश्वरदास, हस्तरांम द्यालबाल, लालदास, प्रेमां; अज्ञात |
| 1155 | 13490 (31, 33) | " वीरी के | कृष्णदास, विट्ठलदास, मुरारिदास परमानन्द; लछीराम, गोविन्दप्रभु कुम्भनदास |
| 1156 | 12699 (3) | " व्रज-खेल के (धमाल) | दामोदर |
| 1157 | 14738 (21) 1-3 | " व्रज भक्तन के घर भोजन के | सूरदास, परमानन्द, आसकरन |
| 1158 | 13490 (6) 1-4 | " व्रतचर्या के | सूरदास, गोविन्दप्रभु, परमानन्द विट्ठलदास |
| 1159 | 14738 (10) 1-2 | " " | परमानन्द, सूरदास |
| 1160 | 13490 (24) 1-3 | " व्याह के | नंददास, भगवान, परमानन्द |
| 1161 | 14738 (29) | " शोभा-वर्णन के | सूरदास |
| 1162 | 14046 (14) 1-4 | " संज्या के | परमानन्द: गोविन्दप्रभु चतुर्भुजदास, सूरदास |
| 1163 | 14738 (37) 1-6 | " सन्मुख के | लछीराम, परमानन्द, नन्ददास सूरदास, गोविन्दप्रभु, कुम्भनदास |
| 1164 | 14738 (12) 1-9 | " सिंगार के | परमानन्द, नन्ददास, जनगोविन्द दामोदर, भगवान, छीतस्वामी, रामदास, चतुर्भुज, विष्णुदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×16.5<br>14; 40 | 39 वां<br>44-45;<br>52 वां | पूर्ण | गु. 1912- | |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 60 वां<br>75 वां | " | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| | | " | | |
| 25×14<br>17; 12 | 22-24 | " | " | |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 56-58 | " | " | रागवद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 21-23 | " | " | रागबद्ध |
| 16.5×13 5<br>12; 20 | 34-36 | " | " | रागबद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 44 वां | " | " | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 71 वां | " | 19 वीं श. | रागबद्ध |
| 15.5×12.5<br>10; 10 | 64,66;65<br>67 वां | " | " | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 84-89 | " | " | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 37-42 | " | " | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1165 | 13490 (10-11) | पदसंग्रह–सिंगार के समय के | चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु,सूरदास कुम्भनदास, कृष्णदास, नन्ददास विष्णुदास, छीतस्वामी सूरदास, नन्ददास, परमानन्द गजाधर, मांनदास, जगन्नाथ स्यामदास,हितहरिवंश, कुम्भनदास |
| 1166 | 13490 (12) 1–7 | " सिंगार निरखते समय के | सूरदास, परमानन्द, रांमदास, चतुर्भुजदास, नंददास, कृष्णदास कुम्भनदास |
| 1167 | 14046 (9) 1–2 | " सिंगार के | सूरदास, परमानन्द |
| 1168 | 13490 (26) 1–5 | " सीतकाल के (भोजन के) | परमानन्द, कुम्भनदास, विट्ठलदास सूरदास, नंददास |
| 1169 | 13490 (27) 1–13 | " सीतकाल के | परमानन्द,कुम्भनदास, हितहरिवंश नंददास, सूरदास, कृष्णदास, गोविन्दप्रभु, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी, हरिदास, मुरारिदास ब्रह्मदास, ताँनसेन |
| 1170 | 14046 (15) 1–6 | " सेन भोग के | सूरदास, गोविन्दप्रभु, आसकरन परमानन्द, रसिकदास, जनकल्याण |
| 1171 | 13490 (34) 1–7 | " सेन समय के | नंददास, गोविन्दप्रभु, परमानन्द कृष्णदास, तांनसेन, सूरदास कुम्भनदास |
| 1172 | 14738 (11) | " स्नान के | सूरदास, छीतस्वामी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 25–28;<br>28–31 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागवद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 32–36 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 15.5×12.5<br>11; 16 | 46–47 | ,, | ,, | |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 45–48 | ,, | ,, | रागवद्ध |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 48–55 | ,, | ,, | |
| 15.5×12.5<br>10; 10 | 68–72 | ,, | ,, | |
| 25.5×16.5<br>22; 19 | 75–78 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 16.5×13.5<br>12; 20 | 36–37 | ,, | ,, | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1173 | 14359 (1) 1–5 | स्फुट–पद–संग्रह | जनहरिदास, रामदास, बुधानन्द तुरसी, मानदास |
| 1174 | 14068 (10) 1–27 | ,, | रामानन्द, कमाल, कृष्णानन्द तुरसी, मलूकदास, परसराम परमानन्द, जनहरिदास, चतरदास नापो, मुकन्ददास, गैबी, नैनूदास सूरदास पीपा, छीतमदास, नानक काजी मैहमद, शेख बहाव, वाजीद नांमदेव, जगजीवन, बेणी मछिन्द्रनाथ, जनसुन्दर, कन्हीराम जनहरिराम |
| 1175 | 14336 (13) 1–7 | स्फुट-पद-संग्रहादि | बुधराव, कनीराम, पीथल, सूरदास, केसोदास, जतीअगरचन्द बिहारीदास |
| 1176 | 14357 (11) 1–3 | ,, | मूलचंद, दासगुलाब, ऋषभदास |
| 1177 | 14914 (51–52) | ,, | जगराय, मीरां, नरसी |
| 1178 | 14336 (8) 1–4 | ,, | तुलसीदास, मीरां, गंग, पीथल |
| 1179 | 14661 (8) | ,, | सूरदास आदि |
| 1180 | 13503 (5) 18 | स्फुट-पद-संग्रह (साखी) | |
| 1181 | 14342 (12) 1–2 | ,, | नवल, जुगतराम |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14.5×11<br>15; 18 | 4–7 | पूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ के तीन पत्र अप्राप्त |
| 15×14<br>19; 22 | 259 वां<br>259–260<br>260–261<br>261–262<br>262–264<br>265–266<br>267 वां<br>267–268<br>269 वां | ,, | ,, | |
| 14×12.5<br>16; 20 | 129–139 | ,, | ,, | कवित्त, सवैया छप्पय, दोहे आदि |
| 16×12.5<br>14; 18 | 52–63 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 55–56 पर 'भूषण बत्तीसी' है । |
| 15.5×11<br>12; 20 | 202–203 | ,, | 18 वीं श. | जगराय कृत भवानीजीरी चर्या है । पत्राङ्क 203 पर धरमसी कृत ऋषभदेव स्तुति है । पत्राङ्क 199–201 अप्राप्त |
| 14×12.5<br>15; 20 | 114–117 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14×11.5<br>19; 19 | 44–49 | ,, | 18 वीं श. | |
| 23.5×15.5<br>15; 24 | 15 वां | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 16 पर ढोरों (पशु) के उपचार-परक यंत्र-तंत्र हैं । |
| 21×14 5<br>12; 14 | 78–95 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1182 | 14767 (2) | स्फुट पद-संग्रह (साखी) | |
| 1183 | 14346 (2) 1-4 | ,, | जनहरिदास, किसनो, सूरदास परमानन्द |
| 1184 | 14359 (5) 1-7 | ,, | श्यामदास, बुधानन्द, माधोदास कवीर, खेमदास, नामदेव, रैदास |
| 1185 | 14359 (6) 1-7 | ,, | विक्रमदास, माधोदास, जनतुरसी कवीर, मीरां, जनकालू, चतुर्भुजदास सूरदास, बुधानन्द, चरणदास लालदास, अग्रदास, गोविन्ददास हरिदास, दामोदर, नरसी, शाह? |
| 1186 | 14359 (13) | स्फुट-पद-संग्रह | केवलदास, नंददास, लघुकेसो |
| 1187 | 14359 (12) 1-3 | ,, | सुन्दरदास, बखना, सूरदास अग्रदास |
| 1188 | 14363 (1) 1-3 | ,, | तुलसीदास, सूरदास, चन्द्रसखी |
| 1189 | 14363 (3) 1-11 | ,, | जनसहज, मीराँ, सूरदास तुलसीदास, लवलीन, ललनासखी कवीर, रानाँबाई, नागरीदास बुधानन्द, अग्रदास |
| 1190 | 15032 (3) 1-2 | ,, | चन्द्रसखी, बुधराव |
| 1191 | 15074 (1) 1-6 | ,, | नंददास, सूरदास, चतुर्भुजदास जनमाधो, गोविन्दप्रभु, विट्ठल |
| 1192 | 15297 (1) 1-8 | ,, | विट्ठलदास, नंददास, सूरदास गोविन्दप्रभु, रसिक, कृष्णदास धौंधी, माधोदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 27×17<br>15; 28 | 6–8 | पूर्ण | 19 वीं श. | रामभक्ति परक 16 पद हैं। |
| 24×14<br>10; 24 | 17–65 | " | " | लि. क. भगत हरकिशन<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 14.5×11<br>9; 14 | 33–44 | " | " | रागबद्ध |
| 14.5×11<br>10; 15 | 1–25 | " | " | रागबद्ध |
| 14.5×11<br>9; 18 | 65–69 | " | 19 वीं श. | |
| 14.5×11<br>9; 18 | 54–57 | " | " | पत्राङ्क 58–62 पर कबीर परक प्रश्नोत्तर हैं एवं पत्राङ्क 63–64 'मूठ काटण' रो मंत्र है। |
| 13×11<br>11; 15 | 5–6 | " | " | |
| 13×11<br>11; 16 | 17–32 | " | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>13; 10 | 16–21 | " | 19 वीं श. | |
| 17.5×11.5<br>10; 16 | 1–8 | " | " | |
| 21×17<br>15; 14 | 1–19 | " | " | सूरदास कृत सेवाफल के 50 पद हैं। रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1193 | 15609 (1) 1-13 | स्फुट-पद-संग्रह | कल्याण, माधोदास, नरसी त्रिलोचन, नापा, मीरां. रामानंद तुलसी, परमानन्द, कबीर कृष्णदास, सदारांम, खेमदास |
| 1194 | 15609 (5) 1-6 | " | अग्रदास, नन्ददास, तुलसीदास मीरां, चतुर्भुजदास, जनमुरली |
| 1195 | 15609 (3) 1-8 | " | रामचन्द्र, अग्रदास, तुलसीदास सूरदास, हरिअलि, सुखसखी व्यास, परमानन्द |
| 1196 | 15613 (13) 1-3 | " | तुलसीदास, विष्णुदास, अग्रदास |
| 1197 | 15613 (6) 1-2 | " | सूरदास, व्यास |
| 1198 | 15613 (18) 1-5 | " | सूरदास, अग्रदास, गदाधर, व्यास ललितसखी |
| 1199 | 15613 (15) 1-2 | " | तुलसीदास, नंददास |
| 1200 | 14351 (4) 1-9 | " | संतदास, विष्णुदास, सूरदास कबीर, दासगोपाल, पुरुषोत्तमदास मीरां, देवा भगत, जनहरिदास |
| 1201 | 14043 (26) | " (कवित्त-छप्पै) | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19×15<br>16; 16 | 1–9 | पूर्ण | गु. 1789 | अंतिम 34 पत्रों पर 19-35 तक के पहाड़े हैं। |
| 19×15<br>16; 16 | 26–32 | " | " | |
| 19×15<br>16; 16 | 11–15 | " | " | |
| 17.5×13<br>17; 30 | 32–38 | " | 18 वीं श. | |
| 17.5×13<br>19; 30 | 7–9 | " | " | पत्राङ्क 1–7 पर संस्कृत की कृतियां हैं। रागबद्ध |
| 17.5×13<br>19; 30 | 52–59 | " | " | अंतिम पत्र पर गुसाईं श्री रूपसनातन के ग्रन्थों का विवरण है। |
| 17.5×13<br>13; 28 | 46–48 | " | " | |
| 14.5×11<br>10; 18 | 33–41 | " | 19 वीं श. | |
| 24×16.5<br>12; 26 | 47 वां | " | गु. 1912 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1202 | 14434 (4) 1–10 | स्फुट–पद–संग्रह | कविभारती, नंददास, सूरदास जनहरिया, तुलसीदास, कबीरदास भगवान, परमानन्द, मीरां कृष्णदास |
| 1203 | 14371 (2) 1–4 | स्फुट–पद–संग्रहादि | देवीदास, हंस, हरिराय, सूरदास |
| 1204 | 13514 (5) 1–2 | " | कबीरदास, मलूकदास |
| 1205 | 13494 (28) 1–3 | " | ग्वालवाल, रामदास, जनकालू |
| 1206 | 13494 (18) 1–2 | " (कुण्डलिया) | राघोदास, रामचरण |
| 1207 | 14473 (4) 1–6 | " | उर्जनदास शिष्य जनसुखदास मीरां, कबीर, बिहारीदास नानगदास, लालदास |
| 1208 | 14473 (11) 1–14 | स्फुट–पद–संग्रह | कबीरदास, तुलसीदास, सुन्दरदास दास, जनजंगी, जनग्यानी, नामदेव देवादास, परसराम, अग्रदास सूरदास, प्रेमानंद, श्रीभट केवलदास |
| 1209 | 14403 (1–6) | " | नंददास, सूरदास, परमानन्द लछीराम, गोविन्दप्रभु जनहरिया आदि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 11×7.5<br>6; 12 | 47–72 | पूर्ण | गु. 1880 | |
| 22.5×15.5<br>18; 15 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1 पर सुन्दरदासजी कृत 'सवैया' के अंगों का विवरण है। पत्राङ्क 6 पर एकश्लोकी-रामायण है। पत्राङ्क 7–10 पर हनुमत्कवच है। |
| 16×12.5<br>16; 12 | 21–24 | ,, | 20 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 20 | 151–152 | ,, | ,, | |
| 20×16<br>13; 20–16 | 102–104 | ,, | ,, | |
| 20×16<br>13; 16 | 38–43 | ,, | ,, | |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 115–133 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 22×16<br>16; 17 | 1–118 | ,, | ,, | राग ताल बद्ध; पत्र अस्त-व्यस्त हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1210 | 14474 (3) 1–22 | स्फुट-पद-संग्रह | सूरदास, चन्द्रसखि, ग्यांनदास मीरां, कबीर, रामसखी जनहरिदास, तुलसी, पदमातेली अग्रदास, सागरदास, कुम्भनदास दुल्हैराम, कान्हड़, कृष्णदास काजीमहमद, बालकदास रामचरण, रंगीलीसखी, तानसेन रूपदास, लालदास |
| 1211 | 14434 (2) 1-14 | " | हरिदास, सूरदास, अग्रदास तुलसीदास, विष्णुदास, कान्हड़ नागरीदास रूपरसिक भगवान सखी, परमानन्द, नरसी मीरां, रैदास, तानसेन |
| 1212 | 14382 (1–8) | " (लीला) | सूरदास, परमानन्द, नंददास द्वारकेश, चतुर्भुजदास, गोविन्दप्रभु छीतस्वामी, कृष्णदास आदि |
| 1213 | 14384 (1–15) | " " | नंददास, कुम्भनदास, परमानन्द माधोदास, सूरदास, हरिदास, चतुर्भुजदास, गोकुलचंद.तुलसीदास रसिकदास, छीतस्वामी, गोविन्दप्रभु कृष्णदास, गोपालदास, आसकरन |
| 1214 | 14074 (1) 1–16 | " " | जनभगवान, परमानन्द, सूरदास देवीदास, रसिकदास, कृष्णदास नंददास, छीतस्वामी, दामोदर चतुर्भुजदास, नरसी, दास जगजीवन, गोविन्दप्रभु, रसनिधि कुम्भनदास आदि |
| 1215 | 14388 (6) 1–4 | " | सूरदास, मीरां, कबीर, लघुप्रह्लाद |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19.5 × 14.5<br>18; 13 | 60–103 | पूर्ण | 1845 | पत्राङ्क 60-61 पर 'अंकफल-विचार' है। |
| 11 × 7.5<br>6; 12 | 1–32 | ,, | गु. 1880 | |
| 18.5 × 14<br>12; 11 | 1–236 | ,, | 1874 | लि. क. अर्जुनदास; रागबद्ध 460 पद हैं । |
| 15.5 × 14<br>14; 13 | 3–70 | ,, | 19 वीं श. | प्रथम दो पत्र अप्राप्त; रागबद्ध |
| 15.5 × 12.5<br>10; 20 | 4–333 | ,, | 1829 | प्रथम तीन पत्र अप्राप्त; रागबद्ध |
| 12.5 × 11.5<br>11; 14 | 1–12 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1216 | 14388 (4) 1–16 | स्फुट-पद-संग्रह | कबीरदास, नैणदास, तुलसीदास नामदेव, मीरां, काजीमहमद वाजीद, देवादास, हरिदास, दीन जन प्रेमदास, अग्रदास, रामजन गरीबदास, सूरदास, नरसी |
| 1217 | 14388 (8) 1–3 | " | बखतावर, सूरदास, ठीकरीनाथ |
| 1218 | 14388 (10) 1–6 | " | मीरां, तुलसीदास, नरसी, कबीरदास विजयराम, रामदास |
| 1219 | 14388 (12) 1–8 | " | मीरां, रामचरण, जनहरिराम ललना सखी, कबीरदास, सुन्दरदास संग्रामदास, नरसी |
| 1220 | 14342 (8) 1–2 | " | देवा ब्राह्मण, सीयल |
| 1221 | 15069 (1) 1–12 | " (पर्वों के) | कुम्भनदास, द्वारकेश, कृष्णदास नंददास, नागरीदास, परमानन्द चतुर्भुजदास, विष्णुदास, सूरदास विट्ठलप्रभु, रसिकप्रभु, रामदास |
| 1222 | 14715 (4) 1–2 | " | रामचरण, रैदास आदि |
| 1223 | 14741 (21) 1–9 | " | नैनूदास, दास, सेवादास, कबीर नामदेव, पीपा, काजी महम्मद जनतुरसी, शाहहुसैन |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 1–38 | पूर्ण | 20 वीं श. | रागबद्ध |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 23–27 | ,, | ,, | |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 31–42 | ,, | ,, | |
| 12.5×11.5<br>10; 12 | 63–84 | ,, | 1939 | लि. क. भरतदास साध; पत्राङ्क 71 पर 'रीस राठोड़ांरी' आदि बातें हैं।; पत्राङ्क 79–83पर 'गोरखनाथजी की जखड़ी' है |
| 21×14.5<br>15; 15 | 62–65 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×13.5<br>16; 14 | 1·26 | ,, | ,, | पत्राङ्क 18–23 अप्राप्त |
| 9×6.5<br>5; 12 | 182–189 | ,, | ,, | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 340–361 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1224 | 14909 (2) 1-18 | स्फुट-पद-संग्रह | कबीर, सूरदास, जनहरिदास मीरां, माधोदास, परसोत्तम तुलसीदास, देवादास, कृपासखी नृसिंह, आनन्दघन, चन्द्रसखी नरसी, हुसैन, भूधर, दीन रामसखी, काजी महम्भद |
| 1225 | 14909 (2) 1-10 | " | संतदास, सूरदास, माधोदास तुलसीदास, मुरली, मीरां कबीरदास, काजी महमद, नरसी भवानीदास |
| 1226 | 14909 (2) 1-4 | " | मीरां, रामदास, दास, नैनोदास |
| 1227 | 14909 (2) 1-16 | " | बालकराम, ब्रजानंद, मीरां तुलसीदास, विष्णुदास, शिवदत्त आनन्दघन, जनतुरसी, जनहरिदास परमानन्द, दीन, बसंत, कबीरदास सूरदास, दयालसखी, चन्द्रसखी |
| 1228 | 14909 (4) 1-24 | " | छोगा, जनतुरसी, नागरीदास सूरदास, तुलसीदास, मीरां कबीरदास, हुसैन, गंगादास म्दासुख, नामदेव, रूपदास माधोसुत, ललनासखी, चरणदास आनन्दघन, दादू, लघुदामो जनहरिदास, अग्रदास, सेवादास नामदेव, रैदास, नापा |
| 1229 | 14373 (1) 1-3 | " | तुलसी, हरीराम, रज्जब आदि |
| 1230 | 14396 (2) 1-2 | " | कबीरदास, जनहरिदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 8.5×12<br>8; 16 | 1–44 | पूर्ण | 19 वीं श. | रागबद्ध; मीरां के पदों में 'बगतावर' मीरां 'वड़भागण' का प्रयोग हुआ है। |
| 8.5×12<br>8; 16 | 44–55 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 8.5×12<br>8; 16 | 61–69 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 8.5×12<br>8; 16 | 74–112 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 8.5×12<br>8; 16 | 126–225 | ,, | ,, | रागबद्ध |
| 20×16<br>13; 16 | 1–14 | ,, | 20 वीं श. | |
| 11×8<br>11; 18 | 1–16 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. गुरु तिलोकसुन्दर; पदों से पूर्व परमानन्द कृत 'अम्बामाता की आरती' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1231 | 14969 (2) 1-24 | स्फुट–पद–संग्रह | कबीर, गोपालदास, खेतल, सूरदाम रसिकनाथ, द्वारकेश, जनपारख तुलसीदास, मीरां, रामसखी बखतावर, जगन्नाथ, सीतलपुरी गैस,तानसेन,चन्द्रसखी,ईश्वरलाल अनूप, ललनासखी, जिनदास परमानन्द, हुसैन, नरसी, चरनदास |
| 1232 | 14373 (7) | " | कबीरदास, मीरां, तोलाराम सुखराम, प्रेमदास, जनदरिया संग्राम |
| 1233 | 14371 (4) 1–3 | " | नरहरिदास, हरिदास अग्रदास |
| 1234 | 14366 (3) | " | सूरदास, मुरलीधर, समन |
| 1235 | 14389 (2) 1–5 | " | नामदेव, नरसी, कबीरदास रामचरण जनमुरली |
| 1236 | 13494 (21) 1–4 | " (साखी कुण्डलियां) | संतदास: द्यालवाल, रामचरण, रामजन |
| 1237 | 13514 (3) 1–2 | " (हरिजस) | कबीर अग्रदास |
| 1238 | 13511 (37) | " | मीरां, परमानन्द, तुलसीदास वल्लभसखी, नरसी, दयाराम |
| 1239 | 13509 (49) | " | |
| 1240 | 13503 (5) | " | गोविन्द |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19.5×14<br>12; 20 | 13–35;<br>39–51 | पूर्ण | 20 वीं श. | लि. क. देवकरण सेवग; पत्राङ्क 10–11 अप्राप्त पत्राङ्क 1–9 पर हनुमन्नाटक को जगंनाथ कृत टीका है। |
| 20×16<br>15; 16 | 5–24 | ,, | ,, | |
| 22.5×15.5<br>14; 15 | 32–37 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 10–31 अप्राप्त |
| 22.5×16<br>12; 18 | 58–61 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 62–66 पर सप्तद्वीप परिमाण आदि प्रकीर्ण विगत है। |
| 15×7.5<br>6; 15 | 17–46 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 25–28 पर जनमुरली कृत 'बारेमासी' है। |
| 20×16<br>13; 20 | 119 वां<br>120 वां | ,, | ,, | |
| 16×12.5<br>16; 12 | 9–11<br>12 वां | ,, | ,, | अगले पत्रों पर स्फुट कवित्त,तन्त्रादि हैं। |
| 17×12<br>11; 16 | 133–139 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24×17<br>13; 28 | 74 वां | ,, | ,, | सर्वशक्तिमान-गुणवर्णन |
| 23.5×15.5<br>15; 26 | 4. 5 | ,, | ,, | रागबद्ध |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1241 | 13494 (19) 1–13 | स्फुट-पद-संग्रह (हरिजस) | रामदास<br>ग्वालबाल<br>मलूकदास, सेवगरांम<br>कबीरदास<br>परसरांम<br>बखना<br>तुलसीदास<br>पेम, राधोदास<br>केवलदास, रांमचरण; नानग |
| 1242 | 14352 (2) | ,, ,, | जैमलदास |
| 1243 | 14352 (5)1–3 | ,, ,, | जानसायब, चतुर्भुजदास, गंगाधर |
| 1244 | 12699 (6) | पद-संग्रह–हितहरिवंश स्तुति के | |
| 1245 | 14738 (6) 1–5 | ,, हिलग के | माधोदास, सूरदास, कुंभनदास, कृष्णदास, चतुर्भुजदास |
| 1246 | 13490 (5)1-4 | ,, | नंददास, सूरदास<br>चतुर्भुजदास, कुंभनदास |
| 1247 | 12699 (2) 1-8 | ,, होरी के (धमाल) | हितहरिवंश<br>गोस्वामी विनैचंद<br>दामोदरस्वामी<br>ध्रुवदास<br>जयवल्लभ<br>रूपलाल<br>कृष्णदास<br>अज्ञात |
| 1248 | 14376 (3)1–5 | ,, होरी, वधावा आदि के | सूरदास, बुधानंद, आशानंद<br>कृष्णदास, कबीर |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20×16 13; 20 | 104, 112; | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| | | | | 105, 110, 115 |
| | 105 वां | | | |
| | | | | 106, 108, 109, 112–114 |
| | 106 वां | | | |
| | 108 वां | | | |
| | 109 वां | | | |
| | 110 वां | | | |
| | 111;113वां | | | |
| 13.5×10.5 8; 12 | 6–12 | | | |
| 13.5×10.5 8; 12 | 65–71 | " | " | |
| 25×14 17; 12 | 32–37 | " | " | |
| 16.5×13.5 12; 20 | 21–23 | " | " | रागवद्ध |
| 25.5×16.5 22; 19 | 20–21 | " | " | |
| 25×14 17; 12 | 8, 9 | " | " | |
| | 9, 10 | | | |
| | 10–13 | | | |
| | 13, 14 | | | |
| | 14 वां | | | |
| | 15 वां | | | |
| | 15, 16 | | | |
| | 17–21 | | | |
| 21.5×15.5 20; 18 | 28–33 | " | | पत्राङ्क 31–33 पर 'वैष्णव गीता' हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1249 | 14043 (14) 1-10 | पद-संग्रह—होरी के (धमाल) | जनकालू<br>कबीरदास<br>सेवगरांम<br>प्रतापसिंह<br>चन्द्रसखी<br>मीरां<br>तुलसीदास<br>टीकमदास<br>रूपदास, सुखरांमदास |
| 1250 | 14043 (14)11-17 | ,, होरी के | गंगाधर<br>गोविन्दराम<br>मनसुखदास<br>पोहकरराम<br>जीवणदास<br>जनहरिराम, ग्वालवाल |
| 1251 | 14369 (7) | परसरामजी की वांणी | परसराम शिष्य रामदास |
| 1252 | 14068 (17) | पातसाह-नामदेवरो झगड़ो | कबीरदास |
| 1253 | 14475 (13) | पिसण-सिणगार | सेवादास |
| 1254 | 14369 (9) | पीथारामजी की वांणी | पीथाराम शिष्य रामदास |
| 1255 | 14741 (6) | पीपाजी की परची | अनन्तदास |
| 1256 | 14366 (2) | " | " |
| 1257 | 13480 (11) | " | " |

| माप से. मी. में,<br>पंक्ति प्रति पत्र,<br>अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/<br>अपूर्ण | लिपिकाल<br>(वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×16.5<br>13; 39 | 3, 49<br>3 30,36<br>3,5,6,<br>9 वां<br>9, 29<br>9–10,<br>10–11,<br>29 वां<br>30 वां | पूर्ण | 1912 | 18, 36 वां<br>32–33, 35 वां |
| 24×16.5<br>19; 39 | 31 वां<br>33 वां<br>35 वां<br>36 वां<br>37 वां<br>50 वां | ,, | ,, | |
| 22×15<br>16; 36 | 250–264 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14<br>12; 16 | 307 वां | अपूर्ण | ,, | जीर्ण; अंत में फुटकर नुस्खे हैं। |
| 19×15.5<br>14; 20 | 101–104 | ,, | 20 वीं श. | 39 वें पद्य पर्यन्त; अंतिम 9 पत्रों पर 'कर्मविपाक' है। |
| 22×15<br>16; 36 | 267-272 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 87–167 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 22.5×16<br>13; 26 | 8–57 | ,, | 1723 | लि. क. गंगाराम |
| 17×14<br>13; 18 | 243–251 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1258 | 14068 (9) | पीपाजी की वांणी | संत पीपा |
| 1259 | 14968 (4) | पीर–मुरीद को संवाद | |
| 1260 | 14071 (3) | पुरुषोत्तमजी (कृष्ण) के ख्याल | |
| 1261 | 14369 (6) | पूरणदासजी की वांणी | पूरणदास शिष्य द्यालबाल (दयालजी) |
| 1262 | 13765 (1) | प्रह्लादचरित्र | जनरैदास |
| 1263 | 14047 (2) | " | जनगोपाल |
| 1264 | 14068 (16) | " | " |
| 1265 | 15033 (5) | प्रह्लादचरित्र | |
| 1266 | 14482 (8) | " | जनगोपाल |
| 1267 | 14741 (12) | " | " |
| 1268 | 15099 (9) | " | " |
| 1269 | 13497 (1) | " (बारामासी) | जनरैदास |
| 1270 | 14043 (28) | प्रह्लादजी की लावणी | सेवादास |

| माप से. मी. में; पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15 × 14<br>19; 22 | 256–259 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 19.5 × 14<br>12; 26 | 36–38 | ,, | 1891 | लि. क. देवकरण<br>अंत में 'राग-विहाग' का एक पद है। |
| 17 × 18<br>11; 17 | 56-80 | ,, | 20 वीं श. | रागबद्ध |
| 22 × 15<br>16; 36 | 239–250 | ,, | 19 वीं श. | |
| 22 × 16<br>19; 15 | 1–2 | अपूर्ण | 1780 | लि. क. गुलाल<br>लि. स्था. मेड़ता |
| 13.5 × 12<br>15; 18 | 36–53 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. स्था. डूँगर-गाँव, हाड़ोती में |
| 15 × 14<br>19; 22 | 303–306 | ,, | 1845 | लि. क. रूपदास निरंजनी<br>लि. स्था. गाँव कठौती |
| 17 × 13.5<br>15; 20 | 25–26 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 23–24, 27 पर स्फुट गीत, कवित्त एवं दोहे हैं। |
| 24.5 × 12<br>35; 15 | 527–535 | पूर्ण | गु. 1844 | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 230–253 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18 × 12<br>10; 18 | 335–354 | ,, | गु. 1898 | |
| 17.5 × 13.5<br>9; 20 | 2–5 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24 × 16.5<br>14; 32 | 55–57 | ,, | 1912 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1271 | 14837 (2) | प्रियाजी (राधा) के नाम | |
| 1272 | 14364 (6) | बखतरांमजी री वांणी | बखतराम |
| 1273 | 12705 (2) | बारहमासी | लालदास |
| 1274 | 14043 (16) | बारहमासो | तुलसीदास |
| 1275 | 14417 (4) | बालकरामजी के कवित्त | बालकराम |
| 1276 | 14352 (8) | बालणचरित्र | परसराम |
| 1277 | 13498 (5) | बाल-लीला | माधौदास |
| 1278 | 13789 (4) | बैंनविलास | नागरीदास |
| 1279 | 13339 (5) | ब्रह्मनिरूपण | कबीरदास |
| 1280 | 13747 | ब्रह्मसमाधि | जगंनाथ शिष्य रामचरण |
| 1281 | 14909 (1) | ब्रह्मस्तुति | जनहरिदास |
| 1282 | 14364 (3) | " आदि | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 29.5×22.5 28; 21 | 1 ला | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 13×11 10; 15 | 42–53 | ,, | ,, | |
| 17.5×11.5 10; 21 | 1–18 | ,, | 19 वीं श. | शोभन बार्डर; जीर्ण: प्रारंभ में स्तुति-स्तोत्र (संस्कृत) एवं अंतिम पत्रों पर वशीकरण मंत्र है। |
| 16×11 14; 30 | 11–13 | ,, | 1912 | |
| 14×10 10; 20 | 88–102 | ,, | ,, | दादू से भेट का कवित्त पत्राङ्क 96 पर है। |
| 13.5×10.5 10; 16 | 92–98 | ,, | गु. 1921 | |
| 14.5×12 10; 24 | 128–133 | अपूर्ण | 1670 | 67 वें दोहे पर्यन्त |
| 22×18 17; 26 | 157–158 | पूर्ण | गु. 1814 | आगे 6 पत्रों पर स्फुट गीत, कवित्त सवैया तथा छींक विचार है। |
| 20×14 12; 24 | 1–4 | ,, | 19 वीं श. | |
| 34×17.5 12; 34 | 1–15 | ,, | 1927 | कर्त्ता का जन्म स्थान ढूँढाड़ गत अजमेर सूबे में सोडो, मालपुरे के पास। |
| 8.5×12 8; 16 | 1–8 | ,, | 19 वीं श. | |
| 13×11 10; 14 | 4–17 | अपूर्ण | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1283 | 14340 (1) | भँवरगीत (भ्रमरगीत) | जनमोहन |
| 1284 | 14391 (2) | " | " |
| 1285 | 13737 (3) | " सचित्र | " |
| 1286 | 13494 (30) | भक्तमाल | रामदास |
| 1287 | 14373 (3) | " | जनसुखिया |
| 1288 | 14369 (1) | " | रामदास |
| 1289 | 14766 (1) | भक्तमाल | नारायण दास (नाभादास) |
| 1290 | 15254 | " भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त | मू. नारायणदास; टी. प्रियादास |
| 1291 | 15093 (2) | " " | " " |
| 1292 | 14256 | " " | " " |
| 1293 | 14460 | " " | " " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×14<br>9; 24 | 8–16 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1-7 अप्राप्त; पत्राङ्क 16-17 पर मानदास कृत 'गोपीचंद' है।<br>लि. क. हरकिशन<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 12×10<br>10; 14 | 1–16 | पूर्ण | 1810 | लि. क. खेतसी प्रोहित<br>लि. स्था. विक्रमनगर<br>अगले पत्रों पर 'कर्मविपाक गीता' संस्कृत में है। |
| 21.5×14.5<br>11; 24 | 50–64 | " | 1799 | चित्र संख्या–4<br>रेखा चित्र-4<br>पत्राङ्क 55 वां त्रुटित |
| 20×16<br>13; 20 | 154–169 | " | 19 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 16 | 21–38 | " | 20 वीं श. | |
| 22×15<br>16; 36 | 167–172 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 171 वां अप्राप्त<br>पत्र अस्त-व्यस्त |
| 16×11<br>10; 22 | 1–55 | " | गु. 1763 | अंतिमांश अप्राप्त; जीर्ण प्रति |
| 21.5×11.5<br>11; 36 | 1–156 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 21,22 28,29,68,106–109, 127,128,131–135,137–140, 143, 145,147–150, 154, 156 अप्राप्त |
| 17.5×16.5<br>13; 18 | 1–232 | पूर्ण | 1829 | टी. र. का. 1769<br>लि. क. गोपालदास भट्ट |
| 30×15.5<br>14; 38 | 1–98 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अंतिमांश अप्राप्त |
| 29×11<br>12; 44 | 1–118 | पूर्ण | ,, | संवत् 1792 की प्रति से प्रतिलिपित<br>लि. क. स्यामदास निरंजनी |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1294 | 14960 (5) | भक्तमाल भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त | मू. नारायणदास; टी. प्रियादास |
| 1295 | 14802 | भक्तमाल भक्तिरसबोधिनी टीका युक्त | मू. नारायणदास<br>टी. प्रियादास<br>टिप्पण-वैष्णवदास |
| 1296 | 14459 | भक्तमाल संजुक्ति टीका | मू. नारायणदास<br>टी. बालकराम |
| 1297 | 14473 (3) | भक्त-विरुदावली | मलूकदास |
| 1298 | 14043 (27) | भक्त-विरुदावली | दास (अमरदास) |
| 1299 | 14359 (8) | भक्त-विरुदावली (भक्त-वत्सलताई को अंग) | " " |
| 1300 | 14909 (2) | भक्ति-विरुदावली | भवानीदास |
| 1301 | 14043 (4) | भक्तिजोग | रामानन्द |
| 1302 | 13746 (4) | भक्ति-पतिव्रत वर्णन, उपदेश चिंतामणि | रामसजन शिष्य रामचरणदास |
| 1303 | 14391 (4) | भक्तिभावंती | गैसानन्द शिष्य अनन्तानन्द |
| 1304 | 15101 (3) | भक्तिभावनी | " " |
| 1305 | 15613 (10) | भक्तिसारसुख | लालदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×15<br>21; 19 | 205–334 | पूर्ण | 1867 | टी. र. का. 1769<br>लि. क. साधूराम<br>लि. स्था. विक्रमनगर |
| 31×15.5<br>14; 38/45 | 1–241 | ,, | 19 वीं श. | टी. र. का. 1769 |
| 31×15.5<br>12; 38 | 2-421 | अपूर्ण | 1932 | टी. र. का. 1800<br>लि. क. बुदहीराम<br>लि. स्था. भैरूंदै; प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 24–26,<br>37–40 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 27-36 अप्राप्त |
| 24×16.5<br>14; 34 | 54–55 | ,, | गु. 1972 | |
| 14.5×11<br>10; 18 | 46–53 | पूर्ण | 19 वीं श. | अंत में 'झाड़े' का मंत्र है। |
| 8.5×12<br>8; 16 | 69–74 | ,, | ,, | |
| 24.5×17<br>11; 24 | 6-7 | ,, | गु. 1910 | |
| 14×12<br>17; 15 | 146–153 | ,, | 20 वीं श. | |
| 12×10<br>9; 13 | 107–168 | अपूर्ण | गु. 1811 | अंतिमांश अपूर्ण |
| 23×14<br>20; 14 | 1–22 | पूर्ण | 1817 | र. का. 1609; पत्र त्रुटित |
| 17.5×13<br>21; 34 | 21–25 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 25-27 पर स्फुट-पद व 27-30 पर 'एकादशी नाम' आदि ज्ञातव्य हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1306 | 15297 (4) | भगवदी (भक्त) के लक्षण | |
| 1307 | 14359 (16) | भयचितावणी | लालदास |
| 1308 | 14741 (15) | " | " |
| 1309 | 13508 (5) | भरथरीजी की बारे-मासी | |
| 1310 | 14383 (1) | " " | लालदास |
| 1311 | 14741 (17) | " की महिमा के पद | |
| 1312 | 13744 | भरथरीवैराग्य | हरिदास |
| 1313 | 14716 (8) | भरथरीजी की सब्दी | |
| 1314 | 13480 (4) | भीखबावनी | भीखजन |
| 1315 | 14043 (25) | भुजंगी छन्द | |
| 1316 | 13494 (12) | भ्रमतोड़ | सुखराम |
| 1317 | 13494 (26) | भ्रमविधूसरण को अंग आदि | रामदास |
| 1318 | 14046 (2) | मणिबंध ग्रन्थनी टीका | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21 × 16.5<br>14; 12 | 15–22 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 14.5 × 11<br>9; 18 | 70-82 | „ | 19 वीं श. | |
| 13.5 × 10.5<br>11; 22 | 278–287 | „ | „ | |
| 12 × 6<br>6; 13 | 3–11 | „ | 1898 | लि.क. नथमल; लि.स्था टाटगढ प्रारम्भ व अंत में औषधी संग्रह है । |
| 16 × 12.5<br>9; 18 | 1–4 | „ | 1928 | अंत में 'सनिश्चरजी की कथा' का प्रारम्भ मात्र है । |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 303–307 | „ | 19 वीं श. | लि. क. डिगंबरदास कर्त्ता जन्म स्थान—बाँसबरेली |
| 17 × 13.5<br>15; 42 | 1–17 | „ | 1864 | लि. क. साध माधवदास भ्रामापंथी लि. स्था. संबल, फतैपुर परगना |
| 21 × 14.5<br>25; 21 | 425–427 | „ | गु. 1826 | अंत में चोरंगीनाथ की सबदी के 4 पद हैं । |
| 17 × 14<br>15; 22 | 265-275 | „ | 19 वीं श. | |
| 24 × 16.5<br>14; 40 | 41–42 | „ | 1912 | मृग, काग, खर, मुर्ग, श्वान आदि का संवाद है । |
| 20 × 16<br>11; 20 | 61–62 | „ | 20 वीं श | |
| 20 × 16<br>13; 20 | 139–148 | „ | 19 वीं श. | पत्राङ्क 149–150 पर स्फुट गीत व दोहे हैं । |
| 15.5 × 12.5<br>11; 18 | 10–20 | „ | „ | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1319 | 13494 (7) | मनराड़ | रामदास |
| 1320 | 14405 (2) | मनहठ | जनहरिदास |
| 1321 | 14837 (3) | माधौ-विदग्ध | रूपसनातन |
| 1322 | 14043 (2) | मानसीसेवा | रामानन्द |
| 1323 | 14364 (1) | " | " |
| 1324 | 13494 (17) | माला को अंग | रामदास |
| 1325 | 14715 (3) | मुरलीरामजी की वांणी | जनमुरसी |
| 1326 | 13494 (3) | मूलपुराण | रामदास |
| 1327 | 14737 (2) | मूलपुरुष | द्वारिकेश |
| 1328 | 14479 (2) | मोतीरामजी की वांणी | मोतीराम |
| 1329 | 13508 (4) | मोरधजरी कथा | सूरदास |
| 1330 | 14351 (1) | मोहमरद राजारी कथा | जगन्नाथ |
| 1331 | 14411 (5) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20×16<br>13; 20 | 39–43 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16×10.5<br>10; 16 | 19–22 | ,, | ,, | |
| 29.5×22.5<br>29; 22 | 1–21 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 2–6 अप्राप्त |
| 24.5×17<br>11; 24 | 3–4 | पूर्ण | गु. 1910 | |
| 13×11<br>10; 14 | 1–3 | ,, | 19 वीं श. | प्रारंभ के पत्रों पर कबीर व मोतीराम के पद हैं। |
| 20×16<br>13; 20 | 96–100 | ,, | ,, | पत्राङ्क 101 पर जनतुरसी कृत 'गुरु महिमा' का पद है। |
| 9×6.5<br>5; 12 | 116–182 | ,, | ,, | |
| 20×16<br>13; 20 | 20–22 | ,, | ,, | |
| 16×12.5<br>9; 18 | 22–31 | ,, | ,, | |
| 15×10<br>8; 16 | 26–186 | ,, | गु. 1898 | |
| 12×6<br>6; 10 | 1–22 | ,, | 1935 | |
| 14.5×11<br>10; 24 | 3–18 | ,, | 19 वीं श. | प्रारंभ में संतदास कृत 'चितावणी' तथा 'पीरू शकुनावली' है। |
| 15.5×10.5<br>10; 18 | 71–79 | ,, | गु. 1842 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1332 | 14423 (6) | मोहमरद राजारी कथा | जगन्नाथ |
| 1333 | 14482 (10) | " | " |
| 1334 | 14741 (13) | " | " |
| 1335 | 15099 (5) | " | " |
| 1336 | 14914 (47) | योगपात्रड़ी | गरीवगिरि |
| 1337 | 15047 | रघुनाथलीला | माधवदास शिष्य जगन्नाथ |
| 1338 | 13749 (3) | रज्जवजी का कवित्त (अंगबद्ध) | रज्जब |
| 1339 | 14837 (4) | रसमुक्तावली | हितध्रुव (ध्रुवदास) |
| 1340 | 14452 (2) | राधा-कृष्ण व्रज-विहार लीला सचित्र | |
| 1341 | 15609 (2) | राधाजी को शृंगार आभूषण | |
| 1342 | 13497 (4) | रामचरणजी की लावणी | लवलीनराम शिष्य रामलोचन |
| 1343 | 14389 (1) | " वांणी | रामचरण |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 11×11<br>10; 12 | 163–187 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 24.5×12<br>32; 15 | 538–550 | „ | गु. 1844 | र. का. 1776 |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 253–266 | „ | 19 वीं श. | |
| 18×12<br>10; 18 | 159–172 | „ | गु. 1898 | |
| 15.5×11<br>13; 20 | 188–193 | „ | 18 वीं श. | |
| 21.5×9.5<br>8; 27 | 1–26 | „ | 19 वीं श. | लि. क. मँगनीराम |
| 16.5×10.5<br>11; 24 | 500–521 | „ | 1847 | लि. क. साध माणकदास; पत्र जीर्ण |
| 29.5×22.5<br>29; 22 | 21–25 | „ | 1812 | लि. स्था. नागपुर |
| 24.5×16.5<br>11; 16 | 12–77 | „ | 20 वीं श. | चित्र संख्या 102: लि. क. वल्लभदास लि.स्था. जोधपुर; पत्राङ्क 40 के स्थान पर 31 व 41 के बाद भी दो पत्रों पर गलत पत्राङ्क लगे हैं। अंत में 'तुलसी की कथा' अपूर्ण है । |
| 19×15<br>16; 16 | 9–11 | „ | 1789 | लि. क. अमरा |
| 17.5×13.5<br>9; 16 | 1–6 | „ | 19 वीं श. | |
| 15×7.5<br>6; 15 | 1–17 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1344 | 14482 (2) | रामचरणजी की वांणी एवं कृति-संग्रह | रामचरण |
| 1345 | 14710 (2) | " " | " सं. क. नवलराम |
| 1346 | 14711 | " " | " |
| 1347 | 14713 (2) | " " | " |
| 1348 | 14714 (1) | " " | " |
| 1349 | 14715 (2) | रामचरणजी की वांणी | " |
| 1350 | 15304 | " | " |
| 1351 | 14482 (4) | " की महिमा का सबद | देवादास |
| 1352 | 13494 (10) | " के स्फुट कुण्डलिया रेखता | रामचरण |
| 1353 | 13743 | रामजन की वांणी | रामजन |
| 1354 | 14713 (3) | " " | " |
| 1355 | 13337 (1) | रामदासजी का कृति-संग्रह | रामदास (जनरामा) |
| 1356 | 14369 (2) | रामदासजी का कृति-संग्रह | रामदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5 × 12<br>35; 24 | 67–247 | पूर्ण | गु. 1844 | |
| 34.5 × 17.5<br>14; 38 | 64–287 | " | 20 वीं श. | अंतिम पत्र अप्राप्त |
| 35 × 20.5<br>21; 40 | 1–66 | " | 19 वीं श. | |
| 13 × 6.5<br>7; 21 | 44–468 | " | 1898 | लि. क. सरणाराम<br>लि. स्था. पाली |
| 10.5 × 8<br>7; 12 | 1–51 | अपूर्ण | 20 वीं श | |
| 9 × 6.5<br>5; 12 | 10–116 | " | 19 वीं श. | |
| 26 × 12<br>10; 32 | 1–122 | " | 20 वीं श. | |
| 24.5 × 12<br>35; 15 | 252–264 | पूर्ण | गु. 1844 | |
| 20 × 16<br>13; 20 | 52–54 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24.5 × 16.5<br>18; 32 | 1–100 | पूर्ण | " | |
| 13 × 6.5<br>7; 21 | 468–484 | " | गु. 1898 | लि. क. सरणाराम<br>लि. स्था. पाली |
| 14 × 12.5<br>14; 22 | 261–381 | अपूर्ण | 1851 | लि. क. परसराम; लि. स्था. मूंडवा पत्राङ्क 296–298, 325–336, 361–370 अप्राप्त; जीर्ण |
| 22 × 15<br>16; 36 | 172–207 | पूर्ण | 19 वीं श. | 23 कृतियाँ हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1357 | 13494 (6) | रामदासजी की छुटकर वांणी | रामदास |
| 1358 | 13494 (1) | ,, ,, | ,, |
| 1359 | 14043 (7) | ,, ,, | ,, |
| 1360 | 14433 | ,, वांणी | ,, |
| 1361 | 14364 (4) | ,, ,, | ,, |
| 1362 | 14398 (1) | ,, ,, | ,, |
| 1363 | 14779 (1) | ,, ,, | ,, |
| 1364 | 14475 (4) | ,, ,, | ,, |
| 1365 | 14398 (3) | ,, ,, | ,, |
| 1366 | 13770 (10) | ,, साखियाँ | ,, |
| 1367 | 14369 (3) | ,, साखी, रेखता, पद | ,, |
| 1368 | 13494 (8) | ,, ,, छन्द भुजंगी | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20×16<br>13; 20 | 30-39 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×16<br>12; 17 | 1–10 | ,, | ,, | |
| 24.5×17<br>11; 24 | 17–20 | ,, | गु. 1910 | |
| 11.5×8.5<br>8; 16 | 1–128 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 13×11<br>10; 10 | 17–32 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 10×8<br>5; 14 | 1–33 | पूर्ण | गु. 1922 | |
| 15×10<br>8; 16 | 2–26 | ,, | 1898 | |
| 19×15.5<br>14; 20 | 26–32;<br>40–46 | ,, | 20 वीं श. | |
| 10×8<br>8; 14 | 5–16 | ,, | गु. 1922 | |
| 10×9<br>9; 12 | 71–82 | ,, | 1862 | |
| 22×15<br>16; 36 | 207–222 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 20 | 43–45 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1369 | 13972 (4) | रामरत्न गीता | कुशलसिंह शिष्य गुरुदयाल |
| 1370 | 13746 (3) | रामसजनजी की वांणी एवं कृति-संग्रह | रामसजन शिष्य रामचरण |
| 1371 | 14482 (9) | रामसागर | कबीरदास |
| 1372 | 13497 (5) | रावण की लावणी | लवलीनराम शिष्य रामलोचन |
| 1373 | 14463 (12) | रासकीला | ईसरदास बारठ |
| 1374 | 14068 (7) | रूपदासजी का पद | रूपदास |
| 1375 | 14716 (13) | रैदासजी की परची | अनन्तदास |
| 1376 | 14741 (10) | " | " |
| 1377 | 13960 (3) | " | " |
| 1378 | 14068 (8) | रैदासजी की वांणी | रैदास |
| 1379 | 14396 (4) | रोमावली | गोरखनाथ |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×16<br>19; 18 | 1–34 | पूर्ण | 1887 | अंतिम पत्र पर श्री रामचन्द्र के राज्य-तिलक विषयक एक चित्र है। पत्राङ्क 1-6 पर 'पाण्डवगीता', 7–8 पर 'कर्मविपाक गीता' एवं 8-10 पर 'गर्भ-गीता' संस्कृत में हैं। लि. क. खीमजी छगनजी तिवाड़ी; कच्छ देशे, भुजनगर |
| 14×12<br>18; 15 | 1–108 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24.5×12<br>32; 15 | 535–538 | ,, | गु. 1844 | |
| 17.5×13.5<br>9; 16 | 6-7 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20×16.5<br>25; 24 | 121–127 | ,, | 1764 | लि. क. जोगीदास |
| 15×14<br>19; 22 | 242–244 | ,, | 19 वीं श. | |
| 21×14.5<br>25; 22 | 575–582 | ,, | गु. 1826 | अंत में जगजीवनदास के स्फुट-पद हैं। |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 199–222 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14.5×10.5<br>9; 14 | 36–70 | ,, | ,, | |
| 15×14<br>19; 22 | 250–256 | ,, | ,, | |
| 11×8<br>11; 18 | 2–5 | ,, | ,, | इसके बाद साधु के 91 लक्षण हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1380 | 14741 (25) | लघुताग्रन्थ | पीपा |
| 1381 | 13519 (6) | लहरबत्तीसी | |
| 1382 | 13509 (9) | लावणी | |
| 1383 | 13497 (2) | ,, अष्टपदी | लवलीनराम शिष्य रामलोचन |
| 1384 | 13514 (6) | वमेकवाररी नीसाणी | केसोदास गाडण |
| 1385 | 13761 (1) | " | ,, |
| 1386 | 13765 (7) | " | " |
| 1387 | 14079 (10) | " | ,, |
| 1388 | 14463 (14) | " | " |
| 1389 | 14478 (4) | " | " |
| 1390 | 13890 (5) | " | " |
| 1391 | 15096 (1) | " | ,, |
| 1392 | 14737 (1) | वल्लभाख्यान; | भाई गोपालदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 487–492 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 22×17<br>21; 20 | 1–5 | ,, | ,, | अंत में मल्ल कृत 'कलिजुग के कवित्त' हैं। |
| 24×17<br>13; 26 | 76–77 | ,, | ,, | |
| 17.5×13.5<br>10; 16 | 5–8 | ,, | ,, | |
| 16×12.5<br>17; 12 | 24–45 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 46-48 पर औषधी संग्रह है। |
| 16×22.5<br>24; 20 | 1–10 | पूर्ण | गु. 1804<br>1855 | जीर्ण; प्रारंभ में जैनतीर्थ माहात्म्य का कवित्त है। |
| 22×16<br>17; 17 | 42–56 | ,, | 1770 | लि. क. मयाचन्द श्वेताम्बर<br>लि. स्था. योधपुर |
| 14×13.5<br>15; 18 | 45–64 | ,, | गु. 1793 | |
| 20×16.5<br>25; 24 | 137–144 | ,, | 1764 | लि: क. जोगीदास |
| 11.5×9.5<br>9; 15 | 388–423 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 424–429 पर 'गणेश-गोरख-गोष्ठी' है। |
| 23×16.5<br>23; 24 | 36–48 | ,, | 1827 | लि. स्था. जोधपुर |
| 20.5×15.5<br>16; 22 | 1–12 | ,, | 1836 | लि.क. छीतरमल मथेन; अंत में कवित्त एवं सुभाषित पद्य हैं। |
| 16×12.5<br>9; 18 | 1–22 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1393 | 14473 (9) | वाजीदजी की अरिल्ल | वाजीद |
| 1394 | 14423 (1) | विरह को अंग | रामचरण |
| 1395 | 14392 (2) | विवेक-चिंतावणी | सुन्दरदास |
| 1396 | 14362 (6) | विवेक-सागर | लछीराम |
| 1397 | 15613 (16) | विरहमंजरी | नन्ददास |
| 1398 | 15238 (1) | वुढियालीला | वीरभद्र |
| 1399 | 15218 (2) | वृन्दावनसत | ध्रुवदास |
| 1400 | 14048 (5) | शतप्रश्नोत्तरी | मनोहरदास |
| 1401 | 14398 (4) | शब्दप्रकाश | |
| 1402 | 15297 (5) | शिक्षापत्री भाषा | हरिराम |
| 1403 | 14044 (1) | ,, सार्थ | ,, |
| 1404 | 14043 (11) | शुक (सुख) संवाद | खेमकवि (खेमदास) |
| 1405 | 14048 (6) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 87–90 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 11×11<br>7; 9 | 1-4 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 5 पर परसरांम के कवित्त हैं। |
| 11×9.5<br>7/12; 12/15 | 11–18 | पूर्ण | ,, | |
| 16×11<br>11; 16 | 96–129 | ,, | 18 वीं श. | |
| 17.5×13<br>21; 34 | 48–52 | ,, | ,, | पत्राङ्क 52 पर ही गदाधर कृत 'यमुनाष्टक' है। |
| 14.5×13.5<br>10; 12 | 1–15 | ,, | 19 वीं श. | 144 पद्य हैं। |
| 11.5×11<br>9; 12 | 1–18 | ,, | 1831 | र. का. 1686 |
| 15.5×10<br>11; 26 | 1–30 | ,, | 1826 | |
| 10×8<br>6; 10 | 17–29 | ,, | गु. 1922 | पत्राङ्क 30–40 पर 'अश्वत्थामा-सुयोधन संवाद' भाषा है। |
| 21×16.5<br>14; 12 | 22–27 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 22×13.5<br>26; 14 | 11–59 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1–10 अप्राप्त |
| 24.5×17<br>13; 24 | 30–46 | पूर्ण | गु. 1912 | |
| 15.5×10<br>11; 26 | 1–14 | ,, | गु. 1826 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1406 | 14068 (14) | शुक (सुख) संवाद | खेमकवि (खेमदास) |
| 1407 | 14078 (6) | " | " |
| 1408 | 14351 (8) | " | " |
| 1409 | 14482 (11) | " | " |
| 1410 | 14716 (3) | " | " |
| 1411 | 14741 (2) | " | " |
| 1412 | 19099 (4) | " | " |
| 1413 | 14710 (1) | संतदासजी की वांणी | संतदास<br>सं. क. नवलराम |
| 1414 | 14482 (1) | " | " |
| 1415 | 14337 (3) | " | " |
| 1416 | 14713 (1) | " (साखी) | " |
| 1417 | 14715 (1) | " " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×14<br>19; 22 | 279–290 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×15<br>13; 14 | 32–53 | ,, | गु. 1729 | आगे दो पत्रों पर स्फुट-पद हैं। |
| 14.5×11<br>10; 18 | 61–86 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24.5×12<br>32; 15 | 550–560 | पूर्ण | गु. 1844 | |
| 21×14.5<br>25; 21 | 274–282 | ,, | गु. 1826 | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 24–45 | ,, | 19 वीं श. | |
| 18×12<br>10; 18 | 133–159 | ,, | गु. 1898 | |
| 34.5×17.5<br>14; 38 | 1–64 | ,, | 20 वीं श. | सं०काल 1830 शाहपुरा; अंत में कृपारामजी के परमधाम प्राप्ति के साक्ष्य का कवित्त है। |
| 24.5×12<br>31; 16 | 1–67 | ,, | 1844 | अंत में संतदासजी की निर्वाणतिथि का कुण्डलिया है। |
| 14×12.5<br>14; 22 | 1–29 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 13×6.5<br>7; 21 | 1–44 | पूर्ण | गु. 1898 | |
| 9×6.5<br>5; 12 | 1–10 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1418 | 14352 (9) | सन्यासजोग (योग) | |
| 1419 | 14482 (3) | सबद-माणिक-बोध चोहट्ट | मू. रामचरण<br>चो. बालकराम शिष्य मीठाराम |
| 1420 | 14405 (3) | समन सेऊ की परची | अनन्तदास |
| 1421 | 14482 (6) | सर्वंगसार | संकलन कर्त्ता नवलराम |
| 1422 | 14713 (4) | " का छांटमा सबद | सं. क. नवलराम<br>जनतुरसी, जनहरिदास, कबीर, रामचरण आदि |
| 1423 | 13480 (1) | " " | सं. क. नवलराम |
| 1424 | 13670 (13) | सवैया आदि | सुन्दरदास, राघो |
| 1425. | 15297 (3) | सर्वोत्तम-नामावली | |
| 1426 | 14363 (2) | सहजरामजी की वांणी | जनसहजराम |
| 1427 | 15294 (1) | साखी-दूहा संग्रह | किसनदास |
| 1428 | 15294 (2) | साखी संग्रह | कर्मानन्द |
| 1429 | 14362 (1) | साध-पृच्छा | पृथ्वीनाथ |
| 1430 | 13494 (23) | साध-महिमा को अंग | द्यालबाल ( दयाल )<br>शिष्य रामदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 13.5×10.5<br>10; 16 | 98–108 | पूर्ण | गु. 1921 | |
| 24.5×12<br>35; 15 | 247–252 | ,, | गु. 1844 | |
| 16×10.5<br>10; 16 | 22–29 | ,, | 19 वीं श. | अंत के दो पत्रों पर रामानन्द कृत 'ज्ञानलीला' है । |
| 24.5×12<br>35; 15 | 446–605 | ,, | गु. 1844 | पत्राङ्क 605 के बाद 501 है ।<br>लि. क. श्रीराम |
| 13×6.5<br>7; 21 | 484–515 | ,, | 1898 | लि. क सरणाराम<br>लि. स्था. पाली |
| 17×14<br>18; 23 | 1–241 | ,, | 19 वीं श. | |
| 10×9<br>9; 12 | 146–153 | ,, | गु. 1862 | |
| 21×16.5<br>12; 10 | 10–14 | ,, | 20 वीं श. | |
| 13×11<br>12; 16 | 8–17 | ,, | 19 वीं श. | |
| 9.5×9<br>10; 15 | 1–4 | अपूर्ण | ,, | |
| 9.5×9<br>11; 15 | 1–3 | ,, | ,, | पत्राङ्क 4–6 पर स्फुट-पद हैं । |
| 16×11<br>9; 16 | 3–7 | ,, | 18 वीं श. | |
| 20×16<br>13; 20 | 122–126 | पूर्ण | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1431 | 14716 (1) | सिद्धवंदना-बत्तीसी | प्रेम |
| 1432 | 15613 (9) | सिद्धान्त पंचाध्यायी | नन्ददास |
| 1433 | 12702 | सिद्धान्त-शतक | लाडूनाथ |
| 1434 | 14381 (5) | सीता-स्वयंवर | रामदास निवास |
| 1435 | 14398 (7) | सुदामा-चरित्र | मलूकदास |
| 1436 | 14969 (3) | " | जेठमल |
| 1437 | 15218 (3) | " | कलिराम |
| 1438 | 15613 (7) | " | नन्ददास |
| 1439 | 14342 (9) | " की बारखड़ी | |
| 1440 | 14381 (4) | " " | |
| 1441 | 15098 (3) | " " | |
| 1442 | 13761 (26) | सुन्दरदासजी की वांणी | सुन्दरदास |
| 1443 | 14176 | सुन्दरदासजी की वांणी आदि | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21 × 14.5<br>25; 22 | 554–555 | पूर्ण | गु. 1826 | अंत में 'साध को ब्योरो' है। |
| 17.5 × 13<br>19; 30 | 17–20 | ,, | 18 वीं श. | |
| 20 × 16<br>10; 18 | 2–15 | अपूर्ण | 1912 | र. का. 1800; लि. स्था. जोधपुर प्रथम पत्र अप्राप्त; अंत के दो पत्रों में लाडूनाथजी के प्रशस्तिपरक 9 दोहे हैं। |
| 20.5 × 11<br>17; 10 | 110–118 | पूर्ण | गु. 1810 | पत्राङ्क 118 के बाद 'कृष्णार्जुन प्रश्नोत्तर' हैं। |
| 10 × 8<br>5; 14 | 56–85 | ,, | 1922 | लि. क. मलूकदास (कर्त्ता से भिन्न) |
| 19.5 × 14<br>13; 22 | 30–36 | ,, | 1883 | र. का. 1815; लि. क. चैनकरण सेवग लि. स्था. गाँव वड़लू |
| 11.5 × 11<br>9; 12 | 1–74 | ,, | 1831 | लि. क. नंद ब्राह्मण |
| 17.5 × 13<br>21; 34 | 10–11 | अपूर्ण | 18 वीं श. | |
| 21 × 14.5<br>12; 15 | 66–69 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20.5 × 11<br>21; 8 | 103–107 | ,, | 1810 | पत्राङ्क 76-103 पर 'ब्रह्मगीता' है। |
| 16 × 11.5<br>9; 15 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 6-7 पर स्फुट-कवित्त हैं। |
| 16 × 22.5<br>28; 18 | 1–5 | अपूर्ण | गु. 1885 | |
| 28 × 14<br>12; 38 | 1–63 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1444 | 14417 (5) | सुन्दरदासजी की वांणी | सुन्दरदास |
| 1445 | 14480 (1) | " " सवैया आदि | " |
| 1446 | 14745 | " " | " |
| 1447 | 14417 (1) | " साखी एवं अनभैप्रोखि | " |
| 1448 | 14473 (7) | " के कवित्त | " |
| 1449 | 13959 (3) | " के सवैया आदि | " |
| 1450 | 14391 (1) | सुन्दरविलास | " |
| 1451 | 14475 (6) | सूरातन को अंगादि | मोतीराम |
| 1452 | 14351 (3) | सेऊ-समन की परची | अनन्तदास |
| 1453 | 14475 (10) | " | " |
| 1454 | 14741 (4) | " | " |
| 1455 | 14913 (2) | " | " |
| 1456 | 14924 | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×10<br>10; 20 | 103–161 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×8<br>8; 20 | 1–249 | ,, | ,, | |
| 24.5×11<br>13; 44 | 2–55 | अपूर्ण | ,, | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 14×10<br>10; 20 | 4–18<br>18–31 | ,, | ,, | प्रारंभ के 3 पत्रों पर दादू कृत साखियाँ हैं। |
| 22.5×12.5<br>22; 10 | 68–82 | पूर्ण | ,, | |
| 17×10.5<br>9; 24 | 28–58 | ,, | ,, | |
| 12×10<br>10; 16 | 15–44 | अपूर्ण | गु. 1810 | पत्राङ्क 1-14 अप्राप्त |
| 19×15.5<br>14; 20 | 46–56 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 14.5×11<br>10; 18 | 25–33 | ,, | 19 वीं श. | |
| 19×15.5<br>14; 20 | 87–92 | ,, | 20 वीं श | |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 79–84 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>8; 18 | 1–8 | ,, | गु. 1865 | |
| 30.5×15.5<br>15; 40 | 1–4 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 2 अप्राप्त<br>धन्नाजी की परची भी है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1457 | 14475 (12) | सेवगरामजी की वांणी (झूलणा) | सेवगराम शिष्य परसराम |
| 1458 | 14369 (8) | ,, की वांणी | |
| 1459 | 14716 (5) | सेवादासजी की फुटकर वांणी | सेवादास |
| 1460 | 14360 (4) | सेवादासजी की साखी | ,, |
| 1461 | 14073 (1) | ,, का कृति-संग्रह | ,, |
| 1462 | 14068 (3) | ,, ,, | ,, |
| 1463 | 14365 (2) | स्नेहलीला | जनमोहन (मोहनदास) |
| 1464 | 14366 (1) | ,, | ,, |
| 1465 | 15070 (4) | ,, | ,, |
| 1466 | 15095 (3) | ,, | ,, |
| 1467 | 15294 (5) | ,, | ,, |
| 1468 | 15053 (1) | स्नेह-संग्राम | व्रजनिधि (सवाईप्रतापसिंह) |
| 1469 | 15238 (4) | स्याम-सगाई | नंददास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19×15.5<br>14; 20 | 94–101 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 22×15<br>16; 30 | 264–267 | „ | 19 वीं श. | |
| 21×14.5<br>25; 21 | 291–397 | „ | „ | |
| 15.5×10<br>10; 18 | 287–315 | „ | „ | |
| 15.5×10<br>9; 18 | 1–270 | „ | „ | |
| 15×14<br>19; 22 | 80–148 | „ | „ | |
| 15×10.5<br>10; 15 | 57–82 | „ | गु. 1888 | |
| 22.5×16<br>15; 26 | 5–8 | अपूर्ण | 1723 | पत्राङ्क 1 पर संत-परम्परा एवं पद हैं।<br>पत्राङ्क 2-4 अप्राप्त |
| 15×12<br>8; 14 | 42–58 | पूर्ण | 1803 | लि. क. सीताराम<br>लि. स्था. नवलकिसोरपुरा |
| 15×11<br>9; 19 | 60–71 | „ | 19 वीं श. | |
| 9.5×9<br>9; 10 | 1–29 | „ | 1801 | लि. क. केसोराम पंचोली, उदयपुर<br>पत्राङ्क 30-31 पर स्फुट दोहे हैं। |
| 26.5×16.5<br>20/25; 18 | 1–4 | „ | 20 वीं श. | र. का. 1852<br>र. स्था. चन्द्रमहल, जयपुर |
| 14.5×13.5<br>10; 12 | 1–10 | „ | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1470 | 13825 (9) | हरचन्दनी चउपई | |
| 1471 | 14741 (3) | हरचंद सत (हरिश्चन्द्र सत्य) | ध्याँनदास |
| 1472 | 14078 (5) | ,, | ,, |
| 1473 | 14047 (1) | ,, | ,, |
| 1474 | 14464 | ,, | ,, |
| 1475 | 15099 (10) | ,, | ,, |
| 1476 | 14359 (4) | हरबोल चितावणी | सुन्दरदास |
| 1477 | 14068 (4) | हरिदासजी का कृति-संग्रह | जनहरिदास |
| 1478 | 14709 (1) | ,, | ,, |
| 1479 | 14716 (2) | ,, | ,, |
| 1480 | 14360 (2) | ,, | ,, |
| 1481 | 14284 (2) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5 × 16<br>19; 26 | 119–124 | अपूर्ण | 17 वीं श. | पत्राङ्क 125-127 अप्राप्त |
| 13.5 × 10.5<br>11; 20 | 45–79 | पूर्ण | 1814 | |
| 15.5 × 15<br>13; 14 | 1–32 | ,, | 1729 | लि. क. दयाराम<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 13.5 × 12<br>15; 18 | 1–36 | ,, | 19 वीं श. | |
| 30.5 × 13.5<br>14; 38 | 1–13 | ,, | ,, | पत्राङ्क 14 पर रामानंद कृत 'रामरक्षा स्तोत्र' है। |
| 18 × 12<br>10; 18 | 354–382 | ,, | 1898 | लि. क. साध नंदराम<br>लि. स्था. बडु ग्राम |
| 14.5 × 11<br>12; 22 | 26–28 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 27-28 पर स्फुट-पद<br>पत्राङ्क 31-33 पर स्फुट मंत्रादि हैं। |
| 15 × 14<br>19; 22 | 148–185 | ,, | ,, | फुटकर कृतियाँ हैं। |
| 26.5 × 12.5<br>13; 46 | 1–72 | ,, | ,, | जीर्ण |
| 21 × 14.5<br>25; 21 | 150–274 | ,, | गु. 1826 | लि. क. साध वनमालीदास<br>लि. स्था. डीडवाणा<br>पत्राङ्क 149 पर रमानंदजी कृत 'रामरक्षा स्तोत्र' है। |
| 15.5 × 10<br>9; 18 | 91–155 | ,, | गु. 1826 | साखी 314, पद 31, ग्रन्थ 5<br>लि. क. माधोदास निरंजनी<br>लि. स्था. दिल्ली |
| 10 × 8<br>7; 13 | 33–133 | ,, | 1911 | लि. क. उदयराम<br>लि. स्था. खींवसर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1482 | 14337 (5) | हरिदासजी की वांणी (साखी) | जनहरिदास |
| 1483 | 14359 (3) | ,, ,, | ,, |
| 1484 | 14395 (2) | ,, ,, | ,, |
| 1485 | 14475 (3) | ,, ,, | ,, |
| 1486 | 14043 (6) | हरिरामदासजी की वांणी | जनहरिया |
| 1487 | 14352 (3) | ,, | ,, |
| 1488 | 14398 (2) | ,, (गुरुदेव को अंग) | ,, |
| 1489 | 14476 (2) | ,, (छुटकर सबद) | ,, |
| 1490 | 14479 (4) | ,, (छुटकर प्रसंग) | ,, |
| 1491 | 14394 (1) | ,, एवं अन्य ग्रन्थ | जनहरिराम शिष्य जैमलदास |
| 8 कथा-वार्त्ता | 14643 (1) | अकबर-बीरबल के किस्से आदि | |
| 1493 | 12709 (15) | अचलदास-खीचींरी वार्त्ता, (वचनिका) | शिवदास गाड़ण |
| 1494 | 14670 | ,, वचनिका | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×12.5<br>14; 22 | 1–6 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 14.5×11<br>13; 16 | 14–24 | ,, | ,, | पत्राङ्क 25वें पर कबीरदास का पद है। |
| 11×9.5<br>8; 12 | 197–216 | पूर्ण | 1884 | लि.क. सीताराम; लि.स्था. देसणोक पत्र चिपके हुए हैं। |
| 19×15.5<br>14; 20 | 18–26 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 24.5×17<br>11; 24 | 9–17 | पूर्ण | 1910 | |
| 13.5×10.5<br>8; 14 | 12–44 | ,, | 19 वीं श. | |
| 10×8<br>8; 19 | 1–5 | ,, | 1922 | |
| 17.5×11.5<br>9; 19 | 23–173 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×10<br>8; 16 | 191–215 | ,, | 1898 | लि. क. कल्याणदास<br>लि. स्था. लाडणू, रामद्वारा |
| 11.5×10<br>9; 12 | 2–58 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 24.5×15.5<br>15; 34 | 1–8 | ,, | 20 वीं श. | त्रुटित; 42 किस्से हैं। |
| 23×13<br>16; 32 | 129–136 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. नित्यसागर |
| 23.5×10.5<br>11; 34 | 1–18 | ,, | 1787 | लि. क. नाथा; पत्राङ्क 18 पर स्फुट-गीत तथा हिचकी मिटाने का नुस्खा है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1495 | 12717 (3) | ग्रचलदास-खींचीरी वार्त्ता (वचनिका) | शिवदास गाड़ण |
| 1496 | 15295 (10) | " ऊमादे-भटियाणीरी वार्त्ता | |
| 1497 | 12709 (12) | ग्रनंतराय-सांखलारी वात | |
| 1498 | 15086 (4) | " " | |
| 1499 | 15295 (16) | ग्रप्सरा च्यारां हे इन्द्र सराप-दीदो जणीरी वात | |
| 1500 | 15295 (22) | ग्रस्त्री सूवटी बोली ज्या वात | |
| 1501 | 14756 (12) | उरजण (ग्रर्जुन) ने हमीररी वात | |
| 1502 | 12709 (2) | एकलगिढ दाढालारी वार्त्ता | |
| 1503 | 14756 (11) | " " | |
| 1504 | 14836 (2) | " " | |
| 1505 | 15295 (30) | ग्रोखाणारी वार्त्ता (तणारा भारतरी वार्त्ता) | |
| 1506 | 15295 (18) | कांणा-रजपूतरी वार्त्ता | |
| 1507 | 15295 (17) | कुंग्रर-भूपतसेणरी वार्त्ता | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21.5 × 14<br>15; 32 | 13–20 | पूर्ण | 1796 | लि. क. ज्ञानराज<br>लि. स्था. खेरवा |
| 23.5 × 23<br>25; 30 | 75–80 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23 × 13<br>15; 32 | 97-105 | ,, | ,, | |
| 20.5 × 15.5<br>14; 22 | 85–98 | ,, | 1854 | |
| 23.5 × 23<br>25; 34 | 98–100 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23 5 × 23<br>22; 28 | 114–116 | ,, | ,, | |
| 24 × 15<br>35; 24 | 58–64 | ,, | गु. 1811 | अंत में 'वीर जिन स्तुति' तथा फला-फल विचार है। |
| 23 × 13<br>15; 42 | 32–37 | अपूर्ण | 1828 | प्रारम्भ अप्राप्त; लि.स्था. गुदगरीनगर पत्राङ्क 38 पर 'बारह-मंडलीकों' के कवित्त हैं। |
| 24 × 15<br>35; 24 | 54–58 | पूर्ण | गु. 1811 | |
| 32 × 22<br>27; 22 | 30–41 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5 × 23<br>27; 28 | 154–161 | ,, | ,, | |
| 23.5 × 23<br>25; 34 | 105–107 | ,, | ,, | पत्राङ्क 108 अप्राप्त; पत्राङ्क 109 पर 'भला-बुरारी वात' का अंतिमांश है। |
| 23.5 × 23<br>25; 34 | 100–104 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1508 | 15295 (32) | कुंग्रर-मंगलरूपरी ग्रर महता सुमंतरी वार्त्ता | |
| 1509 | 13769 (50) | कुतबदीन-साहिजादारी वार्त्ता | |
| 1510 | 14463 (22) | " " | |
| 1511 | 13770 (5) | खूबीरी वात | |
| 1512 | 15295 (28) | गांमरा-धरणीरी वात | |
| 1513 | 14341 (2) | चत्रमुकट-चन्द्रकिरण राणीरी वात | |
| 1514 | 17709 (14) | चन्दकुंवररी वात | रसिक कविराय |
| 1515 | 13737 (5) | " सचित्र | " |
| 1516 | 14081 (10) | " | " |
| 1517 | 15015 (3) | " | " |
| 1518 | 15295 (13) | चांपा-सिंघलरी ग्रर वीरा-भायलारी वार्त्ता | |
| 1519 | 15295 (31) | चित्रसेण-कुंवररी वार्त्ता | |
| 1520 | 13512 (9) | चौवोलीरी कथा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5 × 23<br>25; 34 | 167–171 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 169 वां खंडित<br>पत्राङ्क 170 वां अप्राप्त |
| 13.5 × 10.5<br>12; 16 | 221–244 | पूर्ण | 1705 | अन्य प्रति के पाठान्तर भी दिए हैं। |
| 20 × 16.5<br>23; 22 | 226-231 | ,, | 1765 | लि. क. जोगीदास<br>'ढंढणी देवलरी कही' |
| 10 × 9<br>9; 12 | 30–34 | ,, | 19 वीं श. | शकुनों के कवित्त भी हैं। |
| 23.5 × 23<br>20; 26 | 132–133 | अपूर्ण | ,, | |
| 21.5 × 15.5<br>15; 12 | 87–98 | ,, | ,, | |
| 23 × 13<br>15; 32 | 124–129 | पूर्ण | ,, | |
| 21.5 × 14.5<br>12; 22 | 1–9 | ,, | 1799 | र. का. 1740<br>चित्र संख्या 1 |
| 16 × 12<br>11; 20 | 32–45 | ,, | 1890 | |
| 16.5 × 12.5<br>10; 21 | 81–111 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 110 वां अप्राप्त |
| 23.5 × 23<br>25; 30 | 86–93 | पूर्ण | ,, | |
| 23.5 × 23<br>26; 26 | 161–167 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 163, 165 अप्राप्त |
| 15 × 11.5<br>12; 20 | 82–92 | पूर्ण | 1859 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1521 | 12709 (13) | जगदेव-परमाररी वार्त्ता | |
| 1522 | 12709 (10) | जलाल-गहाणीरी वार्त्ता | |
| 1523 | 12717 (12) | ,, ,, | |
| 1524 | 12730 (3) | ,, ,, | |
| 1525 | 13512 (8) | ,, ,, | |
| 1526 | 14836 (1) | ढोला-मरवणरी वार्त्ता | |
| 1527 | 15237 (2) | ढोला-मारूणी की वात | |
| 1528 | 15295 (21) | तांतवाजी ने राग-पिछाण्यो ज्या वात | |
| 1529 | 15295 (11) | तिलोकसी-जसड़ोतरी अर कुंगडे-बलोचरी वात | |
| 1530 | 15295 (33) | दामा-देवड़ा अर सामा-सरवहिया-री वात | |
| 1531 | 15295 (3) | दीदमांनरा फलरी वात | |
| 1532 | 13495 | नलराजारी वात | |
| 1533 | 15086 (1) | नागवंती ने नागजीरी वात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23×13 15; 32 | 105–124 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 23×13 15; 32 | 72-89 | ,, | ,, | लि. स्था. गुदगरीनगर |
| 21.5×14 13; 27 | 46–73 | ,, | 1795 | लि. क. उमेदराज अंत में 'नीसाणी' छंद है। |
| 17×12.5 11; 16 | 76–116 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×11.5 11; 18 | 49–87 | ,, | 1859 | लि. क. नेमीचन्द |
| 32×22 27; 22 | 1–29 | ,, | 19 वीं श. | चित्र बनाने के लिए स्थान रिक्त है। |
| 20.5×12.5 10; 22 | 1–57 | ,, | ,, | दूहा-वार्त्ता क्रम में |
| 23.5×23 22; 28 | 112–114 | ,, | ,, | |
| 23.5×23 24; 28 | 80–83 | ,, | ,, | |
| 23.5×23 34; 32 | 171–174 | अपूर्ण | ,, | अंतिमांश अप्राप्त |
| 23.5×23 24; 28 | 24–25 | पूर्ण | ,, | |
| 20.5×15 11; 25 | 1–46 | अपूर्ण | ,, | अंतिमांश अप्राप्त |
| 20.5×15.5 15; 22 | 1–15 | पूर्ण | 1854 | प्रारम्भ में स्फुट कवित्त-श्लोकादि हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1534 | 15293 (25) | नागवंती ने नागजीरी वात | |
| 1535 | 15295 (12) | पंचमाररी वार्त्ता | |
| 1536 | 12730 (4) | पन्ना-कस्तूरीरी वात | |
| 1537 | 13505 (13) | पन्ना-वीरमदेरी वात | |
| 1538 | 13745 | " | |
| 1539 | 15015 (1) | " | |
| 1540 | 15052 (1) | फूलजी-फूलकंवररी वात | |
| 1541 | 15015 (2) | फूलजी-फूलमतीरी वात | |
| 1542 | 12706 (21) | " | |
| 1543 | 15295 (23) | बंधीबुहारीरी वात | |
| 1544 | 15295 (8) | वाघ अर बछारी वात | |
| 1545 | 14867 | मदनसत | दामा |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×15.5<br>24; 40 | 45–50 | पूर्ण | 17 वीं श. | |
| 23.5×23<br>25; 30 | 84–86 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×12.5<br>14; 20 | 1–48 | अपूर्ण | ,, | |
| 16×11.5<br>10; 16 | 5–21 | ,, | , | |
| 27.5×17<br>20; 14 | 1–63 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×12.5<br>9; 21 | 22–64 | ,, | 1899 | प्रारम्भ अप्राप्त<br>लि. क. मोतीराम खतरी |
| 25×20<br>28; 25 | 1–5 | ,, | 20 वीं श. | प्रारम्भ के दो पत्रों तथा पत्राङ्क 5–6 पर स्फुट-दोहे है। |
| 16.5×12.5<br>8; 18 | 65–80 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>9; 17 | 123–129 | अपूर्ण | ,, | |
| 23.5×23<br>22; 28 | 116–118 | पूर्ण | ,, | |
| 23.5×23<br>24/27;28/30 | 65–71 | ,, | ,, | पत्राङ्क 69 वां त्रुटित |
| 25×11<br>15; 48 | 1–5 | ,, | 1788 | लि.क. पूरणप्रभ; लि.स्था. घरणावास<br>पत्राङ्क 5 वें पर ही पूरणप्रभ कृत 'यंत्र कोठाभरण विचार चउपई' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1546 | 14717 (1) | मधुमालतीरी कथा चौपई सचित्र | चतुर्भुजदास कायस्थ |
| 1547 | 15298 (1) | ,, ,, | ,, |
| 1548 | 14083 | ,, ,, | ,, |
| 1549 | 12732 (4) | ,, ,, | ,, |
| 1550 | 12709 (7) | ,, ,, | ,, |
| 1551 | 13969 (1) | मधु-मालतीरी कथा चौपई के फुटकर पत्र (सचित्र) | ,, |
| 1552 | 14437 (3) | मधु-मालतीरी कथा चौपई सचित्र | ,, |
| 1553 | 14676 (3) | मृग-कपोत कथा | ,, |
| 1554 | 15295 (1) | रतन-हीरा अर परीत-हीरारी वार्त्ता | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 22×20<br>23; 21 | 5–90 | अपूर्ण | 1838 | प्रारम्भ अप्राप्त<br>लि क. मथेन सरूपचंद; लि.स्था. मेड़ता<br>पत्राङ्क 6, 7, 12, 13, 16, 20, 24, 56, 57, 61, 65, 85, 88 अप्राप्त<br>चित्र सं. 88; 8 खण्डित पत्रों सहित। |
| 26.5×22.5<br>23; 28 | 3–116 | " | 19 वीं श. | चित्रित पृ. 210; पत्राङ्क 1-2, 10, 76, 80 अप्राप्त; पत्राङ्क 113 वां दो बार; पत्राङ्क 20, 23, 26, 28 में एक-एक चित्र कटा हुआ; पत्राङ्क 44 में दो चित्र कटे हुए हैं। |
| 19×17<br>9: 32 | 22 | " | " | चित्र सं. 3; जीर्ण एवं अस्तव्यस्त |
| 21×16<br>17; 34 | 52-85 | पूर्ण | 1851 | लि. क. लक्ष्मीविजय<br>लि. स्था. तिवरीग्राम |
| 23×13<br>15; 42 | 1–29 | " | 19 वीं श. | लि. क. नानजी |
| 28×17.5<br>20.5×15<br>22.5×14.5<br>14; 21 | 9–13;<br>5, 7 | अपूर्ण | " | एक पत्र 'पन्ना-वीरमदेरो वात' का है जिसके दोनों ओर चित्र हैं।<br>चित्रित पत्र 5B, 7B, 9AB, 10AB, 11AB, 12AB; 13AB=14 |
| 25×13.5<br>20; 22 | 1–58 | पूर्ण | 1814 | लि. क. साध गोपालदास<br>लि. स्था. गुढा–गिरवा<br>चित्र सं. 29, 1-17 तक पूरे रंगीन एवं 18–29 तक रेखा चित्र |
| 21.5×12.5<br>11; 24 | 49–54 | अपूर्ण | गु. 1848 | पत्राङ्क 12–13 पर दो चित्र हैं।<br>गुटके की अन्य कृतियाँ संस्कृत में हैं। |
| 23.5×23<br>26; 30 | 14–17 | " | 19 वीं श. | त्रुटित; पत्राङ्क 15 वां अप्राप्त<br>प्रारम्भ में 'देवसी रेबारी की वार्त्ता' का अंतिमांश है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1555 | 14643 (3) | रतनाहमीररी वात | |
| 1556 | 14042 (2) | ,, | |
| 1557 | 12730 (5) | रसालु-कँवररी वात | नरवद चारण |
| 1558 | 12717 (1) | रसालु-राजारी वात | ,, |
| 1559 | 13509 (5) | ,, | ,, |
| 1560 | 14335 (6) | ,, | ,, |
| 1561 | 14898 (3) | ,, | ,, |
| 1562 | 13771 (3) | ,, सचित्र | ,, |
| 1563 | 15295 (26) | राजाकेरवरी वात | |
| 1564 | 12709 (11) | राजाचन्द-प्रेमलालछि रुद्रदेवरी वात | |
| 1565 | 15295 (29) | राजापराक्रमसेनरी वात | |
| 1566 | 15295 (2) | राजाभोज अर छीपणरी वात | |
| 1567 | 14081 (8) | राजाभोज अर डोकरीरी वात | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×15.5<br>20; 36 | 1–17 | पूर्ण | 1919 | अंत में विरोधोक्त उक्तियाँ हैं। |
| 25.5×17<br>21; 17 | 30–60 | ,, | 1925 | आगे के 5 पत्रों पर स्फुट-कवित्त, सवैया व रेखातादि हैं। |
| 17×12.5<br>14; 20 | 1 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. उदेचन्द |
| 21.5×14<br>11; 23 | 1–5 | अपूर्ण | 18 वीं श. | |
| 24×17<br>15; 32 | 56–73 | पूर्ण | 1860 | लि. क. करमचन्द गोलछा |
| 15×11.5<br>15/22;20/30 | 34–44 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16.5×12<br>10; 16 | 1–31 | पूर्ण | 190 | लि. क. तेजकरण; लि. स्था. जोधपुर पत्राङ्क 32 वें पर झाड़ामंत्र है। |
| 19×15<br>14; 24 | 95–110 | ,, | 1861 | चित्र. सं. 20<br>लि. क. हर्षसागर |
| 23.5×23<br>27; 28 | 125–128 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23×13<br>15; 32 | 89–97 | ,, | ,, | |
| 23.5×23<br>27; 28 | 29–35 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 134–150 अप्राप्त |
| 23.5×23<br>24; 28 | 18–24 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16×12<br>12; 22 | 24–26 | ,, | गु. 1890 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1568 | 12709 (9) | राजाभोजरी पनरमी-विद्यारी वात | भवानीदास व्यास |
| 1569 | 13785 (1) | राजाभोजरी पनरमी-विद्यारी वात | भवानीदास व्यास |
| 1570 | 14898 (4) | " " | " |
| 1571 | 15086 (2) | " " | " |
| 1572 | 14339 (10) | " " | " |
| 1573 | 15295 (20) | राजामित्रसेनरी वात | |
| 1574 | 15295 (9) | राजाविजेपतरी वात | |
| 1575 | 15295 (5) | राजाशालिवाहनरी वार्त्ता | |
| 1576 | 15295 (14) | रावनरपतरी वार्त्ता | |
| 1577 | 15295 (15) | रुद्रवे-पाटण मांहे बामण चोरी कीदी जणीरी वात | |
| 1578 | 15295 (6) | लूणसाहरी बेटीरी वार्त्ता | |
| 1579 | 15035 | वीरमदे-पनारी वात | शेरसिंह |
| 1580 | 12709 (8) | वीरमदे-सोनगरारी वार्त्ता | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23×13<br>15; 32 | 41–72 | पूर्ण | 1829 | लि. क. नन्दसागर<br>लि. स्था. गुदवस नगर |
| 22.5×16.5<br>12/17; 24 | 3–36 | अपूर्ण | 1839 | प्रारम्भ अप्राप्त<br>लि. स्था. भजेरा |
| 16.5×12<br>10; 16 | 34–46 | ,, | गु. 1902 | |
| 20.5×15.5<br>15/11;22/15 | 15–82 | पूर्ण | गु. 1854 | |
| 12×13.5<br>16; 16 | 16–19 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 21-27 पर<br>'केशव' तथा 'भूषण' के स्फुट-छन्द हैं। |
| 23.5×23<br>22; 28 | 151–154 | ,, | ,, | पत्राङ्क 110 अप्राप्त |
| 23.5×23<br>27; 30 | 111–112 | पूर्ण | ,, | |
| 23.5×23<br>24; 28 | 71–74 | ,, | ,, | |
| 23.5×23<br>25; 34 | 94–96 | ,, | ,, | |
| 23.5×23<br>25; 34 | 97–98 | ,, | ,, | |
| 23.5×23<br>24; 28 | 36–44 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 44-59 अप्राप्त<br>पत्राङ्क 42 वां खण्डित |
| 18×13<br>13; 14 | 5–109 | पूर्ण | 1904 | पत्राङ्क 1-4 अप्राप्त<br>लि. क. तुलाराम हजारी |
| 23×13<br>15; 42 | 29–41 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1581 | 15237 (1) | सदैवच्छ-सावलिंगारी बात | |
| 1582 | 13737 (4) | सदैवच्छ-सावलिंगारी बात सचित्र | |
| 1583 | 12717 (15) | ,, ,, | |
| 1584 | 13825 (26) | ,, ,, | |
| 1585 | 13512 (7) | ,, ,, | |
| 1586 | 13772 | ,, ,, स्फुट सचित्र पत्र | |
| 1587 | 15295 (7) | साहरा बेटारी अर राजारा कुंअररी वार्त्ता | |
| 1588 | 15295 (25) | साहूकार ने सूअारी वात | |
| 1589 | 15295 (27) | साहूकाररी वार्त्ता | |
| 1590 | 14787 | सिंघासन बत्तीसी भाषा | गुणविजय शिष्य मेघजा (उद्योतविजय) |
| 1591 | 14341 (1) | ” | |
| 1592 | 15238 (3) | सुआ की वार्त्ता | |
| 1593 | 13509 (1) | सुआ-बहोत्तरीरी कथा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20.5×12.5<br>8; 22 | 1–9 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 21.5×14.5<br>13; 26 | 1–31 | पूर्ण | 1799 | चित्र संख्या 18<br>जीर्ण एवं खंडित |
| 21.5×14<br>13; 27 | 81–120 | ,, | 1798 | लि.क. उत्तमराज; लि.स्था. गुदगरी<br>र. का. 1662 |
| 24.5×16<br>21; 40 | 281–292 | अपूर्ण | 17 वीं श. | आद्यन्त अप्राप्त |
| 15×11.5<br>14; 18 | 1–48 | पूर्ण | 1859 | लि. क. नेमचंद; जीर्ण<br>र. का. 1662 |
| 20.5×13.5<br>18; 20 | 24 | अपूर्ण | 19 वीं श. | चित्र संख्या 21<br>पत्राङ्क 1, 3, 8, 9 खंडित |
| 23.5×23<br>29; 28 | 60-65 | ,, | ,, | प्रारम्भ अप्राप्त |
| 23.5×23<br>22; 28 | 121–125 | पूर्ण | ,, | |
| 23.5×23<br>20; 26 | 129–131 | ,, | ,, | पत्राङ्क 130 वां खंडित |
| 25×11.5<br>19; 48 | 1–46 | ,, | 1764 | |
| 21.5×15.5<br>14/21;14/21 | 1–86 | अपूर्ण | 19 वीं श. | तीसरी पुतली की कथा से प्रारम्भ |
| 14.5×13 5<br>10; 12 | 38–71 | पूर्ण | ,, | |
| 24×17<br>15; 32 | 2–45 | अपूर्ण | ,, | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>57 कथाएं हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1594 | 14410 (1) | सुम्रा-बहोत्तरीरी कथा | |
| 1595 | 15295 (24) | सुनारी ने सुम्रारी वार्त्ता | |
| 1596 | 12697 (2) | हितोपदेश पंचाख्यान भाषा | |
| 1597 | 12696 | " | |
| 10 काव्य-शास्त्र | 15089 | अलंकार-आशय | उत्तमचन्द भण्डारी |
| 1599 | 14397 | अलंकार-रत्नाकर | दलपतिराय |
| 1600 | 13784 (21) | अलंकार रा दूहा | " |
| 1601 | 13784 (8) | कविकुलकंठाभरण | कवि दूलह |
| 1602 | 13512 (1) | कविप्रिया | केशवदास |
| 1603 | 14041 | " | " |
| 1604 | 14461 (3) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×11.5<br>10; 18 | 24–146 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1-23 अप्राप्त<br>42 वीं कथा पर्यन्त |
| 23.5×23<br>22; 28 | 118–121 | पूर्ण | ,, | |
| 16.5×17<br>17; 18 | 31-230 | अपूर्ण | 1823 | पत्राङ्क 1-30 अप्राप्त; लि.क. पुरोहित-सदाराम; लि. स्था. रूपनगर व गाँव रोहिड़ी; अंत में हरलाल कृत महाराजा जसवंतसिंह आदि के कवित्त हैं। |
| 24.5×17<br>11; 24 | 6–148 | ,, | 1885<br>1886 | लि. क. हिम्मतराम तथा जैतराम आसकरण; लि.स्था. जोधपुर; पत्राङ्क 1–5 7,8 अप्राप्त; जीर्ण व कीटविद्ध अंत में दिशा एवं प्रहर के अनुसार शकुन-विचार है। |
| 20×10 5<br>10; 22 | 1–100 | ,, | 19 वीं श. | अंतिमांश अपूर्ण<br>र.का. 1857 विजयादशमी; जीर्णपत्र |
| 10×8<br>7; 11 | 4–153 | ,, | ,, | र. का. 1798<br>आद्यन्त अप्राप्त |
| 17×13<br>9; 14 | 1–28 | ,, | 20 वीं श. | 164 दोहे हैं। |
| 17×13<br>9; 13 | 1–35 | पूर्ण | 1937 | लि. क. कृपाराम |
| 15×11.5<br>12/15; 25 | 1–97 | ,, | 1849 | लि. क. सेवग विरधीचंद<br>लि. स्था. जालोर<br>पत्राङ्क 1–67 कीटविद्ध |
| 24×19.5<br>15; 22 | 1–90 | ,, | 1859 | लि. क. पंडित खुस्यालचंद |
| 22.5×13<br>40; 26 | 23–32 | ,, | 1766 | लि. क. कनकसोम गणि |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1605 | 14837 (5) | कविप्रिया | केशवदास |
| 1606 | 14917 | कविप्रिया (सटिप्पण) | " |
| 1607 | 15235 | " | " |
| 1608 | 13786 | कविप्रिया भरणाख्य-टीका सह | " टी. हरिचरणदास |
| 1609 | 13784 (10) | कविमत-मंडण सव्याख्या | गोकुलनाथ |
| 1610 | 13777 (1) | कविवल्लभ | हरिचरणदास |
| प: 1611 | 13787 (1) | काव्यप्रबन्ध | बगसीराम लालस |
| प: 1612 | 15216 (5) | कौशल-वृत्त-भासि | कौशलकवि पुत्र भागचन्द शिष्य सदाराम |
| 1613 | 13780 (4) | छन्द-अलंकार लक्षण | उदैचन्द भण्डारी पुत्र कुसलचन्द |
| 1614 | 13780 (1) | छन्दप्रबन्ध | " |
| प: 1615 | 13669 | छन्दविभूषण सटीक | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 29.5×22.5<br>29; 22 | 1–51 | पूर्ण | 1812 | लि. स्था. नागपुर |
| 25×10.5<br>15; 46 | 1–48 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 47 वां अप्राप्त |
| 22.5×15<br>22; 21 | 1–54 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1658 |
| 37×18<br>22/27;15/18 | 1–260 | पूर्ण | 1901 | लि.क. फतेराम वोरा, जोधपुर<br>टी. र. का. 1835 |
| 17×13<br>9; 14 | 1–56 | ,, | 20 वीं श | लि. क. कृपाराम |
| 30×24<br>22; 22 | 1–50 | ,, | 1906 | र. का. 1839 |
| 26.5×23.5<br>24; 24 | 1–56<br>1–21<br>1–22<br>1–13 | ,, | 1924 | र. का. 1913 बीकानेर<br>1. शब्दार्थप्रबन्ध<br>2. दूषण-भूषण प्रबन्ध<br>3. गुणवृत्त प्रबन्ध<br>कीटविद्ध |
| 13×12.5<br>12; 16 | 1–121 | ,, | 1946 | र. का. 1816<br>पत्राङ्क 78 के बाद कीटविद्ध<br>अंत में चित्रकाव्य परक कवित्त-सवैये हैं।<br>लि. क. कल्याणबगस, सांगानेर |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–25 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–37 | पूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1864, नागोर |
| 27.5×13<br>8; 24 | 1–105 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1875<br>लि. क. लालचंद प्रोहित<br>लि. स्था. जोधपुर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1616 | 15216 (4) | छन्दसार | नारायणदास वैष्णव |
| 1617 | 13517 (1) | " | सूरतिमिश्र |
| 1618 | 13518 (1) | " | " |
| 1619 | 13784 (1) | छन्दोरत्नावली | हरिरामदास निरंजनी |
| 1620 | 14775 | " | " |
| 1621 | 14829 | " | " |
| प: 1622 | 15258 (1) | जसम्राभूषन चन्द्रिका | मनोहर कवि |
| 1623 | 13780 (3);3 | दूषनदर्पण-सटीक | टी. उदैचन्द भण्डारी |
| 1624 | 15613 (1) | नखशिख वर्णन | |
| 1625 | 14336 (5) | नायक-नायिका लक्षण | |
| 1626 | 14267 (1) | नायिकाभेद लक्ष-लक्षण हजारा | कविनाथ, शिवराम आलम, भोलानाथ, सुजान आदि |
| 1627 | 13512 (5) | पिंगलरी जन्म पत्रिका | सेवग हररूप |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 13×12.5<br>11; 16 | 53–74 | पूर्ण | 1919 | र. का. 1829; र. स्था. चित्रकूट |
| 21×17<br>26; 22 | 1–2 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 20×15<br>16; 14 | 1–2 | ,, | ,, | |
| 17×13<br>10; 18 | 10–44 | ,, | 1916 | र. का. 1795; पत्राङ्क 1–9; 34 वां अप्राप्त; पत्र चिपके हुए पत्राङ्क 44-46 पर स्फुट-कवित्तादि हैं। |
| 30.5×15.5<br>15; 32 | 1–8 | पूर्ण | 1897 | लि. क. सम्पतराम<br>लि. स्था. खींवसर |
| 25.5×11.5<br>13; 35 | 1–14 | ,, | 1897 | लि. क. विरधीचन्द<br>लि. स्था. पचभदरा |
| 23×16<br>17; 14 | 1–94 | अपूर्ण | 1880 | र. का. 1879; जीर्ण<br>पत्राङ्क 88-89 अप्राप्त<br>प्रथम दो पत्र खण्डित |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–35 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 17.5×13<br>14; 24 | 3–5 | अपूर्ण | 1741 | 25 छन्द हैं।<br>प्रारम्भ में नन्ददास के पद हैं। |
| 14×12.5<br>13; 14 | 97–99 | ,, | 19 वीं श. | 20 छन्द हैं। |
| 21×15.5<br>8; 20 | 1–10 | ,, | ,, | संग्रह ग्रन्थ |
| 15×11.5<br>12; 20 | 141–144 | पूर्ण | ,, | लि. क. सेवग विरधीचन्द |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1628 | 13784 (16) | प्रवीणसागर रा फुटकर छन्द | प्रवीणराय |
| प. 1629 | 13780 (2) | प्रस्तारप्रवन्ध-भाषा | उदैचन्द भण्डारी |
| 1630 | 14267 | भाषा-भूषण | महाराजा जसवंतसिंह |
| 1631 | 14279 (2) | " | " |
| 1632 | 14669 | माधवसिंह-सुयशप्रकाश | छविनाथ |
| 1633 | 15258 (2) | रघुनाथ-रूपक | सेवग मनसाराम (मंछ) |
| 1634 | 13509 (11) | " | " |
| 1635 | 13780 (3) 4 | रसनिवास | उदैचन्द भण्डारी |
| 1636 | 15006 (2) | रसमंजरी | |
| 1637 | 15613 (14) | " | नन्ददास |
| 1638 | 12701 (1) | रसरत्न | रसलीन; सूरतिमिश्र |
| 1639 | 15088 (1) | " | " |
| 1640 | 12701 (2) | रसरत्न की टीका | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×13<br>9; 15 | 1–12 | अपूर्ण | 20 वीं श. | 27 छन्द हैं । |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–47 | पूर्ण | ,, | र. का. 1879; जोधपुर |
| 21×15.5<br>9; 17 | 1–27 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×10<br>10; 15 | 1–27 | ,, | 1858 | पुष्पिका महत्त्वपूर्ण है । |
| 24.5×11.5<br>10; 27 | 1–63 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23×16<br>17; 14 | 1–89 | ,, | 1880 | जीर्ण; अंत में उत्तमचन्द भण्डारी के प्रशस्तिपरक दोहे हैं । |
| 24×17<br>15; 28 | 78–89 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–21 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 22×12<br>15; 14 | 66–73 | ,, | 1720 | लि. क. अमीचन्द; पत्राङ्क 74-77 पर स्फुट पद व रेखता हैं । |
| 17.5×13<br>19/25;30/36 | 39–46 | ,, | 18 वीं श. | |
| 24.5×17<br>18; 16 | 1–7 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1768 |
| 18.5×14<br>14; 15 | 1–11 | ,, | ,, | |
| 24.5×17<br>20; 18 | 7–10 | अपूर्ण | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1641 | 15072 (1) | रसरत्नावली | मणिमंडन |
| 1642 | 15006 (1) | रसिकप्रिया | केशवदास |
| 1643 | 15610 | " | " |
| 1644 | 14461 (2) | " सबालावबोध | " |
| 1645 | 13517 (3) | रूपदीप-पिंगल | जयकृष्ण भोजक शिष्य कृपाराम पुत्र भवानीदास |
| 1646 | 13512 (4) | " | " |
| 1647 | 15088 (2) | " | " |
| 1648 | 14712 (4) | " | " |
| 1649 | 13509 (2) | " | " |
| प. 1650 | 14280 | वाणीभूषण | कवि उमेद |
| 1651 | 13784 (1) | व्यंग्यार्थ कौमुदीरा कवित्त | कविप्रताप |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×17 11/24;17/15 | 1–43 | अपूर्ण | 20 वीं श | 203 छन्द हैं। पत्राङ्क 44-46 पर जसविजय तथा विनयविजय कृत स्तुतिस्तोत्र हैं। |
| 22×12 22; 18 | 6–65 | ,, | 1718 | र. का. 1648 लि. क. जोशी कल्याणदास प्रारम्भ अप्राप्त |
| 18×15.5 14; 22 | 1–73 | पूर्ण | 1794 | लि. क. अमरू; लि. स्था. जयपुर गुटके के प्रथम पत्र पर सदैवच्छ सावलिगारी वात का प्रारम्भ है। |
| 22.5×13 30/40;18/26 | 1–74 | ,, | 1766 | लि. क. कनकसोमगणि पत्राङ्क दूसरा अप्राप्त लि. स्था. जगाणाग्राम अंत में सुभाषित एवं औषध संग्रह है। |
| 20; 18 | 22–28 | अपूर्ण | 1858 | र. का. 1776 लि. क. सेवक गोकलदास |
| 15×11.5 11; 18 | 127–140 | पूर्ण | 1856 | र. का. 1776; लि. क. सेवक बुधमल लि. स्था. सोजत |
| 19×14 14; 15 | 11–22 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 21.5×19 16; 15 | 134–143 | पूर्ण | 1913 | |
| 24×17 13; 28 | 46–54 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. सेवक मूलचन्द; अंत में राठोड़ों की पीढियों का कवित्त है। |
| 15.5×11 9/10;17/20 | 1–25 | ,, | ,, | र. का. 1861; राजगढ़ |
| 17×13 9; 13 | 1–14 | अपूर्ण | 20 वीं श. | 33 कवित्त हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1652 | 13780 (3)2 | शब्दार्थचन्द्रिका | उदैचन्द भण्डारी |
| 1653 | 14402 | शिख-नख-वर्णन | वलभद्र |
| 1654 | 15061 (2) | " | " |
| 1655 | 13670 (3) | " सटिप्पण | " |
| 1656 | 13512 (2) | संयोगबत्तीसी | मानकवि |
| 1657 | 13777 (2) | सभाप्रकाश | हरिचरणदास |
| 1658 | 13780 (3) 1 | साहित्यसार सटीक | उदैचन्द भण्डारी |
| 1659 | 12697 (1) | सुन्दर-शृंगार | कविराज सुन्दरदास |
| 1660 | 12876 | " | " |
| 1661 | 14357 (10) | " | " |
| 12 कोष | 13512 (6) | अनेकार्थ नाममाला (मानमंजरी, नाममंजरी) | नन्ददास |
| 1663 | 13518 (2) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–17 | पूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1890; जोधपुर |
| 22.5×16<br>16; 15 | 4–18 | अपूर्ण | 1833 | लि. क. कन्हीराम<br>पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त |
| 23.5×15.5<br>15; 18 | 8–25 | पूर्ण | 1876 | लि. स्था. तखतगढ़ |
| 23.5×16<br>11; 25 | 1–17 | ,, | 1875 | |
| 15×11.5<br>14; 22 | 98–107 | ,, | 1849 | लि. क. सेवक विरधीचंद<br>लि. स्था. जालोर |
| 30×24<br>22; 22 | 1–60 | ,, | 20 वीं श. | आगे 'कुवलयानन्द' व 'गणितसार' संस्कृत में हैं। |
| 38.5×27<br>24; 23 | 1–6 | ,, | ,, | कवि कृत शब्दार्थचंद्रिका, दूषनदर्पण, रसनिवास, छंदविभूषन चारों कृतियों का ग्रन्थनाम 'साहित्यसार' है। |
| 16.5×17<br>14; 20 | 17–55 | अपूर्ण | 1823 | पत्राङ्क 1-16 अप्राप्त<br>346 वें छन्द पर्यन्त |
| 25×10.5<br>16; 42 | 1–20 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1688 |
| 16×12.5<br>15; 18 | 1–52 | ,, | 1911 | लि. क. छोगालाल व्यास |
| 15×11.5<br>11; 20 | 145–156 | ,, | 1855 | लि. क. सेवक विरधीचन्द<br>पत्राङ्क 157-159 पर स्फुट कवित्त सवैये हैं। |
| 22×16<br>18 | 12–19 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ अप्राप्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1664 | 13761 (27) | अनेकार्थ नाममाला (मानमंजरी-नाममंजरी) | नन्ददास |
| 1665 | 14066 (4) | " | " |
| 1666 | 14343 | " | " |
| 1667 | 13790 (2) | उर्वशी नाममाला (धनंजय नाममाला-भाषा) | शिरोमणि माथुर |
| 1668 | 13790 (3) | एकाक्षर अनेकार्थ सुबोधचन्द्रिका नाममाला (सौभरिनाममाला-भाषा) | फकीरचन्द पुत्र मयाराम चहुआन |
| 1669 | 13511 (5) | नामकोष-संग्रह | |
| 1670 | 14418 (11) | नाममंजरी रा दूहा | कायस्थ भवानी पुत्र जेठमल |
| 1671 | 14079 (16) | नाममाला | |
| 1672 | 14898 (1) | " | |
| 1673 | 13790 (1) | नामरत्नमाला | उदैचन्द भण्डारी |
| 1674 | 14570 | सभा-शृंगार | हंसरत्न शिष्य (?) |
| 1675 | 14827 | " | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16×22.5<br>28; 18 | 1–5 | पूर्ण | गु. 1855 | |
| 22×16<br>19; 20 | 1–13 | अपूर्ण | 1754 | लि. क. सांवलदास वैष्णव; जैतारण प्रारम्भ के 4 पत्रों पर संस्कृत में स्तोत्र-संग्रह है। |
| 20×14<br>12; 24 | 1–24 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 26×17.5<br>19; 16 | 1-19 | ,, | ,, | र. का. 1680 बुरहानपुर |
| 26×17.5<br>19; 16 | 20–81 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 59 वां खंडित व<br>पत्राङ्क 60-80 अप्राप्त<br>कीटविद्ध |
| 17×12<br>13; 25 | 21–23 | पूर्ण | ,, | इन्द्र, नाग, सूर्य, चन्द्र, ज्वाला, धरती, पवन, सिंह आदि नाम |
| 12.5×11<br>10; 15 | 136–139 | ,, | ,, | |
| 14×13.5<br>14; 18 | 145–148 | ,, | 1790 | |
| 16.5×12<br>8; 18 | 15–18 | अपूर्ण | 1902 | विष्णु,माताजी रुद्र,गणपति आदि नाम |
| 26×17.5<br>19; 17 | 14–75 | ,, | 19 वीं श. | र. का 1899<br>पत्राङ्क 1-13 अप्राप्त<br>किंचित कीटभक्षित |
| 25×10.5<br>11; 28 | 1–22 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 2, 6-10 अप्राप्त<br>विविध ज्ञान-कोष |
| 25×11<br>16; 40 | 1–4 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1676 | 14862 | अमृतसागर | सवाई प्रतापसिंह |
| 1677 | 14226 | अमृतसागररी वचनिका | ” |
| 1678 | 12732 (9) | औषधी-संग्रह | |
| 1679 | 13508 (2) | ” | |
| 1680 | 15293 (1) | ” | |
| 1681 | 14948 (2) | ” | |
| 1682 | 14356 (1) | ” | |
| 1683 | 13240 | रामविनोद-भाषा | रामचन्द्र मिश्र पुत्र केशव शिष्य पद्मरङ्ग |
| 1684 | 13909 | ” | ” |
| 1685 | 14399 | ” | ” |
| 1686 | 18583 | ” | ” |
| 1687 | 14736 | ” | ” |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23×15.5<br>22; 18 | 6–331 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1-5; 7-9; 24-32; 36-45; 269-271; 274-279; 320-329 अप्राप्त; पत्राङ्क 331 दो बार |
| 27×12.5<br>10; 32 | 1–48 | ,, | ,, | छटवां नुस्खे व निदान |
| 21×16<br>28; 40 | 100–102 | ,, | ,, | जलसिक्त |
| 12×6<br>6; 13 | 4–7 | ,, | ई. 1842 | |
| 25.5×15.7<br>22; 37 | 1–7 | ,, | 17 वीं श. | कीटविद्ध; जीर्ण |
| 15×11.5<br>7; 16 | 2–8;<br>1–15 | ,, | 20 वीं श. | प्रारम्भ में 'यन्त्रमुक्तावली' का एक पत्र है। |
| 17×16.5<br>13; 26 | 1;52–69 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1-5 पर 'शकुनावली' है। |
| 24.5×11<br>9; 24 | 1–24 | ,, | 1913 | र. का. 1720, खुरसाण |
| 26.5×12<br>15; 40 | 1–77 | पूर्ण | 1865 | लि. क. सूरत शिष्य वख्तावरमल<br>लि. स्था. शाहजहांबाद |
| 27×18<br>20; 18 | 13–39 | अपूर्ण | 20 वीं. श. | पत्राङ्क 1-2 अप्राप्त<br>पत्राङ्क 12-16 त्रुटित<br>द्वितीय अधिकार पर्यन्त |
| 26×13<br>16; 38 | 1–88 | पूर्ण | 1902 | |
| 21×17<br>18; 34 | 4–121 | अपूर्ण | 1911 | पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त,<br>4 था खंडित; लि.क. वीरवैताल<br>लि. स्था. कलकत्ता |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1688 | 15286 | रामविनोद-भाषा | रामचन्द्र शिष्य पद्मरङ्ग |
| 1689 | 14109 | योगचिंतामणि वैद्यकसार बालावबोध | मू. हर्षकीर्तिसूरि<br>बा. नरसिंह शिष्य रत्नराजगणि |
| 1690 | 13943 | वैद्यमनोत्सव (महोत्सव) | नयनसुख पुत्र केशवराज |
| 1691 | 14331 | " | " |
| 1692 | 14425 | " (नयनसुख वैद्यक) | " |
| 1693 | 14619 | " | " |
| 1694 | 14740 (1) | " | " |
| 1695 | 14930 | " | " |
| 1696 | 15236 | " सटीक | " |
| 1697 | 15239 (1) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×11<br>10; 16 | 14-153<br>159-303 | पूर्ण | 1774 | पत्र जलसिक्त-चिपके हुए; प्रारम्भ में 8 स्फुट-पत्र हैं; अंत में औषधी-संग्रह है। लि. स्था. कोठणोद ग्राम |
| 13.5×12<br>19; 23 | 1-83 | ,, | 1836 | लि. क. वैद्य नथमल<br>लि. स्था. कोसीथल |
| 25×10.5<br>13; 35 | 1-17 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1649, सिंहनद |
| 17×13 5<br>12; 20 | 1-25 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×13<br>17; 17 | 1-34 | पूर्ण | 1911 | |
| 26×10.5<br>12; 38 | 1-18 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1649 सिंहनद<br>अंत में स्फुट-औषधी-संग्रह हैं। |
| 15×12.5<br>16; 20 | 1-28 | ,, | 1803 | लि. क. पंडित परमानन्दजी जैचंद<br>पत्राङ्क 28-29 पर औषधी-संग्रह,<br>,, 1-21 स्वरोदयशास्त्र-भाषा,<br>,, 1-23 सामुद्रिकशास्त्र-भाषा,<br>,, 1-19 लघुचाणक्य राजनीति सटीक अपूर्ण है। |
| 27×12.5<br>12; 26 | 1-27 | ,, | 1918 | लि. क. खूबचन्द<br>लि. स्था. दशपुर |
| 16×14.5<br>11; 10 | 2-57 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अंतिमांश अपूर्ण<br>आगे पुस्तक के स्वामी ठा. बंसीसिंहजी हरदत्तसिंहजी की पीढियाँ, घरू-हिसाब, पट्टीपहाड़ा आदि हैं। |
| 15×11.5<br>12; 18 | 1-22 | ,, | ,, | पत्राङ्क 22-26 पर<br>औषधी-संग्रह तथा साथ के पूरे गुटके में यंत्र-मंत्र तथा औषधी-संग्रह है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1698 | 15319 | वैद्यमनोत्सव | नयनसुख शिष्य केशवराज |
| 1699 | 13768 | ” | ” |
| 1700 | 13512 (3) | शालिहोत्र-भाषा | नकुल |
| 1701 | 14276 | ” | ” |
| 1702 | 15083 | स्त्रीकल्प | |
| 1703 | 12702 (2) | स्फुट-नुस्खे | |
| 1704 | 14890 (3) | हरताल मारण विधि आदि संग्रह (रसौषधी-संग्रह) | |
| 1705 | 14890 (2) | हिम्मतप्रकाश (माधवनिदान-भाषा) | श्रीपति भट्ट पुत्र पुरुषोत्तम पुत्र रावल श्रीगोपाल |
| 14–ज्यौतिष | 13735 | आंक संवछरी (अंक संवत्सरी) | |
| 1707 | 13092 | आयुर्दायनी वार्ता | |
| 1708 | 14870 | उपदेशमाला | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25×10.5<br>15; 40 | 1–13 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1649 'अकबर' के समय सिहनद में। |
| 15.5×12<br>16; 12 | 1–6 | अपूर्ण | ,, | स्फुट-टीपें हैं। |
| 15×11.5<br>13; 19 | 108–126 | पूर्ण | 1850 | लि. क. सेवक विरधीचंद<br>लि. स्था. सोजत |
| 17×13.5<br>15; 25 | 1–32 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अंतिम दो पत्रों पर स्फुट-नुस्खे हैं। |
| 31×11.5<br>11; 64 | 1–4 | पूर्ण | ,, | स्त्री-रोग हेतु औषधी-संग्रह है। |
| 17.5×11<br>8; 10 | 21–35 | ,, | 20 वीं श. | प्रारम्भ में मंत्र-यंत्रादि हैं। |
| 23×16.5<br>23; 24 | 1–13 | ,, | गु. 1826 | पारा, हिंगलू, सीसा, अभ्रक-शुद्धि आदि |
| 23×16.5<br>23: 24 | 1–53 | ,, | 1826 | लि. का. 1730<br>इसके पूर्व परमानंद कृत 'रत्नाकरनाममाला' संस्कृत भाषा की कृति है। |
| 23×12<br>9; 30 | 1-68 | ,, | 1807 | लि. क. रामकिशन पारीक<br>संवत् 1601 से 1700 तक<br>अंत में औषधी-संग्रह है। |
| 26×12<br>15: 47 | 1–6 | ,, | 19 वीं श | लि. स्था. अंजारा नगर |
| 25.5×10.5<br>15; 42 | 1–5 | ,, | 1745 | लि. क. तत्वसुन्दर<br>लि. स्था. सिणधरी नगर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1709 | 15293 (19) | उपदेशमाला यंत्र-विचार | |
| 1710 | 14125 (3) | उपदेशमाला शकुनावली | |
| 1711 | 13455 | उल्कापात विचार आदि | |
| 1712 | 13514 (7) | कर्मविपाक | |
| 1713 | 14467 | " भाषा | |
| 1714 | 15293 (49) | " (राशिफल) | |
| 1715 | 12970 | कर्मव्यापार(ऊमा-महेश्वर-संवाद) | |
| 1716 | 13827 (9) | काक परीक्षा, छींक पृच्छा आदि | |
| 1717 | 15293 (18) | कालज्ञान | |
| 1718 | 12813 | गुराचार (शिव-पार्वती-संवाद) | |
| 1719 | 14756 (9) | गृह गोधा विचार (पल्ली-पतन-विचार) | |
| 1720 | 12890 | ग्रहण-विचार | |
| 1721 | 13093 (2) | ग्रह-फल | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5 × 15.5<br>20; 35 | 20 वां | पूर्ण | 17 वीं श. | जीर्ण |
| 26 × 12<br>13; 19 | 6–8 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5 × 11<br>24; 23 | 1–2 | ,, | ,, | |
| 16 × 12 5<br>9; 16 | 48–60<br>64–65 | ,, | ,, | पत्राङ्क 60-63 पर मंत्रतंत्र एवं राशिफल हैं। |
| 25 × 11<br>17; 50 | 1–11 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25.5 × 15 5<br>28; 40 | 142 वां | ,, | 17 वीं श. | |
| 18.5 × 8.5<br>7; 22 | 1–11 | ,, | 1784 | लि. क. अंबावीदास<br>लि. स्था. राधनपुर |
| 21 5 × 13<br>15; 22 | 24–26 | ,, | 18 वीं श. | |
| 25.5 × 15.5<br>30; 54 | 26–28 | अपूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 27 × 14<br>12; 28 | 1–10 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. भाई इच्छाराम<br>वृहस्पति' का फलादेश है। |
| 24 × 15<br>35; 24 | 52–53 | ,, | गु. 1811 | पत्राङ्क 53-54 पर कल्की जन्म-पत्रिका है। |
| 25.5 × 11.5<br>12; 37 | 1 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5 × 11.5<br>13; 27 | 6–7 | ,, | 1909 | लि. क. हरजीवन माधवजी<br>संस्कृत श्लोकों की भाषा |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1722 | 13717 | घर करावणारो विधान | |
| 1723 | 14336 (3) | घरोली-विचार (पल्ली-पतन विचार) | |
| 1724 | 13329 | चन्द्रार्कीना टीपणानी विधि | |
| 1725 | 14756 (8) | जन्मजातक-फल | |
| 1726 | 12704 (5) | जन्मलग्न पत्रिका संग्रह | |
| 1727 | 14079 (14) | जिनावर-पृच्छा | |
| 1728 | 15241 | जोतिकसार भाषा (ज्योतिषसार) | कृपाराम पुत्र तुलाराम कायस्थ |
| 1729 | 15293 (52) | ज्योतिष गुराचारादि स्फुट-संग्रह | |
| 1730 | 13926 | ज्योतिषरी वार्त्ता (वर्षफल संग्रह) | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 27 × 14<br>12; 35 | 1–3 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. जयगोपाल पुरोहित<br>लि. स्था. नागोर |
| 14 × 12.5<br>13; 14 | 53–58 | ,, | 1814 | लि. क. चेला खूबराम |
| 40 × 9.5<br>38; 17 | 1 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24 × 15<br>35; 24 | 50-51 | ,, | 1811 | लि. क. भामा<br>पत्राङ्क 47-49 पर 'पांडवगीता' व 'कर्म गीता' तथा स्फुट-पद हैं। |
| 15 × 14.5<br>9; 13 | 1–7 | ,, | 20 वीं श. | संवत 1884, 1905, 1928, 1932 के कायस्थ माथुर डामरिया मेघराज; जयकरण; गोर्धनलाल तथा मगनमलजी एवं जयकरण की पुत्रियों के जन्माक्षर हैं। |
| 14 × 13.5<br>11; 15 | 127–134 | ,, | गु. 1795 | पत्राङ्क 135 पर जन्मलग्न<br>पत्राङ्क 136 पर वर्षफल विधि<br>पत्राङ्क 137–139 पर स्फुट-कवित्त छंदादि हैं। |
| 15 × 10<br>8; 18 | 1–59 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1792; पत्राङ्क 14 पर संवत् 1611 में जोबनेर में तेजसी को मारकर खंगार द्वारा अमल करने की विगत है। प्रारम्भ के 14 पत्रों पर तथा 59–80 पर मंत्रौषधी संग्रह, शकुनविचार एवं स्फुट-छन्द हैं। |
| 25.5 × 15.5<br>23; 40 | 152-177 | ,, | 17 वीं श. | जीर्ण |
| 25 × 12.5<br>18; 42 | 1–21 | ,, | 1892 | लि. क. ऋषि मंग्नीराम<br>लि. स्था. बिलाड़ा |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1731 | 13511 (46) | टीपणारी पाटो | |
| 1732 | 12706 (7) | तरवार शुभ-अशुभ देखणरा छंदादि | |
| 1733 | 14203 (1) | तर्कपृच्छा शकुनावली | |
| 1734 | 14437 (3) 4 | देव-शकुनावली | |
| 1735 | 13827 (8) | देवीरा शकुन | |
| 1736 | 14937 | दोषावली | |
| 1737 | 12892 | द्वादशभुवन-विचार | |
| 1738 | 14871 | द्वादशलग्न-पृच्छा | |
| 1739 | 13827 (7) | नगर, ग्राम. गढनी दशाफल | |
| 1740 | 12628 | नवग्रह-भाषा दूहा | |
| 1741 | 14274 (2) | नवग्रहों की आरज्या व राशि-दृष्टि-विचार | |
| 1742 | 12859 | नाड़ी-विचार | |
| प 1743 | 13094 | निर्णयसिद्धान्त भाषा | रघुराम पुत्र जयराम औदिच्य |

| माप से. मी. में पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12<br>10; 16 | 207–208 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>7; 13 | 44–54 | ,, | ,, | पत्राङ्क 55 वां अप्राप्त |
| 19×10.5<br>23; 16 | 3–11 | ,, | ,, | 'दोष शकुनावली' भी है। |
| 25×13.5<br>18; 14 | 72–74 | ,, | 1814 | लि. क. साध गोपालजी<br>लि. स्था. गुढा |
| 21.5×13<br>15; 12 | 23 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 24.5×14<br>12; 28 | 1–7 | ,, | 20 वीं श. | राशि के अनुसार विभिन्न रोगो का उपचार विधान है। |
| 24.5×11<br>16; 38 | 1–3 | ,, | 19 वीं श. | खण्डित |
| 25.5×10.5<br>13; 44 | 1–4 | ,, | 1774 | पत्र जीर्ण-चिपके हुए<br>अंत में 'कन्या जन्म विधान' है। |
| 21.5×13<br>15; 22 | 21–22 | ,, | 18 वीं श. | प्रारम्भ में 1–21 पत्र तक 'दशाफल विचार' है। |
| 19.5×14<br>11; 21 | 2–41 | अपूर्ण | 1896 | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>लि. क. रामनाथ व्यास; जोधपुर |
| 22×11<br>10; 26 | 11–19 | , | 19 वीं श. | अंतिम पत्र खण्डित |
| 25×11<br>13; 32 | 1–2 | पूर्ण | 1842 | लि. क. राजाराम जोशी |
| 26×13<br>13; 37 | 1–16 | ,, | 1924 | र. का. 1708 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1744 | 14203 (2) | पंचवाक्य शकुनावली | |
| 1745 | 13339 (7) | पंचीकरण | अखाजी |
| 1746 | 14417 (3) | पंचीकृत महावाक्य | |
| 1747 | 14437 (3) 5 | पातशाह शकुनावली | |
| 1748 | 15413 | पाराशरी व्याख्या | विष्णुदास |
| 1749 | 14437 (3) 2 | पाशाकेवली | |
| 1750 | 14927 (2) | वारहभुवन-विचार | |
| 1751 | 12729 (1) | भड्डुली पुराण | भड्डुली |
| 1752 | 13144 | महादेवीना ग्रह (स्पष्ट) करवानी विधि | |
| 1753 | 13090 | महिमाईवाक्य | |
| 1754 | 15250 | राजावांरे सावण (शकुनविचार) | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19×10.5<br>19; 12 | 12-22 | पूर्ण | 19 वीं श | लि. क. मुनि मेघविजय<br>पत्राङ्क 23 पर 'वारों का महादशा फल' है। |
| 20×14<br>12; 26 | 1–7 | अपूर्ण | ,, | |
| 14×10<br>10; 20 | 81–88 | पूर्ण | ,, | |
| 25×13.5<br>19; 14 | 74–78 | ,, | 1814 | लि. क. साध गोपाल<br>पत्राङ्क 78 वें पर शिव का रेखा-चित्र है। |
| 21×10<br>8; 28 | 1–17 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 25×13.5<br>19; 13 | 59–69 | पूर्ण | 1814 | लि. क. साध गोपालदास<br>लि. स्था. गिरवा, गाम गुढा |
| 18.5×14<br>18; 15 | 1–17 | ,, | 1806 | पत्राङ्क 17–21 पर 'रुद्राक्ष माला मंत्र' है। |
| 16.5×12.5<br>14; 26 | 1–30 | ,, | 1955 | लि. क. ऋषि अनूपचंद<br>लि. स्था. राणावास<br>पत्राङ्क 31 पर ओसवाल वंशोत्पत्ति के 11 छन्द हैं। |
| 24.5×11<br>17; 48 | 1 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24×12.5<br>9; 25 | 1–7 | ,, | 1906 | संवत 1801–1900 तक का वर्षफल विचार है। |
| 25.5×10<br>13; 42 | 1–10 | ,, | 1852–1857 | लि. क. श्रीमालीनंद, कपूरविजय; शुभकर्ण; लि. स्था. जोधपुर<br>अंतिम पत्र पर 'जोगीराज-स्त्री संवाद' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1755 | 15218 (1) | रामाज्ञा प्रश्न | गो० तुलसीदास |
| 1756 | 14079 (12) | लग्नविचार | भट्टारक जिनउदैसूरि |
| 1757 | 13938 | वर्ष, दिन प्रवेश विधि ग्रादि | |
| 1758 | 14014 | विवाहभूषण-भाषा | कविकनक शिष्य सौभाग्य |
| 1759 | 13770 (15) | शकुनबत्तीसी | |
| 1760 | 14347 | शकुनविचार | |
| 1761 | 13505 (14) | " | |
| 1762 | 14079 (8) | " | |
| 1763 | 15293 (48) | " | |
| 1764 | 15293 (45) | " | |
| 1765 | 12729 (4) | शकुन-संवत-भास | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| 11.5×11<br>9; 12 | 21-64 | अपूर्ण | 1831 | प्रारम्भ के 20 पत्र अप्राप्त<br>पत्राङ्क 21–23 खण्डित<br>जीर्ण एवं कीटविद्ध |
| 14×13.5<br>12; 18 | 78–79 | पूर्ण | 1793 | लि. क. सिवराज बछराजोत<br>पत्राङ्क 80–82 'स्त्रीरै छोरू न हुवै तिणरो विचार' है ।<br>पत्राङ्क 83-85 पर जन्मलग्नादि हैं । |
| 25×10.5<br>14; 50 | 1–9 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25×12.5<br>17; 44 | 1-8 | ,, | 896 | र. का 1872<br>लि. क. चन्द्रसूर<br>लि. स्था. विनातट नगर |
| 10×9<br>10; 14 | 1–5 | ,, | 1862 | |
| 16×11<br>9; 18 | 1-19 | ,, | 19 वीं श. | अंतिम रचना; प्रारम्भ में ज्यौतिप की संस्कृत कृतियाँ हैं। |
| 16×11.5<br>10; 16 | 21–24 | ,, | ,, | छींक, वार, तिथि, प्रभात तीतर, घूघू आदि के शकुन । |
| 14×13.5<br>14; 18 | 34–37 | ,, | 1809 | पत्राङ्क 37 पर 'माताजीगी स्तुति'<br>पत्राङ्क 38 पर कविगद के कवित्त एवं बखतसिंहजीरो गीत' है । |
| 25.5×15.5<br>24; 42 | 136-141 | , | 17 वीं श. | काक, शृगाल छींक,स्वप्न, पल्लि-पतन, अंग-स्फुरणादि के शकुन । |
| 25.5×15.5<br>24; 44 | 128–134 | ,, | ,, | मात्रिका, ज्ञानमंजरी, दिशा, पशु-पक्षी आदि शकुन विचार । |
| 16.5×12.5<br>14; 27 | 60–63 | अपूर्ण | 20 वीं श. | 77 दोहे हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1766 | 15293 (47) | शकुनाध्याय चतुष्पदिका | गुणवल्लभ शिष्य गुणसमुद्र सूरि |
| 1767 | 13505 (16) | शकुनारी याददास्त | |
| 1768 | 14404 (9) | शकुनावली | |
| 1769 | 15097 (2) | " | |
| 1770 | 15293 (44) | शकुनावली त्रय | |
| 1771 | 14908 | " | |
| 1772 | 14907 | शकुनावली (निर्मलज्ञान शकुनावली) | |
| 1773 | 14679 | शकुनावली सचित्र | |
| 1774 | 13328 | शनिविचार | |
| 1775 | 13827 (2) | षट्पंचाशिका सअर्थ | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25 5 × 15.5<br>25; 42 | 135–136 | पूर्ण | 17 वीं श | |
| 16 × 11.5<br>11; 16 | 31–45 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 46–53 पर ग्रन्थ स्वामी की पीढियाँ व वरू याददास्त है । |
| 15 × 11<br>11; 12 | 228-247 | ,, | 1955 | लि. क. ललवाणी केसरमल |
| 16 × 10 5<br>7; 16 | 83–108 | ,, | 1925 | लि. क. अंबालाल चोईसा<br>लि. स्था. बूँदी । |
| 25.5 × 15.5<br>20; 40 | 112-127 | ,, | 17 वीं श. | लि. क. जयसागर वाचक<br>'पाशाकेवली' अपूर्ण है । |
| 16.5 × 14<br>13; 17 | 1–30 | ,, | 20 वीं श. | 'सोले शकुनावली' आदि । |
| 21.5 × 11.5<br>15; 30 | 1–5 | ,, | 1915 | लि. क. वल्लभदास निरंजनी<br>लि. स्था. अड़वड़; 'तरीक, ईजतमाल, जमायत, उकलाह, हुमराह, नसतुल. खारिजफाल'आदि यवन शकुनावली है। |
| 12 × 11<br>5/8; 12 | 1–63 | ,, | 20 वीं श. | चि. सं. 62; 63 प्रकार की वस्तुओं के प्रथम दर्शन के शकुन दिए हैं। अंत में हाथी का एक रेखाचित्र है । |
| 22.5 × 9.5<br>10; 28 | 1 | अपूर्ण | 1872 | |
| 21.5 × 13<br>13; 23 | 1–16 | पूर्ण | 1790 | लि. क. रूपा शिष्य नगराज<br>लि. स्था. घाणेराव; प्रारम्भ के 7 पत्रों पर स्त्री मूल-फल व औषधी संग्रह है । पत्राङ्क 17–23 पर लग्नफल एवं छाया-पुरुष विचार है । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1776 | 13568 | संक्रांति विचार | |
| 1777 | 12729 (3) | संवतसार (मेघमाला भाषा) | |
| 1778 | 13511 (39) | सत्ताईस नक्षत्र आदि | |
| 1779 | 15293 (50) | सामुद्रिक शास्त्र | |
| 1780 | 14948 (1) | स्वरोदय (उमामहेश्वर-संवाद) | |
| 1781 | 15098 (1) | " | |
| 1782 | 15294 (7) | " | |
| 1783 | 15073 (1) | स्वरोदय (ज्ञान स्वरोदय) | चरणदास--रणजीत पुत्र मुरली |
| 1784 | 14383 (3) | " | " |
| 1785 | 14472 (2) | " | " |
| 1786 | 14724 | " | " |
| 1787 | 14725 | " | |
| 1788 | 14416 (2) | " (महादेवजी रो) | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23×10.5<br>13; 38 | 1 ला | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16.5×12.5<br>13; 28 | 55-59;<br>76-88 | पूर्ण | 1968 | 'मेघमाला' पर आधारित<br>लि. क. अनोपचंद |
| 17×12<br>10; 16 | 181-182 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 183 पर सोजत के महंत रामदास पर कवित्त हैं। |
| 25.5×15.5<br>23; 44 | 143-148 | अपूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 15×11.5<br>10; 20 | 1-8;<br>9-16 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 16×11.5<br>10; 18 | 6-9 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 9.5×9<br>9; 14 | 1-20 | पूर्ण | 1867 | लि. क. पांडे माणकचन्द; अगले पत्रों पर औषधी संग्रह है। |
| 15×10.5<br>9: 14 | 1-38 | ,, | 1856 | |
| 16×12.5<br>10; 21 | 1-22 | ,, | 1938 | लि. स्था. सोजत नगर; पत्राङ्क 23-29 पर संस्कृत में तत्वबोध' है। |
| 18×16<br>13: 13 | 141-174 | ,, | 1834 | पत्राङ्क 182 पर अब्राह्मण ब्रह्मवेताओं के नाम हैं। |
| 21.5×12<br>9; 22 | 1-22 | ,, | 20 वीं श. | देवकृष्णदरजी वाचनार्थ |
| 26.5×13<br>10; 34 | 1-10 | ,, | 1904 | लि. क. देवकृष्ण दरजी<br>लि. स्था. जोधनगर |
| 12×11.5<br>12; 12 | 1-19 | ,, | 1819 | लि. स्था. सलाणा नगर<br>साह करमचन्द पठनार्थ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1789 | 13748 | स्वरोदय वार्तिक (शिवस्वरोदय) | |
| 1790 | 14830 | स्वरोदय विचार भाषा | लालचंद |
| 15– गणित | 12704 (6) | दस जाति लेखारी कररणरी रीत | |
| 1792 | 12700 | लीलावती गणित चिंतामणि भाषा | रिदलाल सेवक |
| 1793 | 14642 (3) | लीलावती भाषा | [मू. भास्कराचार्य] भा. लाललंद |
| 1794 | 13830 (7) | " " | " |
| 1795 | 14368 (1) | वर्णमाला व अंक-पाटी | |
| 16 संगीत एवं नृत्य | 13784 (13) | नृत्यरा छन्द | सूर्यमल मीसरण |
| 1797 | 15298 (3) | राग-चीतनी का दूहा | |
| 1798 | 13752 (1) | रागरत्नाकर | राधाकृष्ण कवि |
| 1799 | 13511 (4) | राग-रागणीरो विचार | |
| 1800 | 13752 (3) | राग-रागिणी संग्रह | [महाराजा मानसिंह] |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×11<br>10; 18 | 1–16 | पूर्ण | 1951 | लि. क. नारायणदास |
| 25.5×10.5<br>17; 45 | 4–8 | ,, | 1840 | र. का. 1753; लि. क. दानमल लि. स्था. पाटोदी; प्रारम्भ के 3 पत्रों पर ज्योतिष विचार है। |
| 15×14.5<br>9; 13 | 1–2 | अपूर्ण | 20 वीं श. | अंत में शृंगारिक पद्य हैं। |
| 21×15 5<br>15; 16 | 1–27 | ,, | 19 वी श. | र. का. 1700 नागोर; रत्नचन्द्र मुनि कँवलिया गच्छ–नागपुर की आज्ञा से |
| 25×17<br>17; 28 | 100–105 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1736 बीकानेर |
| 13×9.5<br>13; 18 | 62–113 | पूर्ण | 1784 | लि. क. गंगाधर |
| 21×14.5<br>13; 25 | 1–18 | ,, | 1908 | प्रारम्भ में 'मुँहपत्ती रा बोल' तथा अंत में 'पोथी का दूहा' है। |
| 17×13<br>9; 13 | 1–8 | अपूर्ण | 20 वीं श. | 22 छप्पय छन्द हैं। |
| 26.5×22.5<br>11;22 | 119–126 | ,, | 19 वीं श. | प्रारम्भ में 36 रागों के नाम हैं। |
| 27×19<br>26; 21 | 1–12 | पूर्ण | 19 वीं. श. | लि. क. रामकृष्णदास |
| 17×12<br>9; 12 | 190–193 | ,, | ,, | पत्राङ्क 193 पर स्फुट दोहे तथा पत्राङ्क 194 पर ग्रहों के अनुसार रत्नों केनाम एवं मंत्र हैं। |
| 27×19<br>26; 19 | 1–115 | अपूर्ण | ,, | 'रसराज, रसीलेराज' की छाप पदों में है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1801 | 13830 (11) | रागांरा दोहा | |
| 1802 | 15033 (7) | सभाभूषण | गंगाराम |
| 17 काम शास्त्र | 14890 (3) | कोक मंजरी | कवि कोक |
| 1804 | 14899 (1) | कोकशास्त्र | " तथा सौभाग्यसुंदरी ? |
| 1805 | 13768 (3) | " भाषा | |
| 1806 | 15293 (51) | " " सह | " |
| 1807 | 14042 (1) | " | आनन्द कवि |
| 1808 | 14336 (5) | नायक-नायिका भेद | |
| 18 रत्न शास्त्र | 14928 | मोहरा-परीक्षा (मणि परीक्षा) | मानतुंगाचार्य |
| 1810 | 13778 (5) | रत्न-परीक्षा भाषा | |
| 1811 | 14763 | रत्न-परीक्षा | रत्नसागर |
| 19 वास्तु शास्त्र | 13827 (3) | वास्तुसार-समर्थं | सूत्रधार मंडन पुत्र खेतउ (खेता) |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 13×9 5<br>13; 16 | 129–133 | अपूर्ण | 18 वीं श. | |
| 17×13.5<br>12; 15 | 31–34 | ,, | 20 वीं श. | |
| 23×16.5<br>23; 24 | 13–35 | पूर्ण | 1828 | लि. क. ओझा अभैकरण<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 14×11.5<br>8; 13 | 3–160 | अपूर्ण | 1900 | पत्राङ्क 1-2 अप्राप्त; जीर्ण<br>पत्राङ्क 161-162 पर औषधी विचार है। लि. क. दयाराम |
| 15.5×12<br>16; 12 | 1–68 | पूर्ण | 1901 | लि. क. मूलजी<br>लि. स्था. मनफरा गाँव |
| 25.5×15.5<br>24; 42 | 149–151 | अपूर्ण | 17 वीं श. | |
| 25.5×17<br>21; 17 | 1–29 | पूर्ण | 1925 | 15 खण्डों में विभक्त<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 14×12.5<br>13; 14 | 97–99 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 20 छन्द हैं। |
| 27.5×13<br>7; 24 | 1–9 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 32×25<br>27; 28 | 10–14 | ,, | ,, | रत्नदीपिकाग्रन्थ' भाषा |
| 23×15.5<br>16; 17 | 1–33 | ,, | 1888 | र. का. 1755<br>लि. क. मनूलाल |
| 21.5×13<br>15; 22 | 1–23 | ,, | 1790 | र. का. कुंभकर्णराज्ये चित्तौड़गढ़;<br>लि क. रूपा-घाणेराव; आगे पत्राङ्क 1-129 पर 'भुवनदीपककेवली बालावबोध' तथा ज्योतिष विचार है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 20 मंत्र-तंत्र शास्त्र | 13724 | कल्प-संग्रह | |
| 1814 | 13722 | चौरासीतंत्र व चौसठ जोगिनीनाम | |
| 1815 | 15293 (27) | जांगुलीविद्या | |
| 1816 | 13505 (10) | झाड़ो डीलरी व्याधिरो | |
| 1817 | 13768 (4) | तंत्रविद्या | |
| 1818 | 13723 | " | |
| 1819 | 12729 (6) | " | |
| 1820 | 14948 (3) | दीप्या अवतार-विधि समंत्र | |
| 1821 | 15293 (31) | मंत्र-यंत्र पताकादि-संग्रह | |
| 1822 | 15293 (29) | " संग्रह | |
| 1823 | 15293 (24) | " " | |
| 1824 | 12828 | मंत्र सर्वस्व भाषा | |
| 1825 | 14404 | हनुमान मंत्र यंत्र | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 27.5×14 17; 42 | 1–40 | पूर्ण | 2004 | लि. मेघराज; बांठिया की पोळ नागोर; संस्कृत एवं राजस्थानी भाषा में है। |
| 25×11 17; 60 | 1–3 | ,, | 1824 | तंत्रोपचार है। |
| 25.5×15.5 24; 42 | 52–53 | ,, | 17 वीं श. | |
| 16×11.5 16; 12 | 17 वां | ,, | 19 वीं श | ज्वर एवं शरीर-रक्षा का |
| 15.5×12 16; 10 | 68–71 | ,, | गु. 1901 | |
| 28.5×13.5 16; 50 | 1–7 | ,, | 20 वीं श. | |
| 16.5×12.5 14; 24 | 72–75 | ,, | ,, | |
| 15×11.5 8; 16 | 1–9 | ,, | ,, | मंत्रोपचार-संग्रह |
| 25.5×15.5 22; 46 | 76-92 | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 25.5×15.5 24; 46 | 55–67 | ,, | ,, | पत्राङ्क 64 पर भड्डली के दोहे हैं। |
| 25.5×15.5 30; 52 | 42–44 | ,, | ,, | |
| 23×15 22; 17 | 1–40 | ,, | 1895 | लि. क. लाला चुन्नीलाल |
| 15×11 10; 10 | 209–217 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 207–208 पर संवत् 1959 में मुनि मानमलजी के शिष्य के आगमन की विगत है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 21 स्तुति-स्तोत्र | 13362 | अंबाजीनो छन्द | |
| 1827 | 13827 (10) | अंबामाताजीरी आरती | |
| 1828 | 13769 (40-41) | अंबा-स्तुति एवं विनती | पुण्यमुनि |
| 1829 | 14408 (4) | " | |
| 1830 | 15280 | आनन्दाष्टक | ध्रुवदास |
| 1831 | 14075 (6) | कृष्णजी को वधावो | दास ? |
| 1832 | 12709 (6) | क्षेत्रपालजीरो छंद | कवि विदुर |
| 1833 | 13769 (16) | " | |
| 1834 | 13511 (43) | " | |
| 1835 | 13825 (1) | " | |
| 1836 | 14075 (4) | गंगाजीरो छन्द | |
| 1837 | 15293 (22) | गणेशाष्टक एवं भैरवाष्टक | |
| 1838 | 13769 (53) | गीत-आरतीरो | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×12<br>10; 20 | 1–3 | पूर्ण | 1902 | लि. क. जेठाभाई मेता |
| 21.5×13<br>15; 22 | 27–28 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 26-27 पर देवी की स्तुति है। अंतिम पत्र पर नेत्र-औषधी है। |
| 13.5×10.5<br>12; 14 | 159–162 | ,, | 1707 | पत्राङ्क 192-193 पर अंबामाता का गीत है। |
| 15×10<br>9; 17 | 53-54 | अपूर्ण | गु. 1780 | पत्राङ्क 51–52 अप्राप्त |
| 15.5×8<br>6; 16 | 1–3 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>14; 17 | 38–40 | ,, | 1793 | पत्राङ्क 42-43 पर डिंगल गीत है। |
| 23×13<br>14; 26 | 4-5 | ,, | 18 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>13; 20 | 84-85 | ,, | ,, | |
| 17×12<br>14; 20 | 199–200 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24.5×16<br>19; 37 | 113–114 | ,, | 16 वीं श. | प्रारम्भ के 112 पत्र अप्राप्त; पत्राङ्क 113 पर 'हिंगुलाज षट्पदी' का अंतिमांश है। |
| 15.5×11.5<br>8; 15 | 33–35 | ,, | 18 वीं श. | |
| 25.5×15.5<br>30; 46 | 93 वां | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 13.5×10.5<br>10; 20 | 255 वां | ,, | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1839 | 13511 (10) | गीत-करणीमातारो | |
| 1840 | 13511 (9) | गीत-खेतलजीरो | |
| 1841 | 13511 (11) | गीत-त्रिकुट-श्रीकृष्णजीरो | |
| 1842 | 14463 (25) | गीत-गोरखनाथजीरो | सेवक मानाजो |
| 1843 | 13769 (54) | गीत-श्रीठाकुरांरो लंका-समयरो | दुरसा ग्राढा |
| 1844 | 13761 (12) | गीत-सपंखरो (स्तुति) | हमीर |
| 1845 | 13511 (7) | गीत-सारदा मातारो | |
| 1846 | 14463 (20) | चालकनेचा छंद एवं भवानीजीरो छंद | त्रीकम; दुरसा ग्राढा |
| 1847 | 13514 (2) | चित्रामणिमाला-मंत्र | नन्ददास |
| 1848 | 13513 (2) | चोथमाताजीरो छंद | गोईन्ददास (गोविन्ददास) |
| 1849 | 14806 | जगदम्बा-छन्द | सीधर कवि (श्रीधर) |
| 1850 | 13769 (44) | जयंती-छन्द | |
| 1851 | 12704 (4) | दुर्गासार-बत्तीमी | सूरजभाण |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 17×12<br>13; 25 | 33 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 17×12<br>13; 25 | 32–33 | ,, | ,, | |
| 17×12<br>13; 25 | 34–35 | ,, | ,, | |
| 20×16.5<br>22; 22 | 237 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>10; 20 | 256 वां | ,, | ,, | |
| 16×22.5<br>25; 20 | 32–33 | ,, | 1855 | |
| 17×12<br>13; 25 | 27–28 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 26-27 'पर माडराणी रो छंद' है। |
| 20×16 5<br>23; 22 | 220 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 16×12.5<br>16; 12 | 6–8 | ,, | 20 वीं श. | लि. क. रुघिया |
| 24×16<br>23; 15 | 46–48 | ,, | ,, | |
| 25.5×11<br>15; 38 | 1–7 | ,, | 1717 | लि. क. हीररत्न गणि<br>लि. स्था. कुंआरला |
| 13.5×10.5<br>12; 22 | 201–204 | ,, | 1720 | लि. क. सोभा; चक्रमध्ये बैठि लिखत पत्राङ्क 205 पर भगवती-गीत' है। |
| 15×14.5<br>9; 14 | 1–15 | ,, | 1902 | लि. क. छगनलाल पंचोली |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1852 | 15293 (35) | दुर्गासप्तशती | |
| 1853 | 13769 (43) | देवीजीरो छंद | |
| 1854 | 13769 (39) | " | कवि हेम |
| 1855 | 13769 (20) | " | कवि सारंग |
| 1856 | 13769 (18) | " | कवि धन |
| 1857 | 13769 (15) | " | कवि मेम (हेम) |
| 1858 | 13769 (4) | " | केशवो |
| 1859 | 13769 (46) | " | कवि देद |
| 1860 | 15293 (34) | नवग्रह एवं शनिश्चर-स्तोत्र | |
| 1861 | 13761 (13) | नवग्रह-स्तुति | कवि खेतल |
| 1862 | 13765 (4) | नारायणजीरी नीसाणी | रामराय |
| 1863 | 14969 (5) | ब्रह्मास्तुति | गो. तुलसीदास |
| 1864 | 13769 (25) | भगवती-कनेज जोगिणी छंद | दुरसा आढा |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25 5 × 15.5 27; 50 | 96–106 | पूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 13.5 × 10.5 12; 22 | 195–201 | ,, | 1721 | लि. क. सोभा |
| 13.5 × 10.5 12; 14 | 158-159 | ,, | 18 वीं श. | |
| 13.5 × 10 5 13; 20 | 98–101 | ,, | ,, | |
| 13.5 × 10 5 13; 20 | 88–95 | ,, | ,, | |
| 13.5 × 10.5 13; 20 | 82–83 | ,, | ,, | |
| 13.5 × 10.5 13; 20 | 48 वां | ,, | ,, | लि. स्था. वूकड़ेसर |
| 13.5 × 10.5 13; 20 | 211–216 | ,, | ,, | लि. क. सोभा लि. स्था. कवलां |
| 25.5 × 15.5 21; 46 | 95 वां | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 16 × 22.5 25; 22 | 33–36 | ,, | गु. 1855 | |
| 22 × 16 18; 16 | 12–13 | ,, | गु. 1780 | |
| 19.5 × 14 13; 28 | 40 वां | ,, | 1895 | लि. क. देवकरण 'रामचरितमानस' से |
| 13.5 × 10.5 12; 16 | 131–135 | ,, | 1707 | लि. क. नाराइण लि. स्था. जोजावर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1865 | 14463 (4) | भवानीजीरो छंद (हिंगुलाजमाता) | कवि नेत |
| 1866 | 14463 (27) | " | " |
| 1867 | 15293 (43) | भवानीसहस्रनाम | |
| 1868 | 12706 (20) | भवानीस्तुति | नाहरसिंह |
| 1869 | 14418 (3) | भेरूजीरो छंद | |
| 1870 | 15216 (3) | महादेवजी को आरती | |
| 1871 | 13769 (17) | महादेवजी रो छन्द | |
| 1872 | 14714 (3) | महादेवजीरी स्तुति | नरहरदास |
| 1873 | 14463 (16) | महारुद्रजीरो छंद | कवि नेत |
| 1874 | 13769 (58) | महेशजीरो छन्द | |
| 1875 | 14418 (10) | माताजीरी आरती व भेरूजीरी स्तुति | |
| 1876 | 14463 (10) | माताजीरो गीत | जोगीदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 20×16 5<br>19; 26 | 42–44 | पूर्ण | 1764 | लि. क. जोगीदास |
| 20×16.5<br>19; 26 | 240–243 | ,, | 1763 | पत्राङ्क 241 पर जोगीदास के पद्य पत्राङ्क 242 पर 'क्षेत्रपालजीरो छंद' पत्राङ्क 243 पर 'ठाकुरांरी नीसाणी' भवानीजीरो गीत' आदि हैं। |
| 25.5×15.5<br>30; 46 | 111 वां | | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 15.5×11.5<br>8; 13 | 110–115 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 117-122 अप्राप्त |
| 12.5×11<br>9; 15 | 38–40 | ,, | ,, | पत्राङ्क 41 पर 'माताजीरी स्तुति' है। |
| 13×12.5<br>11; 16 | 51 वां | ,, | 20 वीं श. | |
| 13.5×10.5<br>13; 20 | 85–87 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 188 पर रुद्रजीरो सवैयो है। |
| 10.5×8<br>7; 12 | 76-80 | ,, | 1946 | लि. क. सिघ्वी गुमानमल<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 20×16.5<br>25; 24 | 148–149 | ,, | 1765 | लि. क. जोगीदास; पत्राङ्क 149 पर जोगीदास कृत 'समस्या कांकरी' है। |
| 13.5×10.5<br>14; 24 | 264 वां | ,, | 18 वीं. श. | लि. क. चेला सामा |
| 12.5×11<br>10; 15 | 133–135 | ,, | 19 वीं श. | अंत में तानसेन कृत एक पद राग भैरव का है। |
| 20×16.5<br>19; 26 | 76–78 | ,, | 1764 | र. का. 1764 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1877 | 14914 (3) | माताजीरी चरसा (चर्चा) | कवि नारायण |
| 1878 | 13761 (29) | माताजीरो छंद | दुरसा आढा |
| 1879 | 14079 (1) | " | |
| 1880 | 15216 (1) | " | हृदयराम |
| 1881 | 15096 (4) | " | जगियो |
| 1882 | 14914 (64) | माताजीरा दुआला | नारायण |
| 1883 | 14717 (2) | माताजीरा दोहा | भानों |
| 1884 | 13765 (5) | माताजीरो ध्याँन | नरसिंह |
| 1885 | 15216 (2) | माताजीरी नीसाणी | |
| 1886 | 13509 (10) | माताजीरी स्तुति | वल्लभदास |
| 1887 | 14043 (1) | रामरक्षा | रामानन्द |
| 1888 | 14352 (1) | " | " |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>14; 24 | 41-42 | पूर्ण | 18 वीं श. | अंत में जगरूप कृत 'पार्श्वनाथ स्तवन' है । |
| 16×22.5<br>27; 16 | 19-20 | ,, | 1804 | हररामजी मुखां लिख्यौ<br>लि. स्था. जसोल<br>आगे 'भर्तृहरिशतक' सटिप्पण है । |
| 14×13.5<br>16; 18 | 1-5 | ,, | 1790 | लि. क. सिवराज वछराजोत<br>लि. स्था. सिवाणा गढ़ |
| 13×12.5<br>11; 16 | 44-47 | ,, | 20 वीं श. | कीट-भक्षित<br>प्रारम्भ में संस्कृत के स्तोत्रादि हैं । |
| 20.5×15.5<br>16; 22 | 25 वां | ,, | 1836 | लि. क. छीतरमल |
| 15.5×11<br>10; 22 | 228 वां | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 229 वां अप्राप्त<br>पत्राङ्क 228, 230 पर चीहल एवं जसराज के दोहे हैं । |
| 22×20<br>20; 16 | 91-92 | ,, | 1838 | अंत में शृंगारिक कवित्त हैं । |
| 22×16<br>18; 16 | 13-14 | ,, | 1780 | लि. क. हरजी गौड़; मेड़ता<br>पत्राङ्क 15 पर ब्रह्माजीरे घड़ी, पोहर रो लेखो है । |
| 13×12.5<br>11; 16 | 47-50 | ,, | 20 वीं श. | पंजाबी पुट है ।<br>पत्राङ्क 50 पर 'बद्रीनाथ-लीला' है । |
| 24×17<br>15; 28 | 77-78 | ,, | 19 वीं श. | |
| 24.5×17<br>11; 24 | 1-3 | ,, | 1910 | प्रारम्भ के दो पत्रों पर 'हरिचंदसत' के 13 छन्द हैं । |
| 13.5×10.5<br>9; 12 | 1-6 | ,, | 19 वीं श. | प्रारम्भ के चार पत्रों पर मीरां, तुलसी व मनोहर के पद हैं । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1889 | 14392 (6) | रामरक्षा | गोरखनाथ |
| 1890 | 15294 (6) | रामरक्षास्तोत्र-भाषा | |
| 1891 | 14434 (3) | रामस्तोत्र | गो. तुलसीदास |
| 1892 | 15294 (4) | वसुदेव रावउत दसरथ देवउत | पृथ्वीराज राठौड़ |
| 1893 | 14676 (5) | विष्णु-सहस्रनाम | |
| 1894 | 12704 (1) | शक्ति-भक्ति-प्रकास | माधोराम कायस्थ |
| 1895 | 13769 (19) | शनिश्चरजीरो छंद | |
| 1896 | 12717 (6) | " | कवि हेम |
| 1897 | 13511 (48) | " | " |
| 1898 | 15096 (3) | " | " |
| 1899 | 13373 | शिवजीनी बारामासी | शिवानन्द |
| 1900 | 15293 (39) | श्रीचक्राष्टकम् | शंकराचार्य |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 11×9.5<br>7; 13 | 60–62 | पूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 59-60 पर संतदास के पद हैं। |
| 9.5×9<br>9; 9 | 32–38 | ,, | 1815 | लि. स्था सरदारगढ़<br>पत्राङ्क 39-43 पर मंत्रोपचार संग्रह है। |
| 11×7.5<br>6; 12 | 43–46 | ,, | 1880 | |
| 9.5×9<br>12; 13 | 16–21 | अपूर्ण | 19 वीं श. | 42 छन्द हैं; अतिमांश अप्राप्त |
| 21.5×12.5<br>11; 24 | 58-68 | पूर्ण | 1848 | संस्कृत में हैं। चित्र सं. 1 |
| 15×14.5<br>9; 13 | 4–58 | अपूर्ण | 1901 | र स्था. मेड़ता<br>पत्राङ्क 1-3 अप्राप्त<br>लि. क. पं. छगनलाल |
| 13.5×10.5<br>13; 20 | 96–97 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 21.5×14<br>13; 38 | 67-68 | ,, | ,, | अंत में 'माताजीरो छन्द' के 4 दोहे हैं। |
| 17×12<br>13; 20 | 217–219 | ,, | 19 वीं श. | |
| 20.5×15.5<br>16: 22 | 22 वां | अपूर्ण | 1836 | लि. क. छीतरमल |
| 18.5×11.5<br>10; 26 | 1 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. मेताजी शंकरजी |
| 25.5×15.5<br>16; 44 | 108 वां | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1901 | 14432 (4) | सरसा माताजीरी स्तुति | जसवंतसिंह |
| 1902 | 14075 (1) | सहस्रनामस्तोत्र सअर्थ (रामसहस्रनाम) | |
| 1903 | 14914 (69) | सीकोत्तरीमातरो छंद | गांगलो |
| 1904 | 14370 (4) | सूरजजीरो सिलोको | |
| 1905 | 14358 (8) | सूरजस्तोत्र | |
| 1906 | 13769 (7) | हनुमंत-छंद | |
| 1907 | 13667 | हनुमान-चालीसा | गो. तुलसीदास |
| 1908 | 13476 | हनुमानजीरी आरती | " |
| 1909 | 13492 (2) | " | " |
| 1910 | 14342 (11) | हनुमानजीरी बारखड़ी | |
| 1911 | 14284 (3) | हनुमान-जैत | नरहरिदास |
| 1912 | 14363 (4) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र. अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल वि. संवत् | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 19×9.5<br>11; 13 | 21 वां | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15.5×11.5<br>12; 20 | 1–75 | ,, | 1726 | लि. क. महात्मा रुघनाथ<br>लि. स्था. खींवसर |
| 15.5×11<br>13; 28 | 274–275 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 273-274 पर 'बलदेवगीत' आदि हैं। |
| 21×15<br>9; 16 | 106 109 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×13 5<br>13; 16 | 134–136 | ,, | ,, | |
| 13 5×10.5<br>10; 16 | 56–57 | ,, | 1707 | |
| 30.5×15<br>13; 42 | 1-4 | ,, | 19 वीं श. | अंत में केशवदास कृत एक छंद है। |
| 12.5×8<br>6; 13 | 1–4 | ,, | 1875 | लि. क. जगन्नाथ<br>लि. स्था. राधनपुर |
| 19.5×18<br>14; 12 | 103–105 | ,, | 19 वीं श. | |
| 21×14 5<br>12; 14 | 72–78 | ,, | ,, | जलसिक्त |
| 10×8<br>7; 13 | 141–144 | ,, | 1911 | लि. क. उदयराम<br>लि. स्था. खींवसर |
| 13.5×10.5<br>10; 12 | 36–38 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 38-39 पर तुलसीदास के पद हैं। पत्राङ्क 40-43 पर सप्त ऋषियों के नाम व राजाओं की वंशावली है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1913 | 14359 (9) | हनुमान-जैति | नरहरिदास |
| 1914 | 13667 | हनुमान-बाहुक | गो. तुलसीदास |
| 1915 | 14914 (32) | हिंगलाजदेवीजीरी चर्या आदि | नारायण, पातल |
| 22 (1) जैनागम; दर्शन | | | |
| | 14611 | उत्तराध्ययन कथा-संग्रह | |
| 1917 | 13988 | कर्मग्रन्थ यंत्र भाषा | पंडित सुमतिवर्द्धन |
| 1918 | 15293 (12) | कुशलानुबन्धी अध्ययन सवालावबोध | |
| 1919 | 14428 (19) | जम्बूद्वीप-वर्णन | |
| 1920 | 13825 (22) | जीवविचार-सूत्रार्थ | |
| 1921 | 15293 (13) | जीवविचार-सस्तबक | शांति सूरि |
| 1922 | 15270 | गणधरवाद | |
| 1923 | 14428 (6) | नवतत्त्वविचार | |
| 1924 | 14931 | " | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14.5×11<br>10; 18 | 54-55 | पूर्ण | 19 वीं श. | अंत में कृष्ण व कौरव-संवाद का एक पद है । |
| 22×15.5<br>13; 20 | 1-6 | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>13; 24 | 149-151 | ,, | 18 वीं श. | अंतिम कृति अपूर्ण है ।<br>पत्राङ्क 152 वां अप्राप्त |
| 26×10.5<br>16; 45 | 1-38 | , | 19 वीं श. | चतुर्थ अध्याय पर्यन्त |
| 27×13<br>12; 34 | 1-20<br>1-9 | अपूर्ण | 1903 | द्वितीय ग्रन्थ अपूर्ण<br>लि. क. हमीर विजय<br>लि. स्था. कृष्णगढ़ |
| 25.5×15.5<br>30; 50 | 15-19 | पूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत-प्राकृत-राजस्थानी में |
| 17×17<br>15; 16 | 247-252 | ,, | 20 वीं श. | |
| 24.5×16 | 206-225 | ,, | 16 वीं. श. | प्राकृत-राजस्थानी<br>पत्राङ्क 206 पर महालक्ष्मी-स्तोत्रादि संस्कृत में है । |
| 25.5×15.5<br>46; 52 | 19 वां | ,, | 17 वीं श. | |
| 25.5×11.5<br>15; 40 | 1-8 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×17<br>13; 16 | 64-66 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 68-69 पर 24 तीर्थङ्कर, 11 गणधर, 20 विहरमान व 16 सतियों के नाम हैं । |
| 25×12<br>18; 41 | 1-21 | ,, | ,, | अंतिम पत्र अन्य ग्रन्थ का है जिस पर 'नक्षत्रभेद-विचार' एवं 'नाड़ीचक्र' है । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1925 | 15293 (16) | नवतत्त्वविचार | |
| 1926 | 14323 | निशीथ सूत्र को हुंडी | |
| 1927 | 14428 (14) | प्रतिक्रमणसूत्र | |
| 1928 | 14329 (5) | " | |
| 1929 | 14428 (13) | लघुदण्डक | |
| 1930 | 14309 | " | |
| 1931 | 14125 (4) | लघुनवतत्त्व | |
| 1932 | 14060 | समयसार-नाटक | बनारसीदास |
| 1933 | 13935 | " | " |
| 1934 | 13826 (1) | षडावश्यक-बालावबोध | शोधक जयविजयगणि शिष्य विमलहर्ष |
| 22(2)जैन प्रकरण | 14428 (15) | अठाईस बोल | |
| 1936 | 13958 (18) | आचार्यना छत्तीसगुण आदि | |
| 1937 | 15293 (22) | आलोयण-विचार | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5 × 15.5<br>24; 46 | 22-24 | पूर्ण | 17 वीं श. | |
| 22.5 × 11.5<br>17; 28 | 1-19 | ,, | 1820 | लि. क. गुलालचन्द |
| 17 × 17<br>13; 16 | 197-208 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 196-197 पर स्तुति-स्तोत्र एवं गीत हैं। |
| 18 × 13.5<br>11; 24 | 13-33 | ,, | 19 वीं श | |
| 17 × 17<br>13; 16 | 175-195 | ,, | 20 वीं श. | |
| 25 × 11.5<br>19/15 40/28 | 1-10 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16 × 12<br>13; 35 | 9-12 | अपूर्ण | 20 वीं श. | |
| 23.5 × 13<br>16; 32 | 1-54 | पूर्ण | 1895 | लि. क. ऋषि मनरूप<br>लि. स्था. रत्नपुरी |
| 24 × 11.5<br>15; 38 | 1-34 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अंतिम पत्र अन्य प्रति का है। |
| 18.5 × 15<br>16; 26 | 25-88 | ,, | 17 वीं श. | प्रारम्भ अप्राप्त<br>पत्राङ्क 104 पर 'पाशाकेवली' है। |
| 17 × 17<br>13; 16 | 208-112 | पूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 212 पर 'दोषविचार' है। |
| 18 × 16<br>15; 20 | 14-18 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 14 पर संवत् 1757 में लिखी 'व्रतविधि' है। |
| 25.5 × 15.5<br>30; 50 | 41 वां | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1938 | 13958 (5) | इक्वीस ठाणा | |
| 1939 | 14428 (18) | इक्कीस द्वार | |
| 1940 | 14330 | एक सौ इक्यासी बोलां री हुंडी | |
| 1941 | 14428 (20) | गत-आगत-वर्णन | |
| 1942 | 14428 (4) | चार ध्यांन | |
| 1943 | 14234 (1) | चौवीस तीर्थङ्कर परिवार चक्र | |
| 1944 | 14428 (1) | चौवीस दण्डकद्वारान्तर्गत प्रकीर्ण संग्रह | |
| 1945 | 14310 | छुटकर बोल-संग्रह | |
| 1946 | 14234 (2) | जंबूद्वीप में दस बोलां रो विचार | |
| 1947 | 14234 (3) | तीर्थङ्कर भगवंतरा चौंतीस अतिसय | |
| 1948 | 14234 (5) | तीर्थङ्करांरा नाम चौपईबद्ध | |
| 1949 | 14428 (21) | तीनमनोरथ, पंचबोल, वीसनाम आदि | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, ग्रक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ ग्रपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×16<br>17; 21 | 35–44 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 17×17<br>15; 16 | 226–245 | ,, | 20 वीं श. | |
| 20.5×13<br>24; 36 | 1–9 | ,, | 1962 | लि. क. खूबचंद |
| 17×17<br>13; 16 | 252–256 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×17<br>13; 16 | 56–58 | ,, | ,, | |
| 25×16.5<br>22; 22 | 1–28 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×17<br>13; 16 | 1–48 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 49 पर उपमा-संग्रह है पत्राङ्क 49-54 पर 'रूपी-ग्ररूपी रा बोल' है। |
| 24.5×10.5<br>13; 36 | 1–17 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25×16 5<br>18; 34 | 29–32 | ,, | ,, | |
| 25×16.5<br>18; 34 | 33–35 | ,, | ,, | कीटविद्ध |
| 25×16.5<br>18; 34 | 42–44 | ,, | ,, | |
| 17×17<br>13; 16 | 256–258 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 259 पर कारकों के नाम हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1950 | 14832 | तेरै काठियारी गाथा अभक्षनाम अठारे पाप-स्थान आदि | |
| 1951 | 14313 | दण्डकद्वार | |
| 1952 | 14125 (2) | पंचदण्डक अवचूरि | |
| 1953 | 14428 (12) | पच्चीस वोलां रो थोकड़ो | |
| 1954 | 14130 | प्रश्नोत्तर रत्नमाला-वालावबोध | |
| 1955 | 14234 (4) | वासठ मार्गना द्वार | |
| 1956 | 14325 | वोल विचार-संग्रह | |
| 1957 | 14234 (6) | श्रावकना बोल | |
| 1958 | 14328 | सम्यक्त निर्णय गाथार्थ वालावबोध | |
| 1959 | 13770 (4) | साधु श्री विनैचंदजी ने कागद लिखियो तिणरी विगत | |
| 1960 | 14129 | सूक्तावली | |
| 1961 | 14465 | सूक्तिमाला भाषा बालावबोध | त्रा केसरविमल गणि |
| 1962 | 13958 (11) | सूक्तिमूक्तावली-भाषा | मू. सोमप्रभ<br>भा. बनारसीदास |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×11<br>18; 48 | 1–3 | पूर्ण | 19 वी श. | |
| 25×11<br>16; 36 | 1–25 | ,, | 1695 | लि क. आर्या सोभागदे |
| 26×12<br>13; 35 | 4–6 | ,, | 20 वीं श. | |
| 17×17<br>13; 16 | 166–175 | ,, | ,, | |
| 28.5×13<br>22; 42 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | लि. स्था. पालणपुर |
| 25×16.5<br>18; 34 | 36–39 | ,, | ,, | कीटविद्ध; पत्राङ्क 40-41 पर तीर्थङ्करों के नाम हैं। |
| 22.5×10.5<br>10; 28 | 1–13 | ,, | ,, | |
| 25×16.5<br>18; 34 | 45 वाँ | ,, | ,, | पत्राङ्क 46-51 पर तीर्थङ्कर नाम, तीन चौवीसी नाम आदि सग्रह है। |
| 23×10.5<br>10; 32 | 1–18 | ,, | 1932 | |
| 23.5×16<br>14; 32 | 18 वां | ,, | 19 वीं. श. | संस्कृत-राजस्थानी |
| 25×11<br>13; 35 | 1–6 | ,, | ,, | अंतिम पत्र पर आणंद मुनि कृत 'तंबाखू री सज्झाय' है। |
| 23×11<br>15; 36 | 1–10 | ,, | ,, | र. का. 1794<br>लि. स्था. सादड़ी |
| 18×16<br>18; 27 | 55–66 | ,, | 1761 | लि. क. क्षेमचन्द्र; अर्गलापुर<br>भाषा र. का. 1691 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 1963 | 13828 (22) | सूत्र माहि पूछवा योग्य बोल-संग्रह तथा आगमांरो आसरो | |
| 1964 | 12729 (2) | हुंडीबोल | |
| (22)-3 जैनाचार | 14107 (1) | अंजनशलाका-वालाववोध | विजयलक्ष्मी सूरि |
| 1966 | 14422 (4;7) | अष्टप्रकारीपूजा | देवचन्द शिष्य दीपचंद |
| 1967 | 14319 (2) | " | " |
| 1968 | 14346 (3) | " | " |
| 1969 | 14350 (4) | " | " |
| 1970 | 14345 (6) | " एवं जन्म महोत्सव छंद | " |
| 1971 | 14124 | अष्टोत्तरी स्नात्र-विधि आदि | |
| 1972 | 14954 (2) | आलोयणा-विधि | |
| 1973 | 13769 (5) | ईश्वरी-पूजा; थापना-विधि | |
| 1974 | 15293 (54) | ऋषभदेव-पूजा | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>15; 10/32 | 70–78 | पूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 68-69 अप्राप्त<br>लि. क. पंडित भागचन्द<br>पत्राङ्क 78 पर 'संबोध-सप्तति' है। |
| 16.5×12.5<br>16; 28 | 32–49 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26.5×12.5<br>15; 40 | 1–11 | ,, | ,, | लि. क. गुमानसागर |
| 10×9.5<br>10; 12 | 22–29;<br>84–93; | ,, | 19 वीं श. | |
| 24×12<br>12; 13 | 6–10 | ,, | ,, | |
| 15×13<br>13; 16 | 81–88 | ,, | ,, | अक्षर उड़े हुए धूमिल हैं। |
| 14×10<br>8; 16 | 44–52 | ,, | ,, | |
| 16×12<br>14; 14 | 1–16 | ,, | ,, | पत्राङ्क 16-20 पर आरती एवं स्तवन हैं। |
| 26.5×11<br>12; 28 | 1–16 | ,, | 1836 | लि. क. नेमविजय<br>लि. स्था. पीपाड़ |
| 21×11.5<br>14; 34 | 1–7 | ,, | 20 वीं श. | अंत में संस्कृत में 'सकल चैत्य त्रैलोक्य स्तवन' तथा जिनहर्ष व समयसुन्दर कृत सज्झाय हैं। |
| 13.5×10.5<br>13; 20 | 49–53 | ,, | 18 वीं श. | |
| 25.5×15.5<br>30; 46 | 195 वां | अपूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (3) जैनाचार | 13496 (18) | कलस-पूजा | जयमंगलसूरि शिष्य रामचन्द्रसूरि |
| 1976 | 14231 | चोसठप्रकारी पूजा-विधि | वीरविजय |
| 1977 | 13350 | चौवीस तीर्थङ्करांरी पूजा | |
| 1978 | 13828 (32) | ज्ञानपहिरावणी-गाथा | |
| 1979 | 15246 | नवपदपूजा-वासक्षेत्रपूजादि | देवचन्द |
| 1980 | 14422 (5) | नवपदपूजा | देवचन्द एवं यशोविजय वाचक |
| 1981 | 14319 (3) | " | " |
| 1982 | 14346 (1) | " | " |
| 1983 | 14350 (5) | " | " |
| 1984 | 14400 (4) | " | " |
| 1985 | 14107 (2) | नवाणुं प्रकारनी पूजा | वीरविजय शिष्य विजयदेवेन्द्र |
| 1986 | 13958 (17) | निर्वाणकाण्ड-भाषा | साह भगवतीदास (भगौतीदास) |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×14<br>18; 22 | 45–50 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24×12.5<br>15; 25 | 1–37 | ,, | 1934 | लि. क. हीरा ब्राह्मण<br>अंत में शुभवीर मुनि कृत 'नवअंगपूजा' के दोहे हैं। |
| 20×14.5<br>12; 24 | 1–122 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्र चिपके हुए हैं। |
| 15.5×11<br>15; 10/32 | 105–106 | पूर्ण | ,, | प्राकृत में है। |
| 25×12<br>14; 34 | 1–11 | ,, | 19 वीं श. | हीरधर्म एवं पद्मसूरि कृत 'चैत्यवंदनादि' भी हैं। |
| 10×9.5<br>10; 12 | 30–58 | ,, | 1894 | लि. क. विजयसागर |
| 24×12<br>12; 13 | 10–19 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×13<br>13; 16 | 58–72 | ,, | ,, | गुटके के प्रारम्भ में प्राकृत की कृतियाँ हैं। |
| 14×10<br>8; 16 | 52–72 | ,, | ,, | पत्राङ्क 72-73 पर 'मैमदापीर' का मंत्र है। |
| 22.5×18<br>18; 18 | 1–18 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26.5×12.5<br>15; 40 | 11–14 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1884 |
| 18×16<br>15; 24 | 12–13 | ,, | गु. 1763 | र. का. 1741 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (3) जैनाचार | 14342 (10) | निर्वाणकाण्ड-भाषा | साह भगवतीदास |
| 1988 | 14120 | प्रतिमा-थापरण; कुमती-उथापरण-चरचा | |
| 1989 | 14125 (1) | प्रश्नोत्तर, वीसथानक उद्यापन-विधि | |
| 1990 | 15050 | वाराव्रतनी टीप | |
| 1991 | 14107 (3) | वाराव्रत-पूजा | वीरविजय |
| 1992 | 14107 (4) | वीसथानक-पूजा | विजयलक्ष्मीसूरि |
| 1993 | 14609 | श्राद्धप्रतिकर्म-अतिचार | |
| 1994 | 14409 (12) | श्रावकना-अतिचार | |
| 1995 | 14566 | " | |
| 1996 | 14368 (10) | श्रावकातिचार | |
| 1997 | 14422 (6) | सतरहभेदी पूजा | साधुकीर्ति |
| 1998 | 14400 (5) | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×14.5<br>12; 15 | 70–71 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1741 |
| 25 5×12.5<br>19; 50 | 1–4 | ,, | ,, | लि. स्था. जोधपुर |
| 26×12<br>13; 35 | 1–2 | अपूर्ण | 20 वीं श. | तृतीय पत्र अप्राप्त |
| 26×13<br>20; 40 | 1–3 | पूर्ण | 1948 | लि. क. मयाचन्द<br>लि. स्था. गाँव भदड़ा (कच्छदेश) |
| 26.5×12.5<br>15; 40 | 14–17 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26.5×12.5<br>16; 42 | 21–26 | ,, | ,, | पत्राङ्क 18–20 अप्राप्त |
| 25.5×10.5<br>15; 38 | 2–5 | अपूर्ण | 1673 | लि. क. पुण्यविजयगणि<br>प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 16.5×12.5<br>12; 15 | 31–42 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 15×9.5<br>11; 22 | 1–14 | ,, | 16 वीं श. | लि. क. मुनि हेमविजय |
| 21×14.5<br>12; 25 | 91–101 | ,, | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलौदी |
| 10×9.5<br>10; 12 | 59–83 | ,, | 1895 | र. का. 1618<br>लि. क. विजयसागर |
| 22.5×18<br>18; 18 | 18–28 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (3) जैनाचार | 13828 (17) | सतरहभेदी-पूजा | |
| 2000 | 14332 (3) | " | साधुकीर्ति |
| 2001 | 14346 (4) | " | " |
| 2002 | 14332 (6) | सतरहभेदीपूजा-विधि | सकलचन्द |
| 2003 | 14813 | " | |
| 2004 | 14300 (1) | सामाइकरा बत्तीस दूषण, प्रतिक्रमण-विधि, पारण-विधि आ | |
| 2005 | 14428 (7) | सामाइक प्रतिक्रमण-विधि | |
| 2006 | 14404 (5) | सामाइकरी पाटी | |
| 2007 | 14368 (8) | सामायकलेवानी विधि | |
| 2008 | 14428 (16) | " | |
| 2009 | 14107 (6) | सिद्धचक्रजीरी वास-पूजा | क्षमाकल्याण |
| 2010 | 14319 (1) | स्नात्रपूजा | देवचन्द्र शिष्य दीपचंद |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11 18; 22 | 21–28 | अपूर्ण | गु. 1755 | लि. क. पंडित रामचन्द्र; पत्राङ्क 21 वां खण्डित व 28 का अंश मात्र प्राप्त। पत्राङ्क 15-21 पर जिनवल्लभसूरि कृत 'महावीरचरित्र' प्राकृत में है। |
| 15×15.5 19; 22 | 7–12 | पूर्ण | गु. 1934 | लि. क. राजेन्द्रसागर |
| 15×13 13; 16 | 88–103 | ,, | 1898 | लि. क. पंडित धरमचंद लि. स्था. बीकानेर |
| 15×15.5 16; 32 | 1–8 | ,, | 1940 | लि. क. मुनि रामसागर |
| 21; 11 9; 40 | 1–3 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पड़ीमात्राओं का प्रयोग है। |
| 25.5×13 13; 28 | 115–123 | पूर्ण | 20 वीं श. | गुटके के प्रारम्भ में संस्कृत में स्तुति-संग्रह है। पत्राङ्क 123-124 पर मतिकल्याण कृत 'ऋषभदेव-स्तुति' है। |
| 17×17 13; 16 | 69–85 | ,, | ,, | |
| 15×11 9; 12 | 197 वां | ,, | ,, | |
| 21×14.5 12; 25 | 78–88 | ,, | गु. 1908 | |
| 17×17 13; 16 | 222–225 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26.5×12.5 16; 42 | 33–34 | ,, | 1902 | |
| 24×12 12; 32 | 1–6 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 2011 | 14350 (3) | स्नात्रपूजा | देवचन्द्र शिष्य दीपचंद |
| 2012 | 14393 (2) | " | " |
| 2013 | 14422 (4) | " | " |
| 22 (4) रास-चौपई | 14404 (10) | अंजनासतीरो-रास | |
| 2015 | 14561 | अंजनासुन्दरी-चउ ई | पुण्यसागर वाचक |
| 2016 | 14631 | " " | भुवनकीर्ति शिष्य ज्ञाननंदी |
| 2017 | 14680 | " " सचित्र | |
| 2018 | 14547 | अंवड-रास | ज्ञानशेखर गणि शिष्य सौभाग्यशेखर |
| 2019 | 14107 (5) | अध्यातमगीता-बालावबोध | देवचन्द शिष्य दीपचंद |
| 2020 | 13826 (4) | अमरदत्त-मित्रानन्द-रास | शिष्य देवगुप्तसूरि |
| 2021 | 13071 | आणंद-संधि | मुनि श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष |
| 2022 | 14400 (7) | " | " |
| 2023 | 14497 | आर्द्रकुमार-विवाहलो | कमलविजय शिष्य लाभविजय |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×10<br>8; 16 | 31–44 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 11.5×11<br>12; 14 | 39–55 | ,, | ,, | अंत में 'अष्टप्रकारी-पूजा' प्रारम्भ की गई है। |
| 10×9.5<br>9; 12 | 4-21 | ,, | ,, | |
| 15×11<br>12; 12 | 251–273 | अपूर्ण | 1957 | |
| 24.5×11<br>17; 52 | 1–14 | पूर्ण | 1740 | र. का. 1789 |
| 24.5×10.5<br>13; 42 | 1–28 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1776 उदयपुर<br>लि. क. हीरसागर गणि; राजनगर |
| 22×10.5<br>9; 32 | 1–34 | अपूर्ण | 1852 | लि. क. सूरतराम मथेन<br>पत्राङ्क 14-23 अप्राप्त; चित्र सं. 53 |
| 26×11<br>19; 42 | 1-25 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1710 |
| 26.5×12.5<br>6; 40 | 26–33 | ,, | 1902 | लि. क. गुमानसागर<br>लि. स्था. सिवपुरी |
| 18.5×15<br>15; 29 | 124–154 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1606 शाके 1472 |
| 25.5×11.5<br>13; 38 | 1–12 | अपूर्ण | 19 वीं श. | अंतिमांश अप्राप्त |
| 22.5×11<br>18; 21 | 29–45 | पूर्ण | 1924 | र. का. 1684<br>लि. स्था. फलोधी नयरे |
| 25.5×11<br>18; 46 | 1–2 | ,, | 17 वीं श. | पड़ी मात्राओं का प्रयोग है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| (22) 4 रास-चौ. | 15267 | आषाढभूतिमुनि-रास (चौपई) | ज्ञानसागर शिष्य मुनि माणिक्यसागर |
| 2025 | 12709 (5) | " | " |
| 2026 | 14523 | " | सुधर्मरुचि |
| 2027 | 14563 | इलाकुमार-चउपई | ज्ञानसागर शिष्य माणिक्यसागर |
| 2028 | 14639 (2) | " " | " |
| 2029 | 12753 | उत्तमकुमाररी-चउपई | तत्त्वहंस कवि |
| 2030 | 14404 (4) | उपदेस-रास | ऋषि रायचन्द |
| 2031 | 14537 | ऋषभदेव-विवाहलु धवलबन्ध | सेवक |
| 2032 | 14544 | " | " |
| 2033 | 14551 | " | " |
| 2034 | 14600 | " | " |
| 2035 | 14630 | ऋषिदत्ता-चउपई | नयप्रमोद |
| 2036 | 14542 | ऋषिदत्ता-रास | जयवंतसूरि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25×11<br>16; 52 | 1–5 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1724<br>र. स्था. चक्रापुर गाँव |
| 23×13<br>11; 22 | 68–87 | ,, | 1762 | लि. क. हितराज |
| 25×11<br>13; 42 | 1–3 | ,, | 17 वीं श. | लि. क. चेला ज्ञानसोम<br>साध्वी रत्नसुन्दरी पठनार्थं |
| 24×10<br>15; 50 | 1–6 | ,, | 1729 | र. का. 1719 शेषपुरी<br>लि. क. रत्नविजय गणि |
| 14×13<br>11; 16 | 27–51 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. मानजी |
| 28.5×11<br>16; 44 | 1–36 | ,, | 1901 | र. का. 1731 मठाड़ा नगर<br>लि. क. विजयसागर पूनमगच्छीय |
| 15×11<br>9; 12 | 173–193 | ,, | 1939 | र. का. 1820<br>पत्राङ्क 194–196 पर मंत्रोपचार है। |
| 26×10.5<br>13; 44 | 1–10 | ,, | 17 वीं श. | जीर्णप्रति से प्रतिलिपि होने के कारण बीच-बीच में अक्षर छोड़ दिए गये हैं। |
| 25.5×11<br>11; 40 | 1–14 | ,, | ,, | |
| 25.5×11<br>13; 34 | 2–10 | अपूर्ण | 1591 | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>लि. क. विजयराज |
| 25×12<br>16; 42 | 108–112 | ,, | 1659 | अंतिमांश अपूर्ण |
| 23.5×10<br>10; 12 | 1–9 | पूर्ण | 18 वीं श. | र. का. 1408 |
| 25.5×11<br>14; 42 | 1–22 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1643 गंधार बंदर<br>लि. क. उदयकुशल |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22-(4) रास चौ. | 13825 (16) | कल्की-रास | |
| 2038 | 13505 (12) | कानड़-कठियारारी-चउपई | मानसागर शिष्य जीतसागर |
| 2039 | 12732 (2) | " | " |
| 2040 | 15293 (36) | कालडंक-चउपई | देवसील |
| प: 2041 | 14656 | कुमारपाल-रास | हीरकुशल शिष्य विमलकुशल |
| 2042 | 14608 | कुलध्वजकुंवर-रास | |
| 2043 | 14578 | कृष्ण-रुखमणी संवादो राड़ि | |
| 2044 | 12733 (4) | कैवन्नामहामुनि-चउपई | जयरङ्ग शिष्य जिनचंदसूरि |
| 2045 | 13785 (2) | " | " |
| 2046 | 14404 (1) | खंदककुमार-चौढालियो | जैमल |
| 2047 | 14614 | गुणकरंड-गुणावली-चौपई | जिनहर्ष शिष्य शांतिहर्ष वाचक |
| 2048 | 12733 (5) | " " | दीपचन्द ऋषि शिष्य मुनि-क्षेमकर्ण वर्द्धमान |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×16<br>24; 40 | 200 वां | अपूर्ण | 16 वीं श. | |
| 16×11.5<br>14; 16 | 34–50 | पूर्ण | 1872 | अगले चार पत्रों पर'सोनाजीरी पीढियां-री याददाश्त' तथा नुस्खा है । |
| 21×16<br>17; 34 | 19–25 | ,, | 1851 | र. का. 1747<br>लि. क. ज्ञानविजय गणि; जलसिक्त |
| 25.5×15.5<br>24; 40 | 51–52 | ,, | 17 वीं श | |
| 26×12<br>14; 46 | 1–28 | ,, | 1659 | र. का. 1640 अकिमपुरी<br>लि. स्था. घूमा |
| 25.5×11<br>13; 38 | 1–16 | ,, | 1709 | लि. क. खेमविजय<br>लि. स्था. कालंद्रीनगर |
| 25×11<br>14; 48 | 1–7 | ,, | 18 वीं श. | लि. स्था. वरणा |
| 19.5×17.5<br>15; 18 | 116–154 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1721 बीकानेर |
| 22.5×16.5<br>22; 8 | 1–15 | ,, | 1943 | |
| 15×11<br>13; 15 | 5-11 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 1-4 अप्राप्त; पत्राङ्क 11 पर समयसुन्दर कृत 'महावीरस्तवन' तथा अगले पत्रों पर पट्टी-पहाड़े हैं । |
| 25.5×11.5<br>26; 44 | 1–12 | पूर्ण | 18 वीं श. | र. का. 1751<br>लि. क. मुनि कमलसागर |
| 19.5×17 5<br>15; 18 | 1–42 | ,, | 1873 | र. का. 1757<br>पत्राङ्क 42–43 पर चौवीसतीर्थङ्कर-नाम हैं । कर्त्ता लुंकागच्छीय है । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) रास-चौ. | 14404 (3) | गुणकरंड-गुणावलो-चौपई | दीपचन्द ऋषि शिष्य मुनि-क्षेमकर्ण वर्द्धमान |
| 2050 | 14440 | "  " सचित्र | गजकुशल |
| 2051 | 13806 (16) | गौतम-पृच्छा-चउपई | मनरंग |
| 2052 | 13828 (64) | गौतमस्वामी-रास | विनयप्रभ उपाध्याय |
| 2053 | 14329 (2) | "  " | " |
| 2054 | 14332 (2) | "  " | " |
| 2055 | 14333 (1) | "  " | " |
| 2056 | 14338 (8) | गौतमस्वामी-रास | " |
| 2057 | 14346 (6) | "  " | " |
| 2058 | 14350 (1) | "  " | " |
| 2059 | 14368 (12) | "  " | " |
| 2060 | 14463 (23) | "  " | " |
| 2061 | 15253 (1) | "  " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×11<br>13; 15 | 34–96 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 24.5×17.5<br>19; 36 | 3–42 | अपूर्ण | 19 वीं श. | र.का. 1714; चित्र सं. 36+17=53 पत्राङ्क 1, 2, 11, 16, 17, 19, 39, 41 वें अप्राप्त; पत्राङ्क 16,20 वां दोबार |
| 14.5×13<br>14; 14 | 37–44 | पूर्ण | ,, | पत्राङ्क 34-37 पर औषधी संग्रह तथा 44–45 पर 'आत्मा-सज्झाय' है। |
| 15.5×11<br>9; 18 | 100–108 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1412 खंभात<br>पत्राङ्क 107 वां खंडित |
| 18×13.5<br>11; 14 | 14–21 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×15.5<br>19; 22 | 3–7 | ,, | 1934 | |
| 17.5×13.5<br>17; 16 | 1–11 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>10; 18 | 88–98 | ,, | ,, | र. का. 1412 खंभात |
| 15×13<br>13; 16 | 149–156 | ,, | 1888 | |
| 14×10<br>8; 10 | 1–14 | ,, | 19 वीं श. | |
| 21×14.5<br>13; 25 | 109–114 | ,, | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलोदी |
| 20×16.5<br>23; 22 | 231–334 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. मुनि जोगीदास<br>अंत में 'पेट दूखने' की औषधी है। |
| 24×11<br>13; 34 | 1–5 | ,, | 19 वीं. श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) रास-चौ० | 14665 (1) | चतुर्गति-चउपई | |
| 2063 | 13505 (11) | चंदन-मलियागिरिरी चउपई | भद्रसेन |
| 2064 | 13905 | " " | " |
| 2065 | 14312 | " " | खेमहर्ष (क्षेमहर्ष) |
| 2066 | 12277 | चंदलेहारी चउपई | मतिकुशल शिष्य रत्नवल्लभ |
| 2067 | 14585 | " " | " |
| 2068 | 14345 (5) | चित्रवल्लभ-चौढालियो | |
| 2069 | 14549 (2) | छीहल-बावनी | कविछीहल सुत नाथा अग्रवाल |
| 2070 | 14262 | जंवूकुमार-चरित्र | |
| 2071 | 14304 | जंवूकुमाररी चउपई | नन्दराम शिष्य देवो |
| 2072 | 13825 | जंवूस्वामी-चउपई | |
| 2073 | 14416 (3) | ज्ञानबत्तीसी | |
| 2074 | 14404 (2) | ज्ञान-लावणी | वनारसी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×11<br>18; 56 | 1–3 | पूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 3 पर सोमसुन्दरसूरि शिष्य कृत 'विमल-मंत्रीश्वररास' है। |
| 16×11.5<br>14; 16 | 18–34 | ,, | ,, | |
| 28×12<br>13; 31 | 1-10 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 25.5×10 5<br>16; 48 | 1–14 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 16×11.5<br>11; 18 | 1–97 | पूर्ण | ,, | र. का. 1728 |
| 26×12<br>17; 40 | 1–20 | ,, | 1800 | लि. क. यशोहर्ष शिष्य भक्तिहर्ष |
| 16×12<br>12; 14 | 41-49 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1839 नागोर |
| 25×10.5<br>18; 48 | 4–7 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1584 |
| 25×11.5<br>15; 36 | 1–21 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 26×12<br>12; 36 | 1–23 | पूर्ण | 1987 | र. का. 1970 नीमच<br>लि.क केसुलाल; लि. स्था. भावी |
| 24.5×16<br>24; 40 | 183–187 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1522 |
| 12×11.5<br>12; 12 | 19–23 | ,, | 1819 | लि. क. मुनि अमृतउदय |
| 15×11<br>13; 15 | 32–33 | ,, | 20 वीं श. | प्रारम्भ में 'लघुचाणक्य राजनीति' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (4) रास-चौ० | 12709 (17) | ढोला-मारूरी चउपई | कुशललाभ |
| 2076 | 12717 (4) | " | " |
| 2077 | 12730 (1) | " | " |
| 2078 | 13771 (1) | " सचित्र | " |
| 2079 | 14615 | थावच्चासुत-साधु-चउपई | समयसुन्दर शिष्य सकलचंद |
| 2080 | 12733 (3) | दान-शील-तप भावनारो चौढालियो (संवाद-शतक) | " |
| 2081 | 14632 (4) | " | " |
| 2082 | 14621 | " | " |
| 2083 | 14412 (12) | " | " |
| 2084 | 13806 (4) | " | " |
| 2085 | 14385 (3) | " | " |
| 2086 | 15260 | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23 × 13<br>15; 34 | 1–29 | पूर्ण | 19 वी श. | र. का. 1617 जैसलमेर<br>लि. क. नित्यसागर |
| 21.5 × 14<br>11; 24 | 22–62 | ,, | 1795 | लि. क. उमेदराज<br>लि. स्था. खेरवा नगर |
| 17 × 12.5<br>12; 18 | 1–75 | ,, | 1863 | |
| 19 × 15<br>13; 19 | 1–60 | अपूर्ण | 19 वीं श. | चित्र संख्या 31; अंतिमांश अपूर्ण |
| 25.5 × 11<br>15; 42 | 1–15 | पूर्ण | 1729 | र. का. 1691 खंभात<br>लि. स्था. लूणकरणसर |
| 19.5 × 17.5<br>15; 16 | 108–115 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1662 सांगानेर |
| 24.5 × 10.5<br>15; 40 | 18–21 | ,, | 1851 | |
| 25.5 × 11<br>13; 42 | 1–5 | ,, | 1678 | अचलगच्छाधिराज-<br>श्री कल्याणसागरसूरीश्वर विजयराज्ये<br>लिपि बद्ध |
| 14 × 11<br>8; 16 | 217–229 | अपूर्ण | गु. 1707 | |
| 14.5 × 13<br>18; 15 | 3–11 | पूर्ण | 19 वीं. श. | पत्राङ्क 1–3 पर प्राकृत में 'महावीर-<br>स्तोत्र' है। |
| 15.5 × 13.5<br>12; 15 | 80–91 | अपूर्ण | ,, | |
| 25.5 × 10.5<br>13; 46 | 1–4 | पूर्ण | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (4) रास-चौ० | 14600 (2) | देवकुमार मंत्रीश्वर-चउपई | सौभाग्यसुन्दर गणि शिष्य देवसमुद्र |
| 2088 | 13825 (10) | धन्ना-रास (चरित्र चउपई) | मतिशेखर |
| 2089 | 14600 (13) | " | " |
| 2090 | 14560 | धर्मदत्त चन्द्रधवल-चउपई | राजलाभगणि शिष्य राजहर्ष |
| 2091 | 13778 (6) | धर्मबावनी | धर्मसी (धर्मवर्द्धन) |
| 2092 | 13785 (3) | धर्मबुद्धि-पापबुद्धिनी चौपई | लाभवर्द्धन शिष्य शांतिहर्ष गणि |
| 2093 | 14640 (1) | " | " |
| 2094 | 14600 (2) | धर्मरत्न-चतुष्पदी | धर्मसमुद्र |
| 2095 | 14353 | धर्मलावणी | चंपाराम |
| 2096 | 14416 (4) | ध्यानबत्तीसी | बनारसीदास |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25 × 12<br>16; 48 | 78–88 | पूर्ण | गु. 1638 | र. का. 1624 मेदिनीपुर<br>ग्रंत में सकलचंद कृत गीत है । |
| 24.5 × 16<br>19; 26 | 154–161 | अपूर्ण | 16 वीं श. | र. का. 1514<br>पत्राङ्क 128 पर 'गौतमस्वामी रास' का प्रारम्भ है ।<br>पत्राङ्क 129–143 अप्राप्त |
| 25 × 12<br>17; 48 | 89–98 | पूर्ण | 1659 | लि. क. शुभकरण<br>लि स्था. राजलदेसर |
| 25.5 × 11<br>18; 52 | 1–18 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1547 |
| 32 × 25<br>27; 26 | 4–17 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1725 |
| 22.5 × 16.5<br>25; 34 | 1–17 | ,, | 1943 | र. का. 1742 |
| 15.5 × 11<br>13; 28 | 1–34 | ,, | 1801 | लि. क. कोडूराम मथेन<br>लि. स्था. जोबनेर |
| 25 × 12<br>16; 54 | 21–27 | ,, | 1637 | र. का. 1564<br>प्रारम्भ में विष्णु-सहस्रनाम स्तोत्रादि संस्कृत में हैं ।<br>पत्र चिपके हुए हैं । |
| 14.5 × 11<br>12; 20 | 3–26 | अपूर्ण | 1899 | र. का. 1884<br>लि. क. ऋषि देवीदास<br>लि. स्था. वृन्दावन<br>प्रारम्भ अप्राप्त |
| 12 × 11.5<br>12; 12 | 23–30 | पूर्ण | 1819 | लि. क. मुनि अमृतउदय |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) **रास-चौ०** | 14526 | नंदीश्वर अट्ठमद्वीप-चउपई | श्रावक मालदेव शिष्य देवसुन्दरसूरि |
| 2098 | 14548 | नमिराजर्षि-चउपई | ललितसागर शिष्य पुन्यरत्नसूरि |
| 2099 | 13806 (26) | नरक-चउढालियो | |
| 2100 | 13825 (14) | नल-दमयंती-चउपई | |
| 2101 | 14303 | नल-दवदंती-रास | समयसुन्दर |
| 2102 | 14613 | " | " |
| प: 2103 | 14527 | नल-दवदंती प्रवन्ध | विजयशेखर शिष्य विवेकशेखर |
| 2104 | 14564 | नलदवदंती लघु-रास | |
| 2105 | 14492 | निमनाथ-विवाहलु | श्रीब्रह्म |
| 2106 | 12717 (2) | नेमिकुमार-फाग | राजहर्ष |
| 2107 | 14914 (3) | " | " |
| 2108 | 14498 | नेमिनाथ-प्रवन्ध | लावण्यसमय |
| 2109 | 14914 (20) | नेमिनाथ-रास | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×11<br>21; 60/65 | 1 | पूर्ण | 17 वीं श. | |
| 25×11<br>11; 42 | 1–6 | ,, | ,, | र. का. 1669 |
| 14.5×13<br>15; 18 | 89–91 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. जीवनहंस<br>शोभनलिपि |
| 24.5×16<br>22; 36 | 188–189 | ,, | 16 वीं श. | |
| 28.5×12<br>26; 36 | 1–16 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्र चिपके हुए हैं। |
| 26×11<br>19; 45 | 1–25 | पूर्ण | 1693 | र. का. 1673 मेड़ता<br>लि. क. ज्ञानहर्ष गणि |
| 26×11.5<br>16; 42 | 1–42 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1676 |
| 22×10.5<br>11; 30 | 5–9 | ,, | 1624 | लि. क. सकलमूर्ति गणि<br>पत्राङ्क 1–5 पर 'नववाड़ि' आदि हैं। |
| 26×11.5<br>11; 42 | 1–18 | अपूर्ण | 18 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 21.5×14<br>13; 26 | 7–8 | पूर्ण | 1796 | |
| 15.5×11<br>12; 26 | 153–155 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. वाचक धर्मराज<br>लि. स्था. नाडूल |
| 24×11<br>11; 42 | 1–14 | ,, | 1662 | लि. क. जोशी शिवलाल<br>लि.स्था. स्तंभतीर्थ (खंभात) |
| 15.5×11<br>11; 18 | 129–135 | ,, | 1786 | कीटविद्ध<br>लि. क. मुनि प्रेमराज |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) **रास-चौ०** | 14305 (1) | नेमि-राजुल-बारहमासो | |
| 2111 | 13806 (27) | „ | जिनहर्ष |
| 2112 | 14641 (3) | „ | विनयविजय |
| 2113 | 14339 (16) | „ | कवियण; *लब्धोदय |
| 2114 | 14339 (14) | „ | कवियण |
| 2115 | 14495 | पंचाख्यान विषये-कर्मरेखा-भाविनी-चरित्र | नित्यसौभाग्य शिष्य वृद्धि-सौभाग्य |
| 2116 | 14562 | पांडव-चरित्र | महिमासिंह शिष्य शिवनिधान |
| 2117 | 14835 | पुण्यसार-चरित्र | साधु मेरुगणि शिष्य हेमरत्नसूरि |
| 2118 | 15068 | पोसती-रासो | बखतेश |
| 2119 | 15051 (8) | „ | |
| 2120 | 14620 | प्रत्येकबुद्ध-चउपई | समयसुन्दर |
| 2121 | 13825 (11) | बारह-व्रतनी चउपई | |
| 2122 | 14306 (2) | बावनमुक्तावली | जसराज (जिनहर्ष) |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×11.5 13; 36 | 1–2 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 2 पर जिनहर्ष कृत 'सिद्धाचल स्तुति' है। |
| 14.5×13 13; 18 | 92-93 | ,, | ,, | |
| 14×11.5 21; 19 | 18–22 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1728 पत्राङ्क 22 पर 'अनागत चौवीस नाम' हैं। |
| 12×13.5 18; 18 | 66-69 | ,, | 19 वीं श | *र. का. 1689 पत्राङ्क 66 पर जिनकुशलसूरि गीत है। |
| 12×13.5 12; 15 | 58–63 | ,, | गु. 1848 | |
| 25.5×11.5 22; 48 | 1–7 | ,, | 1744 | लि. क. तत्वचन्द्र लि. स्था. वेहड़ानगर |
| 26×11 14/16;48/52 | 1–73 | ,, | 19 वीं श. | |
| 27×11.5 19; 56 | 1–14 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1571 |
| 17.5×13 18; 17 | पृ. 1–10 | ,, | सन् 1903 | अफीम की प्रशंसा में है। |
| 29×21 24; 22 | 1–12 | ,, | 1959 | |
| 26×11 17; 42 | 1–25 | ,, | 17 वीं श. | र. का. 1665 आगरा |
| 24.5×16 19; 26 | 161 वां | अपूर्ण | 16 वीं श. | |
| 26×11.5 15; 32 | 7–12 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1738 पत्राङ्क 12-13 पर बनारसी कृत सवैया है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (4) रास-चौ०** | 14501 | बिल्हणपंचाशिका भाषा | कवि सारंग शिष्य पद्मसुन्दर |
| 2124 | 14821 | " | " |
| 2125 | 14416 (5) | भवसंधि-चतुदर्शी-चउपई | |
| 2126 | 14522 | भवियकुटंब-चरित्र | |
| 2127 | 12709 (1) | माधवानल-कामकंदला-चउपई | कुशललाभ वाचक |
| 2128 | 12717 (11) | " " | " |
| 2129 | 14406 (2) | " " | " |
| 2130 | 14469 | " " | " |
| 2131 | 14603 | " " | " |
| 2132 | 14401 | मानतुंग-मानवतीनो रास | मोहनविजय |
| 2133 | 13507 | " " | " |
| 2134 | 14320 | " " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×11<br>17; 52 | 1–10 | पूर्ण | 18 वीं श. | र. का. 1638 जालोर |
| 26×11<br>15; 44 | 1–15 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. कुशलक्षेम<br>लि. स्था. सिरोही |
| 12×11.5<br>12; 12 | 30–32 | ,, | 1819 | |
| 26×11<br>15; 54 | 1–3 | ,, | 17 वीं श. | |
| 23×13<br>15; 42 | 1–25 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1617 ? जैसलमेर<br>प्रथमपत्र खंडित |
| 21.5×14<br>10; 25 | 1–45 | ,, | 1795 | र. का. 'सोल सोलोतरे'=1616<br>लि. क. नगराज; खेरवा |
| 22×15<br>21; 15 | 1–33 | ,, | 1733 | र. का. 1616<br>लि. क. अमरसी; लि. स्था. मेदनीपुर |
| 26×11<br>13: 34 | 1–24 | ,, | 1741 | लि. क. सौभाग्यविजय<br>लि. स्था. जावरनगर |
| 26.5×11.5<br>13; 45 | 1–21 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. रंगभेरू |
| 27×11.5<br>15; 48 | 1–19 | अपूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1760 अणहिलपुर पाटण<br>29 वीं ढाल पर्यन्त |
| 12.5×10<br>11; 12 | 24,25,56<br>64–108 | ,, | 19 वीं श. | पत्र जीर्ण;पत्राङ्क 1-23, 26-55, 57-63 अप्राप्त; पत्राङ्क 38-39 पर 'शालिभद्र-रास' का अंश है। |
| 24.5×12<br>13; 40 | 1–33 | ,, | ,, | 47 वीं ढाल के 12 वें चरण तक |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| (22) 4 रास-चौ० | 14404 (3) | मानतु ग-मानवतीनो रास | मोहनविजय |
| 2136 | 13983 | मृगलेख्यानी चौपई | ऋषि रायचन्द |
| 2137 | 14302 | ,, | ,, |
| 2138 | 13825 (12) | मृगाङ्कलेखा-चउपई | |
| 2139 | 14600 (14) | मृगाङ्कलेखा सति-चरित्र | वच्छ |
| 2140 | 14336 (12) | मृगापुत्रनी-चौपई | उदय शिष्य सदारंग |
| 2141 | 13826 (5) | मृगावती-चरित्र | समयसुन्दर |
| 2142 | 14584 | मोती-कपासिया-संवाद | मुनिश्रीसार शिष्य रत्नहर्ष |
| 2143 | 12732 (3) | रत्नपाल-चौपई | सूरविजय |
| 2144 | 14338 (16) | राचा-बत्तीसी | |
| 2145 | 14342 (2) | राजुल-पच्चीसी | लालचंद |
| 2146 | 14519 | रात्रिभोजन-चौपई | धर्मसुन्दर वाचक |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×11<br>17; 18 | 100–170 | पूर्ण | 20 वीं श. | र. का. 1760 अणहिलपुर पाटण<br>दुर्गादास राठौड़ राज्ये । |
| 29.5×12.5<br>13; 50 | 1–25 | ,, | 1968 | र. का. 1858 मेड़ता<br>लि. क. ऋषि न्यालचंद; वेनातट |
| 27×12<br>27; 36 | 3–17 | अपूर्ण | 1852 | र. का. 1838 जोधपुर<br>लि. क. आरज्या मया; लि.स्था. रीवां-<br>नरसिंहदास गुंदेचारी हवेली |
| 24.5×16<br>24; 41 | 179–183 | ,, | 16 वीं श. | प्रारम्भ के 169 छन्द अप्राप्त |
| 25×12<br>16; 48 | 98–107 | पूर्ण | गु. 1639 | |
| 14×12.5<br>13; 16 | 120–129 | अपूर्ण | 19 वीं श. | र. का 1753<br>पत्राङ्क 117-119 अप्राप्त |
| 18.5×15<br>16; 30 | 155–173 | पूर्ण | 17 वीं श. | पत्राङ्क 173-177 पर 'कल्याणमंदिर<br>स्तवन' तथा 'वासुपूज्य पूजा' है । |
| 23.5×13<br>9; 28 | 1–8 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1686 फलवर्द्धिपुर<br>प्रारम्भ में सुभाषित हैं । |
| 21×16<br>17; 34 | 26–51 | ,, | 1855 | र. का. 1732 बुरहानपुर<br>लि. क. लक्ष्मीविजय गणि<br>लि. स्था. रोहिड़ानगर |
| 16×11<br>10; 20 | 145–150 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 150-152 पर मेघराज कृत<br>'पार्श्वनाथ स्तवन' है । |
| 21×14.5<br>16; 15 | 20–29 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 20-21 पर रसराज एवं<br>गंगाजी की विनती है । |
| 26.5×11<br>15; 52 | 1–8 | पूर्ण | 17 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (4)** **रास-चौ०** | 14636 | ललितांगकुमार-रास | जिनहर्ष शिष्य शांतिहर्ष |
| 2148 | 14600 (3) | " | " |
| 2149 | 14500 | लुंकावदनचपेटा-चउपई | लावण्यसमय |
| 2150 | 14524 | " | " |
| 2151 | 14600 (11) | वंकचूल-चौपई | |
| 2152 | 14272 | वछराजकुमार-प्रबन्ध (वछराज-देवराज-चउपई) | विनयलाभ |
| 2153 | 14666 | वस्तुपाल-तेजपाल-रास | समयसुन्दर |
| 2154 | 14667 | " | " |
| 2155 | 13825 (15) | " | पासचन्द सूरि |
| 2156 | 12852 | विक्रमपंचडंडरी चौपई | लक्ष्मीवल्लभ |
| 2157 | 14315 | विक्रमादित्य-अधिकार | लाभवर्द्धन |
| 2158 | 14567 | विक्रमादित्य-परकाया-प्रवेश चौपई | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5×11<br>17; 52 | 1–28 | पूर्ण | 1748 | र. का. 1744 पाटण<br>लि. क. लक्ष्मीशेखर<br>पत्राङ्क 25 वां खंडित |
| 25×12<br>15; 40 | 28–35 | अपूर्ण | 17 वीं श. | अंतिमांश अपूर्ण |
| 27×11.5<br>16; 46 | 1–6 | पूर्ण | 17 वीं श. | र. का. 1543 |
| 26×11.5<br>15; 46 | 1–6 | ,, | ,, | |
| 25×12<br>16; 48 | 75–77 | ,, | 1638 | लि. क. मुनि गणेश<br>अंत में 'वीस थानक सज्झाय' है। |
| 27×11.5<br>16; 48 | 1–47 | ,, | 1849 | र. का. 1730 मुलतांन |
| 26×11<br>12; 36 | 1–2 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1682 तिमरी |
| 26.5×12<br>14; 36 | 1–2 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1682 तिमरी |
| 24.5×16<br>24; 40 | 190–193 | ,, | 16 वीं श. | |
| 26×12<br>13; 36 | 1–53 | अपूर्ण | 19 वीं श. | |
| 24.5×11.5<br>12; 36 | 1–30 | ,, | ,, | |
| 20×11<br>11; 26 | 1–25 | पूर्ण | 1641 | लि. क. चेला गोविन्द<br>लि. स्था नवानगर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) रास-चौ० | 14505 | विद्याविलासनरेन्द्र-चरित्र | हीरानन्दसूरि शिष्य वीरप्रभसूरि |
| 2160 | 14336 (1) | विमलमंत्रीश्वर को सरलोको | पंडित विनीतविमल |
| 2161 | 14386 (2) | " | " |
| 2162 | 14067 (7) | " | " |
| 2163 | 14565 | व्यापारी-रास | जिनदास शिष्य कल्याणसागर |
| 2164 | 13806 (18) | शत्रुञ्जय-रास | समयसुन्दर |
| 2165 | 15275 | " | " |
| 2166 | 14329 (3) | " | " |
| 2167 | 14346 (5) | " | " |
| 2168 | 14350 (2) | " | " |
| 2169 | 14368 (11) | " | नगविजय शिष्य गुलालविजय |
| 2170 | 14534 | शांतिनाथ-विवाहलु | आनन्दप्रमोद शिष्य हर्षप्रमोद |
| 2171 | 14552 | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26.5×11.5<br>15; 54 | 1-6 | पूर्ण | 17 वीं श. | र. का 1485 |
| 14×12.5<br>9; 14 | 7-22 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रारम्भ अप्राप्त |
| 17×12.5<br>11; 18 | 11-25 | पूर्ण | 1864 | लि. क. पंडित नायकविजय<br>लि. स्था. जावालग्राम<br>पत्राङ्क 25-26 पर'शत्रुञ्जय स्तवन'है। |
| 18×14.5<br>15; 22 | 1-8 | " | गु. 1766 | प्रारम्भ में 'गुणस्थान-क्रमारोह, चैत्यवंदन' आदि हैं। |
| 21.5×11 5<br>15; 38 | 1-3 | " | 19 वीं श. | र. का. 1719 |
| 14.5×13<br>15; 15 | 52-62 | " | " | र. का. 1666 नागोर |
| 25×11<br>17; 52 | 1-3 | " | 1752 | लि. क. अमरदत्त<br>लि. स्था. ब्रम्हेसर |
| 18×13.5<br>11; 24 | 1-9 | " | 19 वीं श. | |
| 15×13<br>13; 16 | 139-149 | " | गु. 1888 | |
| 14×10<br>8; 16 | 14-31 | " | 19 वीं श. | |
| 21×14.5<br>13; 25 | 101-108 | " | 1908 | र. का. 'नभ गज गज शशि' =1880 |
| 26.5×11<br>13; 36 | 1-18 | अपूर्ण | 17 वीं श. | र. का. 1591 पाटण<br>पत्राङ्क 11, 14, 15 वां अप्राप्त |
| 24.5×11<br>13; 46 | 1-18 | पूर्ण | " | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (4) रास-चौ० | 14534 | शांतिनाथ विवाहलु | आनन्दप्रमोद शिष्य हर्षप्रमोद |
| 2173 | 14617 | शालिभद्रमहामुनि-चउपई (रास) | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि |
| 2174 | 14314 | " | " |
| 2175 | 14590 | " | " |
| 2176 | 14596 | " | " |
| 2177 | 14602 | " | " |
| 2178 | 14605 | " | " |
| 2179 | 12918 | " | " |
| 2180 | 12733 (2) | " | " |
| 2181 | 14618 | शील-रास | विजयदेव सूरि |
| 2182 | 14622 | " | " |
| 2183 | 14092 | श्रीचंदकेवली चरित्र रास (आनन्दमंदिर-रास) | ज्ञानविमल सूरि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26.5 × 11<br>13; 36 | 1–18 | अपूर्ण | 17 वीं श. | र. का. 1591 पाटण<br>पत्राङ्क 11, 14, 15 वां अप्राप्त |
| 25 × 11<br>15; 46 | 1–15 | पूर्ण | 18 वी श. | र. का. 1678 |
| 24.5 × 11<br>13; 36 | 1–18 | ,, | 1877 | लि. क. मुनि विद्याविजय<br>लि. स्था. सणवाड़ |
| 27 × 11<br>12; 37 | 1–25 | ,, | 1706 | लि. क. देवसी एवं नरपाल<br>लि. स्था. स्यालकोट |
| 25.5 × 11<br>13; 38 | 1–22 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. लक्ष्मीविजय गणि |
| 26.5 × 11<br>11; 56/44 | 1–20 | ,, | ,, | |
| 25 × 11.5<br>15; 38 | 1–19 | ,, | 1806 | लि. क. अमृतशेखर गणि<br>लि. स्था. सेरड़ी |
| 25.5 × 11<br>12; 36 | 1–28 | ,, | 1829 | लि. क. मोहनविजय<br>लि. स्था. पीपाड़नगर |
| 19.5 × 17.5<br>15; 18 | 70–107 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25.5 × 11<br>15; 36 | 1–8 | ,, | 1673 | |
| 25.5 × 11.5<br>13; 45 | 1–8 | ,, | 18 वीं. श. | लि. स्था. नवानगर |
| 26 × 11.5<br>20; 50 | 1–126 | अपूर्ण | 1831 | र. का. 1770 राधनपुर<br>लि. क. विमलविजय<br>पत्राङ्क 3, 4; 6 ठा अप्राप्त |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (**4**) **रास-चौ०** | 14137 | श्रीपाल-रास | विनयविजय एवं यशोविजय |
| 2185 | 13916 | श्रीपाल-रास | विनयविजय एवं यशोविजय |
| 2186 | 14308 | " | " |
| 2187 | 14607 | " | ज्ञानसागर |
| 2188 | 14600 (6) | श्रेणिक-रास | सोमविमल |
| 2189 | 14499 | संवेगद्रुममंजरी | कुशलसंयम |
| 2190 | 14632 (6) | संवेगबावनी | विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय |
| 2191 | 12709 (4) | सदयवच्छ-सावलिंगारी चौपई | मुनि केशव (कीर्तिवर्द्धन) शिष्य दयारत्न |
| 2192 | 12717 (10) | " " | " |
| 2193 | 13771 (2) | " " सचित्र | " |
| 2194 | 15293 (57) | " " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5 × 12.5<br>15; 36 | 1-47 | पूर्ण | 1872 | र. का. 1738 राणेर<br>लि. क. मनरूपविजय गणि<br>लि. स्था. सुभटपुर (जोधपुर)<br>अंतिम दो पत्र खंडित |
| 24 × 12<br>13: 32 | 1-97 | पूर्ण | 1894 | लि. क. कुशलसुन्दर |
| 25 × 12<br>12; 26 | 1-107 | अपूर्ण | 1887 | लि. क. कमलसागर<br>लि. स्था. मुंबई बिंदर<br>पत्राङ्क 56 से सटिप्पण<br>पत्राङ्क 102 वां अप्राप्त |
| 25 × 11<br>13; 42 | 2-36 | ,, | 1732 | र. का. 1726<br>लि. क. सोमविजय<br>प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 25 × 12<br>18; 48 | 42-61 | पूर्ण | 1636 | र. का. 1603<br>लि. क. देवसुन्दर |
| 26 × 11<br>11; 42 | 1-7 | ,, | ,, | लिपि प्राचीन |
| 24 5 × 10.5<br>15; 40 | 23-24 | ,, | 1851 | अंत में शांतिविजय कृत 'जीवनी सज्झाय' है। |
| 23 × 13<br>13; 24 | 42-67 | ,, | 1761 | र. का. निधि मुनि रस शशि = 1679<br>लि. क लालरत्न गणि<br>लि. स्था. गुदगरी नगर |
| 21.5 × 14<br>10; 26 | 1-78 | ,, | 19 वीं श. | लि. क. उमेदराज<br>लि. स्था. खरवा नगर |
| 19 × 15<br>13; 24 | 61-94 | ,, | 1861 | चित्र संख्या-44<br>लि. क. हर्षसागर |
| 25.5 × 15.5<br>26; 43 | 200-212 | ,, | 17 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (4) रास-चौ० | 14530 | सार-सिखामणी-चउपई | सर्वागसुन्दर |
| 2196 | 14518 | सिद्धान्तोक्त विचार-रास | |
| 2197 | 14000 | सीता-राम प्रवन्ध | समयसुन्दर |
| 2198 | 13511 (22) | सीध-रासो | कविरूप |
| 2199 | 13778 (4) | सुदर्शनश्रेष्ठिना कवित | धर्मसिंह शिष्य |
| 2200 | 12732 (7) | " | कवि दीपो |
| 2201 | 14504 | सुदर्शनश्रेष्ठि-रास | संघविमल शिष्य मुनिसुन्दर |
| 2202 | 13987 | सुभद्रासती-चौपई | रघुपति पाठक |
| 2203 | 14263 | सुर-सुन्दरी-चौपई | नयसुन्दर |
| 2204 | 14624 | स्थूलिभद्र-इकवीसउ | लावण्यमय |
| 2205 | 14600 (7) | स्थूलिभद्र-फागु | मालदेव |
| 2206 | 12733 (1) | हंसराज-वच्छराज-चौपई | जिनोदय सूरि |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 26×10.5<br>15; 44 | 1–8 | पूर्ण | 17 वीं श. | र. का. 1548 |
| 26.5×11<br>22; 66 | 1–30 | " | 1630 | लि. क. गोपाल<br>लि. स्था. स्तम्भतीर्थ नगर |
| 26×12<br>21; 48 | 1–61 | अपूर्ण | 1932 | लि. क. गंभीरसागर<br>लि. स्था. कुचेरा नगर<br>पत्राङ्क 21 वां अप्राप्त |
| 17×12<br>11; 16 | 71–78 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. सेवग विरधीचंद<br>लि. स्था. कापड़ा<br>'जोगीदासरा मूंडा सूं सुंण उतारियो' |
| 32×25<br>27; 26 | 1–9 | " | 20 वीं श. | |
| 21×16<br>18; 34 | 87–96 | " | 19 वीं श. | लि. क. ज्ञानविजय गणि<br>जलसिक्त |
| 25.5×11<br>13; 48 | 1–9 | " | 17 वीं श. | र. का. 1501 |
| 26.5×13<br>13; 45 | 1–18 | " | 19 वीं श. | र. का. 1825 |
| 25×11<br>12; 44 | 1–23 | अपूर्ण | " | चित्र बनाने के लिए स्थान रिक्त हैं । |
| 25×11<br>13; 30 | 1–5 | पूर्ण | 18 वीं श. | अंत में 'स्थूलिभद्र-गीत, महावीर स्तवन तथा जीव शिक्षा गीत' है । |
| 25×12<br>18; 48 | 61–64 | " | 1636 | बीच-बीच में अक्षर उड़े हुए हैं । |
| 19.5×17.5<br>15; 20 | 2–68 | अपूर्ण | 1873 | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>प्रारम्भ के पांच पत्र<br>त्रुटित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| (22) 4 रास-चौ० | 14097 | हंसराज-वच्छराज-चौपई | जिनोदयसूरि |
| 2208 | 14269 | " " | " |
| 2209 | 14540 | हंसाउली | असाईत |
| 2210 | 14860 | हरिबल-रास | जीतविजय |
| 22 (5) कथा-चरित्र-गद्य | 14301 | कालिकाचार्य-कथा | |
| 2212 | 14654 | कुमारपाल-रास भाषा | ऋषभदास |
| 2213 | 14311 | चतुर्मासिक व्याख्यान | |
| 2214 | 14741 (24) | जंबूसर की कथा | |
| 2215 | 14068 (1) | " | |
| 2216 | 14351 (7) | " | |
| 2217 | 14896 (4) | जंबूसर को प्रसंग | |
| 2218 | 14298 | जंबूस्वामि-चरित्र | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×11<br>15; 34 | 1–29 | पूर्ण | 1849 | र. का. 1680<br>लि. क. अमरसागर; देलवाड़ा संवत् 1811 की प्रति से प्रतिलिपित |
| 25.5×10.5<br>16; 40 | 1–32 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 30 वां खंडित |
| 26.5×10.5<br>17; 56 | 1–10 | ,, | 17 वीं श. | लि. क. मोहणदे |
| 25.5×12<br>19; 44 | 1–20 | ,, | 1904 | र. का. 1702; 'भुज संयम' 'वर्षे'<br>लि. क. ताराचंद; लि. स्था. पाटोदी |
| 25×12.5<br>12; 32 | 1–23 | ,, | 20 वीं श | |
| 25×11<br>19; 44 | 1–120 | अपूर्ण | 18 वीं श. | भाषा र. का. 1670<br>त्रंबावती, खंभात |
| 25×10.5<br>13; 44 | 1–18 | पूर्ण | 1877 | लि. क. भींवसुन्दर<br>लि. स्था. फलवर्द्धिका |
| 13.5×10.5<br>11; 20 | 480–487 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14<br>18; 25 | 1–2 | अपूर्ण | ,, | जीर्ण एवं त्रुटित |
| 14.5×11<br>10; 16 | 56-61 | पूर्ण | ,, | |
| 16×11<br>11; 20 | 133–141 | ,, | 1845 | पत्राङ्क 141–146 पर सुभाषित एवं कबीर, दादू आदि के पद हैं। |
| 26.5×11.5<br>15; 40 | 1–11 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (5) स्तवन-चरित्र-गद्य** | 14793 | जिनदासश्रेष्ठि-कथा | |
| 2220 | 13958 (15) | बारहव्रत-कथा | |
| **22 (6) स्तुति-सज्झाय** | 14332 (7) | अंतरीकपार्श्वनाथ-छन्द | भावविजय |
| 2222 | 14632 (3) | ,, | ,, |
| 2223 | 13828 (25) | अजितशांति-स्तवन | मेरुनन्दन |
| 2224 | 14641 (7) | अध्यात्म धमाल;नेमिनाथ-भास | वनारसीदास; रूपविजय |
| 2225 | 13958 (2) | अनन्तजिन-स्तवन | विजयदेव सूरि |
| 2226 | 14338 (7) | अनाथि-मुनि-सज्झाय; अरहनक-सज्झाय | कनकविजय; समयसुन्दर |
| 2227 | 14358 (5) | अरणक-स्वाध्याय | कीर्तिसूरि |
| 2228 | 14641 (9) | अर्बुदाचल चैत्योत्पत्ति तथा गीतादि-संग्रह | लघुदामा, समयसुन्दर, भुवनकीर्ति |
| 2229 | 13761 (6) | अष्टभय-निवारण गौड़ी-पार्श्वनाथ-छन्द | धर्मसी (धर्मवर्द्धन) |
| 2230 | 14815 (1) | अष्टमी-स्तवन | कांतिविजय |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25×11<br>14; 42 | 1–73 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. भाणविजय गणि<br>लि. स्था. राधनपुर |
| 18×16<br>16; 24 | 1–10 | " | 1763 | लि. क. रूपचन्द्र<br>लि. स्था. अकबराबाद |
| 12×9.5<br>11; 13 | 38–47 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 48-49 पर ज्यौतिष विचार एवं औषधी संग्रह है। |
| 24.5×10.5<br>11; 35 | 13–17 | " | 1851 | पत्राङ्क 16-17 चिपके हुए<br>पत्राङ्क 17 पर रूपविजय कृत 'सनतकुमार सज्झाय' है। |
| 15.5×11<br>16; 25 | 91–92 | " | 18 वीं श. | पत्राङ्क 113-114 पर जिनवल्लभ कृत 'लघु स्तवन' संस्कृत में हैं। |
| 14×11.5<br>19; 19 | 41–43 | " | " | |
| 18×16<br>16; 24 | 32–34 | " | " | 'बाई हर्षां पठनार्थं' |
| 16×11<br>12; 24 | 20–23 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 24 के बाद प्राकृत भाषा की कृतियाँ हैं। |
| 15.5×13.5<br>12; 15 | 111–113 | " | " | पत्राङ्क 115–117 पर कातंत्रसूत्र है। |
| 14×11.5<br>16; 18 | 49–59 | " | 18 वीं श. | |
| 16×22.5<br>25; 20 | 27–28 | " | गु. 1855 | |
| 25 5×13.5<br>22; 52 | 1 | " | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14427 (7) | अष्टापदजीरो-स्तवन | जसवंतसागरशिष्य |
| 2232 | 12733 (6) | " | " |
| 2233 | 14714 (4) | अहिल्या-स्तुति | |
| 2234 | 13825 (24) | आगम-सज्झाय | नयकीर्ति वाचक |
| 2235 | 14416 (1) | आतमबत्तीसी (उपदेस बत्तीसी) | जिनराज |
| 2236 | 14600 (1) | आदिदेव-स्तवन | धर्मसमुद्र |
| 2237 | 13828 (43) | आदिनाथ कलश | |
| 2238 | 13958 (3) | आदिनाथ-स्तवन | समरचन्द सूरि |
| 2239 | 13825 (19) | " | |
| 2240 | 14914 (26) | " | जिनहर्ष |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 23.5×16<br>19; 11 | 43 वां | पूर्ण | 1909 | लि.क. महर्षि मलूकचन्द नागोरी, लु का<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 19.5×17.5<br>17; 22 | 44 वां | " | 19 वीं श. | |
| 10.5×8<br>7; 12 | 81–90 | " | 1945 | लि. क. गुमानमल सिंघ्वी<br>लि. स्था. जोधपुर |
| 24.5×16<br>25; 36 | 254 वां | " | गु. 1584 | पत्राङ्क 226–228 पर 'स्वरोदय' तथा<br>पत्राङ्क 247–253 पर'चउवीस दण्डक-विचार' है। |
| 12×11.5<br>11; 11 | 1–6 | " | 1819 | लि. क. अमृतउदय |
| 25×12<br>13; 48 | 4 था | " | 1636 | लि. क. देवसुन्दर पाठक<br>लि. स्था. विक्रमपुर<br>पत्राङ्क 3 पर प्रहेलिकाएं<br>पत्राङ्क 6-7 पर अरिष्टाध्याय भाषा<br>पत्राङ्क 8–13 पर लघुचाणक्य संस्कृत में<br>पत्राङ्क 14वें पर 'वीसथानक-विधि' है। |
| 15.5×11<br>14; 26 | 10–13 | " | 18 वीं श. | प्राकृत में है। |
| 18×16<br>13; 27 | 34 वां | " | 18 वीं श. | |
| 24.5×16<br>21; 36 | 202 वां | " | 16 वीं श. | |
| 15.5×11<br>16; 26 | 144 वां | " | 18 वीं श. | र. का. 1745<br>पत्राङ्क 144 वां दो बार |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तुति-सज्झाय | 13828 (45) | आदिनाथ-स्तवन | |
| 2242 | 14463 (19) | आदिभवानी-छंद; क्षेत्रपालजीरो छन्द | |
| 2243 | 14422 (2) | आनन्दघन-बहोत्तरी | आनन्दघन |
| 2244 | 13958 (1) | आराधना मोटी (वृहत्) | पार्श्वचन्द सूरि |
| 2245 | 13826 (3) | आराधना | समयसुन्दर |
| 2246 | 13806 (24( | आलोयणा-छत्तीसी | " |
| 2247 | 14368 (7) | इग्यारस, अष्टमी, अनाथिमुनि-सज्झाय | उदयरत्न वाचक; वाचकदेव; समयसुन्दर |
| 2248 | 13806 (10) | इलापुत्र-सज्झाय | लब्धिविजय |
| 2249 | 13505 (5) | " | " |
| 2250 | 15293 (42) | ईश्वरी-गीत-पञ्चक | समधर |
| 2251 | 15293 (41) | ईश्वरी-छन्द-त्रय | लालकवि |
| 2252 | 14932 | उत्पत्ति-सज्झाय | श्रीसार शिष्य रत्नहर्ष |
| 2253 | 13496 (14) | ऋषभजिन-स्तवन | शिवसुन्दर शिष्य देवसुन्दर |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5 × 11<br>14; 26 | 114–115 | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 20 × 16.5<br>20; 21 | 219–220 | " | " | |
| 10 × 9.5<br>11; 14 | 6–8 | " | 19 वीं श. | |
| 18 × 16<br>15; 24 | 2–32 | अपूर्ण | 1702 | र. का. 1592<br>प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 18.5 × 15<br>16; 26 | 105–106 | पूर्ण | 17 वीं श. | |
| 14.5 × 13<br>16: 18 | 83–86;<br>86–88 | " | 19 वीं श. | र. का. 1698 अहमदपुर |
| 21 × 14 5<br>12; 25 | 74–78 | " | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलोदी |
| 14.5 × 13<br>18; 15 | 18 वां | " | 19 वीं श. | |
| 16 × 11.5<br>12; 18 | 9 वां | " | " | |
| 25.5 × 15.5<br>30; 40 | 110 वां | " | 17 वीं श. | |
| 25.5 × 15.5<br>26; 42 | 108–110 | " | " | |
| 24.5 × 11.5<br>14; 32 | 1–4 | " | 1837 | अंतिम पत्र त्रुटित |
| 15 × 14.5<br>16; 22 | 39–40 | " | | र. का. 1715 सांडेरागच्छ |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14914 (23) | ऋषभजिन-स्तवन | भाववर्द्धन शिष्य राजसिंह |
| 2255 | 13828 (54) | ,, ,, | रत्नचन्द मुनि |
| 2256 | 14914 (22) | ,, ,, | ज्ञानचन्द |
| 2257 | 14338 (4) | ऋषभजिन, महावीर, पार्श्वनाथ-स्तवन | सदानन्द पाठक, सभाचन्द, समयसुन्दर |
| 2258 | 13761 (9) | ऋषभदेवजीरो छन्द | धर्मसी |
| 2259 | 13761 (10) | ,, ,, | जिनलाभ सूरि |
| 2260 | 13496 (15) | ऋषभदेवजीरो स्तवन | |
| 2261 | 13496 (12) | ,, ,, | चतुरभुज |
| 2262 | 14052 (3) | औपदेशिक ढाल-पद-संग्रह | विनयचन्द शिष्य अनूपचंद |
| 2263 | 13806 (23) | कर्मछत्तीसी | समयसुन्दर |
| 2264 | 14416 (7) | ,, | |
| 2265 | 14427 (5) | कर्म-सज्झाय | ऋद्धिहर्ष |
| 2266 | 14950 (14) | ,, | ,, |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>11; 22 | 138 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 139 पर उदयराजकृत 'पार्श्व-नाथ स्तवन' है। |
| 15.5×11<br>9; 18 | 41–44 | ,, | ,, | लि. क. तिलककीर्ति |
| 15.5×11<br>15; 26 | 137 वां | ,, | ,, | र. का. 1744<br>अन्त में एक नीसानी छन्द है। |
| 16×11<br>12; 24 | 12–14 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×22.5<br>25; 20 | 30 वां | ,, | गु. 1855 | र. का. 1760 |
| 16×22.5<br>25; 20 | 30–31 | ,, | ,, | र. का. 1825 |
| 15×14.5<br>17; 22 | 40-41 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14.5<br>16; 20 | 36–37 | ,, | ,, | र. का. 1724 रिषभदेव (केसरियाजी) |
| 24×11<br>17; 46 | 4–93 | ,, | ,, | अंतिम दो पत्रों में गुटके की 44 कृतियों की सूची है। |
| 14.5×13<br>16; 18 | 80–84 | ,, | ,, | र. का. 1668 |
| 12×11.5<br>12; 12 | 35–39 | ,, | गु. 1819 | |
| 23.5×16<br>19; 11 | 40–41 | ,, | 20 वीं श. | |
| 15.5×11<br>12; 20 | 197–198 | ,, | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14342 (7) | कल्याणमंदिरस्तोत्र-भाषा | |
| 2268 | 14914 (33) | कापरहेडापार्श्वनाथ-स्तवन | जिनहर्ष |
| 2269 | 14641 (5) | काया-जीव-भास | जयसोम |
| 2270 | 14914 (58) | कृष्णजीरो सिलोको | |
| 2271 | 14600 (10) | कोसलऋषि-सज्झाय आदि | कवियण, देवसुन्दर |
| 2272 | 13806 (21) | क्षमाछत्तीसी | समयसुन्दर |
| 2273 | 14408 (6) | " | " |
| 2274 | 14368 (6) | क्षुलकाध्ययन-स्वाध्याय | वाचक उदय शिष्य त्रिजयसिंह |
| 2275 | 13828 (52) | गणधरसंख्या-स्तवन | जयसोम उपाध्याय |
| 2276 | 14463 (1) | गणपति-छन्द | हेमरत्न |
| 2277 | 13958 (16) | गाडलियापार्श्वजिन-स्तुति | पद्मचन्द्र सूरि |
| 2278 | 13806 (2) | गीत-संग्रह | *पुण्यकलश गणि, खेमकुशल, बनारसी |
| 2279 | 14914 (66) | गुरु-गीत | रामविजय शिष्य अमरसागर |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21 × 14 5<br>18: 16 | 58–59 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 61-62 पर 'चौवीस जिन स्तुति' है । |
| 15.5 × 11<br>15; 26 | 153 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 14 × 11.5<br>19; 19 | 30–31 | ,, | ,, | |
| 15.5 × 11<br>14; 24 | 213–215 | ,, | ,, | पत्राङ्क 226 पर महिमद पातसाहरो (जिनचंद) कवित्त है । |
| 25 × 12<br>16; 48 | 74–75 | ,, | गु. 1636 | |
| 14.5 × 13<br>16; 18 | 74–77 | ,, | 19 वीं श. | र. स्था. नागोर |
| 15 × 10<br>11; 15 | 70–74 | ,, | 1781 | लि. क. पंडित भाग्यविजय पत्राङ्क 77 पर भाग्यविजय कृत 'शांतिजिन स्तवन' है । |
| 21 × 14.5<br>12; 25 | 73-74 | ,, | 1908 | |
| 15.5 × 11<br>11: 24 | 32–34 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1657 |
| 20 × 16 5<br>19; 26 | 2–3 | ,, | ,, | इसके बाद संस्कृत में शनिश्चर छन्द है । |
| 18 × 16<br>15; 24 | 10–11 | ,, | ,, | र. स्था. मांडल ग्राम |
| 14.5 × 13<br>14; 14 | 64–74 | ,, | 19 वीं श. | *र. का. 1777 बीकानेर |
| 15.5 × 11<br>9; 28 | 258 वां | ,, | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14329 (4) | गौड़ीजीरो छन्द | |
| 2281 | 14914 (65) | गौड़ीजीरी विनती | |
| 2282 | 13496 (4) | गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवन | जिनराज |
| 2283 | 13496 (3) | " | जिनहर्ष |
| 2284 | 13761 (3) | " | सेवक रूप |
| 2285 | 13806 (12) | " | भुवनकीर्ति |
| 2286 | 13828 (40) | " | जिनराज |
| 2287 | 13828 (63) | " | |
| 2288 | 14338 (11) | " तथा नवकार गीत | " |
| 2289 | 14333 (2) | " " | प्रीतविमल |
| 2290 | 14338 (2) | गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवन<br>शत्रुञ्जयतीर्थ-स्तवन,<br>चिंतामणिपार्श्वनाथ-स्तवन | सदानन्द<br>नयविमल<br>समयसुन्दर |
| 2291 | 14339 (2) | गौडीपार्श्वनाथ–स्तवन | कनकविमल सूरि शिष्य उदयरत्न |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 18×13.5<br>11; 24 | 9–13 | पूर्ण | 19 वीं श. | तांत्रिक उपचार |
| 15.5×11<br>13; 26 | 256–257 | ,, | 18 वीं श. | प्रारम्भ में 'शत्रुञ्जयउद्धार' का अंतिमांश है। पत्राङ्क 231-255 अप्राप्त |
| 15×14.5<br>15; 20 | 30 वां | ,, | 19 वीं श. | अंत में 16 सतियों के नाम हैं। |
| 15×14.5<br>15; 20 | 29 वां | ,, | ,, | |
| 16×22.5<br>25; 18 | 11–16 | ,, | 1855 | लि क. चारित्र्योदय गणि<br>लि. स्था. पाटोदी |
| 14.5×13<br>18; 15 | 19–20 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>14; 26 | 7 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>12; 30 | 98 वां | ,, | ,, | र. का. 1722<br>पत्राङ्क 99 वां त्रुटित |
| 16×11<br>10; 18 | 111–115 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17.5×13.5<br>18; 16 | 12–16 | ,, | ,, | |
| 16×11<br>12; 24 | 7–10 | ,, | ,, | लि. क. वाचक सभाचन्द |
| 12×13 5<br>16; 22 | 5 वां | ,, | ,, | पत्राङ्क 6 पर आनन्द, रूपचन्द व गंगाराम कृत स्फुट-पद हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14543 (1) | गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवन | |
| 2293 | 14914 (4) | ” ” | कपूर शिष्य वाचक रतन |
| 2294 | 14914 (38) | ” ” | कुशललाभ |
| 2295 | 14914 (2) | ” ” | हर्षनन्दन |
| 2296 | 14914 (53) | ” ” | अभय |
| 2297 | 17717 (16) | ” ” | अमीचन्द शिष्य मेघकीर्ति |
| 2298 | 13806 (19) | गौतम-अष्टक | समयसुन्दर |
| 2299 | 14338 (15) | गौतम-स्तवन | ” |
| 2300 | 14358 | गौतमस्वामी-सज्झाय | लावण्यसमय |
| 2301 | 13825 (18) | चउदहगुणठाणा-सज्झाय | |
| 2302 | 14914 (30) | चउवीसतीर्थङ्कर-स्तवन | वाचक मूला (मूलचन्द) |
| 2303 | 13769 (26) | चउसठजोगिणी, वियोगिनी-स्तोत्र | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5×11<br>13; 34 | 1–3 | पूर्ण | 19 वीं श | लि. क. जयमूर्ति<br>अंत में वशीकरण मंत्र है। |
| 15.5×11<br>14; 24 | 42 वां | " | 18 वी श. | |
| 15.5×11<br>13; 24 | 159–161 | " | 1792 | |
| 15.5×11<br>15; 30 | 41 वां | " | 18 वीं श. | र. का. 1683 |
| 15.5×11<br>13; 22 | 204 वां | " | " | |
| 21.5×14<br>13; 27 | 121 वां | " | " | र. का. 1776<br>'संवत सतर सहोतरै' |
| 14.5×13<br>16; 15 | 63 वां | " | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>10; 18 | 145 वां | " | " | |
| 15.5×13.5<br>11; 15 | 136–137 | " | " | पत्राङ्क 139-140 पर शकुनविचार एवं पद्मावती सज्झाय' है। |
| 24.5×16<br>21; 36 | 201-202 | " | 16 वीं. श. | |
| 15.5×11<br>13; 24 | 147 वां | " | 18 वीं. श. | |
| 13.5×10.5<br>12; 16 | 136–138 | " | " | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (6) स्तवन-सज्झाय | 14400 (3) | चतुर्दश गुणस्थान स्तवन | मुनिधर्मसी (धर्मवर्द्धन) |
| 2305 | 14335 (3) | चतुर्विंशति जिनस्तवन | आनन्दविजय शिष्य कमलविजय |
| 2306 | 14357 (3) | ” ” | हरीसागर |
| 2307 | 14599 | ” ” | ज्ञानविमल सूरि |
| 2308 | 14326 | ” ” | आनन्दघन |
| 2309 | 14338 (13) | ” ” | जिनराज |
| 2310 | 15268 | ” ” | आनन्दघन |
| 2311 | 15293 (40) | चतु:षष्टि योगिनी-स्तोत्र | |
| 2312 | 14428 (9) | चारमंगल-स्तवन | जयमल |
| 2313 | 13828 (41) | चिंतामणि पार्श्वनाथ स्तवन | समयसुन्दर |
| 2314 | 13806 (13) | ” ” | ” |
| 2315 | 13806 (11) | चेलणा-सज्झाय | ” |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 22.5×18<br>19; 18 | 6-9 | पूर्ण | 20 वीं श | र. का. 1729 वहिड़मेरू |
| 15×11.5<br>16; 22 | 14-16 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×12.5<br>14; 18 | 1-6 | ,, | गु. 1911 | र. का. 1814 नाडुल<br>पत्राङ्क 44-45 पर गंग आदि के स्फुट-छन्द हैं। |
| 25×12<br>19; 38 | 1-5 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 4 था अप्राप्त |
| 24.5×11<br>11; 32 | 1-24 | ,, | 19 वीं श. | प्रथम व अंतिम पत्र क्षतिग्रस्त |
| 16×11<br>10; 18 | 118-138 | ,, | ,, | समयसुन्दर कृत 'जिनधर गीत' भी है। |
| 25.5×11<br>14; 38 | 1-10 | ,, | ,, | |
| 25.5×15.5<br>8; 42 | 108 वां | पूर्ण | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 17×17<br>13; 16 | 95-100 | ,, | 20 वीं श. | |
| 15.5×11<br>14; 26 | 8 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 14.5×13<br>18; 15 | 20 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 14.5×13<br>18; 15 | 18-19 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14914 (12) | चैत्य परिवाडि स्तवन | लावण्य शिष्य लक्ष्मीचन्द्र |
| 2317 | 14327 | चैत्यवंदन-स्तवन-संग्रह | सुधनहर्ष; विनयविजय; ऋषभदास; लब्धिविजय; मानविजय; भाँणविजय |
| 2318 | 14428 (10) | चौवीस जिन-वंदना | |
| 2319 | 14329 (1) | चौवीस जिन-स्तवन | जसविजय वाचक |
| 2320 | 14339 (6) | " " | जिनराज |
| 2321 | 14954 (1) | " " | देवचन्द्र |
| 2322 | 14914 (15) | " " | बोधवीज ? (विनयप्रभ) |
| 2323 | 13828 (18) | चौवीस तीर्थङ्कर गीत | जिनराज शिष्य जिनसिंह सूरि |
| 2324 | 13496 (1) | चौवीस तीर्थङ्कर रा पंचबोल स्तवन | जयसागर |
| 2325 | 13496 (6) | चौवीस तीर्थङ्कर की विनती | जिनराज , |
| 2326 | 15261 | चौवीस तोर्थङ्कर स्तवन-बालावबोध | मू. देवचन्द्र |
| 2327 | 14640 (2) | चौवीस तीथँङ्करांरी स्तुति | लालविनोद ? |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>14; 26 | 77–80 | अपूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1729<br>पत्राङ्क 78 अप्राप्त |
| 22.5×10.5<br>11; 22 | 1–18 | पूर्ण | ,, | |
| 17×17<br>13; 16 | 101–126 | ,, | 20 वीं श. | लिपि अशुद्ध |
| 18×13.5<br>11; 20 | 1–14 | ,, | ,, | |
| 12×13 5<br>15; 16 | 23–33 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्र शोभन |
| 21×11.5<br>18; 34 | 1–4;<br>7–8 | पूर्ण | 20 वीं श. | संस्कृत में है।<br>पत्राङ्क 6 पर ऋषि चोथमल की सज्झाय तथा 9 पर 'पंचभावना स्तवन' है। |
| 15.5×11<br>14; 22 | 96–97 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. मुनि धर्मराज<br>अंत में देश-देश को महिमा का पद है। |
| 15.5×11<br>11; 21 | 29–42 | ,, | 1755 | लि. क. परसा शिष्य कनकविलास<br>लि. स्था फलवर्द्धिका |
| 15×14.5<br>14; 20 | 24–26 | अपूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1492<br>पत्राङ्क 1-23 अप्राप्त |
| 15×14.5<br>15; 20 | 33 वां | पूर्ण | ,, | |
| 25×11.5<br>16; 48 | 1–10 | अपूर्ण | 20 वीं श. | संभवजिनस्तुति पर्यन्त। |
| 15.5×11<br>10; 14 | 34–36 | पूर्ण | 1801 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तुति-सज्झाय | 14339 (4) | चौवीसी | गोकुल |
| 2329 | 14914 (9) | " | जिनराज सूरि |
| 2330 | 14336 (9) | छावीस सती सज्झाय | भानो |
| 2331 | 14336 (11) | जंवूस्वामी सज्झाय; पंचमहाव्रत सज्झाय | सिद्धविजय; रत्नचन्द |
| 2332 | 13828 (23) | जन्माभिषेक पार्श्वनाथ-स्तवन | पुण्यसागर |
| 2333 | 13496 (13) | जयमाल | |
| 2334 | 14461 (4) | जसराज-वावनी | जसराज (जिनहर्ष) |
| 2335 | 13761 (11) | जिनकुशलसूरिगीत | हर्षहंसमुनि |
| 2336 | 13828 (21) | जिनगीत | यशोवर्द्धन |
| 2337 | 14338 (3) | जिनदत्तसूरिगीत | कमललाभ; मालदास; राजहर्ष |
| 2338 | 13958 (4) | जिन-प्रतिमा स्थापना सज्झाय | पार्श्वचन्दसूरि |
| 2339 | 13828 (53) | जिन-प्रतिमानी हुंडी | जिनरंग |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×13.5<br>15; 16 | 14–15 | अपूर्ण | 1848 | लि. क. पंडित ज्ञानचन्द<br>शोभन पत्र |
| 15.5×11<br>17; 36 | 70–75 | „ | 18 वीं श. | प्रथम 4 गीत अप्राप्त<br>लि. स्था. सोजत |
| 14×12.5<br>12; 15 | 118–123 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 117 पर 'गौतमस्वामी स्तवन' है। |
| 14×12.5<br>12; 15 | 114–116 | „ | „ | |
| 15.5×11<br>11; 24 | 82–85 | „ | 18 वीं श. | पत्राङ्क 79-80 अप्राप्त<br>पत्राङ्क 86-87 पर तीर्थङ्करों के बीच कालगत अन्तर का विवरण है। |
| 15×14.5<br>27; 22 | 39 वां | „ | 19 वीं श. | पत्राङ्क 38-39 पर स्फुट-पद हैं। |
| 22.5×13<br>40; 26 | 32–34 | „ | 1768 | र. का. 1738<br>पत्राङ्क 35-36 पर प्रश्नोत्तर एवं चित्र-काव्यबद्ध स्फुट कवित्तादि हैं। |
| 16×22.5<br>25; 20 | 32 वां | „ | 1855 | |
| 15.5×11<br>12; 22 | 61 वां | „ | 18 वीं श. | पत्राङ्क 64-67 पर खरतरगच्छ के श्रावकों का विवरण है। |
| 16×11<br>12; 24 | 10–11 | „ | „ | |
| 18×16<br>14; 34 | 34 वां | „ | „ | |
| 15.5×11<br>11; 24 | 34–35 | „ | „ | पत्राङ्क 36-39 अप्राप्त, 40 वें पर भूपति पुत्र हेमराज का जन्मलग्न है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** स्तुति-सज्झाय | 14339 (3) | जिनप्रतिमानी हुंडी | जिनहर्ष |
| 2341 | 14427 (3) | जिनरस (गुणजिनरस) | वैणीराम |
| 2342 | 13496 (2) | जिन-विनती | |
| 2343 | 13828 (48) | जिन-स्तवन | जिनचंदसूरि शिष्य ? |
| 2344 | 14358 (2) | " | आणंद शिष्य कमलसाधु |
| 2345 | 13830 (4) | जिन-स्तुति | दीपचंद |
| 2346 | 14321 (5) | जिन-स्तुतिरो कक्को | |
| 2347 | 14914 (13) | जीव-आत्म गीतं | सिद्धिविजय |
| 2348 | 14914 (37) | जीव-काया गीत | समयसुन्दर |
| 2349 | 13496 (8) | जीव-सज्झाय | |
| 2350 | 14338 (10) | ज्ञानपंचमी-वृहत्स्तवन | " |
| 2351 | 14368 (9) | ज्ञानपंचमी-स्तवन | मानसागर |
| 2352 | 14338 (1) | ज्ञानपंचवीसी | बनारसी |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×13.5<br>14; 15 | 7–13 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1725<br>अंत में परसराम कृत एक साखी है। |
| 23.5×16<br>19; 11 | 24–38 | " | 20 वीं श. | र.का.'निधिखंड समुद्र चंदवर्षे'=1769<br>र.स्था. पीपाड़,माधवसिंह कमधजराज्ये |
| 15×14.5<br>15; 20 | 27–28 | " | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>13; 24 | 19-20 | " | 18 वीं श. | |
| 15 5×13 5<br>10; 15 | 74–79 | " | 19 वीं श. | |
| 13×9.5<br>12; 14 | 19–21 | " | 1766 | लि. क. व्यास घासीराम |
| 21×14.5<br>16; 15 | 42–44 | " | 19 वीं श. | पत्राङ्क 41 पर 'पंचवधावो' है। |
| 15.5×11<br>14; 26 | 81-82 | " | 18 वीं श. | पत्राङ्क 80-81 पर कामिनी-कंत प्रश्नोत्तर के 10 पद्य हैं। |
| 15.5×11<br>13; 24 | 158–159 | " | " | |
| 15×14.5<br>20; 24 | 34 वां | " | 19 वीं श. | |
| 16×11<br>10; 18 | 106–111 | " | " | |
| 21×14.5<br>12; 25 | 88–90 | " | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलोदी |
| 16×11<br>12; 24 | 5–7 | " | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14079 (9) | तीर्थमाला-स्तवन | समयसुन्दर |
| 2354 | 15293 (4) | " | सिद्धसेनसूरि |
| 2355 | 15293 (5) | " (पूर्व देश संबंधी) | हंस शिष्य कमलधर्म |
| 2356 | 12733 (7) | " | ऋषि नरसिंघ (नृसिंह) |
| 2357 | 13806 (7) | " (तीर्थ स्तोत्र) | समयसुन्दर |
| 2358 | 15293 (33) | त्रिपुराभारती लघुस्तवन-सस्तबक | मू. लघ्वाचार्य |
| 2359 | 14345 (3) | दीवाली-सज्झाय; आत्मनिंदा-सज्झाय | ऋषि जयमल; ज्ञानसागर |
| 2360 | 14491 (2) | द्वादशभावना-सज्झाय | सकलचन्द |
| 2361 | 14428 (22) | धन्ना-अणगार-सज्झाय | |
| 2362 | 14914 (11) | " " | वाचक पुण्यसागर |
| 2363 | 14914 (43) | नंदिषेण-स्वाध्याय | लब्धिविजय |
| 2364 | 15293 (3) | नंदीश्वर-स्तवन | |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×13.5<br>11; 16 | 40-41 | पूर्ण | 1816 | पत्राङ्क 42-44 पर नीतिपरक दोहे तथा स्फुट ज्योतिष विचार है। |
| 25.5×15.5<br>25; 56 | 9 वां | ,, | 17 वीं श. | प्राकृत में है। |
| 25.5×15.5<br>39; 70 | 9-10 | ,, | ,, | जीर्ण-कीटविद्ध<br>र. का. 1565 |
| 19.5×17.5<br>15; 18 | 44-46 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1874 |
| 14.5×13<br>18; 15 | 15-16 | ,, | ,, | |
| 25.5×15.5<br>30; 40 | 93-94 | ,, | 17 वीं श. | मूल संस्कृत, स्तपक राजस्थानी |
| 16×12<br>12; 14 | 18-30 | ,, | 19 वीं श. | |
| 26×11<br>13; 48 | 7-11 | ,, | 1697 | अंत में इसी विषय का एक अपूर्ण पद्य है। |
| 17×17<br>13; 16 | 259-263 | अपूर्ण | 20 वीं श. | लिपि कामदारी एवं भ्रष्ट |
| 15.5×11<br>14; 24 | 76 वां | अपूर्ण | 18 वीं श. | र. का. 1726<br>प्रारम्भ के 4 पद्य अप्राप्त<br>पत्राङ्क 77 पर संस्कृत में 'माघ-भोज समस्या' है। |
| 15.5×11<br>12; 22 | 166-167 | पूर्ण | ,, | पत्राङ्क 168-183 अप्राप्त |
| 25.5×15.5<br>54; 50 | 8 वां | अपूर्ण | 17 वीं श. | जीर्ण-खंडित |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 13828 (24) | नंदीश्वर-स्तवन ( वृहद् ) | मुनि मेरु |
| 2366 | 13828 (36) | नमिउण-स्तोत्र | |
| 2367 | 13761 (7) | नवकार-छन्द | धर्मसी (धर्मवर्द्धन) |
| 2368 | 14335 (1) | नवकार-छन्द; सरस्वती-सज्झाय | कुशललाभ; सकलचंद |
| 2369 | 13828 (55) | नवकार-फल | |
| 2370 | 13828 (62) | नवकार-सज्झाय | गुणप्रभ सूरि |
| 2371 | 13825 (17) | " | |
| 2372 | 14914 (60) | नवकार-स्तवन (रास) | |
| 2373 | 14339 (12) | नवकार-स्तवन | |
| 2374 | 12733 (9) | " | जिनदास |
| 2375 | 14339 (5) | नववाड़ि-सज्झाय | जिनहर्ष |
| 2376 | 14422 (3) | " | " |
| 2377 | 14336 (10) | नाकोड़ापार्श्वनाथ-स्तवन | समयसुन्दर |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5 × 11<br>14; 22 | 87–90 | पूर्ण | 18 वीं श. | लि. क. ताराचन्द<br>अपभ्रंश मिश्रित प्राकृत में है। |
| 15.5 × 11<br>13; 21 | 114–115 | ,, | ,, | पत्राङ्क 116-117 खंडित |
| 16 × 22.5<br>25; 20 | 28–29 | ,, | गु. 1855 | |
| 15 × 11.5<br>10; 15 | 3–10 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रथम दो पत्र अप्राप्त |
| 15.5 × 11<br>10; 24 | 45–48 | पूर्ण | 1754 | लि. क. नेमिसुन्दर गणि |
| 15.5 × 11<br>12; 30 | 97–98 | ,, | गु. 1754 | |
| 24.5 × 16<br>21; 36 | 201 वां | ,, | 16 वीं श. | प्रारम्भ में 'जीव-दया सज्झाय' का अंतिमांश है। |
| 15.5 × 11<br>11; 20 | 220–223 | ,, | 18 वीं श. | |
| 12 × 13.5<br>23; 26 | 50–53 | ,, | गु. 1848 | लि. क. ज्ञानचन्द |
| 19.5 × 17.5<br>14; 18 | 48 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 12 × 13.5<br>15; 16 | 15–22 | ,, | 1848 | लि. क. ज्ञानचन्द<br>पत्र शोभन |
| 10 × 9.5<br>10; 13 | 1–3 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 176-183 अप्राप्त<br>अंत में 'सिद्धचक्र स्तवन' है। |
| 14 × 12.5<br>12; 15 | 113–114 | पूर्ण | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्भाय | 14815 (2) | नारीनी सिखामणी | |
| 2379 | 14914 (72) | नारी-सज्भाय | न्यांनसागर (ज्ञानसागर) |
| 2380 | 13497 (6) | नेमजी की लावणी | लवलीनरांम शिष्य रांमलोचन |
| 2381 | 13496 (2) | नेमजीरी-सज्भाय | जिनहर्ष |
| 2382 | 14521 | नेमि-छन्द | लावण्यसमय |
| 2383 | 12732 (8) | नेमिजिन-चौवीस-वोक | अमृतविजय |
| 2384 | 14914 (14) | नेमिनाथ-गीत | अमरसो |
| 2385 | 14424 (2) | नेमिनाथजीरी लावणी | जिनदास |
| 2386 | 13496 (7) | नेमिनाथजीरी सज्भाय | विश्वभूषण |
| 2387 | 14067 (8) | नेमिनाथजीरो सिरलोको | पुण्यसागर शिष्य |
| 2388 | 14432 (13) | नेमिनाथ-राजमती (राजुल) गीत एवं चोमासो | कविमोहन |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 25.5×13.5<br>22; 52 | 1–2 | पूर्ण | 20 वीं श. | |
| 15.5×11<br>13; 20 | 281–282 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 283 पर समयसुन्दर कृत 'पार्श्वनाथ स्तवन' तथा मीरां का पद एवं कमठासुरवध का अपूर्ण स्तवन है। पत्राङ्क 284–306 अप्राप्त |
| 17.5×13.5<br>9; 16 | 7–11 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14.5<br>15; 20 | 51 वां | ,, | ,, | |
| 26.5×10.5<br>13; 48 | 2–10 | अपूर्ण | ,, | र. का. 1546<br>प्रथम पत्र अप्राप्त<br>लि. क. रत्नमूर्ति<br>लि. स्था. स्तम्भतीर्थ |
| 21×16<br>19; 37 | 96–99 | पूर्ण | 1855 | लि. क. लक्ष्मीविजय<br>लि. स्था. नीतोड़ा ग्राम |
| 15.5×11<br>14; 56 | 95 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 13×10.5<br>7; 12 | 12–15;<br>18–19 | ,, | 20 वीं श. | पत्राङ्क 16-17 पर 'सामाइक लेवणरी पाटी' है। |
| 15×14.5<br>15; 26 | 33–34 | ,, | ,, | |
| 18×14.5<br>14; 20 | 1–5 | ,, | 18 वीं श. | |
| 12×9.5<br>11; 13 | 19–20 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** **स्तवन-सज्झाय** | 14914 (11) | नेमि-राजमती-गीत | रिद्धिहर्ष |
| 2390 | 14914 (54) | " | जिनहर्ष |
| 2391 | 14914 (24) | " | " |
| 2392 | 14914 (8) | " एवं सुमतिनाथ-गीत | सकलचंद, जिनराज |
| 2393 | 14914 (76) | " | उदैहर्ष |
| 2394 | 14914 (36) | " | हितविजय |
| 2395 | 14463 (21) | नेमि (राजुल) राजमती गीत आदि | डूंगर, संतजोगो, नारायण |
| 2396 | 14345 (4) | नेमि-राजमतीरी ढाल | आसकरण |
| 2397 | 13505 (9) | नेमि-राजमती-सज्झाय | नगजी |
| 2398 | 13828 (14) | नेमि-राजमती-स्तवन | जिनहर्ष |
| 2399 | 14386 (3) | " " | कांतिविजय |
| 2400 | 14914 (35) | " " | धरमसी (धर्मवर्द्धन) |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>14; 24 | 76 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>13: 22 | 205 वां | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>12; 22 | 139–141 | ,, | ,, | र. का. 1726<br>लि. स्था. खेरवा<br>अंत में इन्हीं की बारामासी है। |
| 15.5×11<br>15; 27 | 68 वां | ,, | ,, | पत्राङ्क 46-67, 69 अप्राप्त |
| 15.5×11<br>15; 27 | 312–313 | अपूर्ण | ,, | 'पार्श्वनाथ-स्तवन' भी अपूर्ण है। |
| 15.5×11<br>11; 19 | 157–158 | पूर्ण | ,, | |
| 20×16 5<br>23; 22 | 223–225 | ,, | 1765 | पत्राङ्क 225 पर खिडिया जगा के कवित्त हैं। |
| 16×12<br>12; 14 | 30-41 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1839 कुचेरा |
| 16×11.5<br>12; 18 | 16 वां | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>11; 21 | 28 वां | ,, | ,, | |
| 17×12 5<br>10; 16 | 26–27 | ,, | गु. 1864 | लि. क. नायकविजय<br>अंत में 'सूरजदेवरो श्लोक' अपूर्ण है। |
| 15.5×11<br>12; 26 | 156–157 | ,, | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14914 (57) | नेमि-राजमती-स्तवन | ऋद्धिहर्ष |
| 2402 | 15253 (2) | नोकारसार-स्तवन | कुशललाभ वाचक |
| 2403 | 13496 (17) | पंचजिन-स्तवन | लावण्यसमय |
| 2404 | 14342 (13) | पंच-मंगल | रूपचन्द |
| 2405 | 13825 (25) | पंचासमुखपोतका पडिलेहण विचार-सज्झाय | सोमदेवसूरि |
| 2406 | 14914 (48) | पद्मप्रभु-गीत | धरमसी (धर्मवर्द्धन) |
| 2407 | 14941 (19) | पद्मप्रभु-स्तवन | " |
| 2408 | 14357 (2) | पनरेतिथि-सज्झाय; पखवाड़ारीसज्झाय एवं पद-संग्रह | रंगविजय शिष्य कृष्णविजय; केसर विजय; बनारसी, रूपचंद |
| 2409 | 13499 (2) | परमज्योति (कल्याणमंदिर-स्तोत्र भाषा) | बनारसी |
| 2410 | 13828 (47) | पार्श्वजिन-स्तवन | विनयलाभ |
| 2411 | 13761 (4) | पार्श्वनाथजीरो देशांतरी छंद | कुशललाभ |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>12; 20 | 209–212 | पूर्ण | 18 वीं श. | अंत में कनकभाण कृत 'सीमंधर-स्तवन' है। |
| 24×11<br>13; 34 | 5–6 | „ | 19 वीं श. | |
| 15×14.5<br>31; 26 | 43 वां | „ | „ | पत्राङ्क 44 पर 'नेमिकुमार' के स्फुट पद हैं। |
| 21×14.5<br>18; 16 | 96–102 | „ | „ | |
| 24.5×16<br>16; 40 | 254 वां | „ | 16 वीं श. | प्राकृत में है। |
| 15.5×11<br>13; 20 | 194–195 | „ | 18 वीं श. | पत्राङ्क 194-195 पर 'गुरु सज्झाय' तथा 12 चक्रवर्तियों के नाम एवं अंत में नित्यलाभ कृत 'उदयसागर गीत' है। |
| 15.5×11<br>13; 24 | 129 वां | „ | 1798 | लि. क. धर्मराज वाचक |
| 16×12.5<br>15; 22 | 34–38 | „ | गु. 1911 | पत्राङ्क 30-34 पर तिथिनिर्णय, अष्टोत्तरी दशा, विंशोत्तरी दशा आदि की विधि है; पत्राङ्क 39-44 पर गणित ज्योतिष पद्धति एवं शकुन-विचार है। |
| 15.5×10.5<br>8; 20 | 3–11 | „ | 1853 | पत्राङ्क 12-13 पर स्फुट दोहे हैं। |
| 15.5×11<br>12; 20 | 18–19 | „ | 18 वीं श. | पत्राङ्क 16-17 अप्राप्त |
| 16×22.5<br>25; 20 | 16–20 | „ | 1855 | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (6) स्तवन-सज्झाय | 13505 (1) | पार्श्वनाथजीरी नीसाणी | जिनहर्ष |
| 2413 | 13761 (8) | पार्श्वनाथजीरो पाड़गति छन्द | अभयसोम |
| 2414 | 14914 (61) | पार्श्वनाथजीरो फाग | ऋद्धिहर्ष |
| 2415 | 13828 (44) | पार्श्वनाथ लघु-स्तवन | समयसुन्दर |
| 2416 | 13499 (3) | पार्श्वनाथजीरो सिलोको | |
| 2417 | 13496 (9) | पार्श्वनाथ-स्तवन | |
| 2418 | 13828 (49) | " " | कनकविलास |
| 2419 | 13828 (10) | " " | कमललाभ |
| 2420 | 13806 (22) | पुण्य-छत्तीसी | समयसुन्दर |
| 2421 | 13921 | पुण्यप्रकाश-स्तवन | विनयविजय शिष्य कीर्तिविजय-सूरि |
| 2422 | 14641 (4) | " " | " |
| 2423 | 14428 (2) | पुण्य-स्तवन | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16×11.5<br>7; 18 | 12–18 | अपूर्ण | गु. 1869 | लि. क. कपूरविजय<br>लि. स्था. पीपाड़<br>पत्राङ्क 1-11 अप्राप्त |
| 16×22.5<br>25; 20 | 29 वां | पूर्ण | गु. 1855 | |
| 15.5×11<br>11; 20 | 224–226 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1730<br>'गगन भुवन भोजन समै' |
| 15.5×11<br>10; 22 | 113–114 | ,, | ,, | |
| 15.5×10.5<br>7; 16 | 14–15 | ,, | गु. 1853 | पत्राङ्क 16-17 पर 'दरबार आमेर को असवारी जोधपुर की, गिणती आगरा की, पातस्याही दिल्ली की' आदि कथन हैं। |
| 15×14.5<br>20; 24 | 34 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>10; 20 | 25 वां | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 20-24 अप्राप्त |
| 15.5×11<br>10; 20 | 25 वां | ,, | ,, | पत्राङ्क 26 पर संवत् 1821 का स्वरूपचन्द के पुत्र का जन्मलग्न है। |
| 14.5×13<br>16; 18 | 77–80 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1669 सिद्धपुर |
| 26.5×12<br>11; 30 | 1–6 | ,, | 1907 | लि. क. रूपचन्द गणि<br>लि. स्था. श्री दमणबंदर |
| 14×11.5<br>19; 19 | 24–30 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1719 रानेर |
| 17×17<br>13; 16 | 52–54 | ,, | 20 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 13761 (5) | फलवर्द्धिपार्श्वनाथ-स्तवन | कवि कान्ह |
| 2425 | 13828 (50) | " " | उदैहर्ष शिष्य |
| 2426 | 14339 (13) | बारहभावना-सज्झाय | जयसोम शिष्य प्रमोदमाणिक्य |
| 2427 | 13806 (17) | " " | " |
| 2428 | 14336 (7) | बाहुबलि-सज्झाय ग्रादि | समयसुन्दर, कानजी शिष्य कनक |
| 2429 | 14342 (4) | भक्तामरस्तोत्र-भाषा | हेमराज |
| 2430 | 15049 | " " | " |
| 2431 | 13505 (6) | भमरारी-सज्झाय | |
| 2432 | 14052 (2) | भरत-बाहुबलि संग्राम (भरतजीरो करखो) | कुशल |
| 2433 | 14914 (59) | भीनमालपार्श्वनाथ-स्तवन | पुण्यकमल शिष्य सुमति |
| 2434 | 13505 (2) | मंगल गीत | ऋषि जैमल |
| 2435 | 13958 (10) | " | रूपचन्द |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16×22.5<br>25; 20 | 20–26 | पूर्ण | 1855 | लि. क. चारित्र्योदय गणि<br>लि. स्था. पाटोदी |
| 15.5×11<br>11; 20 | 25–26 | ,, | 18 वीं श. | |
| 12×13 5<br>16; 15 | 53–58 | ,, | गु. 1838 | र. का. 1676 बीकानेर<br>'रस वारिधि रस शशि वर्षे' |
| 14.5×13<br>15; 15 | 45–52 | ,, | 19 वीं श. | |
| 14×12.5<br>17; 15 | 111–113 | ,, | ,, | |
| 21×14.5<br>16; 15 | 33–39 | ,, | ,, | पत्राङ्क 39-40 पर विनती, लावणी आदि स्फुट कृतियाँ हैं। |
| 25×12.5<br>15; 40 | 1–3 | ,, | ,, | |
| 16×11.5<br>12; 18 | 10 वां | ,, | ,, | |
| 24×11<br>17; 46 | 3–4 | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>11; 20 | 215–219 | ,, | 1784 | लि. क. धर्मराज<br>लि. स्था. नाडूल |
| 16×11.5<br>10, 16 | 18–23 | ,, | गु. 1869 | लि. क. नथविजय<br>चार 'मंगल' हैं। |
| 18×16<br>17; 28 | 51–55 | ,, | 18 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14336 (6) | मल्लिजिन-इग्यारस-स्तवन | पार्श्वचन्द |
| 2437 | 13496 (22) | महामुनि-सज्झाय | राजसमुद्र |
| 2438 | 13828 (34) | महावीर-कलश | |
| 2439 | 14346 (7) | महावीरजीरो पारणो तथा नवकार-स्तवन | कुशललाभ वाचक |
| 2440 | 13828 (42) | महावीर-बोली | जिनेश्वर सूरि |
| 2441 | 13505 (4) | महावीरस्वामी-स्तवन | समयसुन्दर |
| 2442 | 13496 (5) | " | " |
| 2443 | 14400 (6) | " | " |
| 2444 | 14953 | " ( निगोद विचार गर्भित ) | ज्ञानसागर |
| 2445 | 15293 (7) | महावीर वृहत्-स्तवन | सोमविमल शिष्य सोभाग्यहर्ष सूरि |
| 2446 | 14427 (4) | " " | समयसुन्दर |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14 × 12.5<br>14; 13 | 99–104 | पूर्ण | 19 वीं श | पत्राङ्क 104-105 पर 'पचखाण सज्झाय' 106-109 पर संस्कृत के सुभाषित तथा 109-110 पर भूषण आदि के कवित्त सवैये हैं । |
| 15 × 14.5<br>18; 20 | 52 वां | ,, | ,, | |
| 15.5 × 11<br>11; 20 | 110–111 | ,, | 1730 | प्राकृत में हैं ।<br>लि.क. तिलक विमल, लि.स्था. फलोधी पत्राङ्क 111 पर संस्कृत में 'लघुस्नात्र विधि' है । |
| 15 × 13<br>13; 16 | 156–161 | ,, | 1898 | लि. क. उदयरत्न मुनि<br>लि. स्था. बीकानेर<br>पत्राङ्क 161-162 पर 'वासक्षेप पूजा' है । |
| 15.5 × 11<br>14; 26 | 9–10 | ,, | 18 वीं श. | |
| 16 × 11.5<br>12; 18 | 6–8 | ,, | 19 वीं श. | र. स्था. जेसलमेर |
| 15 × 14.5<br>15; 20 | 31–32 | ,, | ,, | |
| 22.5 × 11<br>18; 18 | 28–29 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26 × 12<br>17; 42/35 | 1–7 | ,, | 19 वीं श. | सअर्थ ; त्रिपाठ |
| 25.5 × 15.5<br>39; 55 | 10–11 | ,, | 17 वीं. श. | जीर्ण-कीटविद्ध |
| 23.5 × 16<br>19; 11 | 38–40 | ,, | 20 वीं. श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (6) स्तवन-सज्झाय | 13806 (2) | महावीर-स्तोत्र | उदयरत्न |
| 2448 | 13806 (6) | " | समयसुन्दर |
| 2449 | 15293 (58) | मातृकाबावनी छन्द | सारंग |
| 2450 | 14338 (14) | मुनिमालिका | चारित्र्यसिंह शिष्य मतिभद्र |
| 2451 | 14400 (1) | " | " |
| 2452 | 13505 (8) | मेघकुमार-सज्झाय | कुशलमुनि |
| 2453 | 14914 (73) | " " | पूनो |
| 2454 | 14466 | मेणरेहाजीनी सज्झाय | हीरसेवक |
| 2455 | 14914 (29) | मेरुतुङ्गसूरि-सज्झाय | कवियण (धर्ममूर्तिसूरि) |
| 2456 | 14432 (6) | मौन-एकादशी-तिथि-स्तवन | कांतिविजय |
| 2457 | 14036 | यति-धर्माधिकार-सज्झाय | सुखसागर शिष्य ज्ञानविमल सूरि |
| 2458 | 15272 | " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14.5×13<br>13; 12 | 33–34 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 1-32 पर<br>'जीवविचार प्रकरण' सटबार्थ है। |
| 14.5×13<br>18; 15 | 13–15 | ,, | ,, | |
| 25.5×15.5<br>19; 44 | 212 वां | अपूर्ण | 17 वीं श. | |
| 16×11<br>10; 18 | 138–145 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1636 रिणिपुर |
| 22.5×18<br>19; 22 | 2–4 | अपूर्ण | 20 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त |
| 16×11.5<br>12; 18 | 13–15 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. स्था. सोजत<br>कर्त्ता–लुङ्का गच्छी है। |
| 15.5×11<br>13; 24 | 307–309 | ,, | 18 वीं श. | अंत में एक पद जिनहर्ष कृत तथा<br>'हनुमान' पर कवित्त है। |
| 26×13<br>13; 30 | 1–10 | ,, | 20 वीं श. | र. का. संवत चोहोत्तरा मां ? केकड़ी<br>लि. क. सूरजमल, लि. स्था. फलोदी |
| 15.5×11<br>13; 24 | 145–147 | ,, | 18 वीं श. | र. स्था. खंभनयर (खंभात)<br>कर्त्ता– अंचलगच्छी |
| 12×9.5<br>11; 13 | 31–36 | ,, | 19 वीं श. | र. का. 1769<br>पत्राङ्क 37-38 पर 'नेम-राजुल गीत'<br>है। |
| 24.5×12<br>12; 28 | 1–14 | ,, | 19 वीं श. | र. स्था. सूरत<br>कर्त्ता–तपागच्छी |
| 25.5×11.5<br>12; 34 | 1–9 | ,, | 20 वीं श | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** स्तवन-सज्झाय | 13828 (57) | राणकपुर-स्तवन | समयसुन्दर |
| 2460 | 14332 (5) | रात्री-भोजनरी लावणी | |
| 2461 | 13828 (52) | रायजादा-स्तवन (शत्रुञ्जयगिरि स्तवन) | जगरूप |
| 2462 | 14600 (8) | रूपक-माला | पार्श्वचन्द |
| 2463 | 13505 (7) | ववन-सज्झाय | लब्धिविजय |
| 2464 | 13496 (11) | वरकाणापार्श्वनाथ-स्तवन | अनूपसागर शिष्य ? |
| 2465 | 13496 (10) | " " | जिनहर्ष |
| 2466 | 14914 (56)1-2 | " " | गुणशेखर; *रत्नसिंह |
| 2467 | 15293 (55) | वसुधारा-स्तोत्र | |
| 2468 | 14914 (25) | वाचक धनाजीरो कवित्त | भोजग जीवण |
| 2469 | 14422 (8) | वासपूज्यजीरो-स्तवन; पार्श्वनाथ-स्तवन | उदयसागर समयसुन्दर |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>11; 24 | 51–52 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1672<br>पत्राङ्क 93 पर 'वरकाणापार्श्वनाथ-स्तवन' है। |
| 15×15.5<br>19; 22 | 18–19 | ,, | गु. 1939 | 'साधु श्री रूपचंदजी मुखात्'<br>पत्राङ्क 20 पर आनन्दघन आदि के पद हैं। |
| 15.5×11<br>11; 21 | 26–27 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25×12<br>18; 48 | 64 वां | ,, | गु. 1636 | र. का. 1586 |
| 16×11.5<br>12; 18 | 11–12 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14.5<br>16; 20 | 36 वां | ,, | ,, | |
| 15×14.5<br>20; 24 | 35 वां | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>13; 20 | 208–209 | ,, | 18 वीं श. | लि. क. धर्मराज<br>र. का. * 1775 |
| 25.5×15.5<br>22; 40 | 196–198 | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत में है। |
| 15.5×11<br>11; 20 | 142–143 | ,, | 1784 | लि. स्था. खेरवा<br>पत्राङ्क 143 पर ही मेवाड़ के बदनोर के गुरु अमरसागर की स्तुति तथा अन्य ज्ञातव्य हैं। |
| 10×9.5<br>10; 12 | 93–96 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 13499 (4) | विनती | |
| 2471 | 13828 (56) | विमलनाथ-गीत | दयारंग मुनि |
| 2472 | 13828 (8) | विहरमान-स्तुति | |
| 2473 | 15293 (11) | विहरमान-स्तुति एवं पार्श्वनाथ-गीत | जिनमाणिक्य शिष्य |
| 2474 | 13828 (15) | वीर-स्तवन | लब्धिवल्लभ शिष्य लक्ष्मीकीर्ति |
| 2475 | 14914 (31) | वीसविहरमान-स्तुति | उदयराज |
| 2476 | 13806 (9) | वैराग्य गीत | समयसुन्दर |
| 2477 | 15293 (23) | शक्रस्तवाम्नाय, भक्तामर एवं जयतिहुअण की भंडारस्थ गाथाएं | |
| 2478 | 12733 (8) | शत्रुञ्जयउद्धार-स्तवन | |
| 2479 | 14914 (46) | शत्रुञ्जयऋषभदेव-स्तुति | समयसुन्दर |
| 2480 | 15293 (8) | शत्रुञ्जयकल्प स्तवन | |
| 2481 | 13828 (13) | शत्रुञ्जयगिरि-स्तवन | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×10.5<br>10; 24 | 17–18 | पूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 18 पर<br>'नेमिनाथ पद' अपूर्ण है। |
| 15.5×11<br>11; 22 | 48–49 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 49-50 पर ग्रन्थ के स्वामी<br>'भूपति' का वंशवृक्ष है। |
| 15.5×11<br>9; 24 | 23 वां | ,, | ,, | |
| 25.5×15.5<br>23; 50 | 14 वां | ,, | 17 वीं श. | |
| 15.5×11<br>13; 22 | 12–14 | अपूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 1-11 अप्राप्त,<br>12 वां खंडित 13 वें का अंशमात्र प्राप्त |
| 15.5×11<br>13; 24 | 147–148 | पूर्ण | ,, | कर्त्ता–अंचलगच्छी<br>पत्राङ्क 149 पर 'पार्श्वनाथ-स्तवन'<br>अपूर्ण है। |
| 14.5×13<br>18; 15 | 17–18 | ,, | 19 वीं श. | |
| 25.5×15.5<br>30; 50 | 42 वां | ,, | 17 वीं श. | संस्कृत राजस्थानी में |
| 15.5×17.5<br>14; 18 | 47 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>12; 20 | 185–188 | ,, | 18 वी श. | |
| 25.5×15.5<br>31; 55 | 11–12 | ,, | 17 वीं श. | |
| 15.5×11<br>11; 21 | 27–28 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 13828 (28) | शत्रुञ्जयतीर्थ-स्तवन | जिनभक्ति सूरि |
| 2483 | 15293 (6) | " मंडन आदिनाथ स्तवन | जिनहेम शिष्य हेमहंस सूरि |
| 2484 | 14508 | " " | |
| 2485 | 15293 (9) | शत्रुञ्जय-स्तवन | |
| 2486 | 14494 | " सबालावबोध | |
| 2487 | 14914 (74-75) | " | पद्मराज शिष्य पुण्यसागर मोहनविजय शिष्य रूपविजय |
| 2488 | 14352 (2) | " | कवियण |
| 2489 | 14357 (12) | " स्यादवाद-स्तवन, पद एवं हीयाली | समयसुन्दर, श्रीसार, जसविजय |
| 2490 | 14335 (5) | शनिछन्द, गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवनादि | ऋषभविजय |
| 2491 | 14332 (1) | शांतिकर-स्तवन | लब्धिसुन्दर शिष्य सोमसुन्दर |
| 2492 | 14339 (9) | शांतिजिनादि-स्तवन | हर्षधर्म, जिनचंदसूरि, लब्धोदय, रूपचंद |
| 2493 | 14432 (2) | " | मोहन, नारायण |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5 × 11<br>13; 20 | 100–101 | पूर्ण | 19 वीं श. | र. का. 1871 |
| 25.5 × 15.5<br>13; 55 | 10 वां | अपूर्ण | 17 वीं श. | |
| 26 × 11<br>15; 42 | 10 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | लि. स्था. मंडपगढ़ |
| 25.5 × 15.5<br>33; 58 | 12 वां | ,, | 17 वीं श. | जीर्ण; संस्कृत में है। |
| 26 × 11<br>19; 62 | 1–6 | ,, | ,, | बालावबोध राजस्थानी में है। |
| 15.5 × 11<br>14; 24 | 309–310 | ,, | 1776 | लि. क. धर्मराज<br>लि. स्था. गुदवच नगर<br>पत्राङ्क 311-312 पर दादूदयाल की साखी तथा धरावंध कवित्तादि हैं। |
| 15 × 11.5<br>14; 21 | 10–13 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16 × 12 5<br>14; 18 | 63–72 | ,, | 1911 | पत्राङ्क 63 पर 'ढूंढाड़ी' भाषा का नमूना है। |
| 15 × 11.5<br>10; 18 | 29–34 | ,, | 1860 | |
| 15 × 15.5<br>19; 22 | 2–3 | ,, | 19 वीं श. | प्रारम्भ में संस्कृत में 'लघु शांति' है। |
| 12 × 13.5<br>14; 18 | 6–16;<br>20 वां | ,, | ,, | |
| 12 × 9.5<br>11; 13 | 14–19 | ,, | ,, | ऋषभनाथ व गौडीपार्श्वनाथ के स्तवन भी हैं। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** स्तवन-सज्भाय | 14914 (70) | शांतिनाथ-गीत | जिनरंगसूरि |
| 2495 | 14914 (40) | " , गौड़ीपार्श्वनाथ-स्तवन तथा नेमराजमती गीत | कनककीर्ति शिष्य जयमंदिर, साधुहर्ष, जिनहर्ष |
| 2496 | 15253 (3) | शांतिनाथजीनो-छन्द | गुणसूरि शिष्य पद्मसूरि |
| 2497 | 13828 (30) | शांतिनाथ-बोली; नेमिनाथ-बोली | |
| 2498 | 13828 (11) | शांतिनाथ-स्तवन | समयसुन्दर |
| 2499 | 13828 (19) | " | जयसोम |
| 2500 | 13828 (51) | शांतिनाथ-स्तवन (पुद्गल-विचार-गर्भित) | धर्मरत्न |
| 2501 | 14404 (6) | शांतिनाथ-स्तवन | ऋषि रेखचन्द |
| 2502 | 13806 (3) | शुक्लपंचमी तप-फल-स्तोत्र | समयसुन्दर |
| 2503 | 14427 (2) | श्रावकनी करणी-सज्भाय | जिनहर्ष |
| 2504 | 14338 (12) | " " | " |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>23; 28 | 276 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | पत्राङ्क 277 पर 'चहुआण कवित्त' हैं जिनमें संवत 1039 की परीस्थितियों की झलक है। |
| 15.5×11<br>12; 22 | 164–166 | ,, | ,, | लि. क. धर्मदास<br>पत्राङ्क 163 वां अप्राप्त |
| 24×11<br>13; 34 | 6–7 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15.5×11<br>16; 28 | 102–103 | ,, | 18 वीं श. | पत्राङ्क 104-105 पर प्राकृत में 'धूमावली' है। |
| 15.5×11<br>11; 21 | 26 वां | ,, | 1835 | लि. क. फतैचन्द उदैचन्दोत<br>लि. स्था. फलोदी |
| 15.5×11<br>12; 12 | 42–43 | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>11; 24 | 30–32 | ,, | ,, | पत्राङ्क 29 पर 'पचखाण विधि' है। |
| 15×11<br>11; 14 | 198–200 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1894<br>लि. क. हीरालाल<br>पत्राङ्क 200-202 पर रामचन्द्र कृत 'लावणी' तथा 202-205 पर औषधी संग्रहादि है। |
| 14.5×13<br>18; 15 | 11–13 | ,, | 19 वीं श. | |
| 23.5×16<br>19; 11 | 23–24 | अपूर्ण | 20 वीं श. | पत्राङ्क 1-22 पर संस्कृतमें 'चाणक्यनीति' सभाषा टिप्पण है। |
| 16×11<br>10; 18 | 115–118 | पूर्ण | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** **स्तवन-सज्झाय** | 14346 (8) | श्रावकनी करणी-सज्झाय | जिनहर्ष |
| 2506 | 13505 (3) | " " | " |
| 2507 | 13761 (2) | श्रीसंवर-सज्झाय | कमलकलश सूरि शिष्य |
| 2508 | 13958 (19) | षट्-स्वाध्याय आदि | उदयविजय वाचक शिष्य विजयसिंह |
| 2509 | 14914 (28) | संखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन | देवविजय |
| 2510 | 14358 (1) | " " ; गौड़ी पार्श्वनाथ-स्तवन, पंचमी स्तवनादि | ऋद्धिहर्ष, भावसागर जिनराज, कानजी, देवसुन्दर शिष्य, उदय |
| 2511 | 13828 (9) | संखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन | जिनचन्द |
| 2512 | 14914 (39) | संयतीराय-स्तवन | सकलचन्द |
| 2513 | 15293 (15) | सत्तरिसय जिननाम ग्रहण-स्तवन | विशालसुन्दर शिष्य |
| 2514 | 14914 (5) | सनतकुमार-सज्झाय | हर्षकुशल गणि |
| 2515 | 13828 (37) | सप्त-स्मरण | जिनदत्तसूरि |
| 2516 | 15293 (2) | समवसरण-स्तवन | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×13<br>13; 16 | 163 वां | पूर्ण | गु. 1898 | पत्राङ्क 162-163 पर 'संखेश्वरपार्श्वनाथ-स्तवन' है । |
| 16×11.5<br>12; 18 | 1–6 | अपूर्ण | 19 वीं श. | पत्राङ्क 3-4 अप्राप्त |
| 16×22.5<br>25; 18 | 10–11 | पूर्ण | ,, | |
| 18×16<br>14; 20 | 19–20 | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>13; 24 | 144–145 | ,, | ,, | र. का. 1717 'संवत सतर सतरोत्तरै' |
| 15.5×13.5<br>9; 15 | 40–69 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 43-48 पर संस्कृत में 'लघुचाणक्य राजनीति' तथा 70-74 पर कमलकलशसूरि शिष्य कृत 'वंभणवाड़ी-स्तवन' है । |
| 15.5×11<br>10; 20 | 23–24 | ,, | ,, | गुटके के प्रारम्भ के 7 पत्र अप्राप्त; पत्राङ्क 8-22 पर प्राकृत एवं अपभ्रंश की लघु कृतियाँ हैं । |
| 15.5×11<br>12; 20 | 161–162 | ,, | 18 वीं श. | |
| 25.5×15.5<br>23; 42 | 21–22 | ,, | 17 वीं श. | |
| 15.5×11<br>15; 27 | 43 वां | ,, | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>17; 30 | 118 वां | अपूर्ण | 1731 | प्राकृत में है । पत्राङ्क 116-117 अप्राप्त |
| 25.5×15.5<br>26; 70 | 8 वां | ,, | 17 वीं श. | जीर्ण-कीटविद्ध अपभ्रंश में है । |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (**6**) स्तवन-सज्झाय | 13946 | समेतशिखर-स्तवन | |
| 2518 | 13496 (19) | सम्प्रतिराजा-स्तवन | कनकसुन्दर शिष्य कान्हजी |
| 2519 | 15293 (37) | सरस्वती-छन्द | देवसुन्दर कवि |
| 2520 | 15293 (36,38) | सरस्वती-स्तोत्रद्वय | |
| 2521 | 14351 (1) | साध-साध्वीजी-गुणमाला | ऋषि जयमल |
| 2522 | 13806 (8) | साधु-गुणमाला-स्तोत्र | |
| 2523 | 14345 (2) | साधु-वंदना | |
| 2524 | 14491 (1) | " | सकलचन्द |
| 2525 | 14424 (6) | " | ऋषि जैमल |
| 2526 | 14428 (8) | " | " |
| 2527 | 14541 | सिद्धपुर जिन-चैत्य-परिपाटी-स्तोत्र | कवि कुशलवर्द्धन |
| 2528 | 12733 (10) | सिद्धाचलजीरो स्तवन | |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24×12<br>21; 42 | 1–8 | पूर्ण | 1907 | लि. क. भीमसागर<br>लि. स्था. ग्रासोप |
| 15×14.5<br>18; 22 | 50 वां | ,, | 19 वीं श. | |
| 25.5×15.5<br>27; 46 | 107–108 | ,, | 17 वीं श. | अपभ्रंश में है। |
| 25.5×15.5<br>20; 43 | 107–108 | ,, | ,, | संस्कृत में है। |
| 16×12<br>12; 14 | 2–10 | अपूर्ण | 19 वीं श. | प्रथम पत्र अप्राप्त<br>प्रारम्भ में 'साधुवंदना' एवं 'कलजुगरी नीसाणी' है। |
| 14.5×13<br>18; 15 | 16–17 | पूर्ण | ,, | |
| 16×12<br>12. 14 | 10–18 | ,, | ,, | |
| 26×11<br>13; 48 | 1–7 | ,, | गु. 1697 | |
| 13×10.5<br>7; 12 | 81–105 | ,, | 1931 | लि. क. दौलतराज |
| 17×17<br>13; 16 | 86–94 | ,, | 20 वीं श. | |
| 25.5×11.5<br>18; 58 | 1 ला | ,, | 17 वीं श. | 39 छन्द हैं। |
| 19.5×17.5<br>18; 21 | 49 वां | ,, | 19 वीं श. | लि. क. पन्यास मोहनराज<br>लि. स्था. खीमाड़ा नगर |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) स्तवन-सज्झाय | 14914 (49) | सिद्धिचक्र-विधि-स्तवन | विनयविजय वाचक शिष्य |
| 2530 | 14914 (21) | सीमंधरस्वामी-गीत | चन्द्रहर्ष शिष्य हर्षरत्न |
| 2531 | 14052 (1) | " -पत्रिका | कविजन |
| 2532 | 13496 (20) | सीमंधरस्वामी-स्तवन | जिनराज |
| 2533 | 13828 (26) | " " | भक्तिलाभ |
| 2534 | 14493 | " " | कमलविजय शिष्य विजयसेन सूरि |
| 2535 | 14427 (6) | सीलरी सज्झाय | कक्कसूरि शिष्य |
| 2536 | 14428 (5) | सीलरो संवाद | देवेन्द्र सूरि |
| 2537 | 14632 (1) | सुदर्शनश्रेष्ठि केवली-सज्झाय | ज्ञानविमल |
| 2538 | 13505 (15) | सुमतिरो स्तवन | |
| 2539 | 14425 (5) | सेवकरी करणी सज्झाय | जिनहर्ष |
| 2540 | 13958 (14) | सोलह-सती-भास | मुनि मेघराज |
| 2541 | 15253 (4) | सोलह-सती-सज्झाय | उदयरत्न |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15.5×11<br>13; 20 | 196 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | र. का. 1651 |
| 15.5×11<br>14; 25 | 135–136 | ,, | ,, | |
| 24×11<br>17; 46 | 1–3 | ,, | 19 वीं श. | |
| 15×14.5<br>18; 22 | 50 वां | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>16; 35 | 92–94 | ,, | ,, | |
| 25 5×11.5<br>11; 40 | 1–5 | ,, | 18 वीं श. | र. का. 1682 |
| 23.5×16<br>19; 11 | 41–43 | ,, | 20 वीं श. | र. का. 1844 |
| 17×17<br>13; 16 | 60-63 | ,, | ,, | अशुद्धलिखा है। |
| 24.5×10.5<br>12; 35 | 1–4 | ,, | 1851 | |
| 16×11<br>10; 16 | 25–30 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 31 पर गमन करते समय का शकुन-विचार है। |
| 13×10.5<br>7; 12 | 73–80 | ,, | 20 वीं श. | |
| 18×16<br>16; 24 | 75–79 | ,, | 1763 | |
| 24×11<br>13; 34 | 7–8 | ,, | 19 वीं श. | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (6) स्तवन-सज्झाय | 14339 (8) | सौभाग्यपंचमी-स्तवन | गुणविजय |
| 2543 | 13806 (14) | स्तम्भणपार्श्वनाथ-सज्झाय | |
| 2544 | 13828 (27) | स्तम्भण पार्श्वनाथ-स्तवन | |
| 2545 | 13496 (16) | स्तम्भणपुर पार्श्वनाथ-स्तवन | |
| 2546 | 14914 (7) | स्तवन-गीत-सज्झाय संग्रह जिनपद एवं पार्श्वनाथ स्तवनादि | रूपचन्द, बनारसी, जिनहर्ष लाभवर्द्धन, जिनसमुद्रसूरि |
| 2547 | 14914 (67-68) | स्तवन-वीरगीत, बाहुबलीगीत | समयसुन्दर, विमलकीर्ति |
| 2548 | 14914 (55) | " वीर-स्तवन, नाकोड़ा-पार्श्वनाथ-स्तवनादि | समयसुन्दर |
| 2549 | 14914 (44-45) | " अइमत्ता ऋषि सज्झाय, गुरु सज्झाय | लक्ष्मीरत्न भुवनकीर्ति |
| 2550 | 14914 (10) | " पार्श्वनाथ स्तवन एवं पदादि | जिनहर्ष, सुखवर्द्धन |
| 2551 | 14914 (7) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह अरिहंत-स्तुति, पार्श्वनाथ स्तवनादि | यशोवर्द्धन वाचक, धर्मसी, जसवर्द्धन, नयसागर |
| 2552 | 14914 (6) | " वासपूज्य-स्तुति, सिद्धाचल स्तुति | पंडित जिनचन्द, कवियण |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 12×13.5<br>14; 18 | 1–6 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 14.5×13<br>18; 15 | 20–23 | अपूर्ण | ,, | पत्राङ्क 26-33 पर 'भक्तामरस्तोत्र' संस्कृत में है। |
| 15.5×11<br>16; 25 | 94–96 | ,, | 18 वीं श. | 28 वें पद पर्यन्त पत्राङ्क; 100 पर 'तीर्थनाम स्तोत्र' का अंतिमांश है।<br>पत्राङ्क 97-99 अप्राप्त |
| 15×14.5<br>17; 22 | 42–43 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 41 वां अप्राप्त |
| 15.5×11<br>12; 22 | 278 वां | पूर्ण | 18 वीं श. | |
| 15.5×11<br>12; 22 | 272–273 | ,, | ,, | पत्राङ्क 271 पर कवि मेह कृत 'भवानीछंद' तथा उदयराज के स्फुट छंद हैं।<br>पत्राङ्क 259-270 अप्राप्त |
| 15.5×11<br>12; 22 | 205–208 | ,, | 1791 | र. स्था. जेसलमेर<br>पत्राङ्क 205 वां दो बार,<br>" 206 पर ग्रहों की दूरी का प्रमाण है। |
| 15.5×11<br>13; 24 | 184–185 | ,, | 18 वीं श. | प्रारम्भ के 8 पद नहीं हैं। |
| 15.5×11<br>17; 36 | 75 वां | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>15; 27 | 44-45 | ,, | ,, | |
| 15.5×11<br>15; 27 | 43 वां | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (**6**) स्तवन-सज्भाय | 14831 | स्तवन-ऋषभ जिनस्तवन, गीत-संग्रह | आनन्दघन |
| 2554 | 14815 (3) | " वीर प्रभुनो पारणों, सीता सज्भाय आदि | दीपविजय, उदयरत्न जिनहर्ष, देवचन्द्र |
| 2555 | 14811 | " आलोयणा सज्भाय, सिद्धाचल स्तवनादि | समयसुन्दर, लाभोदय जिनचन्द |
| 2556 | 14641 (6) | स्तवन-सज्भाय-गीत-संग्रह पार्श्वनाथ गीतादि | दानसागर, विनयविमल समयसुन्दर, शिवचन्द लालविजय, लावण्यसमय हेमप्रभ, सिद्धविजय* काजीमहम्मद |
| 2557 | 14641 (2) | " सीमंधरस्वामीलेख गीतादि | जयवंत पंडित, *आनन्दवर्द्धन भुवनकीर्ति ज्ञानसागर विनय, पदम |
| 2558 | 14641 (1) | " तीर्थावली, शांतिजिन गीतादि | समयसुन्दर, दानसागर, जयवंत सूरि लावण्यकीर्ति, उदयरत्न |
| 2559 | 14639 (3) | " गीतादि | जिनहर्ष. गुणविनय, समयसुन्दर भैरवदास, भद्रसेन, राजसमुद्र मालदेव, नन्दसूरि, नयप्रमोद |
| 2560 | 14639 (1) | " गीत-संग्रह | समयसुन्दर, राजसमुद्र कुशललाभ, भक्तिलाभ जिनराज |
| 2561 | 14632 (5) | " मान, लोभ, आत्मशिक्षा, सीता सज्भाय | उदयरत्न |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21×11<br>4/10;28/42 | 1–39 | पूर्ण | 19 वीं श. | सस्तवक |
| 25.5×13.5<br>22; 52 | 2–5 | ,, | 20 वीं श. | |
| 26×13.5<br>14/18;32/42 | 1–2 | ,, | ,, | सस्तवक |
| 14×11.5<br>19; 19 | 31–41 | ,, | 18 वीं श. | *र. का. 1731 |
| 14×11.5<br>19; 19 | 8–17 | ,, | ,, | *र. का. 1716<br>पत्राङ्क 17-18 पर 'जखड़ी' है ।<br>लि. स्था. हंसतटे |
| 14×11.5<br>19; 19 | 1–7 | ,, | ,, | पत्राङ्क 7-8 पर स्फुट नुस्खे हैं । |
| 14×11.5<br>19; 19 | 51–56<br>75–77 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 57-75 तक प्राकृत एवं संस्कृत की कृतियाँ हैं । |
| 14×13<br>11; 22 | 1–26 | ,, | ,, | लि. क. कमलचन्द गणि<br>लि. स्था. सूरतबिंदर<br>प्रारम्भ के दो पत्रों पर समस्त कृतियों की सूची दी गई है । |
| 24.5×10.5<br>15; 40 | 21–22 | ,, | 1851 | लि. स्था. पाटण |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** **स्तवन-सज्झाय** | 14632 (2) | स्तवन-सज्झाय नववाडि, रत्नदृष्टांत, थूलिभद्र सज्झाय एवं विशाल स्वामी गीतादि | अजितदेवसूरि, सोमविमल, सिद्धिविजय, उदयरत्न, दीपविजय, जिनहर्ष |
| 2563 | 14600 (9) | " वैराग्यगीत, गयसुकमाल गीत बलभद्रवेलि, कुलक संग्रहादि | मुनि खेमराज, सेवक, पार्श्वचन्द, खेमकीर्ति शिष्य, |
| 2564 | 14600 (5) | स्तुति-सज्झाय-गीत संग्रह मेघकुमार गीत, शत्रुंजयगीत | सेवक श्रीकर्ण |
| 2565 | 14582 | " चतुर्विंशति जिनकल्प, चैत्यवंदनादि | मुनि उदय. मुनि रत्नसिंह लाभउदय, देवचन्द्र, पद्मविजय, क्षमाविजय, यशोविजय, नयविजय शिष्य |
| 2566 | 14445 | " साधुवंदना, सीमंधरस्वामी-स्तवनादि | मुनि श्रीसार, हीरविजय सकलचन्द |
| 2567 | 14432 (1) | " चौथ महाव्रत स्वाध्याय, छायासुत छंद, सूरजछंद | कांतिविजय कवि हेम कवि कांनो |
| 2568 | 14428 (17) | स्तवन-सज्झाय गीत संग्रह | रत्नचन्द |
| 2569 | 14428 (11) | " विजयसेठ सज्झाय, अयवंता स्तवनादि | मुनिरत्नचन्द्र शिष्य; लक्ष्मीरत्न |
| 2570 | 14424 (7) | " साधु आचार सज्झाय आदि | रत्नचन्द्र; विनयचन्द *मोतीचन्द |

| माप से. मी. में. पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 24.5 × 10.5<br>15; 40 | 5–12 | पूर्ण | 1851 | लि. स्था. पाटण |
| 25 × 12<br>16; 48 | 65–74 | ,, | गु. 1636 | |
| 25 × 12<br>14; 46 | 38–39 | ,, | 17 वीं श. | पत्राङ्क 40-41 पर बीकानेर नगर के दिन-प्रमाणादि ज्यौतिष विचार है । |
| 26.5 × 12.5<br>10; 33 | 1–5;<br>8–13 | ,, | 18 वीं श. | संस्कृत एवं प्राकृत भाषा की लघु-कृतियां भी हैं । |
| 25.5 × 11<br>15; 34 | 1–38 | ,, | 1679 | लि. क. नान्य सौभाग्य गणि<br>लि. स्था. श्रीवाविनगर 'चोहाण श्री राणां भोज राज्ये' |
| 12 × 9.5<br>11; 13 | 3–5,<br>5–8<br>8–11 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 2 पर 'महादेवजी रो छंद'<br>" 12 पर 'सूरजरो छंद,<br>" 12-13 पर 'गोरादेरो छंद' है । |
| 17 × 17<br>13; 16 | 212–215 | ,, | 20 वीं श | पत्राङ्क 215-217 पर 'समभावरा बोल'<br>" 218-222 पर 'गुणपचासभांगा' है । |
| 17 × 17<br>13; 16 | 127–166 | ,, | ,, | |
| 13 × 10.5<br>7; 12 | 106–122 | ,, | ,, | *र. का. 1836 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** **स्तवन-सज्झाय** | 14409 (3) | स्तवन सज्झाय-पार्श्वनाथ स्तवन नंदिसेण सज्झाय; धन्नाजीरी सज्झाय आदि | जयउत्तम, यशोविजय, समयसुन्दर, आनन्दघन, मेरुविजय, लब्धिविजय दीपविजय शिष्य, पद्मतिलकसूरि |
| 2572 | 14422 (1) | स्तवन-सज्झाय-गीत-संग्रह | रूपचंद, लाभउदै, आनन्दघन, नेनसुख, हर्षचन्द, साधुकीर्ति; कीर्तिविजय, खुस्यालचंद समयसुन्दर, चैतविजय टोडर; लालचन्द, चैनविजय भूधर, पद्म, कनककुशल, जिनचन्द, हर्षचन्द, हर्षसागर, * 1. कनकमूर्ति ऋषभदास, जिनदास, नवल, 2. दयाकुशल 3. हर्षनिधान, जैत |
| 2573 | 14416 (10) | ,, नामेलापुत्र सज्झाय, गौतम सज्झाय आदि | लब्धिविजय, नागरीदास, कबीर, मीरां, दयाल, सूरदास, चैनविजय, तानसेन, जिनदास, नवल, हर्षचन्द, समयसुन्दर, |
| 2574 | 14409 (1) | ,, बीजस्तुति, कृष्णपंचमी-स्तुति, एकादशी स्तुति, महावीर स्तवन | लब्धिविजय, गुणहर्षशिष्य, यशोविजय वाचक |
| 2575 | 14408 (5) | ,, वाल्हेरा पार्श्वनाथ स्तवन, साधारणजिनस्तवन, | संघविजय सिद्धिहर्ष, अजबसागर, |
| 2576 | 14408 (3) | ,, पार्श्वनाथ स्तुति, चतुर्विंशतिजिनस्तुति | लब्धिविजय, आनंद शिष्य कमलसाधु कल्याणउदय, विजयरत्न शिष्य |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16.5×12.5<br>12; 15 | 42–56 | पूर्ण | 19 वीं श. | |
| 10×9.5<br>12; 12 | 1–5;<br>8–14;<br>97–131 | ,, | 1895–<br>1899 | लि. क. सवाईसागर<br>र. का. 1. 1766,<br>2. 1730<br>3. 1744 |
| 12×11.5<br>9/12; 9/12 | 51–80 | ,, | गु. 1819 | प्रारम्भ में संस्कृत की कृतियाँ हैं। |
| 16.5×12.5<br>11; 15 | 27–30 | ,, | 19 वीं श. | प्रारम्भ में संस्कृत प्राकृत की कृतियाँ हैं। |
| 15×10<br>8; 10 | 56–68 | ,, | 1780–<br>1781 | लि. क. भाग्यसागर शिष्य अजबसागर पत्राङ्क 68-70 पर 'पातशाह की वार्ता' है। |
| 15×10<br>10; 12 | 27–36 | ,, | गु. 1780 | आगे पत्राङ्क 1-18 पर 'श्रावकप्रतिक्रमण सूत्र'; 19-26 पर 'स्तम्भन-पार्श्वनाथ नमस्कार' अभयदेव कृत तथा 27-49 पर 'भक्तामर स्तोत्र' है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** स्तवन-सज्झाय | 14408 (1) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह-- पंचासरापार्श्वनाथ-स्तवनादि | अजबसागर |
| 2578 | 14400 (2) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह- | रत्नसमुद्र, विजयदेव सूरि |
| 2579 | 14393 (1) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह- अजितनाथजिन-स्तुति, शत्रुञ्जय-स्तवन, पद्मावती स्तोत्र आदि, | हर्षविजय, कनकविजय, जिनहर्ष मोहन शिष्य रूपविजय, यशोविजय, रूपचन्द, पद्मराय, गुणसागर, मेघराज, दीपसौभाग्य लब्धिनिधान, कनककीर्ति गुणप्रभसूरि, जसवंतसागर शिष्य उदयरत्न, साधुकर्मचन्द, श्रीदेव |
| 2580 | 14386 (1) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह- हीरजीरी सज्झाय, महावीर-स्तवन, | भगतै शिष्य विजयसेनसूरि, कांति सागर |
| 2581 | 14368 (13) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह- पद्मप्रभु-स्तवन, सीमंधर-स्तवन, निश्चलव्यवहार-सज्झाय शीतलजिन-स्तवन | हंसभुवन सूरि, लाल गणि यशोविजय वाचक, उदय वाचक शिष्य विजयसिंह जिनहर्ष |
| 2582 | 14368 (5) | " " मृगापुत्र-सज्झाय, थूलभद्र-सज्झाय, मेतारज-सज्झाय | भक्तिविजय लालचन्द विजयरंग |
| 2583 | 14368 (4) | " " इरियावही सज्झाय, नोकरवालीरी सज्झाय, पांचमरी सज्झाय | *विनयविजय आनन्द शिष्य विनयविजय अमरविजय शिष्य लब्धिविजय |
| 2584 | 14368 (3) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह- वीज-स्तवन, ज्ञानपंचमी-स्तवन, अष्टमी-स्तवन, मौन-एकादशी-स्तवन | *ऋद्धिविजय शिष्य प्रमोदविजय विजयलक्ष्मी सूरि कांतिविजय |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 15×10<br>16; 17 | 1–11 | पूर्ण | गु. 1780 | प्रारम्भ के दो पत्रों में विरहिणी नायिका के नायक के प्रति उद्गार तथा पत्राङ्क 14-15 पर 'जमाल' कृत दोहे हैं। |
| 22.5×18<br>19; 22 | 4–6 | ,, | 20 वीं श. | |
| 11.5×11<br>12; 14 | 1–39 | ,, | 19 वीं श. | |
| 17×12.5<br>10; 18 | 7–10 | ,, | गु. 1864 | लि. क. क्षमाविजय<br>पत्राङ्क 1-43 अप्राप्त 5-6 पर 'यात्राफल-स्तवन' है। |
| 21×14.5<br>12; 25 | 117–125 | ,, | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलवर्द्धिनगर |
| 21×14.5<br>12; 25 | 70–73 | ,, | ,, | |
| 21×14.5<br>12; 25 | 66–69 | ,, | ,, | *र. का. 1733<br>पत्राङ्क 61 से 65 पर 'अजितशांतिस्तोत्र' प्राकृत में है। |
| 21×14.5<br>13; 25 | 50–60 | ,, | ,, | *र. का. 1871 |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22** (6) **स्तवन-सज्झाय** | 14368 (2) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– चैत्यवंदन एवं थुई संग्रह | ज्ञानविमल, नयविमल लब्धिविजय, देवकुशल मोहन शिष्य रूपविबुध ऋषभदास शिष्य विजयसेनसूरि गुणहर्ष शिष्य, कांतिविजय भाणविजय, जिनेन्द्रसागर नेमविजय, लाभविमल, शांतिकुशल |
| 2586 | 14358 (4) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– मृगापुत्र-सज्झाय, साधुगीत आदि | समयसुन्दर, उदयरुचि शिष्य विजयकुशल उदय शिष्य शंकरसौभाग्य विमलकीर्ति, चत्रभुजदास |
| 2587 | 14357 (1) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– पद-गजल आदि | रूपचन्द, लालचन्द, शाहहुसैन, आनन्दघन, गोपालसागर, लाल ज्ञानविमल सूरि, आदमखां हर्षचन्द्र, रत्नविमल, नवल, कविगोपाल, जिनचंद, वखता सूरदास, मीरां |
| 2588 | 14346 (9) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– पार्श्वनाथ पदादि | मतिविलास, हर्षचन्द, नयनविमल आनन्दघन, मतिहंस |
| 2589 | 14339 (11) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– महावीरस्वामी स्तवन, नेमि पद आदि | *देवीदास, ज्ञानसागर, आनन्द, रूपविजय, जिनराज, समयसुन्दर रूपचन्द, ज्ञानविमल सूरि. भांनचन्द, जिनहर्ष, आनन्दराम |
| 2590 | 14339 (7) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह | रूपचन्द, बनारसी, विनयलाभ, जिनहर्ष, आनन्दघन |
| 2591 | 14338 (9) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– अजित-शांति विवाहुला-स्तवन. सीमंधरस्वामी-स्तवन | मेरुनन्दन आदि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 21 × 14.5<br>13; 25 | 38–50 | पूर्ण | 1908 | लि. क. फतैविजय<br>लि. स्था. फलवर्द्धिनगर<br>पत्राङ्क 18-21 पर 'लघु चाणक्य राजनीति' तथा 21-38 पर संस्कृत-प्राकृत की कृतियाँ हैं। |
| 15.5 × 13.5<br>12; 15 | 92–106 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 107-110 पर पट्टी-पहाड़े हैं। अंत में 'सर्प कीलक मंत्र' है। |
| 16 × 12.5<br>13; 18 | 10–29 | ,, | 1911 | लि. क. गोपालसागर<br>प्रारम्भ के तीन पत्रों पर तथा 11 वें पत्र पर स्फुट नुस्खे हैं। |
| 15 × 13<br>13; 16 | 165–170 | ,, | गु. 1898 | पत्राङ्क 167-168 पर गुटके कृतियों की अनुक्रमणिका है। |
| 12 × 13.5<br>17; 18 | 31–47 | ,, | 1848 | *र. का. 1611<br>लि. क. ज्ञानचन्द; पत्राङ्क 48 पर माधो कृत 'क्षेत्रपालजीरो छंद' तथा 49 पर ज्ञान कृत 'अष्टपदी' है। |
| 12 × 13.5<br>15; 16 | 34–36 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16 × 11<br>10; 18 | 98–106 | ,, | ,, | |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| 22 (6) स्तवन-सज्झाय | 14338 (5) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– नेमिजिन-स्तवन, शांतिनाथ-स्तवन, पार्श्वनाथ लघु स्तवन | सभाचन्द शिष्य सदानन्द पाठक समयसुन्दर |
| 2593 | 14336 (4) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– धन्ना-सज्झाय आदि | श्रीदेव, ऋद्धिहर्ष, जिनहर्ष सूरि, दयासागर कीर्तिसूरि, कनकविबुध पद्मतिलक, कविंयण |
| 2594 | 14335 (4) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– धन्नाशालिभद्र-सज्झाय कवित्त, लावणी मंत्रादि | ” |
| 2595 | 14332 (7) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– | नवल, हर्षचन्द, समथसुन्दर, जैत, जिनहर्ष, जिनदास, मुनिगुमान, रूपचन्द, आनन्दराम |
| 2596 | 14332 (4) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– नवपद-स्तवन, शांतिजिन-स्तवन आदि | समयसुन्दर, चैनविजय, चंद्रकीर्ति आनन्दघन, हीराचन्द, रत्नविजय, रूपविजय |
| 2597 | 14108 | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह | श्रीसार, प्रीतिविमल मोहनविजय, देव वाचक जिनहर्ष सूरि, जिनलाभ सूरि जिनहंस सूरि, वीरविजय रूपविजय, जिनचन्द सूरि ज्ञानविमल, पद्मविजय क्षमाकल्याण |
| 2598 | 13505 (19) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह | सरदचन्द आदि |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 16×11<br>12; 24 | 15–16 | पूर्ण | 19 वीं श. | लि. क. वाचक सभाचन्द |
| 14×12.5<br>14; 16 | 59–79;<br>85–96 | ,, | ,, | पत्राङ्क 77-79 पर 'नेमिनाथरी वारामासी' अपूर्ण है। पत्राङ्क 79-84 पर 'भक्तामरस्तोत्र' संस्कृत में है। |
| 15×11.5<br>13; 18 | 16–29 | ,, | ,, | |
| 15×15.5<br>17; 24 | 1–13 | ,, | 1938 | लि. क. राजेन्द्रसागर |
| 15×15.5<br>19; 22 | 12–17 | ,, | 1939 | |
| 20×15<br>20; 18 | 1–96 | ,, | 19 वीं श. | |
| 16×11.5<br>11; 16 | 63–64 | ,, | ,, | पत्राङ्क 65-66 पर शकुनविचार है। |

| क्रमांक एवं विषय | ग्रन्थांक | ग्रन्थ-नाम | कर्त्ता एवं टीकाकार |
|---|---|---|---|
| **22 (6)** **स्तवन-सज्झाय** | 14336 (2) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– नाभिनन्दन-स्तवन, चन्द्रप्रभु स्तवन, शीतलनाथ-स्तवन, अहिरण, सोलहसती-सज्झाय | शिवसुन्दर, दयासागर कीर्तिविमल शिष्य, समयसुन्दर, फतेचन्द मुनि लावण्यसमय, प्रीतिविजय |
| 2600 | 14338 (6) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– महामुनि-सज्झाय, सीलद्रुपद | कवियण आदि |
| 2601 | 14342 (6) | स्तवन-सज्झाय-गीत संग्रह– चोमासा, विनती, सास-वहूरो झगड़ो | देवा ब्राह्मण आदि |
| 2602 | 14914 (17) | स्थूलिभद्र-सज्झाय | भावसागर |
| 2603 | 14358 (6) | स्थूलिभद्र-नवरसो, सीमंधर-स्तवन | उदयरत्न |

| माप से. मी. में, पंक्ति प्रति पत्र, अक्षर प्रति पंक्ति | पत्र संख्या | पूर्ण/ अपूर्ण | लिपिकाल (वि. संवत्) | विशेष ज्ञातव्य |
|---|---|---|---|---|
| 14×12.5<br>11; 14 | 22–52 | पूर्ण | 1814 | |
| 16×11<br>12; 24 | 16–17 | ,, | 19 वीं श. | पत्राङ्क 17-19 पर जिननाम तथा स्फुट दोहे कवित्तादि हैं । |
| 21×14.5<br>15; 15 | 45–53 | ,, | ,, | पत्राङ्क 54-58 पर संस्कृत में 'देवपूजा विधि' है । |
| 15.5×11<br>14; 20 | 124–126 | ,, | 18 वीं श. | अंत में 'हर्षकुशल' कृत काफ़ीराग का एक पद है । |
| 15.5×13.5<br>12; 14 | 118-128;<br>129–132 | ,, | 19 वीं श. | |

[ग्रन्थाङ्क 12613 से 15672 तक का विवरण समाप्त ]

# परिशिष्ट १

## कतिपय विशिष्ट 'प' चिह्नित ग्रन्थों के उद्धरण

### ८६/१४३७६ (१) भगवद्गीता दोहानुवाद

प्रारम्भ— ।। ॐ ।। नमो प्रमातमने: ।। श्रीगोपीजन वलभाय ।। श्रीकृष्णाय नमः । ॐ अस्य श्री भगवद्गीता मालामंत्रस्य श्री भगवान वेदव्यास कृ (त) क्षीरनुष्टुब छंद.........इति ध्यानः ।।

पत्र २— श्री कृष्णाय नमः । धृतिराष्ट्र उवाचः ।
नमो निरंजन वगुण पर, गुण निधि गोविंदरायः ।
नमो गरुडध्वज कवल नैन, नमो जदुराय ।।१।।
नमो नमो गुरु कुं नमों, फुनि फुनि बारंबार ।
नमो नमो सब संत कुं, जिह घटि बस मुरारि ।।२।।
श्रीमुख जो गीता कही, अर्जुन सुं समझाय ।
जाकी भाषा जथा मति, कहुं अब हरि गुन गाय ।।३।।
तातपरज या ग्रन्थ कौ, जांनत श्री भगवांन ।
श्लोका को अख्यर अर्थ कहैं, सु सूनाहु सुजाण ।।४।।

अन्त (ग्रन्थ-प्रशस्ति)—

उपनखा सकल कामधेनि, दोहन नंद कुमार ।
बछौ पार्थ गीता दुगध, हरिजन पीवन हार ।।४।।[1]
नमो नमो वसदेव देवकी सुत, सु सुमति अधार ।
नमो नमो श्री राधिके, वलभ नंद कुंवार ।।५।।
नमो व्रज जन हिता, जगपति जगत उधारन हार ।
नमो नमो फुनि फुनि नमो, नमो सहस्रनि वार ।।
गीता के श्लोक सातसै एक जानि,
श्रीमुख भाखै पांचसै, और चहोतरि आंन ।
अर्जुन असी'र दोय, कहे संजय चालीस ।।
एक कृष्ण अर्जुन मिलि कह्यौ, एक धृतराष्ट्र प्रवीन ।।१०।।

---

१. प्रारंभ के ३ छन्द अप्राप्त । पांचवें छन्द के बाद छन्द संख्या, क्रम से नहीं लगी है ।

रचनाकाल—संवत १७ वरस ५१ रविवार
माघे दुतीया कृष्ण पखि, भाषा मत अनुसार,
कही मलुकै दासांनुदास, लाहोरी निज नांम ।
जादु सुत खत्री वरण, रसना पांवन कांम ।।
अक्षर घटि वधि होइ जो, ले है संत सुधारि ।
सव संतन के चरन परि, लाहोरी वलि जाय ।।१६।।

पुष्पिका— लिखतं तिवाड़ी अखैरांम बैष्णव रांमानंदी विष्णदास पठनार्थं । श्रुभं भव । संवत १९७४ वृषे फागुण मासे कृष्ण पक्षे ७ सपतम्यां तिथू चन्द्रवारे । नागोर रा गांव मुडवा माहे लिखी । बाचे जिणनु श्री रांम रांम श्री सदगुर प्रसादात वाचजो जी । कल्याण मस्तु ।

## १०२/१४२५९ भागवत-दशम-स्कन्ध-भाषा

आरम्भ— ।।श्रीरामाय नमः।। श्री गुरुचर्णकमलेभ्यो नमः ।।श्रीकृष्ण चर्ण-कमलेभ्यो नमः ।।अथ दस्मस्कंधे श्रीकृष्णलीला वर्णनं ।

प्रथम-मंगलाचरण—

जै गनपति गौरीनंदन, पुन शिवनंदन कहात ।
गजमुख रदन सुहावना, वुधिदायक सुखदात ।।१।।
जिम दीपक तिमर ही हरै, त्युं हर हरि अज्ञान ।
सामर्थ हमकुं दीजिये, चरित्र कथन भगवान ।।२।।
श्री सरस्वती सुमरिकैं, वंदु बारंबार ।
बुद्धी आपहि दीजिये, सर्व विघ्न तुम टार ।।३।।
गुरु कुं करूं जु वंदना, निसि दिन बारंबार ।
नागर नंदन[1] कहात प्रभु दादू विघ्न निवार ।।४।।

चौपई

दस्मस्कंध व्यासजी गायो । सोई शुक नृप कुं जु सुनायो ।।
संस्कृत पठन नही कोउ जानै । जद भाषा कर चरित्र वखानै ।।५।।
गुरु दादू मोहि आज्ञा दीवी । संस्कृत की भाषा कीवी ।
अधिक न्यून नाही में गाऊं । यथा पूर्व कही तथा सुनाऊं[2]।।

१. विनोदीनंदन
२. यह चौपई ग्रन्थ-प्रारम्भ से ऊपर वाले हाशिये में पृथक् लिपि में दी गई है ।

अन्त— अरिल छन्द

दसमस्कंध ज्ञांन निज सार है।
सुनै सुनावै कहत तिरत नही बार है।।
स्वयं भगवांन सुखदेवजी कहै।
(हर हां हां जी) परीक्षत पायो ज्ञान परम पद सुख लहै।।२६।।
नाना दुख संसार त्याग मन थिर भया।
समझै अंतर द्वैत सहजै गया।।
कछु अनुभव तें जांन सतगुर हि कहे।
(हरि हां हां जी) चंचलता सब त्याग रूप में मिल रहे।।३०।।

दोहा

यह महिमा पावन परम, दशम बोध निज ग्यांन।
सुनै सुनावै मोक्ष पद, जीवत लक्ष्मी जन।।३१।।

चौपई

विहारी कुंज कृष्ण जस गावा। संस्कृत कूं भाषा में लावा।।
दसम स्कंध सर्व जस मांही। गुप्त रहा प्रगट हुवा नाही।।३२।।
अंतरजामी कीया विचारा। उग्रसिंघ मुख वचन उचारा।।
विहारीकृत जस तुम प्रगटावो। यूं विचार कर कह दरसावो।।३३।।
नराणदास कुं वचन कहावा। वचन सुनत मन में हरखावा।
ग्रंथ सुधकर स्व हाथ लिखावा। कथा करन आरंभ करावा।।३४।।
उग्रसिंघ द्रव्य खरच करावा। छापा मांही तुरत छिपावा।
संतन कुं पुस्तक बगसावा। साधू हरख सुं सबहि लिवावा।।३५।।

मनहर छंद

कृष्णगढ नगर वासी मोणोत है ओसवाल,
नृप कै दिवाण सो तो जग में विख्यात है।
पीढी दर पीढी सब भये है जु भाग्यवान,
रिध सिध भक्ति साजवंस में रहात है।।
चैंनसिंघ मेता जाकै करणसिंघ सुत भये,
ताके सुत मोखमसिंघ जगत प्रगटात है।
वाकै उग्रसिंघ सुत प्रकट जिहांन माही,
दादू का प्रताप कर ईश्वर सहात है।।३६।।

दोहा

उग्रसिंघ विख्यात है, बलभसिंघ वड भ्रात ।
जालमसिंघ कनिष्ट है, ईश्वर रखै कुशलात ।।३७।।

जोधपुर मांही बसत है, नृप को सदा है मन ।
गुरु दादू प्रताप तें, ईश्वर रहै प्रसन ।।३८।।

चौपई

पांच हजार सेंतीस हे श्लोका । अनुष्टुप छंद गिणाया चोखा ।।
दसमस्कंध भागवत नित गावै । मन वांछित फल सहजें पावै ।।३९।।

अरिल

**अजमेरा** का ग्राम में अवल बणाईया ।
**श्रीनगर** है नाम प्रगट दरसाईया ।।
कृष्णचरित्र संस्कृत सों प्राकृत में गाइया ।
(हरि हां हां जी) बिहारी कुंज संत दोऊ प्रगट कह सुनाईया ।।४०।।

चौपई

ये दोऊ संत प्रगट जग मांही । दादूपंथी कह बतलाही ।।
जन गरीब कै वंस में भईया । कृष्ण चरित्र बहु सुंदर कहईया ।।४१।।

इस कुं सुणै सुणावै कोई । ताकै संपदा सब सुख होई ।
अपुत्रवान कै सुत प्रगटाई । कृष्णचरित्र का यो फल गाई ।।४२।।

पुष्पिका— इति श्री भागवते महापुराणे दशमस्कंधे श्रीकृष्णचरित्रे बाल-लीला आदि कृष्ण-विवाह राक्षस-वध पांडव सहायक कृष्ण-वंस-बंसावली बरणनो नाम नवतीतमोध्याय: ।।९०।। श्रीरस्तु ।। कल्याणमस्तु ।। राम ।।

आंधी के म्हंत पुस्तक लिखी, **नरायणदास** कहंत ।
जोधपुर में उग्रसिंधजी, जिनकै चतुर्मास रहंत ।।१।।

संवत उगनीसे इकावनो, आसोज सुद दुज जान ।
हरिचरित्र प्रताप तें, उग्रसिंघ सुख थान ।।२।।

।।रांम।। ।।रांम।। ।।रांम।। । रांम।।

## १६२/१३७२५ (१-१०) छत्तीस राजकुली आदि संग्रह

प्रारम्भ— ।।श्री गणेशाय नमः।। अथ राजकुली छत्रीस ३६ कहै छैः

पत्र 1 A.

१ **परमार**—धारा नगरी हुम्रा

२ **राठोड**—कनवजगढ हुम्रा

३ **चहुम्रांण**—नाडुलगढ हुम्रा, माथा सिरो सांभरः म्रासापुरी देवी पुजीजै छै।

४ **गहिलोत**—म्राहड़ नगर हुम्रा ५ **दहोया** साहलगढ हुम्रा

६ **दसुणेवा** -हुरंगगढ हुम्रा ७ काछा थोहरगढ हुम्रा

८ **सोलंखो**—रोहणगढ हुम्रा ९ **खेर**-पांडवगढ हुम्रा

१० **मोरी**—चीतोडगढ हुम्रा ११ **नीकुंप**—मांडलगढ हुम्रा

१२ **ढीक**—म्रासेरगढ हुम्रा १३ **गोहील**- खेड पाटण हुम्रा

१४ **पढीहार**—मंडोवरगढ हुम्रा १५ **चीबा**—पाटणगढ हुम्रा

१६ **झाला**—पावागढ हुम्रा १७ र: कर्णोचगढ हुम्रा

१८ **चालवा**—करणगढ हुम्रा १९ **जेठबा**-भुंभलीयाहगढ हुम्रा

२० **रोहर**—तारागढ हुम्रा २१ **बुसा**—लोहागढ हुम्रा

२२ **लोह** मे गढेव २३ **बारहड**-संभणगढ हुम्रा

२४ **खीची**—जाईलवाडै हुम्रा २४ **खडवाण**—बसहीगढ हुम्रा

२५ **डोडोया**—रोहतीसगढ हुम्रा २६ **हीरीयाड**- हरमचगढ हुम्रा

२७ **डाभी**—कापरवाड़ी हुम्रा २८ **तुंवर**—दीली हुम्रा

२९ **कोरडा**—हथणापुर हुम्रा ३० **गौड**—म्रांबेरगढ हुम्रा

३१ **मरुवाणी**—मगरूपगढ हुम्रा ३२ **जादु**- जुनैगढ हुम्रा

३३ **कछवाहा**—खोहगढ हुम्रा ३४ **भाटी**—लौद्रवैगढ हुम्रा

३५ **सोनीगरा**—जालोरगढ हुम्रा

३६ **देवडा**—म्राबूगढ हुम्रा महा म्रनलगढ कहीजै छै। इति छत्तीस राजकुली जाणवी सही।

**कवित्त**

पदग लख पखरैत, ऐसी लख पाई तुरंगम।
जुड बंध विड देत, उपर म्रसवार म्रलंगम।।
बारा लख बाणपती, सपत वेदीस परमांणां।
सोलैसै सांवत दस, लख राव विमांणी।।
धूंध रेण गैण धूजै धरा, वीस लाख वाजित्र वली।
सिध राव जैसिघ सुं, मंडे नह कोई मंडली।।

पत्र संख्या

२ राठोड़ांरी वंशावली १ A से १३ A

(राठोड़ों की उत्पत्ति से लेकर महाराजा म्रभयसिंह की मृत्यु संवत्-१७८१ तक की प्रमुख घटनाम्रों का संवतों के म्रनुसार उल्लेख है)

अंत

**अथ भगतां री बंशावली लिख्यते ।**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | **ब्राह्मण** जै जै देववंसी | २ | **माहाजन** तिलोचनवंसी |
| ३ | **रजपूत** पीपावंसी | ४ | **चारण** तुंमरवंसी |
| ५ | **कायथ** चित्रगुप्तवंसी | ६ | **सरगरो** वालमीक वंसी |
| ७ | **थोरी** कीतावंसी | ८ | **मैणो** घाटमबंसी |
| ९ | **कसाई** सुदनावंसी | १० | **पींजारो** दादुवंसी |
| ११ | **रैबारी** हीरावंसी | १२ | **भाट** जनकवंसी |
| १३ | **खातो** परसावंसी | १४ | **कुंभार** राकावंसो |
| १५ | **मालो** नापावंसी | १६ | **जाट** धनावंसी |
| १७ | **जुलाहो** कवीरवंसी | १८ | **ढेढ** ब्रहदावंसी |
| १९ | **डूंब** वीनरावंसी | २० | **छीपा** नांमदेवंसी |
| २१ | **कीर** कालूवंसी | २२ | **नाई** सेनावंसी |
| २३ | **कलाल** बखनावंसी | २४ | **खत्री** नानगवंसी |
| २५ | **मोची** वलभवंशी | २६ | **तेली** पदमावंशी |

पुष्पिका— भगत वंसावलि संपूर्णं । लिखिते लेखक वनमाली रामचन्द्र मु० नागोर-मारवाड़ सं० १९९४ रा मिति कार्तिक सुदि ३ सनीवार ।।

## १७४/१५६४३ ठिकाणा—झीथड़ा-परगणा सोजत री ख्यात

प्रारम्भ— ।।श्री।। ।।श्रीरामाय नमः।।
।।ख्यात ठीकांणा झीथडा—परगने सोझत।।
।।सम्प्रदा [य] रामानन्द।।

।। भूमिका ।।

जो कि श्री दरवार के हुकम से मारवाड़ की ख्यात वणाने का हुकम हुवा । जब और ठीकांणों की ख्यात पेस हुई । जिससे हमारे ठीकांणे की भी ख्यात पेस होणा मुनासिव समझ कर महकमे

तवारीक से हुकम आया ख्यात पेस करणे का । तब अबी वर्त्तमान समय में विद्यमान जो महंतजी महाराज श्रीस्वामी भागवत-दासजी हे ……………… म से उनका दासानुदास…………………
[न] रसिंघदास ने संप्रदाय पक्षों के ग्रंथां की सहायता से और ठीकांणे के जो कोई जुने कागजात थे उनकी मदद से और पुष्करणे ब्राह्मण बोड़ा आसकरणजी की सहायता सें बहोत परीश्रम के साथ ये ख्यात तय्यार करके ठीकांणा में पेस की गई तो बाद मुलायजे श्री महंतजी महाराज प्रसन्न करके महकमे तवारीख में पेस करने की इजाजत फुरमाई । जब उनका ताबेदार नरसिंघदास हाजर होकर पेस कीवी ।

॥ जुगराफीया ॥

जीथडो जोधपुर से कोस १४ अग्निकोण में हैं। ओ सोभत सुं कोस १० पश्चिम दिशा में है और गांव दुसाखीयो है और गांव में कुल घर १६२ है।

ग्रन्थारम्भ

जो के साक्षात श्रीमन्नारायण हैं सो जीव लौकों पर कृपा करके गुह्य से गुह्य अंधेरा दूर करने वाला राम-तारक मंत्र हैं उसका श्रीलक्ष्मीजी महाराज को उपदेश किया ………………।

ग्रन्थान्त

……………………और गमी होती है तब उनका घोडा और गहणा जेवर वगेरे इस ठीकांणे में आता है और दूसरे ठाकुर गादी पर बैठते हैं तब प्रथम महंतजी महाराज कंठी बांधकर दुपट्टा ओढाते हैं । उनके पीछे ओरां का दस्तूर पाग वगेरे का होता हैं । और जो गादी बैठते हैं वो ठाकुर साहब उसी दिन या दूसरे दिन महंतजी महाराज के डेरे आकर भेट पूजा वगैरे करते हैं।

पुष्पिका— इति श्री ख्यात संपूर्णम् ॥संवत् १९५४ रा चैत्र शुक्ल पक्ष १॥[1]

---

१. पुष्पिका के पश्चात् [नरसिंहदास वैष्णव की] प्रस्तावना है । तदनन्तर ग्रन्थ के अन्तिम पत्रों (११५ से ११७) में झीथड़ा टिकाने को समय-ससय पर मिले पट्टे परवाने, ताम्रपत्र आदि की नकलें हैं ।

## १८७/१५६४४ (२) पीढ़ियांरी विगत तथा स्फुट गीत संग्रह

पृष्ठवार विगत—

| | नाम | | पृष्ठ संख्या | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| १ | ओसवालांरो | कवित्त | १७३ वां | |
| २ | लोड साजनियांरो | ,, | ,, | |
| ३ | तेजपाल वस्तुपाल रो | ,, | ,, | अंत में एक कुण्डलिया है। |
| ४ | चक्रवर्ती रो | ,, | १७४ | |
| ५ | वार[ह] वांणावलीरो | ,, | ,, | |
| ६ | महाराजा श्री जसवन्तसिंहजीरा कवित्त छप्पै | | ,, | |
| ७ | सोलह सिणगार मरदरा-लुगाईरा कवित्त | | १७४-१७५ | |
| ८ | स्फुट कवित्त | | १७५ | =मुरली, केसोदास |
| ९ | गीत—रावरिड़मलजी ने चित्तौड़ चूक हुवो तिण समैरो | | ,, | |
| १० | गीत —महाराजा श्री अजीतसिंहजीरो | | १७६ | |
| ११ | गीत—महाराजा श्री अभैसिंहजीरो (गुजरात में कह्यो) | | ,, | |
| १२ | गीत—महाराजा श्री विजयसिंहजीरो संवत १८१० में मेड़तारी राड़रो | | १७६-१७७ | खिडिया हुकमीचंद |
| १३ | गीत खींची गोरधनजीरो | | १७७ वां | |
| १४ | गीत —स्फुट | | १७८ वां | |
| १५ | सेतरामजीरी पीढियां— | | १७८ वां | आसथांनजी से सरदारसिंहजी तक |
| १६ | बूंदीरा राजावांरी पीढियां | | १७९ वां | प्रारम्भ के ६ नाम नहीं हैं। (७) गोपीनाथोत से (१६) रामसिंघोत तक |
| १७ | जैसलमेररा धणियांरी पीढियां | | १७९ वां | प्रारम्भ के ९ नाम नहीं हैं। [१० वें सबलसिंहजी से १४ वें मूलराज तक] |
| १८ | बीकानेर महाराजारी पीढियाँ | | १८० वां | जोधाजी से गंगासिंहजी तक |

| | नाम | पृष्ठ संख्या | विशेष |
|---|---|---|---|
| १९ | पोकरणारा ठाकरांरी पीढियां | १८०वां | रिडमल से गुमान-सिंहजी तक |
| २० | ठिकाणा आऊआरी ,, | ,, | रिडमल से कुसाल-सिंह तक |
| २१ | ठिकाणा रोईठा ठाकरांरी ,, | १८१वां | रिडमल से इन्द्रसिंहजी तक |
| २२ | ठिकाणा रायपुररारी ,, | ,, | ६ वें किलाणदास से १९ वें रूपसिंह तक |
| २३ | ठिकाणा खेरवारारी ,, | ,, | ५ वें गोविन्दरामजी से १२ वें दौलतसिंहजी तक |
| २४ | ठिकाणा बालरवारा धणियांरी ,, | १८२वां | ५ वें रिणछोडदास से ८ वें रतनसिंह जैत-सिंहोत तक |
| २५ | भाटी लवेरारा धणियांरी ,, | ,, | ५ वें साहवखान से ११ वें उदैसिंह तक |
| २६ | ठिकाणां खेजड़ला रा भाटियां री पीढियां | ,, | ४ थे हटेसिंह से ८ वें सादूलसिंह तक |
| २७ | ठिकाणां रामपुर रा भाटी-खांप उरजणोतरी ,, | १८३वां | ३ रा सूरतसिंह से ७ वां भवानीसिंह तक |
| २८ | ठिकाणा संखवाय कापडेरा धणीं खांप चहुआणांरी ,, | ,, | ४ था चतुरभुज से ८ वां सरजी तक |
| २९ | भाटी लूणाजो रा बेटा-पोतां री ,, | ,, | तोलेजी से चतुरभुजजी तक |
| ३० | आसोप रा धणी खांप कूंपावतरी ,, | १८४वां | रिडमलजी से चैनसिंहजी तक |
| ३१ | गाँव बलूंदारी पीढियां खांप चांदावत | ,, | जोधाजी से जीवणसिंहजी तक |
| ३२ | जैपुर महाराजा री पीढियां | १८५वां | पृथ्वीराज से सवाई जैसिंहजी तक |
| ३३ | किशनगढ महाराजारी ,, | ,, | सारमलजी से कल्याण-सिंह तक |

| | नाम | | पृष्ठ संख्या | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| ३४ | रतलाम महाराजा री पीढियां | | १८५ वां | उदैसिंहजी से पदम-सिंहजी तक |
| ३५ | ईडर ,, ,, ,, | | ,, | अजीतसिहजी से गंभीर-सिंहजी तक |
| ३६ | ठिकाणां खींवसररी | ,, | १८६ | राव जोधाजी से प्रताप-सिंहजी तक |
| ३७ | ठिकाणां चंद्रावलरा धणियांरी खांप कूंपावत | ,, | ,, | १० वें फतेसिंह से विसनसिंहजी तक |
| ३८ | ठिकाणां नींवाजरा धणियांरी खांप-उदावत | ,, | | ४ थे कल्याणदास से १४ सावंतसिह तक |
| ३९ | ठिकाणां पाटोदी रा धणियांरी जोधा महेसदासोत | ,, | १८७वां | राव मालदेव से जवाहर-सिंह तक |
| ३० | गांव गूंदेचरा धणियांरी खांप उदावत | ,, | ,, | राव जोधाजी से फुलेल-सिंह तक |
| ४१ | मनांणा रा धणियां री खांप मेडतिया अखैसिंहोत | ,, | ,, | दूदोजी से देलवेसिंह तक |
| ४२ | गांव बोडावडरा धणियांरी मेडतिया केसोदासोत | ,, | ,, | दूदोजी से मंगलसिंह तक |
| ४३ | गांव बडूरा धणी मेडतिया केसोदासोतरी | ,, | १८८वां | दूदोजी से सुलतानसिंह तक |
| ४४ | ठिकाणां रीयां रा धणी माधोदासोतरी | ,, | ,, | राव जोधा से सिवनाथ-सिह तक |
| ४५ | बगड़ीरा धणी खांप जैतावत री | ,, | ,, | रिडमल से सिवनाथसिंह तक |
| ४६ | पाली रा धणी खांप चांपावतरी | ,, | १८९वां | रिडमल से गजसिंह तक |
| ४७ | रासरा धणी खांप उदावतारी | ,, | ,, | ३ रा कल्याणदास से भोम-सिंह तक |
| ४८ | खारड़ा पालीरा धणी खांप चांपावत आईदानोत री | ,, | ,, | आईदान से रायसिंह तक |
| ४९ | कीरणारा धणी खांप करणोतरी पीढ़ियां री | | ,, | रिडमल से श्यामकरण तक |

| | नाम | पृष्ठ संख्या | विशेष |
|---|---|---|---|
| ५० | भादराजणरा धणी खांप जोधारी | १९०वां पीढियां | रिडमल से बखतसिंह तक |
| ५१ | वाघावसरा धणी खांप करणोतरी | ,, ,, | रिडमल से जसकरण तक |
| ५२ | गाँव भावरी रा धणी खांप जोधा री | ,, ,, | मालदेव से देवीसिंह तक |
| ५३ | गीत-चारण दाना रो कह्यो | १९०-१९१ | |
| ५४ | गीत-सेवग किसना आसावतरो कह्यो | १९१वां | |
| ५५ | कवित्त-महाराज सरदारसिंहजी रो | १९२वां | |

---

## २५३/१५६५४ रूपक सिवदानसिंह भारथसिंघोत जोधा केसरीसिंघोत रो

॥ ॐ ॥

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः। अथ ग्रन्थ रूपक राज श्री सिवदांनसिंघ भारथसिघोंत जोधा केसरीसिघौतरौ बारहट लालेजी रौ कह्यौ।

टिप्पणी—गुटके के अन्त में इस कृति के संबन्ध में प्राप्त विवरण इस प्रकार है—

"ग्रन्थ रूपक राज केसरीसिंघोत जोधा सिवदांनसिंघ भारतसिंधोतरौ—महाराजाजी विजैसिंघजी री मरजी सूं ठिकांणै लाडणूं बंधियौ। विजड़खां सिंध रा धणीरौ गुलाम हो, जिण धणी ने मार नै सिंधरो धणी वणियौ ने पीराऊ नामा सैर में स्वराजथांन स्थापन कियो ने अनीत करतौ। तिण ऊपर महाराजाजी विजैसिंघजी कोप कर तीन सूर वीर सुभटां ने मेलिया। मांडणोत हरनाथसिंह, पातावत मौकमसिंघ, बारठ चारण जोगीदासजी मथांणियैं रा। औ तीन ही सिंध में खुदावाद जाय विजड़ ने श्री हजूर रौ हुकम अन्यायरी मनाइ रौ सुणायौ। न मानीयौ ने आ पांचां ने मारण रौ हुकम देतां ही-मांडणोत हरनाथसिघ रौ पेसकवज मियांरी छाती सूं परै फूटौ ने पातावत मौकमसिघजी री कटारी कलेजौ चाखियौ ने बारठ चारण जोगीदासरी तरवार मियांरा धड़ रै नैं सिर रै विजोगकर

दियौ नें-मांखला गैनसिं० सैलोत धीरसिंघ तरवारां काढ रूप रचा-ने युद्ध कर विजड़रा बेटा ४ ने भाई ६ मार मारीजिया । वाघखां अर बीजड़ रौ पुत्र सेना सझ मारवाड़ पर आया ने हुज़ूर खास रुकौ दे सिवदांनसिंघजी ने लाड़णूं सूं बुलाया । सो सांवठा लोक शूं फौज ले सिंध में सांमा गया । उठै संवत् १७ सारा माह वद २ सोमवार रौ युद्ध कर सिवदानसिंघजी घणां भायां सुभटां सुं काम आया ने बिजड़ रा बेटा ने हराय भगायौ । टालपुरियारौ असबाब ले भगाया ने फौज जोधपुर जीत ने आई—इण वर्णण रो ग्रन्थ रूपक बारठ चारण लालजी कृत छै ।"

दुहा

सुरां राय सु प्रसन हुवै, दीजै मुहि वरदांन ।
सुज गाऊं भारथ सुतन, दल-नायक सिवदांन ।।१।।

सुंडाला आपौ सुमत, वरदाता वरवीर ।
रिण वरणू केहर हरा, सुज धज बंध सधीर ।।२।।

सारस्वति देह सुबुध, वरणू ग्रंथ विचार ।
सिवदांनै कीनौ समर, सो वरणू कछू बुध सार ।।३।।

पहली गुण जौधाणपत, वरणू कछू विचार ।
राज तेज लछ धरम रज, सो कहसूं मत सार ।।४।।

।। छन्द पद्धरी ।।

जोधांण नाथ राजत विजेस । सुज त्रिभौ देख लाजत सुरेस ।
मद छके द्वार घुम्मत मतंग । रितु छहूं पटा झर स्याम रंग ।।१।।

सिंदूर सीस चरचत सकाज । मिल भ्रमत सीस मधुकर समाज ।
तेजाल् अनेकां तुरंग तास । ज्यां दोड गुणांग्रह कुरंग जास ।।२।।

अंत — [छन्द पद्धरी]

सेखावत नाथू महा सूर । सुज करे समर लाहां सपूर ।।
वीदावत रूपौ. महावीर । सुज लगा लोह समहर सधीर ।।१००।।

जैतेस हरौ मांनेस जोध । कज स्यांम पडे लोहां सक्रोध ।।
जुध थांनसिंघ सोढौ सुजांण । मिल् लगे घाव तन अप्रमांण ।।१०१।।

सुज फोजदारखां खेत सूर । पड़ कैमखांनि लोहांस पूर ।।
तुंवर हर खेमो भिडे खेत । जिण वार पडे लोहांस जैत ।।१०२।।

मोहिल जुध कीन्हौ महाबाह । दलसाह पडे लोहां दुबाह ।।
गाजीखां कीधौ जुध गरूर । ऋत क्यांमखांनि लोहां करूर ।।१०३।।

भाटी इंम दीपौ महा अभंग । जिण चार पड़े लोहांस जंग ।।
सुज धाय भाई हीरौ सधीर । विध करे समर पड़ लोह वीर ।।१०४।।

पदमाल करे समहर सपूर । सुत ग्यांनसीघ पड़ लोह सूर ।।
हटमाल राखिया असुर हाथ । भिड खेत पड़े लोहां भराथ ।।१०५।।

रिणधीर तणौ हत आसुरांण । सालमौ पड़े लोहां सुजांण ।।
हरिचंद वखतौ[1] महावीर । राईका लोहां पड़ सधीर ।।१०६।।

सोढा हर कीधौ समर सूर । ग्यांनेस पड़े लोहां गरूर ।।
जैतसी जगोमालोत जास । जुध लगा लोह रिण खेत जास ।।१०७।।

जगमालउत्त गुल्लाब जांण । रिण पड़े लोह हत आसुरांण ।।
सांवत गुमांन लोहां सधीर । वेहू नगारची पड़े वीर ।।१०८।।

जिण वार वाल पोतो सुजंग । इंदरेस पड़े लोहां अभंग ।।
नवलेस करे समहर निघात । भिड माहू लोहां पड़ भाराथ ।।१०९।।

इंदरेस सुतन नवलो अभंग । जिणवार लोह पड़ खेत जंग ।।
उगरावत चेनो खित अरोड । लोहां घर पड़ियौ सुजस लोड़ ।।११०।।

रिण रूपै हतिया आसुरांण । मिळ लोहां पड़ियौ खित प्रमांण ।
मादुखां केमखांनो अबाह । सुज पडियौ लोहां सुजस साह ।।११२।।

भोमेस तांम चहुवांण वीर । धुर धमल पड़े लोहां सधीर ।।
कर तैजे मोहल जुध करूर । पडियौ रिण लोहां सुजस पूर ।।११३।।

हीदू वोडांणौ महावीर । रिण लगे लौह वेधे सरीर ।।
जालम इंदौ कर जुधस काज । सुज पड़े लोह खित असुर साज ।।११४।।

आसायच नवलो कट अभंग । जद पडियौ लोहां कीध जंग ।।
वीस दस मेक ठावा सु वीर । सुज हुवा घायली रिण सधीर ।।११५।।

धर स्यांम काज मन क्रोध[2] धंक । सुज हुवा घायली रिण असंक ।
इण भांत करे समहर अभंग । जोधाहर खाटे जैत जंग ।।११६।।

वाजा सु जैतरा खेत वाज । सुज समर जैत कीधा स काज ।।
वनसाह अभौ हिमतेस वीर । समर कर जैत चढिया सधीर ।।११७।।

---

१. खेतसी २. मोह ।

इण भांत सहर जोधांण आय । वर वीर विजै लीधा वधाय ॥
सिरपाव पटा जवहर समाज । रीझिये दीध जोधांण राज ॥११८॥

रज पदमसिंघ सिवदांन रंग । विजपाळ हूंत मिलियौ अभंग ॥
दे पटा वधारा कुरब दीध । ऋत सिवा हूंत चौगुणौ कीध ॥११६॥

समपिया वडा मौती विजेस । नर नाह वधारा दै नरेस ।
सुत भ्रात अवर रीझां सुकाज । समपिया पटा गहण समाज ॥१२०॥

कर भुजां पांण भारत सक्रोध । जोधहर वधे इण भांत जोध ।

× × × × × ॥

दुहा–सोरठा

भारथ सुत भाराथ, करै जैत केहर हगं ।
समर पड़ै इक साथ, भाई भड़ लीधां अभंग ॥१॥

॥ दोहा ॥

सूर इंद्र सिव पनंग ससि, दधि महि गयण दिपाय ।
सिवदांना तौ जस इतै, रज धर अमर रहाय ॥२॥

कह्यो सुगुण लाले, सुकवि, अपणी मत अनुसार ।
जो कछु चूक अजुक्त ह्वै, सौ कवि लेहु सुधार ॥३॥

इती श्री ग्रंथ रूपक राज श्री सिवदांनसिंघ भारतसिंघौत राठोड़ जोधा केसरीसिंघोत लाडणू ठिकांणा मारवाड़ तस्य जुध । बारहट लालदांन कृत संपूर्ण । लिखतूं संग्रह करता बारहट जैतदांन ।

---

## ३६०/१३७५१ रूपग पार पोरसातन (पुरुषार्थ-प्रकाश)

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः। अथ रूपग पाल पोरसातन लिख्यते ।

॥ दुहा ॥

अैक रदन बुद सदन अख, अत गुण करण अणंद ।
पावु जस रुपगै पढ़ु, नमो पगा शिवनंद ॥१॥

॥ गाथा ॥

कवता ग्राद गरु कनीयाणी ।
कव मोडो समरै कनीयाणी ॥
कथ पाबु कह्या कनीयाणी ।
करो हुकम मो पर कनीयाणी ॥२॥

॥ कवत ॥

पारजीत जोगंगइ, थपो गोरख ग्रवणासी ।
पारजीत षट जती, नाथ नव सीध चोरासी ॥
पारजीत बयैराग हुग्रा चोईस तिर्थंकर ।
पारजीत चोवीस पीर मोटा पैकंबर ॥
पार रो बोध लाघण प्रथम, ग्रापै ग्रकल ग्रधारणी ।
जीत पारजीत ग्राखु जुगत, सुमत समायै चारणी ॥३॥

॥ गाथा ॥

उकती ध्यान धरचो उर ग्राई ।
मन सु प्रसन्न बोलै मैहमाई ॥
भण थुपाल सैग तनो भाई ।
मोनु हुकम कीयो मैहमाई ॥४॥

॥ दुहा ॥

कै गावै नृप कवत कर, कै गावै करतार ।
गाउ भालालो गुणा, सुणजो संह सिरदार ॥८॥

सभी 'समयों' के शीर्षक तथा उनकी ग्रंतिम छन्द संख्या निम्न प्रकार हैं ।

| | | |
|---|---|---|
| पूर्वार्थ(र्द्ध) प्रसाद-उत्तपत्त रौ समौ— | १११ वें छन्द पर | समाप्त |
| वीनोद समईयो— | ३०६ | ,, |
| चकार रो विरोध समयो— | ३८५ | ,, |
| ग्रावाहन रयसवीमारो समईयो— | ६७५ | ,, |
| ग्राक्रांत रौ समौ | ९३३ | ,, |
| संप्रहार रौ समौ | १०८५ | ,, |
| बुडारौ समौ | ११४१ | ,, |
| रातीवादे रौ समौ (१२मो प्रवाड़ो) | १५२३ | ,, |
| सतीयां रो प्रवाडो (परवाडो) | १७६४ | ,, |
| झरड़ा रो प्रवाडो =ग्रादीतसमौ | २१२५ | ,, |
| परचां रो समौ | १ से १४० | ,, |

॥ दुहा ॥

अन्त

छै द्वादस रा सांमिरै, भाणु द्वादस भेद ।
द्वादस सगीया पालरा, वरण्या करण विचेद ॥१३५॥

पुंज तेज रौ पूतळौ, पाबु सुजस प्रचंड ।
ओ मेटै कातर पणौ, तिम औ मेटै तंड ॥१३६॥

अरक ऊग मेटै अवन, सीय तम चौर उपाध ।
तुं मेटै धांधल तणा, वीर आध नै व्याध ॥१३७॥

जोग पंथ हर भजन सुं, तीन पीर काबुह ।
पीर भूंभ पूजीजीया, गोगो नै पाबूह ॥१३८॥

उदै एक आदीत सुं, रहै वरण ध्रम रीत ।
कव मोडै वरणन कीयौ, औ वारै आदीत ॥१३९॥

कवत

रचना प्रारम्भ समय—

सोलौ वरस सकाज, अखां संबत उगणीसो ।
मास भादवै मइ, थिरा पूनम तिथ थीसौ ॥
पाल भाव मन प्रगट, कवी गुन आरंभ कीनौ ।
मो रूपग कहण रौ, दुओ करनादे दीनौ ॥

रचना समाप्त समय—

कारतक दीपमाला कहु, सुण सात्रवां उर साल रौ ।
कव मोडै बावीसै कीयौ, पूरण रूपग पालरौ ॥१४०॥

पुष्पिका— * इति श्री पाल पौरसातन मुरधरभासा आसीया मोडा कृत परचांरौ समौ । १२॥ रूपग पाल पोरसातन संपूर्णम् । संवत् १९३५ माहा सुदि ५ चंद्रवासरे । लिखितं पुष्करणा ज्ञाति बोहोरा कीसनलाल । श्री जोधपुर मध्ये । शुभं भवतु लेखक पाठकयौ ।श्री॥

---

* जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है प्रस्तुत काव्य 'रूपक' होने के कारण कथोप-कथन शैली में निबद्ध है । इसे विभिन्न घटनाओं के आधार पर विभिन्न "समयों" में विभक्त किया गया है । मूल ग्रन्थ से आद्यन्त उतारते समय इस ग्रन्थ के सबन्ध में राजस्थानी भाषा के प्रगाढ विद्वान् श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत से चर्चा की तो उन्होंने बताया कि आसिया मोड़ा की प्रस्तुत रचना का प्रकाशन "पावू प्रकाश" के नाम से बहुत पहले हुआ था जिसकी प्रतियाँ इन दिनों दुष्प्राप्य है । प्रस्तुत प्रति में लिपिदोष बहुत अधिक है ।

## ६४४/१४४३५ नसीहतरा दूहा

प्रारम्भ— ।। श्रीगणेशसाय न्मै ।।

ग्रथ नीत नसीहत का दुहा लिखंतै ।

दुहा

सिमरु देवी सरस्वती, गनपत के गुन गाय ।
विगन हरन मंगल करन, संतन करन सहाय ।।१।।
सिव हरि ग्रज सिमरों सदा, कर गुर कों परणांम ।
नीत नसीहत जुत का दुहा, पढो सुणो सुभ कांम ।।२।।[1]
[नित प्रत ऐतो कीजीयै, ग्रपनै तनतै कांम ।
च्यार घड़ी रह पाछली, रजनी जागै स्याम][2]
निरप हाकम हुजदार सुंन, राजनीत की रीत ।
धरम ग्ररथ जुन कहंत हम, पढ़ो सुनो कर प्रीत ।।३।।
:राजा बड़ा छोटा कूं:
धरनी पत धारै चिंता, धरम सुजस के सात[3] ।
सोभा सरसी जगत मै, बात रहै विख्यात ।।४।।
प्रिभु पिण राजी रह सदा, ग्रमर नाव वै जाय ।
ग्रंत वास बैकुंठ मै, जग मै कमिय न काय ।।५।।
चित धारैगे चतुर नर, पढ़ो सुनो सब कोय ।
नीत नसीहत जुत कही, निरमल वुध कर जोय ।।६।।
परमेश्वर सिमरो सदा, पीछै जग जंजाळ ।
भुलो मत ईण मोत कूं, बडो कुलंगी काळ ।।७।।
लपना ग्रपना पारका, स्मज वरावर सोय ।
दुस्मन मित समांन दुहु, न्याय स्मै मै जोय ।।८।।
सूभै स्यांम दोफार कूं, नींद न लीजै मीत ।
वड़ी वखत हरि भजण की, करो हरी जस चीत ।।९।।

टिप्पणी एवं पाठ –

१. पढण सुणन के काम   २. यह दूहा प्रथम पत्र पर है, किन्तु दूसरे पत्र में पुनः प्रारम्भ करते समय छोड़ दिया गया है ।   ३. काज ।

लेखक ने ग्रंत में स्वीकारोक्ति की है कि उसे पिंगल एवं डिंगल का ज्ञान नहीं है । लिपि में भी शब्दों के ग्रशुद्ध रूप लिखे गए हैं—इस तरह का पाठ "स्मृत्यर्थ टांका हुग्रा पाठ" की श्रेणी में ग्राता है ।

जिसको सायव ने वडा, किया होय जग मांह ।
कुल को कारण मत गिनो, प्रित रीत करताह ।।१०।।
निरप कों ऐता चाहियै, न्याय करै निज हाथ ।
सूंक हिमायत पर हरै, सुंन गरीव की वात ।।११।।
अरजी वांचै आपही, अवरन सों नहिं लेत ।
जैसो न्याय नसीत मै, तैसो ही कर देत ।।१२।।
जैसी लायक वै साजा, तैसी देत बनाय ।
परवस पांत कूं परहरै, संक न रखै काय ।।१३।।
मारण लायक जो मरद, तामै करणी देर ।
ईह कारण कव कहत है, मुवा न जीवै फेर ।।१४।।
पाय पूरा गत कांमतै, नीत धरम को बांच ।
पोथी ग्यांन विग्यांन की, वोल जवां तें सांच ।।१५।।

अंत— कोई पापी दुखित फिरै, धरमी दुख सवाय ।
किण विध राजी रांमजी. गत नहि जाणी जाय ।।१६१।।
पतिवरता नै पेट भर, अन वसतर नहि देत ।
विभचारण संसार सुख, भांत भांत कां लेत ।।१६२।।
नाथ निरंजण आप गत, जाणै न कोई जोध ।
काहा ग्यांन विग्यांन अरु, काहा विद्या कै बोध ।।१६३।।
तुम गत उगम अथाग है, सुर नहिं पावै पार ।
मिनखो क्यूं मैहनत करै, भज ऊतरो भव पार ।।१६४।।
किया हरी का होत है, मुरख खंचै भार ।
विना बुध गरभ्यो फिरै, होयसु होवन हार ।।१६५।।
नीत नसिहत का दुहा, राजनीति विसवास ।
गत गोविंद करुणां कही, हरिजन हियै हुलास ।।१६६।।
पिंगल ना पढियो प्रिभू, नां डिंगल को बोध ।
नीत नसिहत का दुहा, सुगम कया मन मोद ।।१६७।।
पढो सुनो समझो सको, धरम सुजस कै काज ।
राज काज मै रंग मिलै, कै **कायथ गुलराज** ।।१६८।।
वाल अवसता जो पढै, सावत रहै समाज ।
च्यार जरव चातुर हुवै, कै **कायथ गुलराज** ।।१६९।।
नीत नसीहत धरम जुत, करुणा अरु विसवास ।
लीला अपरमपार हरि, समजै प्रिभुं का दास ।।२००।।

रचना कालः—समत सत ऊगणीस है, ता ऊपर पैतीस ।
कार्तिक बद की चोथ किय, भोमवार के दीस ।।२०१।।

पुष्पिका— संपुरणं। सुभ भवतु । कल्याणमस्तु। ग्रै दुहा बांच कंठा कर समजसी तिको नर बोत बुधवांन हूसो । लिखतं पंचोली गुलराज । बांचै जिणा सूं जै श्री च्यारभुजनाथजीरी वांचसी ।

नुस्खा— ॥ छंद पधरी ॥

कवि जेठ ग्रसाढ मैं दाख कहै ।
नभ सांवरण सिंधव लुंण लहै ॥
मिल ग्रासक कातिक मैं मिसरी ।
हित पोह मिगसर सूंठ हरी ।
माहा फागण पीपर माय मिलै ।
भिन चैत वैशाख मैं सैंत मिलै ।
कवि कहत ईह ग्रनुपांन करै ।
हरडी तन रोग छतीस हरै ॥१॥[1]

**:ग्रमल बतीसी रा दुहा:**

सिमरुं देवी सरस्वती, गुन गावो गन राज ।
गुंण ग्रवगुण ईण ग्रमलरा, कह कायथ गुलराज ॥१॥

नाक भरै नस नोसरै, तेज घटै तन हांण ।
वो विष प्रातै खात पिव, कोन भलपण जांण ॥२॥

निंबल नसावै सावली, भरता रह पयांण ।
गया तेज तन बावडै, कांमण ग्राकु जांण ॥३॥

रूप घटै पत पातळी, होत दिरव की हांण ।
ग्रालस बध्यां दलदर पिव, ग्राकु ग्रवगुण जांण ॥४॥

ग्राकु तेज ग्रनंत गुण, तन मन रह हुलास[2]

---

१. इसके बाद में भी तोड़ मिटने की, गर्मी की, दस्त मिटने की तथा सुजाग की ग्रौषधी दी है । बाद में "ग्रमल बत्तीसी रा दूहा" है ।

२. इसके बाद के पत्र ग्रप्राप्त हैं ।

## १६११/१३७८७ काव्यप्रबन्ध

प्रारम्भः— श्रीगणेशाय नमः। अथ काव्य प्रबंध लालस बगसीरांमजी कृत लिखं × [ते]

श्री चंत्यामरण सगुणं, सो सर्व बीज बीजाक्षर संजुत तं × पत अगुणं।
**बगसिरांम** जय जय जग वंदन ॥१॥

॥ दुहा ॥

श्री × जय जय सदा, **बगसिरांम** तिह वंद।
सुकल वर्ण वर्णातम सि × अद्भुत हुत आनंद ॥२॥
श्री लंवोदर बुध सदन, चारु वदन × × चंद।
इन्द्रासन बगसा अभय, विघन विनासक व्रंद ॥२॥

× यहां हमारे ग्रंथ विघन विनास कर हैं।

× × × × ×

अथ ग्रंथ कारण ॥दुहा॥

श्री सादलर[1] × × [न] रिइंद वीकानेर,
छाया छत्र छतीस की, रच्यौ [काव्य प्रबंध] × × ॥५॥

× × × × ×

दोहा

कोड दांन कमधेस किय, पाय धरम जस पंथ।
कव काहू नां हन कियौ, गुन उपदेसक ग्रंथ ॥७॥
छित कविद करियो छिमा, जो मम तुछ बुध जांन।
कहूं कछू इक गुर कृपा, मेरे मत उनमांन ॥८॥
सब्द अर्थ सांमंद्रवत, जथा सक्त गत जांन।
लियौ बोध जल मै लखां. मेरे घट उनमांन ॥६॥

× × × × ×

समत गुनी सै तीन दस, × [म] गसर सुख संघ।
तेज व्यास के बाग तह, बरन्यौ का × × [व्य प्रबं]ध ॥१३॥

---

१. × × पाठ खंडित है। "सादलर" "सार्दूलसिंह" संभवतः सिंहथल प्रदेश के कोई ठाकुर अथवा व्यक्ति हो सकते हैं। आगे कवित्त संख्या ६ में सिंघथल=सिंहथल का नाम आया है। पाठ खण्डित होने से यहाँ उद्धृत नहीं किया गया है।

गुन कारन या ग्रंथ कौ, रच्यौ ज बगसीरांम ।
× × [उदा] हरन अष्टांग के, मै लखहूं तिह ठांम ।।१४।।

× × × × ×

बगसा बावन वरन तै, सब्द भये संसार ।
वनै वरन पद वाक्य तै, प्रगट अनंत प्रकार ।।२०।।

साहत मत सूं तीन सो, वाचक प्रथम वखांन ।
दुतिय लाछनक सोदषहुं, व्यंजक त्रतिय विधान ।।२१।।

× × × × ×

अन्त:[1]— मात्रा मै गंन मांनीयै, पंच ट-वर्ग वखांन ।
बगसा संग्या उलट विध, जथा नांम सो जांन ।।
गिनहु रूप दो णगन के, गिनै ढगन मुरगाह ।
पंच डगन अठ ठगन पुन, टगन तीन दस ठाह ।।

नाम संख्या छंद प्रबंधे ।।सोरठा।।

णग गुर १ दो लघु मांन, ढगण सुं उर १ सरवर २ मही ३
रक्षस १ द्विज २ श्रे जांन, डगण करण ३ कर ४ उरज ५ अरु ।१।

दोहा

तुरी १ वीर २ पायक ३ अवर, हीरा ४ पुन सार्दूल ५ ।
कुसम ६ नागपत ७ बांण ८ अे, ठगन छंद मत भूल ।।२।।

सिव १ सिस[ससि] २ रवी ३ अरु वज्रधर ४,सेष ५ कृष्न अरु ६ कंज ७ ।
व्रम्हा ८ नारद ९ कमठ १० ध्रुव ११, धर्म १२ साल १३ टग मंज ।।

अत्यादि पुरष संग्या वचनात जांनीयै । प्रस्तार जांनीयै ।
यहां लिखबे को हेतु यहि वरण मात्रा मिश्रत या रूप जांनीयै ।
जथा आद प्रमांण सुं जांनीयै ।

। सत्री छंद जथा ।

ध्यांनी बांनी ग्यांनी जांनी, मात्रा के ढगन व्रत के रक्षस जांनीयै ।

। धाम छंद ।

रांम नांम कीत गीत । मात्रा के ढगंन व्रत्त के सरोवर जांनीयै ।

। माधौ छंद । × × × ×

---

१. तीसरा प्रकरण गुणवृत्त प्रवन्ध किंचित्त अपूर्ण है। अंतिम प्राप्तांश यहाँ दिया गया है ।

## १६१२/१५२१६ (५) कौशल-वृत्त भासि

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः । श्री रामो जयति । अथ कौशल वृत्त भासि लिखते ।

॥ दोहा ॥

कौशल राज कुवर कुवरि, वंदन करि सुख कंद ।
वरनत कौशल भासि वृत्त, रचि नांनां विधि छंद ॥१॥

॥ दोहा ॥

श्री मन्नारायण वचन, समझि रचे अंसेस ।
तिनकौ नीकें समझि कें, वरनौ वृत्त अत अवशेस ॥२॥

॥ छप्पै ॥

बिंद सहत गुरु होइ, सहत बिसरग पुनि जांनौ ।
संजोगी गुरु आदि, बहुरि दीरघ गुरु मांनौ ॥
चरन अंतगत बरन, लघू कबहू गुरु धारिये ।
कला मात पुनि रेख, नाम चहु लघु के ररिये ॥
असजो गुरु जिह्वा लघु, पढै सो लघु पहचांनिये ।
कहि कौशल द्वयतिय वरन जुग, तुरत पढत ईक मानिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

लिखनें मै जो आइ है, अर्द्ध चंद्र गुरु मात ।
ते गुरु लघु पहचांनि द्वै, कल दीरघ विख्यात ॥४॥

क कि कु त्रिय ह्रस्व जानिये, संजोगी गुरु आदि ।
द्वै कल पुलतादिक स्व निज, बिंद बिसर्ग अनादि ॥५॥

× ×

अन्त— गावत ××× [कौशल] मगन ह्वै, छिन छिन पुजन मां×[हि]
श्री ××[जानकी] वलभ विनां, मन कहूं लावत ××[नांहि] ७९।

करचो ग्रंथ तिहि सुख निमित, सिय पिय उर धारि ।
भूलि चूक कहू ठौर ह्वै, ×× [लीज्यो] सु कवि सवारि ॥८०॥

रस श×[शि] वसु भू×[व] र्षे सुभ, नभ सित दिक तिथि जांनि ।
अनुराधा भृगुवार जस, सिय वर करचो वखांनि ॥८१॥

।। श्लोक ।।

लेखकं मंगला × × [नांम] पाठ × × [कानां] तु मंगलं । मंगलं सर्वं × × ×

पुष्पिका— इति श्रीमद्जानकीवल्लभ चरणारविंद भ्रमर रूप मन रतेषु श्रीमद सु × × मदासनुजीवी कौसलदासेन विरचि × × ]तायां] वृत्त × [भा]ष्यायां लघु क्रिया भेद निरूपणो नांम × × × [अष्टम] प्रकाश ।।८।। मीती सावण सुद ३ समत १९ स ४६ का । दशकत कल्याणबगस का × × नग्र सांगानेर मध्ये । राव पारीख प्रोहीत कि पुस्तक कल्याण बगस जवाहीरलाल की छै ।

× × ×

## १६१५/१३६६९ छन्दविभूषण सटीक

× × × × ×[1]]

वचन हेत काजादिको, वच हित कज कहुं होइं ।
सो दूषन देहो न कवि, ग्रंथ संकीरन जोइ ।।६।।

।। अथ मात्रा समजात मधुवार छंद ।।

मधु गनज आत । कहि रूप जात ।।
कुच गोर गोल । अद्भूत अडोल ।।१।।

टीका— मधुवार छंद लछन । चौ कल्यौ, एक जगन, एक असें आठ मात्रा को पद । जात्या अलंकार लछन । उपमादिक रहित, केवल रूप गुन ही सुंदरता करि कै वरनै ।

उदाहरण— कुच गौर गौल अडोल अदभुत, असें रूप गुण सुंदरता ज्योंही त्योंही वरनी ।

।। खंड छंद ।।

खंड खंड होइ, सभावोक्ति सोइ ।
कहै जेस भाव, लखो हाव भाव ।।२।।

टीका— खंड छंद लछन: नव मात्रा को पद, स्वभावोक्ति अलंकार लछन । क्रिया गुन कौ सभाव अंग तें वरनै ।

---

१. प्रथम पत्र अप्राप्त होने से प्रारंभ का पाठ ग्रन्थाङ्क १३७८० में उपलब्ध पाठ के अनुसार दिया गया है ।

उदाहरण— हाव भाव अंग सभाव क्रिया वरनी ।

× × ×

[।। मंगला चरण:—श्री गणेश स्तुति ।।

दोहा

मंगल के सव काज़ मै, प्रथम गनेस मनाय ।
कर प्रनांम ताकौं बहुर, रचना रचौं वनाय ।।१।।

।। श्री सारदा स्तुति ।।

वांनी कौं वंदन करौं, वांनी करन प्रकास ।
छंद रु भूषन दुहुन कौं वरनौं विविध विलास ।।२।।

।। श्री इष्ट देवता स्तुति ।।

परम इष्ट निर्गुन सगुन, अलख अगम्य अलेख ।
वसो रिदैं नित जगतपत, जो जग रक्षक भेख ।।३।।
छंद लछ लछन सहित, भरती भूषन जुक्त ।
लै आसैं ग्रंथांन की, कहौं यथामत उक्त ।।४।।
अंक कहैं मात्रा समझ, गनतैं चोकल जांन ।
वरन छंद मैं वरन हूं, अंक कहै पहिचान ।।५।।]

अंत— अथ अलंकार को सामान्य ल० [लक्षण] ।

।। दोहा ।।

सोभा दैं जहा कवित मैं शब्द अरथ कवि उक्त ।
वही उक्त के नाम सों, अलंकार कर संजुक्त ।।७४।।

ग्रन्थ-जन्म

सत अठार पिचंतरै, फागुण सुद भृगुवार ।
छंद विभूषन ग्रंथ कौ, तिथ दुतिया अवतार ।।७५।।
नाम: छंद रु भूषन बोध, विहु लछन लछ समेत ।
छंदविभूषन ग्रंथ कौ, धरौ नाम इह हेत ।।७६।।
देस सुरभि सुत रहय पदमणी, पुरष अन्न जल लौंन ।
निसा हठा आ मयर रहत, मारु धर सुख भौंन ।।७७।।

।। देसाधिपति ।।

मुरधर मणि गढ़ सुभटपुर, तहां सु राजसथांन ।
**मानसिंघ** महिमां मुकट, जक जेम सुख दांन ।।७८।।

।। ग्रन्थ-कर्त्ता कौ नाम ।।

**उदैचंद** कीनौ सुय, छंद विभूषन ग्रंथ ।
छंदरु भूषन दुहन कौं, कथ्यौ सुगम कर पंथ ।।७६।।

**उत्तमचंद** मम भ्रात वड, तिन कृत ग्रंथ नवीन ।
अलंकार आसैं समुझ, अलंकार रचां कीन ।।८०।।

**दलपत** औ **हरचरण** कृत, कवि **दूलह** कृत सोध ।
अपनी उक्त प्रमान कछु, रच्यौ अलंकृत बोध ।।८१।।

अष्ट करम सब जात, गन गनना उतपत छंद ।
मम कृत छंद प्रबंध में, सब जानौ कवि इंद ।।८२।।

दोहा गाथादिकन कौं, लछन जुत विस्तार ।
मम कृत छंद प्रबंध में, सब जानहु निरधार ।।८३।।

× × × × ।।६०।।

अथ ग्रंथ-कर्त्ता की वंसावली ।

।। दोहा ।।

कुल देवी **आसापुरा, लाखलों** चहुवांण ।
ओसवाल लाखण हितें, भंडारी कुल भांण ।।६१।।

।। छप्पै ।।

लाखण रै सुत दूद, दुसासण सिद्ध सुदेवण ।
देव रिषी सुमणो सुसीतु, जस धवल सोढमण ।
वोहड लोहट जाण राय पालहि ।
जंभण कहि वेला सू डावी लताहि समरा सुनरालहि ।
तोला[1] विजारु उदा वहुर बाघा गौरा जाणजै ।
सादूल भीव कल्याण रै कुसलचंद बखाण जै ।।२।।

---

१ नाथा ।

टिप्पणी— पत्राङ्क ८२ पर छंदविभूषण ग्रन्थ समाप्त होने के बाद ग्रन्थ कर्त्ता की वंशावली पत्राङ्क ८३ पर समाप्त की गई है। पत्राङ्क ८४ से ८६ पर छंदानुक्रमणिका है । पत्राङ्क ८७ से १०५ पर 'ग्रंथ छंद प्रबंध' मेकौ अष्ट क्रम संक्षेपते' शीर्षक से लिखे गए हैं ।

॥ दोहा ॥

चेंन कुसलवत तैं उदित. उतम उदै जुग भ्रात ।
भंडारी नृप के सचिव, ओसवाल वड ग्यात ॥३॥
दया दीप्त जिन धर्म में, तपै गछ वुध सुध ।
सवतें समता सुजनता, काहुतें न विरुद्ध ॥४॥
उतम उग्र जुत जाहितें, उग्रवंस ही होत ।
उदे पुत्र उचौत कर, उदित वंस उद्योत ॥५॥
लिखतं प्रोयत लालचंद ॥ जोधपुर मध्ये ॥

---

## १६२२/१५२५८ (१) जस-आभूषन-चन्द्रिका

आरम्भः— ॥र्द०॥ श्रीगणेसाय नमः । अथ जस आभूषण चंद्रका लिख्यते ।

। मंगला चरन ।

॥ कवित्त ॥

गनपत हरि सिंभू सूरज सकत ताकौ,
गौर स्यांम स्वेत लाल घन वपु वेस हैं ।
मूंषक गुरुर वैल सप्तासहि सिंघासन,
दासन सहाय के प्रकासन विसेस हैं ॥
सु कवि मनोहर जू पांचह सरूप जामैं ।
पूरन विराजें नृंम कछु न अंदेस हैं ॥
सोई नृंम नाथ श्री जलंधर कौ रूप धरें,
अमित अनूंप ताहि वंदना हमेस हैं ।

अथ श्री माहाराज कौ वंस वरननं ।

॥ छप्पय ॥

सूरज कुल कनवज, भये जयचंद नरं गुर ।
जंगविजई जग विदत, लई पदई दलपं गुर ॥
गह मोखे सुलतांन, आंन चि × [ह] चकवरताई ।
सेन भये खग × × ॥

× × × हा जवर ग्रासथांन धूंहर भयौ ।
नृप रायपाल पढियार हन, थिर मंडोवर गढ़ लयौ ।।२।।

तिह कांनर ग्ररि काल, बहुर जालम ग्ररु छाडा ।
तीडा सलखा तपे, वीर वीरम गुन गाडा ।।
चांडा से रिनमाल, जोधगढ जोध रचायौ ।
सूजा वाघरु गंग. माल जय जंग कहायौ ।।
नृप उदैसिंघ जाकैं भये, उदैकोट नव जांनियैं ।
तिह पाट सूरसे तप बली, सूरसिंघ वाखांनियै ।।३।।

सूर सुतन गजसाह, राह दुय बीच महाबल ।
जीते बावन जंग, भंग केते वैरी दल ।।
जाके सुत जसवंत, जगत जिनकौ जस जाहर ।
ताकैं भये ग्रजीत, करिय हींदू ध्रम वाहर ।।
नरनाह तोर तुरकां ××, पातसाह ऊथप थपे ।
ग्रव × × × गढ कैं तपे ।।४।।

ताकैं बखत नरेस भये बड बखत प्रतापी ।
जाकैं श्री जसाह, भये पूरन हरि जापी ।।
तिनके चक्र ग्रदीठ, वक्र वैरिन सिरवहि कैं ।
मुरधर की प्रज भई, मई संपत सुख लहि कैं ।।
तिह नीत मतोजुग कलजुगहि, करयौ वित्त क्रम दुनन कौ ।
श्रुत सुनत सुहग दीसत भयौ, दीसत सो श्रुत सुनन कौ ।।५।।

ताके तनय गुमांन, भये पुनवांन सु जाके ।
पुनतैं प्रगटे मांन, भांन सम प्रग ×× जाके ।
नाथ भक्त ग्रत निपुन, ×× [भगत] गोपीचँद जैसें ।
गुन ग्रन गि × [नत] × जहि, दीह कव वरनत कैसें ।।
× × × × × ×

।। दोहा ।।

या भूषरण पैं वहुर हे. भव भूषन भुव भोग ।
मुर भुव भूषन मांन हैं, जस भूषन के जोग ।।७।।

यातें मांन नरेस कौ । जस भूषन सौं लीन ।
कवि ग्रनेक वरनन करत, हमहू मत जुत कीन ।।८।।

सँमत अठार गुनासिया, सिद्ध जोग सनवार ।
दिन अनंत प्रभु के भयौ, यहै ग्रंथ अवतार ।।९।।

अलंकार नृप मांन के, जस मय दये दिखाय ।
जस आभूषन चंद्रका, नांम धरचौ इह भाय ।।१०।।

सेवग सोलह न्यात कैं, जोधनगर के वास ।
××[मांन] जसोलंकृत रच्यौ, ग्रंथ मनो×××[हर दास] ।।११।।

× × × ×

वडे कविन सौं वीनती, करत मनोहर ऐह ।
कठन अलंकृत रचन कहु, चूक सुधारहि लेह ।।१५।।

× × × ×

।अथ अलंकार लक्षणं ।।दोहा।।

सब्द अर्थ ह्वै काव्य मैं, सोभा के सरसांन ।
सिरपेचहि मुक्ता दलौं, अलंकार सो जांन ।।१७।।

× × × ×

अन्त —

: अथ संकर लक्षन :

।। दोहा ।।

ऐक काव्य मैं अलंकृत, मिलैं परसपर आंन ।
पय जलकी-सी रीत सो, संकर कहौ वखांन ।।४५७।

: उदाहरन : ।।कवित्त।।

उन्नत पहार पैं पहार गत वंक पूरौ,
जिनकूं निहार सूरौ होत उरजन कौ ।
काहू कैं न आवैं तोल जंत्रन मढायो मांनौं,
मंत्रन पढ़ायौ बली जोध गुरजन कौ ।।
सजल सधार भार सब ही समांन भरचौ,
चारु कव चारु हैं उदार भुरजन कौ ।
जोधगढ हिंद ढाल मांन महिपाल जू कैं ।
रैत रिंछपाल हैं जूं साल दुरजन कौ ।।४५८।।

।।वार्त्ता।।

इहां पहिले चरन में लाटानुप्रास अरु उल्लास, दूसरे चरन मैं छेकानुप्रास अरु उत्प्रेक्षा, तीसरे चरन मैं वृत्यानुप्रास अरु जमका, चौथे चरन मैं फेर वृत्यानुप्राम अरु उल्लेखै, अैसें द्वै-द्वै अलंकार च्यारौं ही चरन मैं । पोषक सो तो अंग हैं अरु च्यारौं ही चरन कौ अंगी जात्यालंकार हैं यातैं संकर ।

।। दोहा ।।

जस आभूषन चंद्रका, मांन नृपत जस लीन ।
जो पढ़ हैं सो होहिगौ, अलंकार परवीन ।।४५६।।

पुष्पिका— इति श्री राज राजेस्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री श्री मांनसिंघजी कौ जस ग्रंथ जस आभूषन चद्रका नांम कवि **मनोहरदास** कृत संपूर्ण ।।श्रीरस्तु: कल्याणमस्त ।। ।।श्री।। ।।श्री।। लिखतं सेवग सिवकृष्ण, जोधपुर मध्ये ।।

---

## १६२६/१३७८० (२) प्रस्तार प्रबन्ध-भाषा*

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः । अथ प्रस्तार प्रवन्ध भाषा ग्रन्थ लिख्यते ।

मंगलाचरन ।। दोहा ।।

वीतराग करुणा निलय, श्री जिनेंद महावीर ।
उदैभाव जाको भयां, उदित सकल सुख सीर ।।१।।
श्री महावीर जिनेंद सों, पूछ्यो मुनि गंगेव ।
सो प्रश्नोत्तर लिखत हौं, लै सहाय जिन देव ।।२।।
× × × × × × × ×

---

* पूरा गुटका उदैचंद भण्डारी की कृतियों का है । प्रथम कृति 'छंद प्रबन्ध'-है । दूसरी कृति 'प्रस्तार प्रबन्ध' है । तीसरी कृति 'साहित्यसार' है जिसमें शब्दार्थ-चंद्रिका, दूषनदर्पण, रसनिवास तथा छंद विभूषन नाम से चार प्रकरण हैं । साहित्यसार का प्रारम्भ भी इसी के साथ दिया जा रहा है ।

॥ ग्रन्थ-जन्म ॥

सत अठार गुणासियै, क्वार द्वितिय सित पक्ष ।
कुज द्वितिया परगट भयो, प्रसर प्रबंध सुलक्ष ॥७॥

॥ नाम ॥

छंद सुरादिक प्रसर के, बहु ग्रंथन कौ ग्यान ।
यातें नाम सु याहि कौ, प्रसर प्रवन्ध सुजांन ॥८॥

॥ अथ गांगेव प्रश्न ॥

जीव अमुक स्वर्गादिकां, थांनां प्रत जे जाय ।
इक द्वै संजोग सों, फेर सार बहु भाय ॥९॥
संक्षा भेद समूह कह, लिखें सकल प्रस्तार ।
लिख्यौ रूप उदिष्ट कह, नष्ट लिखें निरधार ॥१०॥

अंत:— अथ देशाधिपति-वर्नन ।

॥ दोहा ॥

गुण एतां केतक मनुष, मुरधर में-स प्रकास ।
अन्य देसां कलु काल वस, गुण अत तुछ अप्रकास ॥११॥
अवर भूप उडगन किते, कितेक चंद समांन ।
मांन महीप दिनेस जग, जाहर हिंदुस्थांन ॥१२॥
गुण समस्त सकलांग जुत, मांन भूप अवतार ।
कलु छाया जीतक करत, राज काज सुविचार ॥१३॥
देशां मुरधर देशमण, मुरधर मणि जोधांण ।
भूपां मणि नृप मांन जस, जाहर जग वाखांण ॥१४॥
उदैचंद या देश मैं, वसत जोधपुर वास ।
दास भूप कौ यह रच्यौ, प्रसर प्रवन्ध प्रकास ॥१५॥
भूपत भाषा संस्कृत, अनभव सद अभ्यास ।
भूपत की मो पर मया, मम भूपहि विश्वास ॥१६॥

पुष्पिका — इति श्री प्रस्तार प्रवन्धे सूचनकादि अधिकार नाम षष्टम प्रबन्धः ॥

× × × × ×

## १६५८/१३७८० (३) साहित्यसार सटीक

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः । श्री सारदाय नमः ।। श्री इष्टदेवाय नमः ।

।। दोहा ।।

सुमर गनेसरु सारदा, इष्ट सकल सुख धांम ।
लैं सहाय ग्रंथ सु लिखौं, साहितसार सुनांम ।।१।।
शब्द सिद्ध व्याकरण तें, अर्थ सिद्ध साहित्य ।
सप्रयोजन अर्थ सु लिखौं, साहित नौतन कृत्य ।।२।।
प्रकरण च्यार लिख्यां जुदे, अपने अपने नांम ।
साहितसार सु एकठां, लिख्यां नांम अभिरांम ।।३।।

।। च्यारों प्रकरण तिनके नांम ।।

इक शब्दारथ चंद्रका, दूषन दर्पन दोय ।
रसनिवास त्रय, चतुरथ सु छंदविभूषन जोय ।।४।।
च्यारहिं प्रकरण एकठा, साहित कौ सब सार ।
सो समुज्यां साहित्य मैं, विद्वत ह्वै निरधार ।।५।।
लछन लछ प्राचीन लैं, बहु कविमत प्राचीन ।
अभिप्राय इक ठौर हित, रचना रची नवीन ।।६।।

× × × ×

---

## १६५०/१४२८० वाणीभूषण

प्रारम्भ— श्रीगणेशाय नमः । अथ वानीभूषन लिख्यते ;

।। छन्द पद्धरी ।।

वर धारि चरन सिव गवरि अंस । वरनत सुकवि कछवाह वंस ।।
नृप उदयकरन आंबेर नाथ । पौरुष प्रसिद्ध जिमि पहोमि पाथ ।।१।।

भो उदयकरन कै ध्रम सुभाव । राजाधिराज वरसिंह राव ।।
वरसिंह राव कै वंस दीप । महराज पुत्र उपज्यो महीप ।।२।।

महराज भूप कै द्युति दिनेस । नर नाह नरू प्रगट्यो नरेस ।।
वरवीर नरू कै वुधि विसाल । लहरी समंद भौ राव लाल ।।३।।

धरु धीर लाल ग्रह धर्म धांम । नृप उदयसिंह विख्यात नाम ।।
सुत उदयसिंह कै भो सुजान । लखह वरीस नृप लाडखाँन ।।४।।
सर लाड़खांन सुत भो सरोज । फतमाल सकल श्रृंगार फोज ।।
महिपाल फता सुत वल ग्रमान । कुल दीप कलाधारी कल्यान ।।५।।
भो नृप कल्यान कै पुत्र भूप । ग्रानंदसिंह ग्रानन्द रूप ।।
ग्रानन्दसिह कै सुत उदार । भो तेजसिंह धर भुम्य भार ।।६।।
नृप तेजसिंह कै नर नरिंद । भो जोरावर भुवलोक इंद ।।
नृप जोरावर कै सुत ग्रनूप । भो राव महोवत वंस भूप ।।७।।
महोवत नरेस कै वल ग्रमाप । प्रगट्यो सु राव राजा प्रताप ।।
परताप राव कै पहोमि पाल । वखतेस वंस भूपति विसाल ।।८।।
गिर ग्रंबर धर गिरजा गनेस । मुनि वचन जितै कायम महेस ।।
द्रढ वेद च्यारि रचना दईव । रहु जितै वखतसी चिरंजीव ।।९।।
ग्रानंद पाइ सव सुख ग्रखेद । ग्रासीस सुकवि ग्रखै उमेद ।।
वखतेस नृपति ग्राग्यानुसार । मै रच्यो ग्रंथ मत ग्रलंकार ।।१०।।
मत चन्द्रालोक विचारी मान । किय भाषाभूषन की समान ।।
सिय जनकसुता सुर ग्रसुर सेवि । रघुनाथ प्रिया मम इष्ट देवि ।।११।।
वरन्यो तिह सीता वंद्य पाय । वानीभूषन भाषा बनाय ।।
जाकी समता तें वडमि होय । उपमा कहत तिह सुकवि लोय ।।१२।।
जाकों उपमा दीजियत नित्त । मानियो ताहि उपमेय मित्त ।।
उपमेय सु मुख ससि वोपमांन । सो वाचक उज्जल धर्म जांन ।।१३।।

× × ×

ग्रंत:— येकसो साठि सव ग्रलंकार । ग्रर्थ के कहे वुधानुसार ।।
वर सव्दालंकृत वहोत हैं जु । ते ग्रछिर के संजोग तें जु ।।९५।।
पट ग्रनुप्रास वरने वखानि । जे जग मै भाषा जोग जानि ।।
करि ग्रलंकार को सुगम पंथ । मै वानी भूषन रच्यौ ग्रंथ ।।९६।।
वखतेस नृपति ग्राग्यानुसार । वरन्यो उमेद करि वुधि विचार ।।
यह वानीभूषन पढै कोय । तिहं ग्रलंकार को ग्यान होय ।।९७।।
कहू ग्रर्थ सब्द की चूक होय । लैहैं सुधारि जे सुकवि लोय ।।
इक पष्ट ग्राठ पुनि येक ग्रोर । संवत्सर जानहु सुकवि मोर ।।९८।।
ग्राषाढ पंचमी कृष्ण जानि । गुरवार ग्रंथ पूरन समानि ।।
करि वास राजगढ नगर मध्य । मै रची ग्रंथ रचना प्रसध्य ।।९९।।

।। इति ।।

## १७४३/१३०९४ निर्णयसिद्धान्त-भाषा

प्रारम्भ— अथ नीर्णेसिंधू ग्रंथे श्रुक्रास्तनी बीचार कहै छै।
पूर्वे शुक्र ग्रस्त थाय ते वारे पेहला दिवश १० वृधि। पूर्वे उगे तीवारे दिवश ३ लगे बाल। पश्चिम शुक्र ग्रस्त थाय तवारे दीवश १५ वृध। उगे तवारे पछी दिवश × बाल। हवे शुक्रनो गूरू नो वक्र वृध, ग्रस्त होय तेवारे कार्य कार्य कहे छे। चौलादि, विदाह कर्म। वास्तु पूजन, देव प्रतिष्ठा, प्रथम वधु प्रवेश, प्रथम उपाकर्म, प्रथम उत्शर्ग, माहादान, व्रतारम्भ समाप्ती, माहारुद्र एं कर्म न होय। हवे शुक्र सांमो होय तवारें न जावूं ते कहे छै। गर्भणी, प्रथम बालवती, राजा, नववधू, एणें शुक्र, सांहांमो अथवा दक्षीण हाथें होय तवारें एक पद क्रम एणें जावूं नहि। जेंनें जावू तेंहनें कहे छे। एक ग्रांमें बीवाहें जातां देश मार्गे दुर्भक्षे। एटलें शुक्र शांमो दक्षीणे जावो नहि सर्वथा जावूं वली भार्गव, वत्सस, कश्यप, भारद्वाज, ग्रांगीरस, वशीष्ट, अत्री गोत्री नें शुक्र नों दोष नहि।

ग्रंत— अथ नदि रजो दर्श काल। कर्क संक्रांती नें सिंह संक्रांती मांहे सघली नदि रजस्वला होय। समुंद्र गाविना शमुद्रगा दश दिवश रजस्वला। गंगा, यमुना गोदावरी, नर्मदा, गोमती ए त्रण दिवश रजस्वला। भुमिस्य नवोदक पण दश दिवश ग्रस्पर्श,। उपाकर्मे, उत्सर्गे, प्रात्स्नाने, चंद्र-सूर्य ग्रहणे एटले गम्ये रजो दोष नहि। इती नदि रजो दर्शन। इती नीर्णेसीधांते वतीका लेखन समाप्तं।

श्लोक— संवन्नागाभ्रशैलेन्दु मितेब्दे तपसंज्ञिके।
पषे (पक्षे) सितेष्टम्यां तीथि वारे गुरु भूजो ।।१।।
उदिच ज्ञातीविप्रेण जयरामात्मजेन च।
परोपत्न (कृ) तये तु (त) द्वद्रघुरामेण धीमता ।।२।।
द्विजायां (नां) धर्मकार्येषु सिद्धांते निर्णयः कृतः।

पुष्पिका— समाप्तं ।।सं० १९२४ ना ग्रशाड शुदि ८ शनीवांशरे।
लषीतं पुरोहित ईछारांम स्वग्रात्मार्थे पठनार्थं ।।

टिप्पणी—ग्रन्थ धर्मशास्त्र का है। कर्त्ता द्वारा मूलतः निबन्ध ग्रन्थ का प्रणयन संस्कृत गद्य में किया गया था। जिसके आधार पर 'महादेव' नामक

पंडित ने ११७ श्लोकों का एक ग्रन्थ 'कालनिर्णयसिद्धान्त' नामक ग्रन्थ वनाया और इस पद्य ग्रन्थ की पुनः रघुराम ने संस्कृत में टीका लिखी। ग्रन्थाङ्क १०,००३ की पुष्पिका से उक्त तथ्य ज्ञात होते हैं। पद्यग्रन्थ का रचना काल १७०६ वि० स० तथा संस्कृत की गद्य टीका का रचना काल १७१० वि० स० दिया गया है। सम्पादक

## २०४१/१४६५६ कुमारपालरास

प्रारम्भ— ।।ई०।। श्रीसारदाइ नमः ।

।। दूहा ।।

पय पंकय जस प्रणमंता, पामीजइ सुर रिद्धि ।
त्रिशला नंदन दुःख हरइ, नाम मंत्र बहु सिद्धि ।।१।।

गज गति सरसति समरतां, लहीइ वचन रसाल ।
कवि कोटी सेवा करिं, निर्मल यान मुराल ।।२।।

निज गुरु नाम हृदय धरी, विमलकुशल सु पवित्र ।
हीरकुशल कहइ कवि सुणु, कुमरपाल चरित्र ।।३।।

त्रिहुं, भुवने यश तेहनु, सिं कीधुं तिणि काम ।
कहतां कवि जन सांभलु, नाम ठाम तस गांम ।।४।।

लाख योग्रण ते देव का, जंबु द्वीप प्रवान ।
लवण समुद्र विंटी रह्यउ, छिवणु तेहनु मान ।।५।।

रजत वर्ण वेग्रढ गिरी, तिणि ए कीधुं जोइ ।
भरतखेत्र सीमा करी, दख्यण उत्तर दोइ ।।६।।

दख्यण भरत माहे भलु, गुर्जर देश सुचंग ।
रमता रमलि निरखीइ, निर्जर नर मन रंगि ।।७।।

जिहां कमला घरि घरि घणी, रंभा नइं रति प्रीति ।
इंद्र अनंग छांडी करी, तिहां ते वसि विचित ।।८।।

भू भामिनि भालि भलुं, भूषण लछि निधान ।
अणहिलवाडुं जाणीइ, पाटण प्रवर विमान ।।९।।

वापी कूप तटाक वन, कदलीनां आराम ।
वप्र तणी शोभा घणी, चतुर पुरुष-नां ठाम ।।१०।।

धूज पताक अति लहलहइ, जिन मंदिरनी ओलि ।
सूरिज रथ जातु खलि, एहवी ऊंछी पोलि ।।११।।
धनद समा रिद्धि सवे, लोक तणां बहू घाट ।
गज रथ घोड़ा पालखी, सोवन केरा पाट ।।१२।।

।। चउपई ।।

विक्रम नृप थी जाणु खरु । संवत आठ नइ बीडोतरु ।।
पाटण नगर वसाव्यं रुली । श्री वनराज चाउडइ मिली ।।१३।।

पाटण नगर नुं पांनु पाल्युं राज । साठि वरस छत्रपति वनराज ।।
योगराज तस पाटि थयुं । पांत्रीस वरस राज पद कह्युउ । १४।।

पंचवास वरस क्षेम प्रतिपाल । ओगणत्रीस भूयड भूपाल ।।
पणवीस वरस वैरसिंह राज । पनर वरस रत्नादित काज ।।१५।।

सामंतसिंहि पाल्युं राज । सात वरस लगइ कीधुं काज ।।
सात पाट ते थया चाउडा । रूपिं मनमथनइ जेवड़ा ।।१६।।

सिर वालइ ते सगलांइ मिली । वरस थयां ते सुणज्यो वली ।।
एकसु छिन्नु वरसे थया । चाउडा पाट सात ते कह्या ।।१७।।

इहां थी गयु भाणेजे राज । तेहनी उतपति सांभलउ आज ।।
सामंतसिंहनी भगनी सती । नामि लीलादे गुणवती ।।१८।।

तस नंदन कहइ मूलराज । मामानुं तिणि लीधुं राज ।।
अखंड प्रतापिं पालइ मही । पंचावन्न वरस ते सही ।।१९ ।

तेर वरस श्री चामुंडराय । षटम सवाडा वल्लभ थाय ।।
दुर्ल्लभराय वरस इग्यार । षटम सवाडा ऊपरि सार ।।२०।।

वरस बेतालीस भीम भूपाल । त्रीस वरसते कर्ण दयाल ।।
ओगणपंचास वरस करि राज । जयसिंहदेवि सारि काज । २१।।

इकत्रीस वरस ते कुमरपाल । त्रिणि वरस भत्रीजु अजयपाल ।।
बाल मूल दो वरस विचार । त्रेसठि भीमसेन उद्दार ।।२२।।

त्रिणसइ वरस माहिं ए हूया । सोलिंकी नामि जूजूआ ।।
पछइ धवल वीसलदेवात । एतु वाघेलांनी जात ।।२३।।

कुमरपालना कहुं अवदात । जे हूउ तीन भुवनि विख्यात ।।
सांभलयो तेहनी उतपति । उलट अंगि आणी एकांति ।।२३।।

× × ×

अन्त— ।। राग धन्यासी ।।

असुर वधू कुमर नृपनिं करिं भामणां, तु भलिं आवीउ अहमाई ईश।
कीर्ति रमणी रमइ भुवनि त्रिहुं ताहरी, तुझ गुण गावइं निज मुखिसुरेश ।।८।।
।। असुर वधू० आंकणी ।।

नाचती गावती हर्ष घणु पावती, ल्यावती देवध्वनि देवनारी ।
हाव नइ भाव हस्तक कला देखउइं, पेख रे नाह तुझ जाउं उवारी ।।९।।
।। असुर वधू० ।।

गम घमिं रमझमि नेउरी, खलकती ढलकती मेखला कटि रसाल ।
तिलक भालि करी नयण काजल भरी, नृत्य करि देवसुरी अति विसाल ।।१०।।
।।असुर वधू० ।।

पुण्य तरू प्रबल त्रिहुँ भुवनि तिं वावीओ, तेहनां फूल ए चाखि स्वामी ।
फल तु आगलि हस्यइ मुगति वधू सेजडी,हे जडी चडी सजव तिहांतु धामी ।११।
।। असुर वधू० ।।

श्री सोमसुंदर सीस वाचक वरू, तिणि करचु कुमरनृप नुं चरित्र ।
तेह ऊपरि रच्यउ संवत सोलोतरइ, वर्ष च्यालीस अकिमपुरि पवित्र ।।१२।।
।। असुर वधू० ।।

प्रवर तपगछपति हीरविजय गुरु, जयविजय वंत विजयसेन सूरी ।
जाणि सोहम्म जंबू समा गणधरा, सेवतां सकल संपत्ति पूरी ।।१३।।
।। असुर वधू० ।।

तस गछ माहिं तेजिकरी दीपतु, जीपतु काम पुशाल शुद्धो ।
विमल जस चिहुं दिशि विमल कुशलाभिधो, विबुध पद मंडली महिं प्रसिद्धो ।१४।
।। असुर वधू० ।।

सीस तस चरण कज रमइरी, भमइरी भमरा परि वांणीमकरंद पीइ मनह रंगि ।
हीरकुशल कहइ नृप केरडउ, रास भणंता होइ आणंदि अंगि १६ ।।[१५]
।।असुर वधू कुमर नृपनि करिं भामणां।।

पुष्पिका— इति श्री कुमरपाल प्राकृत भाषा प्रबंध संपूर्णमितिः ।।संवत १६५६ वर्ष आ काती सुदि १ बुधे घूमा मध्ये लख्यतं । छः । छः। छः । शुभं भवतुः ।।

---

## २१०३/१४५२७ नलदवदंती-प्रबंध

प्रारम्भ— ।।६०।। श्रीगउडी पार्श्वनाथाय नमः ।।श्रीगुरवे नमः ।।

।। धूरि दूहा ।।

श्री शांतीसर सोलमऊ, जगजीवन जगदानंद ।
अचिरा ऊयरइँ हंस लऊ, समरूं निते सुखकंद ।।१।।

जिणि ध्यांनइँ संकट टलइँ भय भावठि सवि जाइ ।
वीछडीयाँ वाल्हाँ मिलइँ, पूजइं संपद थाइ ।।२।।

बे कर जोडी वीनती, मागु एतउं मांन ।
भगवति आपउ वचन रस, निरमल फुरतउ न्यान (ज्ञान) ।।३।।

परगट महि माता हरऊ, जिम घनसार ऊदार ।
देजे रंजन-नी कला, सारद मुझ मनुहार ।।४।।

सोभागी साचा सुगुरु, ते नमसिउं अप्रमादि ।
जेह थी सुध मारग लहिऊ, साहिजदीउ वरसादि ।।५।।

ढाल पहिली चउपई : राग रामगिरी :

नयरि द्वारामती कृष्ण नरेस एह ढालः—
जंवूद्वीपि षट खंड उछांहि । मेरू थी दक्षिण भारत मांहि ।।
अंगादिक जनपद अति भला । आय वित्तीइं नयरि कोसला ।।१।।
अवसरि वरसइ मेघ अपार । सुहणि नवि जाणि कांतार ।।
सस्य तणी वहुली तिहां वृद्धि । लोक तणइं घरि एह रिद्धि ।।२।।

अन्त— : राग धन्यासी :

शांति जिन भामणइं जायु ए देसीः—
नलदवदंती चरित सुचंगा, सुणतां वाधइं रंगावे ।।१।।
सीलिकरी दवदंती सोहि, भीमसुता मन मोहिवे ।।२ सी०।।
सती तणा गुण गाया प्रेमइं, लाभ लह्या मइ खेमइंबे ।।३ सी०।।
ढाल अे पूरव नवनव धातइं, चतुर लहिसि उरस गातइंबे, ।।४ सी०।।
चार खंड चिहुं खंडि प्रसिद्धी, चुंपी धरी मइं कीधीबे ।।५ सी०।।

अंचलगछ गयण गणि राजइं, सूरिज सम गुरु साजिबे ।।६ सी०।।
श्रीकल्याणसागर सूरिसर रायां, सेवि मुनिजन पायांबे ।।७ सी०।।
तस पखि वाचनाचारिय रंगइं. विवेक शेखर गणि चंगइंबे ।।८ सी०।।
तस शिष्य विजयशेखर इम जंपइ, ढाल सतरमी संपइंबे ।।९ सी०।।
सोलहसइं, बिहोतरा सारइं, फागुण वदि रविवारइंबे ।।१० सी०।।
सूंदर ऊडु विसाखा चंदइं, रचिउ संबंध आणदइंबे ।।११ सी०।।
राड द्रहापुर संघ सोभागी, दीठा मइं ध्रम रागीबे ।।१२ सी०।
भणतां सुणंतां मंगलमाला, विजयशेखर सुविसालाबे ।।१३ सी०।।

पुष्पिका— इति श्री नलदवदंती प्रबंधे चतुर्थ खंड : संपूर्णः ।।
श्रीस्यात् ।। श्रीः ।।

# परिशिष्ट २

## राजस्थानी–हिन्दी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची––भाग 4

## ग्रन्थ-कर्त्तानुक्रमणिका

